है। और पशुपालन फार्म की जांच का काम अभी टाला जा सकता है। सचमुच यह समय इसके लिए उपयुक्त नहीं है—बोवाई करनी है, वसन्त की बोवाई।

८

रुस्तम ने उसी शाम को अपने घर में भी व्यवस्था स्थापित करने की ठान ली। पहले तो वह गुस्से से उफनता बरामदे में चहलकदमी करता रहा, फिर पत्नी से बच्चों को बुलाने को कहा। सकीना ने व्यर्थ उसे मनाने की कोशिश की कि बहुत रात हो चुकी है और वह खुद भी थक गया है, पर वह अपनी पर अड़ा रहा।

गराश व माय्या अनिच्छापूर्वक अपने कमरे से निकलकर आये। पेरशान को किसी ने नहीं बुलाया, पर वह स्वयं आ पहुंची और सोफे पर पैर ऊपर रख, माय्या के कंधे पर सिर टिकाकर बैठ गयी।

"अब्बा को युद्ध के बारे में कुछ सुनाना चाहिए," उसने अनुरोध किया। "घर में कुछ ऊब-सी लगने लगी है..."

और उसने अंगड़ाई लेते हुए जम्हाई ली।

पिता उसके इन शब्दों के लिए उसे बड़ी खुशी से डांट-डपट देता, पर उसने उसे केवल आंखें दिखाने तक सीमित रखा और अपनी बायीं मूछ पर कई बार बल दिये।

बेटी ने इसको कोई महत्त्व नहीं दिया..

पिता ने गराश से कठोर शब्दों में कहा कि अच्छे बेटे बाप का बोझ कम करने के लिए अपना कंधा लगा देते हैं, जबकि उसके बेटे ने उसके सिर पर एक फालतू पत्थर डाल दिया है।

"आखिर मैंने समझा तो दिया कि मामला क्या था!" गराश भड़क उठा।

"तुम्हारी बात पिता के घावों पर नमक छिड़कने जैसी है।"

बहू के साथ रुस्तम की बात लम्बी हुई। वह माय्या को कई बार आगाह कर चुका था कि वह जवान है, जिन्दगी के बारे में कुछ नहीं जानती, इसलिए उसे बहुत सावधान रहना चाहिए। वह आखिर उस मनहूस लफंगा शैशातपा की गाड़ी में क्यों बैठी? अच्छा, उसने उसे छोड़ आने को कहा था? और अगर रेस्तरां चलने को कहता, तो भी क्या तैयार हो जाती?

आखिर माय्या को गोशालगों के नीच, ओछे स्वभाव के बारे में इतने के विचार मालूम है। आखिर वह ससुर की हिदायतें नहीं मानती है? माय्या केवल इजीनियर नहीं है, बल्कि रुस्तमोव परिवार की सदस्या भी है, इसका मतलब यह है कि उसे हर मामले में और हमेशा रुस्तम की तरफ़ रहना चाहिए और उसे नजर आयी सारी कमियों के बारे में केवल उसे ही बताना चाहिए।

"मेरा परिवार ऐसा होना चाहिए," और रुस्तम ने मुट्ठी बनाकर हवा में हिलाई, "ताकि कोई एक उगली को दूसरी से अलग न कर सके। और जो उगली खुद अलग होगी, उसे मैं काटकर फेंक दूगा।"

"कुछ समझ में नहीं आता मेरी, कुछ समझ में नहीं आता" माय्या जवाब में केवल इतना ही कह पायी।

"तुम तो तेरली चाची के साथ मिलकर मेरे खिलाफ़ बेनाम पत्र भी लिखने लगती!" रुस्तम चिल्लाया। "तुम मेरे पास, सिर्फ मेरे पास आकर कहती कि नाली खराब हो गयी है या गूगा हुसैन गेहू की फसल में ठीक से पानी नहीं दे रहा है। मीटिंग करने की क्या ज़रूरत थी?"

रुस्तम मेज़ से उठ खडा हुआ।

"मैंने जो कहा, उस पर सोच-विचार कर लो! शब-बखैर!"

और वह सोने के कमरे में चला गया।

सकीना व परेशान माय्या को ससुर की बात पर ध्यान न देने के लिए मनाती रही लेकिन उसे जैसे सान्त्वना की जरूरत ही नहीं थी, वह पूर्णतया शान्त रही और सिर-दर्द का बहाना करके अपने कमरे में चली गयी।

जब गराश आया, वह शाल लपेटे चुप रही, मानो ठिठुर गयी हो। पति को भी कहने को कोई उपयुक्त बात नहीं सूझ पायी।

अन्त में माय्या ने कहा

"सुनते हो, चलो हम बडों से अलग रहने लगते हैं। दूसरा रास्ता मुझे नजर नहीं आता।"

गराश स्वयं भी अनेक बार ऐसा निर्णय लेने के बारे में सोच चुका था, लेकिन इस समय उसे बहुत बुरा लगा, आश्चर्य भी हुआ कि पत्नी ने ऐसे शब्द इतनी शांति से कह दिये। इसे क्या, परायी जो ठहरी! लेकिन उसे तो बाप, मां और बहन को छोड़कर जाना पड़ जायेगा। और लोग क्या कहेंगे? पारिवारिक जीवन शुरू में तो हमेशा ठीक से नहीं

नता, पुश्तैनी घर छोड़कर चला जाना सबसे आसान होता है। बुजुर्गों
का कुछ लिहाज करना जरूरी होता है।

"लेकिन रात में तो हम यहा से जायेंगे नही। लेट जाओ," वह म्लान
स्वर मे बड़बड़ाया।

अपमान के कारण माम्या का दिल उचटने लगा। क्या गराश नही
समझता है कि वह घर मे शान्ति बनाये रखने के लिए सब सह रही है।
पर सहनशीलता की भी एक सीमा होती है।

उस रात उन्हे अपना बिस्तर ठण्डा लगा।

दसवाँ परिच्छेद

१

हल अछूती धरती के भारी-भारी ढेले उलट-पुलट रहे थे, ट्रैक्टरो के
पीछे गहरी हलरेखाए खिचती जा रही थी। गराश चालक की सीट पर
बैठा ध्यानपूर्वक अगल-बगल देखता जा रहा था। अनजुती जमीन पर खुरड
की तरह जमी सूखी घास का हर क्षण कम होता जाते और ट्रैक्टर के पीछे-
पीछे भेड़ के ऊन जैसी मुलायम, नम, गहरी काली मिट्टी को बिखरती
देखकर बहुत सुन्दर लग था. . उसे जोताई करना अच्छा लगता था,
हर ्, रात भी गुजारना अच्छा लगता था —
अच्छा लगता है!

रहता था, कायापलट हो गया था, सूखी घास भरे गद्दों पर सलीके से कम्बल बिछाये हुए थे, सफेद-झक तकियों का हमवार अम्बार लगा हुआ था।

"बड़ी दिलचस्प बात है, यह किसने किया?"

"कुछ भले लोग मिल गये, कामरेड!" उसे पीछे से खनकती आवाज़ सुनाई दी।

उसने मुड़कर देखा। रेशमी कुरते पर सफेद एप्रन पहने, कमरे को इत्र की खुशबू से महकाती, मुस्कराती नज़नाज़ दरवाज़े में खड़ी थी।

"ऐसे टकटकी बांधे क्यों देख रहे हो? क्या पहचाने नहीं?"

गराश को उससे मिले अरसा हो चुका था। उसे वह बेडौल, सूखी युवती के रूप में याद थी, पर अब वह सुन्दर, गदरायी और आत्मविश्वास से परिपूर्ण स्त्री हो चुकी थी।

"पहचानता हूं, पर तुम यहां कैसे आ गयीं?" गराश घबरा गया।

"भैया ने भेजा है। उन्होंने कहा कि सारे लोग खेत में हैं, उनका ख़याल रखना चाहिए, दुर्घटना होने पर उनकी प्राथमिक चिकित्सा करनी चाहिए। उन्होंने मुझे दवाइयों का बैग और दवाइयां दीं. "

"ऐसे काम की ख़ातिर तो श्रमदिनों की भी परवाह नहीं होनी," गराश खुरदरी साफ की हुई मेज़ पर बैठते हुए खुश हुआ।

"मैंने तो जहां भी काम किया, किसी ने शिकायत नहीं की," नज़नाज़ नखरीली अदा से मुस्करायी।

"पट्टी बदलोगी?" और गराश ने जल्दबाज़ी में तेल से चिकटी चीर बंधी उंगली उसे दिखायी।

नज़नाज़ भारी कूल्हे मटकाती बाहर गयी, बैग लेकर आयी, उसके इत्र की [illegible] ईथर की गंध मिली और एक मिनट में गराश [illegible] उंगली पर साफ पट्टी बांध दी गयी। नज़नाज़ [illegible] कंधों का स्पर्श कर रहे थे और

ही। जब कि अपना स्वागत प्रेममय प्रगाढ़ आलिंगनों से किये जाने के प्रति आश्वस्त पति की भौंहे तन गयी।

"इतनी देर आये कैसे?" अन्त में पत्नी ने पूछा।

"इधर आनेवाले ट्रक का इन्तजार करता रहा। पर तुम क्यों नहीं सो रही हो? क्या चिन्ता है तुम्हें?"

"सब ठीक है, जैसे चलना चाहिए, चल रही है," माय्या ने उदास स्वर में मजाक किया। "तुम्हारे अब्बा लड़ते हैं "

गराश ने खीजकर मुह बनाया। फिर वही पुराना राग. .

"और सब मामूली-सी बातों के कारण। तुम तो जानते ही हो कि मैं सुबह व्यायाम करने की आदी हू। मुझे अपने घर में छुटपन से ही यह सिखा दिया गया था। खुले बरामदे में निकलना अच्छा नहीं लगता। मैंने मां से सलाह की, बढ़ई को हमारे कमरे के आगे के एक कोने में आड़ लगाने के लिए बुलाया गया, पर अब्बा आये और उसे डाटकर भगा दिया मुझसे तो उन्होंने कुछ नहीं कहा, जो और भी बुरा लगा। एक न एक दिन आखिर मेरे धैर्य का बाध टूट जायेगा, कलह शुरू हो जायेगी "

गराश महसूस कर रहा था कि वह माय्या की आये दिन की शिकायतें सुनते-सुनते थक चुका है। उसने बरबस नजनाज के साथ उसकी तुलना की वह तो हमेशा हर चीज से खुश रहती है, खीझती नहीं है, दुखी नहीं होती है, मामूली बातों के कारण निराश नहीं होती है, पुरुषों को पसंद आने की, उन्हें खुश करने की कोशिश करती है .

"ठीक है, ठी ऽऽ क है, पर अब्बा का स्वभाव बदलने की ताक़त मुझ में नहीं है। तुम्हारे पास अपना कमरा है, उसी में नगी नखरे करती रहो, जो मन मे आये करो।"

"तुम इतने झल्लाकर क्यों बोलते हो?"

"और कैसे बोलू? आखिर मैं कोई पत्थर तो हू नहीं! हफ्ते भर खेत भटकता रहा हूं, ट्रैक्टर के पास जमीन पर सोता रहा हू, घर भागकर आया और मेरा खीझ-खीझकर स्वागत किया जा रहा है। बडा अच्छा लगता है न!"

माय्या ने आसू पोंछ लिये।

"ठीक है, गराश, आगे मेरे मुह से एक शब्द नहीं सुनोगे।" उसकी आवाज भावहीन थी। "लेटोगे?"

"नहीं, खाना दो, खेत लौटना है," गराश झूठ बोला।

आया—सोफे पर पटक दिये। अवकाश के दिन दोपहर तक बिस्त
रहना अच्छा लगता है—लेटी रही। संगीत सुनने की इच्छा हुई—
पूरे ज़ोर से खोल दिया।

लेकिन जब स्त्री भाग्य की डोरी किसी पराये के साथ बांधती है
दूसरों की पसंद, इच्छाओं और मनःस्थिति का ध्यान रखना पड़ता
अगर वह चाहती है कि कोई उसकी बात माने,—खुद को भी
आगे झुकने को तत्पर रहना होता है, धैर्य, संवेदनशीलता और
सहायता लेनी होती है और छिपाने में क्या फायदा—कभी-कभी
से भी काम लेना होता है।

यह सब कठिन होता है, पर और भी कठिन हो जाता है
नवविवाहित ऐसे परिवार में रहने लगते हैं, जहां अपना पुराना
है, ऐसे परिवार में, जहां सम्बन्धी उनके जीवन में हस्तक्षेप करना
कर्तव्य मानते हैं।

रुस्तमोव खानदान में माय्या के लिए ससुर की निरंकुशता
उठी थी। उसे पति के अपने माता-पिता से अलग होकर आना
के विचार से भयभीत हो उठने और इनकार करने से आश्चर्य हुआ।
जैसे बदल गया था, रूखा और लापरवाह हो गया था। शायद उसे
में दूसरी तरह की पत्नी की ज़रूरत है, जो आंगन झाड़-बुहार दे,
साफ कर दे और कलह के बाद पति का इस प्रकार आलिंगन करे,
कुछ हुआ ही न हो। क्या पता, शायद गराश का उससे प्रेम हुआ
हो, बस दिल हो गया और शादी कर ली

माय्या को कभी-कभी इतना भय लगता कि वह कोहनर पकड़
खड़ी होती, खिड़की के पास आ बैठती और अपने से निरंतर पूछती, "
आखिर पूछती क्या वह गराश के बिना जी सकती
कई रातों तक उसी के बारे में सोचती रहती है,
उसने कभी बिछुड़ना नहीं चाहेगी। "मैं उसे प्यार
हूं," वह बार-बार कहती "चाहती हूं, लिहाज़ है
केवल इसीलिए, क्योंकि वह मेरे पास नहीं है।"

अचानक विचार बेतहाशा कूदा और माय्या के
मन में बिल्कुल [illegible] गराश था [illegible]
पति के [illegible] में [illegible]
में [illegible]

नखने की मेज़ के पास बिछाये हुए गलीचे के ऊपर रख दिया और अदर ाये नजफ की ओर मुस्कराकर देखा. "आओ, आओ ."

अपनी आदत के अनुसार विनम्र, विनोदी नजफ ने उपनिदेशक की ार कोई कागज़ बढाया।

"यह क्या है? अरे, बैठो, बैठो।"

"कपास चुनने की मशीनो की धुरियो के लिए प्रार्थनापत्र है। उनकी ररम्मत करने का वक्त आ गया है। बोवाई का काम ठीक चल रहा है, इमारे बारे मे चिन्ता मत कीजिये, हम कार्यक्रम के अनुसार सामान्य गति ते काम कर रहे हैं। छोटी-मोटी टूट-फूट होती रहती है, सो तो होता ही है, हम खुद ही ठीक कर लेते हैं। मशीनें अभी बेकार खडी नज़र नही आती," नजफ गूजते और स्फूर्त स्वर मे बोल रहा था, उसे शराफोगलू को खुश करना अच्छा लगता था।

"और तुम्हारे सामूहिक फार्म के क्या हाल हैं?"

नजफ की आवाज़ का जोश जाता रहा

"आप खुद गये तो थे, देख लिया ."

शराफोगलू ने हठ नहीं किया और मेज़ पर झुककर प्रार्थनापत्र पर हस्ताक्षर कर दिये।

"बहुत अच्छा काम छेडा है!" उसने प्रशसा की। "हम तो हर साल अपने को यही तसल्ली दिलाते रहे कि अगस्त से पहले कपास चुनने की मशीनो की ज़रूरत नही पडेगी और मरम्मत करने की जल्दी नहीं है। लेकिन जब कपास की बोडियां खुलने लगती हैं, तो मालूम पडता है कि वे मशीनें पुराने छकडो से भी बुरी हैं कर नही पाये, ध्यान नही रखा, भूल गये ." शराफोगलू ने दिखावा किया मानो कोम्सोमोलो को स्वय ही वक्त मे उनकी मरम्मत मे जुट जाने की सूझी हो, न कि उसने उन्हे मजबूर किया हो। "तुम्हे कपास चुनने की मशीन पसद है?" उसने चलते-चलते पूछ लिया।

नजफ इतने जोश मे उचका कि कुरसी खडखडा कर उलट गयी।

"कामरेड उपनिदेशक!" उसने तीन बार छाती ठोककर कहा। "मुझे उस मशीन से प्यार है, ईमान से प्यार है! तीन साल हुए, जब गिज़ेतार अभी मेरी मगेतर ही थी, मैंने उस बेचारी को खेत मे देखा था। पसीने मे तर-बतर हुई, तपती धूप मे वह कपास हाथो मे चुन रही थी। और भोर से शाम ढले तक कोई सोलह घटे काम होता था .. मैंने सोचा था: हमारी

उसे आशा थी कि [illegible] रात को रहने के लिए उसकी [illegible],
[illegible] आत्मा [illegible] के [illegible] की दृष्टि से देखने की [illegible]
गयी था और उसने [illegible] नहीं की। [illegible] शराफ़ ने [illegible]
[illegible] और धीरे-धीरे [illegible] मोटर पकड़ने रास्ते पर [illegible]
गया।

वह [illegible] में लगभग दो घंटे पहुँचा। उसके आने में उसने [illegible]
[illegible] ने [illegible] में टोनी-नाटक का स्वागत किया।

जवान बीबी का घर छोड़कर जाना गुनाह है!"

' कहीं कानी बिल्ली तो रास्ता नहीं काट गयी थी! लड़ाई हो गयी क्या?"

सुबह नज़नाब उनींदे और उदास शराफ़ के लिए चाय लेकर आयी। उसकी चेष्टाएं मद थीं और मुस्कान प्यार भरी। उसने नाश्ते के बाद उसकी उंगली की पट्टी बदल दी और जब शराफ़ के कंधों व गालों पर उसके गदराये उरोजों का फिर स्पर्श हुआ, उसकी सांस फिर रुक गयी।

ट्रैक्टर-चालक जा चुके थे, वह अकेली थी और उसके गहरे रंगे होंठ शराफ़ के चेहरे के बहुत निकट धधक रहे थे, निमंत्रण देते मुस्करा रहे थे, लुभा रहे थे

"दोपहर के खाने में पुलाव होगा," नज़नाब ने कहा।

"इतनी तकलीफ़ उठाने की क्या ज़रूरत है?"

"बस इसलिए कि तुम्हें अच्छा लगे।"

२

शीशा लगे बरामदे में से होकर आती सूरज की प्रखर किरणें खिड़की के पास बैठे शराफ़ोगलू को प्यार से दुलार रही थी, उसका बदन गरमा रही थी, वह हाथ में पड़ा हुआ समाचारपत्र पकड़े उदास बैठा जम्हाइयां ले रहा था। उसकी गोदी में बैठा झबरा बिलौटा ऊंघ रहा था, दो महीने हुए वह शराफ़ोगलू को मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन के फाटक पर भूखा और ठिठुरता मिला था और वह उसे उठा लाया था।

"अंदर आ सकता हूं?" किसी ने बाहर से पूछा।

"मना क्यों करूंगा? आओ।" शराफ़ोगलू ने बिलौटे को सावधानी से

शराफोगलू फिर खिड़की के पास बैठ गया, उसने अंगड़ाई ली और म्याऊ-म्याऊ कर उठे बिलौटे को फर्श से उठा लिया। यानी मक्का का काम निबटा दिया गया है और तिपतिया की बोवाई भी पूरी की जा चुकी है। अब सबसे व्यस्त और कठिन समय आ गया था—कपास की बोवाई का समय। अभी तक क्षेत्र के सभी सामूहिक फार्मों में काम समान गति से चल रहा था, कोई पिछड़ता हुआ नज़र नहीं आ रहा था, फिर भी 'नवजीवन' सामूहिक फार्म ने शराफोगलू को वास्तव में चिन्ता में डाल दिया था।

जाड़े में उसे इस बात पर खुशी हुई थी कि रुस्तम उससे यदा-कदा ही सहायता मांगता रहा था। शराफोगलू को ऐसे सामूहिक फार्म के कार्यकर्ता अच्छे नहीं लगते थे, जो अपने हितों की पूर्ति के लिए उच्च सरकारी पदों पर आसीन अपने मित्रों का उपयोग करते थे। लेकिन अब बोवाई अभियान शुरू हो चुका था और रुस्तम पहले की तरह अपने बारे में कुछ जानकारी नहीं दे रहा था। अनाम पत्रों का एक के बाद एक पहुंचना बंद नहीं हुआ था। शराफोगलू 'नवजीवन' में केवल एक दिन ही रहा था, पर उसने वहां बहुत-सी कमियां देखी थीं।

इस बारे में रुस्तम से साफ-साफ बात करना जरूरी था और शराफोगलू ने उसे सुबह से ही अपने यहां बुलवा भेजा था।

अहाते में मोटर के बुलन्द हार्न की आवाज गूंजी। रुस्तम 'पोब्येदा' में से उतर रहा था।

अध्यक्ष को मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन के अहाते में नजफ से मुलाक़ात होने की बिलकुल भी आशा नहीं थी। उसके मन में सदा की तरह सन्देह जाग उठा। "तो शराफ़ ने मुझे इसलिए बुलवाया है!" उसके दिमाग़ में विचार कौंधा।

वह विषण्ण मुखमुद्रा में शराफोगलू के कक्ष में दाखिल हुआ।

"पादप पियो, आराम कर लो, बेवफा दोस्त, उसके बाद सुनाओ कि सामूहिक फार्म के क्या हाल हैं," शराफ ने नम्रतापूर्वक कहा।

"बेवफा?" क्यों नहीं, बेशक नजफ रुस्तम को शराफोगलू की नज़र में गिरा चुका होगा। रुस्तम ने भौंहें सिकोड़कर तम्बाकू की थैली निकाली उसकी उंगलियां कांप रही थीं और शराफोगलू ने देख लिया कि इस वक़्त के दौरान मित्र के सिर के कितने सारे बाल पक चुके हैं। लेकिन रुस्तम की कठोर व साहसपूर्ण मुखमुद्रा बता रही थी कि वह उम्र को अपने

वैज्ञानिक क्या कर रहे हैं? आखिर हमारे यहा विज्ञान अकादमी है, प्रोफेसर हैं, सहायक प्रोफेसर है " वह कुछ नही जानता था कि प्रोफेसर क्या होता है, पर शब्द अत्यधिक प्रभावशाली था। "'ऐ, कामरेड वैज्ञानिको, फौरन कोई ऐसी मशीन बनाइये, जो इन सुन्दरियो को गुलामाना मेहनत से छुटकारा दिला दे।' मैने चिल्लाकर यही कहा। क्या गलत कहा?"

"ठीक, बिलकुल ठीक कहा," शराफोगलू ने नजफ की व्याकुलता पर मुग्ध होते हुए कहा। "लेकिन अब मशीन तो तैयार कर ली गयी है, फिर भी ऐसे लोग मौजूद हैं, जो उसे स्वीकार करने को तैयार नही हैं, काम मे लेना नही चाहते हैं।"

"उन्हे डर है कि सामूहिक किसान की आय कम हो जायेगी। हमारे रुस्तम को दिखा देंगे कि मशीन स्वीकार न करने का क्या मतलब होता है! इसीलिए हमने वसत मे ही मरम्मत शुरू कर दी है। मुई है ही ऐसी जगह कि अगर चिलचिलाती धूप पडने तक मशीनो की मरम्मत न की जाये, तो कुछ नही किया जा सकता है। धूप मे तेजी आते ही उबलने, तपने लगता है, मरम्मत करने मे देर हो जाती है।"

मूल मुगानवासी शराफोगलू यह नजफ के बताये बिना भी जानता था, पर उसकी बात वह अत्यत ध्यानपूर्वक सुन रहा था।

"लेकिन, कामरेड उपनिदेशक, मशीन तो मशीन होती है, फिर भी कुदाल तो रह ही गया है! मिट्टी ढीली करने और कपास के पौधो के इर्द-गिर्द मिट्टी के ढूहे बनाने के काम तो हाथ से ही करने पडते हैं।" नजफ ने अर्थपूर्ण मुद्रा मे अपने मोटे होठ बाहर निकाले।

"इसे खतम करना मुश्किल नही है," शराफोगलू ने कहा। "मेरे कहने का मतलब है, मुश्किल है," उसने जल्दी मे अपनी बात ठीक की, "लेकिन सम्भव है। हम सारे सामूहिक किसानो को कायल कर देंगे कि कपास की बोवाई वर्ग-गुच्छ पद्धति मे करनी चाहिए, मशीनो को हम सुधारेगे—फिर कुदाल की जरूरत ही खतम हो जायेगी।"

"जरा हमारे उनको ... कोई मजबूर करके तो देखे ..."

"आप लोग तो उस पर थूकना चाहते है!" शराफोगलू हस पडा।

नजफ सकपका गया।

"इतने माननीय कार्यकर्ता पर थूकना बेशक ठीक नही है," शराफोगलू ने गम्भीर स्वर मे कहा। "यह अनुचित है। लेकिन उसे इशारा कर देना चाहिए। ठीक रहा न? बहुत ही अच्छी बात है। जाओ..."

मे पड जाता हू तुम मे अपने काम के प्रति उत्साह नही है, तुम्हारा कुछ ठण्डा पड गया है। और तुम्हारे मातहतो मे भी लगन नही रहती।"

'क्या बहुत सारे अनाम पत्र पढ लिये है?" रुस्तम ने द्वेषभाव से कहा।

'अनाम पत्र भी पढ़ता हू। क्या तुम्हे भी उनमे दिलचस्पी है?" शेगनू ने सेफ खोलकर मुडे-तुडे लिफाफो मे रखे चार पत्र निकाले। "न मैं इन पर खास ध्यान नही देता हूं," उसने पत्र सरसरी तौर से रहे रुस्तम की तरफ कनखियो से देखा कि उसका चेहरा कैसे बदल है और आगे कहा "लेकिन मुझ पर पडे प्रभाव को बेशक ध्यान ना पडता है।" वह हस पडा। "मैं सोचता था कि तुम अपने काम कमियो के कारण उदास हो गये हो, पर मालूम पडा, दोषी मैं हू, कि खाना खाने नही रुका। और तुम मुझसे नाराज हो!"

"किसी ने ठीक ही कहा है: 'गुस्सा अपनो पर ही आता है'," म बडबडाया। शराफोगलू उसे अभी ठीक से नही जानता है। बात नाराज की नहीं है, न ही यह कि उसे उसकी कमियां गिनाई जा रही हैं, से बुरी बात तो यह है कि शराफोगलू रुस्तम का बुरा चाहनेवालो पर वास करता है। किस पर? जैसे नजफ, जो अभी-अभी उसके कक्ष से ला था। और अनाम पत्र भी नजफ की ही कारिस्तानी है।

शराफोगलू के स्वर मे कुछ नरमाई झलकने लगी, मानो उसे गुस्से मे से हो रहे रुस्तम पर दया आ गयी हो।

"तुम्हें गलतफ़हमी हुई है! नजफ ने तो तुम्हारा नाम तक नहीं लिया। मने सिर्फ़ काम के बारे मे बाते की थी। लोगो के बारे मे इतना बुरा हीं सोचना चाहिए। क्योकि यह भी अपनी तरह का एक रोग है: आदमी । संदेह का कीडा पनपने लगता है और उसे सब अपने दुश्मन नजर आने लगते है।"

रुस्तम ने तुरत विश्वास कर लिया कि नजफ उसके समक्ष दोषी नही है, लेकिन उसने फिर भी शिकायत जरूर की है।

"काश, तुम जानते कि मुझे कितनी मुश्किल हो रही है! मेरे अदर सब चुका जा रहा है! दिन-रात दौड-धूप करता रहता हूं, जी-जान से कोशिश करता रहता हू, लेकिन शुक्रिया के बजाय नुक्ताचीनी ही सुनने मिलती है! नही, बेहतर होगा, मैं यहा से छोडकर चला जाऊ, सिफ हूगा, मामूली टोली-नायक बन जाऊंगा। आशा करता हू, तुम

पर हावी नहीं होने देना चाहता और दृढ़ इच्छाशक्ति से बुद्धिमत्ता पर विजय पाने की आशा करता है।

"तुम आखिर पूछते क्यों नहीं हो कि मैं तुम्हारे सामूहिक फार्म से खुश हूँ या नहीं?"

रुस्तम ने प्रसन्नता से कंधे उचकाये।

"पूछने की जरूरत ही नहीं है। फौरन जाहिर हो गया था, जब तुमने खाना खाने से इनकार कर दिया था।" उसने एक कश लगाकर धुएं का एक घना बादल छत की ओर छोड़ा। "तुम सारे जिला कर्मचारी एक-से हो। पूरे व्यवहारवादी!"

"मैं तुम से एक दोस्त की तरह मोर्चे के साथी होने के नाते बात कर रहा हूँ," शराफोगलू ने उलाहना दिया।

"कैसे भी बात करो, मतलब तो एक ही है!"

"यानी तुम सामूहिक फार्म के हाल से सन्तुष्ट हो?"

तम्बाकू के धुएं का बादल छत की ओर बढ़ा। रुस्तम मौन रहा।

"तुम क्या यह मानते हो कि सारे जिला कर्मचारी प्राणहीन मशीनें हैं? क्या यही बात है? हमारे बीच में कुछ ऐसे भी हैं, पर हैं बहुत कम। हम पूरी कोशिश करते हैं कि ऐसे लोग बिलकुल ही न रहें. जिला कार्यकर्ता होना कोई आसान काम नहीं है, इतना विश्वास रखो। तुम भी तो नेतृत्वकारी कर्मचारी हो, चाहे जिला स्तर के न सही। सामूहिक किसान शायद तुम पर भी व्यवहारवादी, बेरहम होने का आरोप लगाते होंगे, क्यों?"

"मुझमें ऐसा दोष नहीं है!" रुस्तम के स्वर में ईमानदारी झलकी।

"बात जैसे ही तुम पर आयी, मालूम पड़ा कि तुम में कोई कमी नहीं है," शराफोगलू ने व्यंग्यपूर्वक कहा।

"अरे, दोस्त, बाल की खाल मत निकालो। हर आदमी में कुछ न कुछ कमी होती ही है। और रुस्तम भी बेदाग नहीं है। अगर रुस्तम टेढ़े मिजाज का है, तो यह उसका अपना मामला है, इसका समतकालीन बोआई से कोई वास्ता नहीं है।"

"मैं नहीं मानता!" शराफोगलू ने सिर हिलाया। "कुछ ऐसी कमियां तुम में हैं, जिनसे सैकड़ों लोग परेशान होते हैं। मैं तुम्हें कई बार आगाह कर चुका हूँ। सामूहिक फार्म अब विशाल और जटिल उद्यम है, उसका संचालन आंखों पर पट्टी बांधकर और केवल अपने अनुभव और अपनी बुद्धि पर भरोसा करके नहीं किया जा सकता। जब-जब मैं तुम्हें देखता हूँ तो

"कितना सुन्दर है! कितना सुन्दर है! बच्चों के लिए जीता-जागता खिलौना है!" असलान ने प्रशंसा की।

"इसे आपके प्रति सम्मान के प्रतीक में स्वीकार कीजिये! सच्चे दिल से है!" रुस्तम ने कहा और तुरन्त छौने को खोलकर ड्राइवर को आवाज़ दी. "ले, बेटा, गाड़ी में रख दे इसे।"

ज़िला समिति के ड्राइवर ने असलान की तरफ प्रश्नात्मक दृष्टि से देखा।

"आपको यह क्या सूझी, रुस्तम-जोरी?" असलान ने धीरे से पूछा, पर सामूहिक किसानों व रुस्तम को उसका कठोर स्वर किसी भी चीख से कम न लगा। "इस तरह तो स्तेपी के हिरनों को कोई भी सामूहिक फार्म की भेड़ें समझ बैठ सकता है।" और ड्राइवर की ओर मुड़कर शुष्क स्वर में बोला. "इसे वापस बांध दो।"

रुस्तम का चेहरा खीज के मारे तमतमा उठा। जैसा कि दिख रहा था असलान लोगों के मध्य केवल औपचारिक सम्बंधों को ही मान्यता देता था, अतिथि-सत्कार की परम्पराओं की उपेक्षा करता था ..

पार्टी की ज़िला समिति नये बाग से घिरे एक दोमंज़िला इमारत में स्थित थी। एक तरफ, घोड़े बांधने के खूटों के पास दो ऊंची बांधी हुई पूंछोंवाले घोड़े काठी कसे खड़े थे। वहीं कीचड़ में सनी जीप और एक अभी-अभी गराज से निकली, साफ़-सुथरी कार खड़ी थी।

स्वागतकक्ष में बाके कट की काली मूंछोंवाला युवा सहायक टाइप कर रहा था, उसने रुस्तम को देखकर सिर हिलाया

"अंदर जाइये, अभी-अभी आप ही के बारे में पूछ रहे थे।"

असलान मेज़ पर हाथ पर गाल रखे बैठा था और एकाग्रचित्तता से अपने सम्भाषी की बात सुन रहा था। गोशालखा? बस इसी की कसर रह गयी थी! ज़रूर, हफ्ते-भर की जमा की हुई ताज़ा चुगलियां जमा करके लाया होगा।

"क्या हाल हैं, कामरेड रुस्तमोव?" सचिव आगंतुक की ओर अपना छोटा-सा ताकतवर हाथ बढ़ाकर उठ खड़ा हुआ।

रुस्तम घबराहट के कारण हड़बड़ा गया और अटक-अटककर बोलता हुआ वसन्तकालीन बोवाई का ब्योरा बताने लगा, पर असलान ने उसे टोक दिया.

"यह हमें बोवाई की रिपोर्ट से मालूम है।" उसने अपने सामने रखे

अगर काम आगे भी इसी तरह होता रहे, तो आप लोग सारे ... का कपास की पैदावार में पीछे छोड़ देंगे और आपको जिले में प्रथम स्थान मिलना निश्चित हो जायेगा।"

इसकी अपेक्षा न कर रहा रुस्तम आत्मसन्तोष से मुस्करा पड़ा, मगर ही उनके चारों ओर जमा हुए सामूहिक किसानों के चेहरे भी खिल उठे।

"पूरा विश्वास रखिये, कामरेड असलान, हम जो कहते हैं, ... दिखाते हैं," रुस्तम-बोबो ने बड़प्पन से कहा। "प्रति हेक्टेयर उपज के बारे में भी चिन्ता मत कीजिये 'लाल झण्डा' वाले की योजना पच्चीस क्विंटल प्रति हेक्टेयर की है, जब कि हमने प्रबंध समिति में प्रति हेक्टेयर ... क्विंटल पैदा करने की ठानी है!"

"इस बारे में मैं क्षेत्रीय समाचारपत्र में पढ़ चुका हूं," असलान रुस्तम को और सामूहिक किसानों को भी यह स्पष्ट करते हुए मुस्कराया कि वह प्रतियोगिता की पूरी जानकारी रखता है। "लिखना तो आसान होता है, पर उसे कर दिखाना मुश्किल होता है।"

"इसीलिए तो मैंने तब 'लाल झण्डा' में बहस की थी," रुस्तम ने याद दिलायी। "जनता की सहमति के बिना एक कदम भी नहीं चलेंगे। जैसी जनता की इच्छा, वैसी ही मेरी!"

"यह बिलकुल सही बात है," ... प्रति

प्रकट की और मृगशावक की ... तथा

रेशमी और स्पर्श में f c ...

कागज़ पर हथेली मारी। "हमें यह भी मालूम है कि सामूहिक फ़ार्म पिछड़ रहा है। शायद कामरेड शराफ़ोगलू आप से इस बारे में बात कर चुके हैं। मैं पहले ही बता दूं कि पार्टी की जिला समिति को विश्वास है कि 'नवजीवन' के सामूहिक किसान कठिनाइयों पर काबू पा लेंगे लेकिन इस समय जिला समिति को बिल्कुल दूसरे ही सवाल में दिलचस्पी है।"

असलान जब तक बोलता रहा, रुस्तम उसके लहजे से यह अंदाज लगाने की कोशिश करता रहा कि शोग़ातवा ने अपना नीच काम किया है या नहीं। लेकिन सचिव अभेद्य था।

"पार्टी, कामरेड रुस्तमोव," असलान ने आगे कहा, "स्थानीय पहलकदमी, मेहनतकशों की पहलकदमी को बहुत बड़ा महत्त्व देती है। इस पर काफ़ी अरसे से ध्यान नहीं दिया जा रहा था, केन्द्र सामूहिक फ़ार्मों को फसलों की अदला-बदली, बीजों की किस्मों और कृषि कार्यों की अवधियों के बारे में निर्देश देता रहा। अब यह समाप्त कर दिया गया है। अब, जैसा कि आप जानते हैं, पार्टी आशा करती है कि सामूहिक किसान स्वयं स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप समृद्धि के अधिकतम विश्वसनीय और तीव्र रास्ते खोज निकालेंगे। आप बताइये कि क्या आपने इस पर विचार किया है?"

रुस्तम को आशा थी कि बोवाई, सिंचाई के बारे में बातचीत शुरू होगी और उसे संदेह नहीं था कि असलान अपने पूर्वाधिकारियों की तरह ही उसे उपदेश देने लगेगा, झिड़की देने व हर प्रकार की अन्य विपत्तियों की चेतावनी देगा। पर बातचीत कुछ असाधारण ढंग से शुरू हुई और इसके लिए वह तैयारी करके नहीं आया था। समय पाने और अपने विचारों में तारतम्य बिठाने के इरादे से उसने तम्बाकू की थैली की ओर हाथ बढ़ाया।

"पाइप पी सकता हूं?"

असलान ने "कृपया धूम्रपान न करें" की तख्ती की ओर देखा और स्नेहपूर्वक मुस्कराकर कहा

"अगर रहा नहीं जा रहा है, तो पीजिये।"

"रहा क्यों नहीं जा सकता? सब्र कर लूंगा।" रुस्तम ने तम्बाकू की थैली वापिस जेब में रख ली और याद कर-करके सवाल और सामग्रियों के बारे में अपने विचार बताने लगा। असलान दिलचस्पी के साथ सुनता रहा, पर उसने फिर अध्यक्ष की बात बीच में ही काट दी।

"आपके विचार आकर्षक और दूरगामी महत्त्व के हैं। मैं इनका अनुमोदन करता हूँ। लेकिन ये विचार अकेले रुस्तम-कौशी के हैं या फिर कम से कम कार्यालय के हैं। आखिर सामूहिक किसानों के खुद के सुझाव क्या हैं?"

रुस्तम सकपका गया। उसके लिए यह स्वीकार करना कठिन था कि उसने लोगों से सलाह नहीं की थी, क्योंकि अगर सच कहा जाये, तो उसे इसकी जरूरत ही महसूस नहीं हुई थी और उसने आम शब्दों में जवाब दिया कि साधारण मेहनतकशों के मूल्यवान सुझावों को कार्यालय ध्यान में रखता है।

"ठोस बात बताइये!" असलान ने अनुरोध किया।

रुस्तम ने कितना ही जोर क्यों न लगाया, पर वह सलमान के साथ रात में हुई बातचीत के अलावा और कोई ठोस बात याद नहीं कर सका।

"देख लिया," सचिव ने कष्टकारी चुप्पी तोड़ते हुए कहा, "बुरी बात हुई न? आखिर क्यों? इसलिए कि आपकी योजनाओं में जनता की इच्छाओं की अभिव्यक्ति नहीं होती। जब कि पार्टी हमसे कहती है सर्वप्रथम जनता की पहलकदमी का समर्थन कीजिये। हमारी सारी जनता प्रतिभाशाली है और हम, नेता लोग, केवल उसकी बुद्धि और प्रतिभा के कारण शक्तिशाली हैं। एक जमाना था, जब एक ही नेता का मत कानून का रूप ले लेता था, जिले के लिए भी और जनतन्त्र के लिए भी। इसके परिणाम बुरे निकले, तुम खुद ही जानते हो। कहावत है 'एक और एक ग्यारह होते हैं'। कुछ नेतागण बुजुर्गों की यह सीख भूल गये, अपने को जनता से ऊपर समझने लगे, जनता को तुच्छ मान बैठे। उन्होंने जमीन जोतनेवालों को, मशीनें बनानेवालों को, पेट्रोल निकालनेवालों को और स्कूली बच्चों को लिखना-पढ़ना सिखानेवालों को भी सिखाया। उसके अलावा वे यह भी मांग करते रहते थे कि उनके प्रति आभार व्यक्त किया जाये, 'हुर्रा' चिल्लाया जाये, तालियां बजाई जायें इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं कि ऐसे नेताओं के दिमाग चढ़ गये थे, वे मूर्खतापूर्ण और कानून-विरोधी काम करते थे, उन्होंने लोगों को दुख पहुंचाया और अंत में खुद ही अपनी बदनामी करवायी।"

रुस्तम सुन रहा था पर किसी तरह समझ नहीं पा रहा था कि असलान क्यों उसे इतने उत्साह के साथ जनता से अलग हुए नेताओं के बारे में बता रहा है। इस तरह के भाषण उच्च पदों पर आसीन व्यक्तियों को

करता हू कि मेरे सामने जिला जन-शिक्षा विभागाध्यक्ष से पूछिये वह मुझसे क्या चाहते हैं? हा, एक बार हम दोनों मे कहा-सुनी हो गयी थी, मैं इनकार नही करता इन्होंने दो फालतू बातें कहीं, मैंने—चार यही दोष है मेरा।" रुस्तम ने हाथ पूरे फैला दिये। "लेकिन अब, अब यह क्यो मेरे पीछे पडे हुए हैं? कभी पशुपालन फार्म भागे आते हैं, असन्तुष्ट लोगो को जमा कर लेते हैं, तो कभी खेतो की खाक छानते हैं, मीटिंगें करते हैं! ऊब चुका हू मैं इस सब से, इतना कि बस पूछिये मत!"

गोशातखा की गरदन तमतमा उठी, नुकीली नाक हिलने लगी, लेकिन असलान ने हाथ उठाकर एक तरह से उसे रोक दिया।

"मैं देख रहा हू कि हम एक दूसरे को समझ नही पा रहे हैं, रुस्तम-बोशी," सचिव ने नम्रतापूर्वक कहा। "मैंने तुम्हे यहा भेडें पालने और कपास बोने के तरीके सिखाने के लिए नही बुलाया है। यह तो तुम्हे हममें से किसी से भी ज्यादा अच्छी तरह आता है। लेकिन कुछ ऐसे सवाल हैं, जिन्हे मैं ज्यादा अच्छी तरह समझता हू, इसलिए मुझे तुमसे साफ-साफ बात करने का अधिकार है। पार्टी हमे यही शिक्षा देती है। और पार्टी कम्युनिस्ट के लिए सर्वोपरि है। यही बात है न?"

"पार्टी मुझे अपना सीना ठोक-ठोककर दावा करनेवालो से सौ गुना ज्यादा प्यारी है!"

"यह तो बहुत अच्छी बात है, कामरेड रुस्तम! यानी तुम मानते हो कि भेडपालन और फसल काटने से भी कुछ ज्यादा महत्वपूर्ण प्रश्न हैं। दुनियादारी के सब से मुश्किल कामो से भी मुश्किल . मैं, जैसा कि तुम शायद अदाज लगा चुके होगे, लोगो के प्रति व्यवहार की बात कर रहा हू। जरा सोचो तो सही—क्या सामूहिक फार्म का अध्यक्ष, कारखाने का प्रबधक, पार्टी कार्यकर्त्ता पार्टी के निर्णयो को कार्यान्वित कर सकता, अगर वह लोगो को एकजुट नही कर सकता, उन्हें प्रेरणा नही दे सकता? मैंने तुम्हारे साथ आम पहलकदमी और साधारण सामूहिक किसानो की रचनात्मक पहलकदमियो के समर्थन की बात यूं ही नहीं छेडी थी।"

"और मैं, आपके खयाल से, क्या करता हूं?" रुस्तम ने हथियार नही डाले। "दिन मे भी और रात मे भी खेत मे मौजूद रहता हूं। आराम की जगह मे बैठकर वक्त नही काटता हूं, कुछ लोगो की तरह आठ से पांच बजे तक काम नही करता हूं। मुझे चिन्ता रहती है—केवल सामूहिक फार्म की।"

हमेशा की तरह वह इस बात की अच्छी तरह [illegible] रहा था, और उसके स्वरों में [illegible] दुर्बलता नहीं हुआ।

"तुम शायद विश्वास नहीं करोगे, [illegible] अस्लानोव, तुम्हारे सिवा और कोई व्यक्तिगत बात न इसका [illegible] करना। क्या तुम आसान काम [illegible] ज्यादा जिम्मेदारी नहीं थी? [illegible] प्रयोगशाला का ही था। [illegible] ही शहर में [illegible] थे, वहां आराम का काम छूट गे। वेतन भी उसी दर में [illegible] इसे [illegible] का सुझाव भी दिया गया था, पर किसी कारण नहीं बन सका। और मैं किस कर्मचारी [illegible] बना? मुझे [illegible] कभी सामूहिक फार्मों का काम नहीं समझना पड़ा था।"

"इसी लिए तो प्रयोगशाला का अपना [illegible] बना गया है।" [illegible] ने सोचकर सोचा। "[illegible] तो सामूहिक फार्मों के मामलों में इतनी ही और भरोसा करता है [illegible] पर।"

असलान समझ गया कि रुस्तम की आंखों में उदासी की चमक आयी, पर वह बिना आवाज ऊंची किये शान्तिपूर्वक बोलता रहा

"मैं विज्ञान अकादमी में काम करता था। जहां तक मेरा सवाल वहां मेरी इज्जत की जाती थी। पत्नी हाई स्कूल में पढ़ाती थी, ब पढ़ रहे थे। पर मैं सब छोड़कर यहां आ गया और यह मत से कि मुझ पर दबाव डाला गया, मुझे मजबूर किया गया,—नहीं, मर्जी से आया। क्यों? इसलिए, क्योंकि जिस विज्ञान को मैंने अपना जी समर्पित किया है, उसके भाग्य का निर्णय यहां, मुगान में हो रहा है। पार्टी भी कृषि के उत्थान में अत्यंत एकाग्रचित्तता से जुट गयी है। ऐसे सम में कम्युनिस्ट के लिए अपने व्यक्तिगत लाभ की सोचना अपमानकार होगा।"

"यह क्या कृषिविद है? या अर्थशास्त्री है?" रुस्तम ने सोचा।

"मुझे यहां यानी मुगान में संघर्ष की उत्कट इच्छा खींच लायी, असलान ने आगे कहा। "संघर्ष केवल फसल या केवल कपास के लिए नहीं बल्कि जनता की खुशहाली के लिए भी किया जा रहा है . "

रुस्तम को फिर इस शहरी बुद्धिजीवी के प्रति अपने मन में आदर के भाव की अनुभूति हुई, जो उन जिला अधिकारियों जैसा नहीं था, जिनक

वह [illegible]

था, '

"और मैं भी यही कोशिश करता हूं कि सारे लोग खुशहाली की ज़िंदगी बसर करें, कामरेड असलान," सामूहिक फार्म के अध्यक्ष ने कहा और सारी बातचीत के दौरान पहली बार मुस्कराया।

असलान का सहायक कई बार दरवाज़ा थोड़ा-थोड़ा खोलकर खास भुका —वह स्मरण करा रहा था कि स्वागतकक्ष में मुलाकाती प्रतीक्षा कर रहे हैं . .

शायद यह मुलाकात वैसे ही शांतिपूर्वक समाप्त हो गयी होती, पर ज़िला गोशातखा रुस्तम के साथ मुठभेड़ से बाज नहीं आया।

"बातचीत अपनी जगह होती है, पर सामूहिक फार्म की हालत के बारे में ज़िला समिति के ब्यूरो में विचार करना ज़रूरी है," कहकर गोशातखा ने कुछ सोचा और आगे बोला "सामूहिक फार्म के सक्रिय सदस्यों की पूर्ण सभा में।"

"धमकी मत दो!" रुस्तम तत्क्षण कह पड़ा। "मैं डरनेवालों में से नहीं हूं। चाहे सौ बार जांच करो—मुझे कोई डर नहीं।"

असलान ने मेज पर पेंसिल से खटखटाया और कहा कि गोशातखा का सुझाव पूर्णतया उचित है और आदरणीय रुस्तम-कीशी को धमकाने का इरादा किसी का नहीं है। साथ ही रुस्तम को चाहिए कि वह फौरन ज़िला कार्यकारिणी समिति आकर पशुपालन फार्म के लिए दवाइयों का बक्सा, ..., रेडियो सेट और चल-पुस्तकालय ले लें। असलान को संदेह नहीं है कि रुस्तम-कीशी अपनी स्वाभाविक सक्रियता दिखायेगा और पशुपालन फार्म को सलीके से रखेगा। और आज की बातचीत के बारे में वह गम्भीरता से सोचेगा और समझ लेगा कि हर काल की अपनी विशिष्ट आवश्यकताएं होती हैं और बुद्धिमान व्यक्ति उन्हें ध्यान में रखते हैं। अंत में यह कि सामूहिक फार्म के अध्यक्ष को यह याद रखना चाहिए: पार्टी उसे मेहनतकशों के प्रति निष्ठुरता के लिए कभी क्षमा नहीं करेगी।

"काम हम पूरा कर लेंगे, मैं वादा करता हूं!" रुस्तम उठ खड़ा हुआ। "बस बुरा चाहनेवालों के मुंह बंद रखे जायें! मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन और शायद समाचारपत्र में लगातार बनाम पत्र भेजते रहते हैं।"

असलान सोच में पड़ गया।

"मैं बनाम पत्रों को महत्त्व नहीं देता, लेकिन तुम्हें अगर वे परेशान करते हैं ... ठीक है, देखूंगा, पता लगा लेंगे कि उन्हें किसने लिखा है।"

...ी बात थी, रुस्तम तुरंत शांत हो गया और

का मत भी झगड़े मे न हो जाये, जिससे गराश फिर रात मे
: चला जाये।
उसने इच्छा न होते हुए भी दुखी स्वर मे गराश से पूछ ही

, सुख क्या होता है?"
ने बिना सोचे, जैसे उसे पहले से पता हो कि उससे क्या पूछा
वाब दिया -
वारिक जीवन का सुख इसी मे है कि पति का सदा नम्रतापूर्वक
ा जाये, उसका दिल बहलाया जाये और उसे तसल्ली दिलायी

ने भोले हो तुम..." माय्या के चेहरे पर कटु मुस्कान फैल

' इसी तरह सोचने का तरीका आता है। अपनी अक्ल से दूर
ा सोच सकता।"
मी मे ऐसा क्यो होता है: पहले सब बहुत सुदर लगता है, देखने
ाशा होने लगती है..." माय्या ने प्रकट मे सोचते हुए कहा।
। यह दर्शन हम मशीन-आपरेटरो के लिए नही है... माय्या,
स्ने छोड़ो इसे! .. मुझे आखिर काम करना है, दिन-भर ट्रैक्टर
ता हू," गराश ने दुखी स्वर मे कहा और पलग से कूदकर
कपडे पहनने लगा। ""यह भी कोई जिदगी है! बडी मुश्किल
देश झाड़ना बद ही नही होता...

[illegible]

नजनाज पूरे दिन से गराश के साथ भर रही थी, शीघ्र ही वह [illegible] गया कि उसका [illegible] है और उसे अपनी आँखें मुँदी महसूस होने लगीं।

वह सोचकर चाहकर बढ़ने को तैयार था कि नजनाज कमरा छोड़कर नहीं गयी, लेकिन न जाने कैसे उसके बदन पर ब्लाउज व स्कर्ट के बजाय हर हरकत पर सरसरानेवाला रेशमी गाउन आ गया।

"तुम्हारी सेहत के नाम पर!" गराश ने अत्यधिक साहस करके बोतल छलकाते हुए जाम पी डाला। नजनाज ने नैसर्गिक से उसकी ठोड़ी पोंछ दी। "तुम यह मत सोचना कि मैं नशे में हूँ, मैं पूरे होश में हूँ! मैं कहता हूँ..." गराश बुदबुदाया, पर सममान कमरे से नदारद था और नजनाज ने सोफे पर तकिया रखकर फूँक मारकर लैम्प बुझा दिया।

जब गराश की आँख खुली, आधी रात हो चुकी थी, कमरे में घुप अँधेरा छाया था। वह शुरू में नहीं समझ पाया कि वह कहाँ है, लेकिन जब उसने लम्बा गाउन पहने नजनाज को और उसकी नंगी बाहें देखीं, तो वह सब समझ गया और बोला

"बत्ती जला दो।"

"क्या हुआ तुम्हें? सिर चकरा गया?"

गराश अंधे की तरह हाथ आगे किये टटोलता-टटोलता दरवाजे तक पहुँचा, उसने किवाड़ खोल दिया, ताजा हवा में साँस ली और उसके दिमाग में ताजगी आ गयी; उसने घृणापूर्वक आज रात की यादों को अपने दिल से दूर भगा दिया।

"जब कभी ऊब होने लगे, आ जाया करना," कमरे से नजनाज की शान्त, अत्यधिक शान्त आवाज आयी।

गराश गली में निकल गया।

पूर्व में आकाश उजला होने लगा था, पर भोर में अभी काफी [illegible] ?.. लेकिन माम्या पूछेगी "कहाँ थे?" गराश झूठ

बोल सकेगा, सब सच-सच बता देगा। परिवार मे वैसे ही नही बन रही है

और गराश खेत चल पडा। सारे रास्ते वह अपने को तसल्ली दिलाता रहा "इसमे ऐसा हुआ ही क्या है? पी ली, डटकर पी ली, मर्दों मे ऐसा कौन है जो नहीं पीता? अरे, कुछ नही हुआ!" लेकिन उसके दिल मे धुध छायी हुई थी।

६

माय्या जल्दी जाग गयी। उसकी सास ने शाम को ही उसके लिए उबले हुए अण्डो, सेडविचों व रोटी की पोटली बाध रखी थी।

"यह कोई भारी थोडे ही है," सकीना उसे रवाना करते समय सदा यही कहती थी। आज भी उसने बहू को प्यार से गले लगाया और उसे सब तरह की मंगल कामनाए की।

दोपहर तक माय्या को एक मिनट की भी फुरसत नही मिल पायी उसने सारे खेतो का चक्कर लगाया, नालियों की मरम्मत की जाच की, पानी देनेवालो को सलाह दी और जब वे कुदाले पटककर खाना खाने के लिए रवाना हो गये, तो उसे महसूस हुआ कि वह कितनी थक गयी है और उसे कितनी तेज भूख लगी है।

वह टेकरी पर मुख्य नहर के मुहाने के पास बैठ गयी, जहा नरम कुंचित हरियाली फैली हुई थी। वहां इतनी शान्ति थी कि उसे मूम के सूर्य से निकल जाने से सूखी मिट्टी का ढेला नाली मे उछटकर गिरने की आवाज भी सुनाई दे गयी। खामोश स्तेपी धूप मे तप रही थी।

माय्या थैले का तकिया बनाकर घास पर पैर पसारकर लेट गयी और आंखें मूद ली। स्तेपी मे व्याप्त निस्तब्धता गीत की तरह गूज रही थी। तपती सूखी चमक माय्या को लोरी-सी गुनगुनाती सुना रही थी। उसका मन कर रहा था कि वह इस धूपहली नीरवता मे सारे कष्टों को भूलकर, जिनके कारण उसे रात-रात भर नीन्द नही आती थी, वैसे ही अनन्त काल तक लेटी रहे। और शान्ति उसे निरन्तर प्रगाढ निद्रा के सागर मे गोते खिलाने लगी।

नाली के पास से गुजर रहे घुडसवार की नजर निद्रामग्न माय्या पर
, और उसने मानो मोहित होकर अपने थके घोड़े की

उसे चाट लिया। उसने फिर झाड़ी में कूदकर, उसकी सफ़ेद [illegible] चाट लिया और दबे पांव चलता, मानो ग्रांखों की नींद मातम [illegible] कर रहा हो, माय्या के पास आकर बैठ गया।

पर उसने गुर्राहट, काबादी से उसके शरीर को एकटक देखता [illegible] बैठा रहा।

माय्या ने अचानक चौंककर आंखें खोलीं और सलमान को देखकर झट से अपनी टांगें ढक लीं, अधबैठी हो गयी और शर्माती हुई हंस पड़ी।

"मुझ पर नींद ऐसी हावी हुई कि कुछ सुनाई नहीं दिया "

"मैं वसन्त की बोवाईवाले खेत से लौट रहा था," सलमान मदहोश मुस्कान के साथ बोला, "अचानक दिव्य प्रकाश देखा, मानो इन्द्र-धनुष हो, मेरी आंखें चौंधिया गयीं और घास पर लेटी खानम दिखाई दे गयी सच मानिये, मैं तो डर गया था, कहीं बेहोश तो नहीं हो गयी, या लू तो नहीं लग गयी, पर फिर नियमित, धारोष्ण दूध जैसी मधुर सांस सुनकर चैन आ गया। मैंने तुम्हारी रखवाली करने की सोची, खानम।"

माय्या ने झट-से उठकर अपने कपड़ों से धूल और सूखे तिनके झाड़े और थैला उठा लिया।

"तुमसे खेत में दूसरी बार मुलाकात हुई है और हर बार मुझे अचरज होता है कि तुम मेरा कितना ध्यान रखते हो।"

"हुक्म करो—जब चाहो, तुम्हारे लिए जान देने को तैयार हूं!" सलमान जोश में कह उठा, पर जब माय्या ने असन्तोष से भौंहें सिकोड़ीं, तो भोले-भाले अंदाज में कहने लगा "लेकिन सुनसान खेत में अकेले सोना फिर भी लापरवाही है "

"कहां सुनसान है?" माय्या ने स्तेपी की तरफ़ इशारा किया: सिंचाई करनेवाले खाना खाकर लौट रहे थे, रास्ते पर पास दोनों घोड़ागाड़ियां अपने पीछे धूल के गुबार उड़ाती चली जा रही थीं, पास के खेत में सामूहिक किसान खर-पतवार जला रहे थे। "वैसे भी यहां के लोग सीधे-सादे और खुशमिजाज हैं, उनके बारे में बुरा सोचना पाप है।"

"तुम्हारी पाकीजगी के आगे सिर झुकाता हूं, खानम। मैं अकसर खुद से पूछा करता हूं दुनिया में कोई और एक भी ऐसी दिलकश औरत है? और अब इस नतीजे पर पहुंचा हूं—नहीं, नहीं है [illegible] अफ़सोस कितना [illegible]" और सलमान ने खुश होकर एक गहरी सांस ली।

माय्या ने खीज के बावजूद महसूस किया कि सलमान के शब्द उ
गीनिकर लगे।

ग्रौर वह बोलता रहा

"बड़ी ग्रजीब बात है, खानम! कुछ ऐसे लोग हैं, जिनकी तुलना
मैं बिना पछताये, जानवरों से कर सकता हू काम करते हैं, सोते है
टट भर खाते हैं, फिर सो जाते हैं, फिर उठकर खाने बैठ जाते हैं। ग्रौ
जरा सोचिये, जीवन सारी सुविधाए उन पर लुटाता है। जिसे कहते हैं
खरमैला बकरा साफ चश्मे का पानी पीकर प्यास बुझाता है। लेकिन ऐ
भी लोग हैं—यह सच है कि वे बहुत कम हैं,—जिनको शकाए कचोटत
रहती हैं, भले काम करने की कोशिशो मे जुटे रहते हैं, लेकिन कभी सु
नहीं पाते। ससार को हताश होकर छोड जाते हैं। लेकिन ग्रगर उनक
भाग्य खुल जाये ग्रौर जिन्दगी के जगल मे वे चश्मे पर पहुच जायें, तो
ग्रपने प्यासे होठ उससे छुग्राने से पहले जीवनदायी जल के सामने श्रद्धा
साथ घुटनो के बल बैठ जायेंगे "

"तुम ऐसा क्यो कह रहे हो?" माय्या को ग्राश्चर्य हुग्रा। "क
तुम्हें शिकायत करने की जरूरत है? क्या तुम ग्रपनी इच्छाए पूरी न हो
के कारण तडप रहे हो?"

"हा, हा, खानम, मेरा दिल तडपता है, उसमे टीस उठती है।"

"वही पेरशान के लिए तो नही?"

सलमान चुप हो गया, उसकी ग्रांखें चलने लगी ग्रौर माय्या ने सो
लिया कि उसने बिलकुल सही ग्रदाज लगाया।

"क्या तुमने उससे बात की? उससे प्यार का इजहार किया?"

"इस बारे मे क्या बात करनी है?" सलमान ने दुखी स्वर मे पूछा
"पतझड मे ग्रगूरो को भेज दूगा—या 'हा' या 'नही'। उसने ग्रगू
स्वीकार कर ली, तो इसका मतलब है, उसे कबूल है। इसके लिए
उसका एहसान मानूगा। इनकार कर देगी, तब भी। ग्राह, खानम!
उसने निराशापूर्ण मुद्रा मे सिर को झटका। "मेरी मुसीबत यह है कि
एक ऐसी ग्रौरत को प्यार करता हू, जिसके सामने मुझे उससे प्यार
इजहार करने की हिम्मत कभी नही हो सकती।"

"मुझे तो नहीं लगता कि तुम ऐसे बेबस हो।" माय्या ने सन्देहभ
दृष्टि से सलमान की तरफ देखा। "सघर्ष करो! प्रियतमा के लिए सघ
करो, जीवन मे बिना सघर्ष के कुछ हासिल नही होता!"

लेकिन सलमान चेहरा ऐसे विकृत कर, मानो उसे असह्य पीड़ा हो रही हो, हताशापूर्ण स्वर में रट लगाने लगा

"नहीं, खानम, मैं तो अब ज़िन्दा मुरदा बन चुका हूं, मेरे लिए आशाओं के सारे दरवाज़े बन्द हैं।"

माय्या ने कंधे उचका दिये और पगडण्डी से नाली की ओर चल पड़ी। सलमान घोड़े की लगाम थामे उसके पीछे-पीछे चल दिया।

"क्या तुम अपने ट्रैक्टर-चालक से खुश हो?" वह अचानक पूछ बैठा।

हां, माय्या खुश है। यह बात सलमान हमेशा याद रखे और दूसरों को भी बताये माय्या सुखी है। गराश और वह एक दूसरे को प्यार करते हैं।

"क्यों नहीं!" सलमान ने दांत निपोड़ दिये। "उसकी जगह कोई और होता, तो तुम्हारे हाथ और पैर चूमता। तुम्हें कभी अकेली नहीं छोड़ देता   "

उसने यह बात किस इरादे से छेड़ी है? गराश रात को घर पर नहीं सोता, तो इस कारण से कि सबको जल्दी से जल्दी काम निबटाना है। रुस्तम-कोशी सारे टोली-नायकों और ट्रैक्टर-चालकों को दम नहीं लेने दे रहा है। खुद भी कमरतोड़ मेहनत करता है और दूसरों से भी यही अपेक्षा करता है। क्या माय्या पति से यह हठ करे कि वह अपना काम छोड़कर उसके पास भागा आये? लेकिन उसे बस गराश को एक पल के लिए, चाहे दूर से ही देखने की इच्छा हो उठी

"तुम कहां जा रहे हो?" उसने सलमान से पूछा।

"जहां का हुक्म दो। सुबह से दौड़-धूप कर रहा हूं, पर अभी थका नहीं हूं। सिर्फ़ काम ही है, जो मुझे गम से बचाये रखता है। पर तुम कहां जा रही हो?"

माय्या को यह कहने में शर्म महसूस हुई कि वह पति को देखना चाहती है और उसने सलमान से उसे गूगे हुसैन के खेत में ले चलने का अनुरोध किया।

"जो हुक्म, खानम।"

सलमान ने कुम्मैत के पुट्ठे पर चढ़कर काठी के पीछे बैठने में उसकी मदद की। सलमान के कंधे पकड़े और उसकी पीठ का स्पर्श न करने की कोशिश करती हुई माय्या मन-ही-मन अपने को सान्त्वना देती रही कि उसके व्यवहार में कुछ भी सन्देहजनक नहीं है, केवल सामान्य

शष्टता है। वह तो बस पेरशान की भाभी को मुग्ध करना चाहता है, ताकि वह उसके बारे में कुछ कहे और घमण्डी सुन्दरी पर थोड़ा प्रभाव डाल सके।

माय्या अपने को तसल्ली दिलाकर खेत में नजर दौड़ाने बड़ी अधीरता से गराश को खोजने लगी। उसे ट्रैक्टर-चालक का पेशा रोमानी लगता था। यह अनुभव कर कितने सुख की अनुभूति होती है कि सूरज की प्रखर किरणों में जमकर पत्थर-सी हुई स्तेपी की मिट्टी को हल्के-फुल्के रोंदे में बदल डालनेवाली भीमकाय मशीन तुम्हारे इशारों पर चलती है शीघ्र ही उसके गराश द्वारा डाले गये बीज उग आयेंगे और खेत को हरे-भरे, लोमशी कालीन से ढक देंगे। मुसाफिरों ट्रैक्टर-चालक की मुसीबत है वह सुलगती गरमी में, ठण्ड में, बारिश में और बर्फीली हवा में भी अपने फौलादी घोड़े को छोड़कर नहीं जाता। लेकिन कितनी प्रसन्नता होती है अपनी उगायी हुई घनी फसल देखकर उस क्षण वह अपने घर में, अपनी प्रियतमा से दूर आखों में काटी रातों की थकान भूल जाता है।

सूरज अस्ताचलगामी हो चला था। कुम्मैत घोड़ा सिर झुकाये, पगडण्डी के सहारे उगी घास को मुह में दबाने की कोशिश करता धीरे-धीरे चला जा रहा था। माय्या व सलमान मौन सवारी कर रहे थे। अन्त मे उन्हें आगे खेत के बीच रेंगता ट्रैक्टर नजर आ गया, उसके एक तरफ अस्त होने जा रहे सूरज की किरणों में फीका पड़ा अलाव जल रहा था, उसके इर्द-गिर्द लड़के बैठे थे।

स्तेपी में तो पथिक भी दूर से नजर आ जाता है। जैसे ही थका, पसीने में तर, दो सवारों को ढो रहा घोड़ा खेत में पहुंचा, सब जल्दी से उठकर उनकी तरफ लपके। ट्रैक्टर-चालक ने ट्रैक्टर का इजन बद कर दिया और वहा छाये सन्नाटे में माय्या का स्वर स्तेपी में पक्षी की तरह उड़ चला

"गराश!"

गराश खुशी से फूला न समाता कूदकर भागा। "खुद आ गयी, खुद आ गयी, समझ गयी, बिछोह सहा न जा सका, कितनी समझदार है, मैं कितना कसूरवार हू इसके सामने!.."

भागते-भागते उसे किसी का व्यग्यपूर्ण स्वर सुनाई दे गया

"सलमान कभी पीछे नही रहता ."

माय्या ने फिसलकर घोड़े से उतर, पंजो के बल खड़े हो पति के गले में अपनी गरम-गरम बाहें डाल दी, आखें तक बद कर ली—उसके मन में

था, जैसा कि केरेम की बीमार पत्नी के बारे में बात करते समय रुस्तम-बीशी के चेहरे पर था।

"मैं शराफोगनू को टेलीफोन कर देता हूं, वह पुर्जे भेज देंगे," सलमान ने अचानक हतोत्साह हुए युवक के पक्ष में कहा। उसका निशाना ठीक लगा था सचमुच उसकी सहृदयता माय्या को अच्छी लगी।

गराश ने कोई जवाब नहीं दिया, घास पर आलू का छिलका फेंक दिया, चिक्कट पतलून से हाथ पोछे और उठकर बतख की-सी चाल से ट्रैक्टर की तरफ चल दिया, न उसने मुड़कर देखा और न ही पत्नी को आवाज़ दी

माय्या को यह इतना बुरा लगा कि उसका दिल बैठ गया, लेकिन वह किसी तरह साहस करके पति के पीछे गयी।

अलाव तक गराश का क्रुद्ध स्वर सुनाई दिया

"काम निबटा ले, फिर मैं आ जाऊंगा। कहीं भागा नहीं जा रहा, डरो मत।"

"किसका घोड़ा है?" माय्या ने नाली के किनारे बूढ़े चिनार से बंधे मुश्की घोड़े की तरफ इशारा करके ट्रैक्टर-चालकों से पूछा।

दो ट्रैक्टर-चालक अलाव के पास से उठकर घोड़ा लाने भागे। सलमान ने बिना झिझके काठी पर बिठाने में माय्या की मदद की और खुद उछलकर अपने घोड़े पर सवार हो गया। उसका कुम्मैत राजमार्ग पर पहुंचते ही दुलकी चाल से घर की ओर दौड़ पड़ा। कुछ ही क्षणों में अलाव, ट्रैक्टर, हसमुख युवक और चिड़चिड़ा गवार गराश सभी रात के अंधकार में विलीन हो गये। सलमान ने माय्या के बराबर आकर अपने घोड़े को कदमचाल से चलाते हुए सावधानीपूर्वक कहा:

"खानम, हीरे की परख जौहरी को ही होनी है, न कि सूअर चरानेवाले को।"

"नहीं, आप उसे नहीं जानते, वह दिल का भला है!" और माय्या अपना ही प्रतिवाद करती सुबकियां भरने लगी।

"मैं उसे नहीं जानता हूं?" सलमान हंस पड़ा। "उसके दिल में तो मैंने घुसकर नहीं देखा, पर वह अनपढ़, बदतमीज़ और बैर रखनेवाला है, यह मैं स्कूल से ही जानता हूं। न वह खुशमिज़ाज है, न ही बुद्धिमान। जिसे कहते हैं न, देखने में तो भोला-भाला है, पर अंदर से .. तुम खुद ही समझती हो, उसके मन में क्या है! जब तक उसका खून जोश मारता

है, वह अपने को कुछ भाव में रखता है, तुम से चिपटता है, पर मैंने ही ठण्डा पड़ा – पैरों तले रौंद डाले, चाहे तुम पुष्पिता ही क्यों न हो। सोच सोचकर बुरा लगता है – शादी के दो-तीन महीने बाद ही... और तब क्या होगा, जब बच्चे हो जायेंगे "

"खबरदार, जो मेरे पति के बारे में बुरा कहा!" माय्या चिल्लायी "यह नीचता है!"

"ग्रोह, खानम जबान की बड़ी तेज है!" सलमान ने सोचा व क्षमायाचना करने लगा।

"मुझे नफरत है उन लोगों से, जो मुझ पर दया दिखाते हैं। मैं ख जानती हू कि कैसे जीना चाहिए! "

"मैं समझता हू, लेकिन मैं तो ख़ुद पर दया कर रहा हू, न कि तु पर," सलमान हर मिनट बाद ठण्डी सांस लेता बराबर बोलता रह "यह परेशान-वेरशान मेरे लिए क्या कीमत रखती है, मैं तो बस तु प्यार करता हू! और पवित्र प्रेम का निवेदन करने में शर्म नहीं महसू होनी चाहिए, तुम ख़ुद ही कह चुकी हो। तुम्हें देखते ही मेरा दिल ज्वा की तरह धधक उठा! यह गवार तुम्हारी कदर नहीं करता, बिलकुल क़द नहीं करता। बस तुम्हारे 'हा' कहने की देर है, हम दुनिया के दूसरे छो पर चले जायेंगे। अपने आखिरी दम तक तुम्हारा गुलाम बनकर रहूगा!"

"शर्म आनी चाहिए!" माय्या ने उसे टोक दिया। "अगर आप चु नहीं होते, तो मैं फौरन वापस चली जाऊगी!"

"चुप करना मुश्किल थोड़े ही होता है!" सलमान ने कृत्रिम दु:साहस के साथ कहा और वास्तव में वह गाव के छोर तक चुप रहा। जब अपने घर के फाटक के सामने माय्या घोड़े से उतर गयी, सलमान ने दहाना पकड़ लिया और खोखले, नि:शब्द रोदन से रुधे कठ से बोला, "अगर सारी दुनिया तुम से मुह फेर ले, तो याद रखना, एक ऐसा मर्द है, जो माय्या को हमेशा अपने घर में शरण दे सकता है .."

वह तो भली-भांति जानता था कि रुस्तमोव परिवार में क्या हो रहा है।

७

रुस्तम-बीबी की हंसी से सकीना की नींद खुल गयी; उसके खर्राटो ... वह बरसों से आदी हो चुकी थी, उसे पति के तालबद्ध एकसार खर्राटों

से कोई चिन्ता नहीं होती थी, जैसे कि वर्षा के एकरस शोर से, शरत्कालीन हवाओं की चीख से, बाग़ में पत्तियों की सरसराहट से। लेकिन इस समय उसके हंसने से उसका सारा बदन हिल रहा था।

"जिन परेशान कर रहे हैं," मकीना ने अटकल लगायी। "बेड़ा ग़रक़ हो इन्हें रात में परेशान करनेवालों का!"

"ऐ, कोशी, दायीं करवट लेट जाओ!"

"क्या हुआ?" रुस्तम ने सफ़ेद सिर थोड़ा उठाया।

"हुआ यह है कि तुम्हें दिन कम पड़ता है, रातों में हंसते हो और किसी से बातें करते हो.. मैं हज़ार बार कह चुकी हूं: अपने काम-काज और चिन्ताएं घर की देहलीज़ के बाहर छोड़कर आया करो।"

"कितने बजे हैं?"

"क्या पता। अभी रात है..."

"शराश नहीं आया था? अजीब लड़का है! जब तक ग़श खाकर नहीं गिर पड़ेगा, काम से दूर रखना मुश्किल है उसे.. और बहू? देर से आयी थी? उसे ज़िला मुख्यालय क्यों बुलाया गया था?" रुस्तम की नीन्द पूरी तरह खुल गयी और उसने पत्नी पर प्रश्नों की बौछार कर दी।

"देर से लौटी थी शाम को। कह रही थी कि जल व्यवस्था के बारे में मीटिंग थी। उसने भी भाषण दिया था। बहुत तारीफ़ की गयी उसकी। ख़ुदा का शुक्र है, अक़्लमंद है।"

"हुसैन के खेत में हुए दलदल के बारे में भी नहीं भूली होगी, क्यों?" रुस्तम ने हुंकार भरी। "सारे किये-कराये पर पानी फेर दिया!.. उसे ज़िले से कौन लेकर आया?"

"कहती थी, कुछ ज़िला कर्मचारी सामूहिक फ़ार्म आ रहे थे, वे ही उसे अपनी गाड़ी में ले आये।"

"कौन?"

"याद नहीं... कोई प्रशिक्षक था, न जाने ज़िला पार्टी समिति का या ज़िला कार्यकारिणी समिति का और शिक्षा विभागाध्यक्ष .."

पति जल्दी से बिस्तर से उठकर कमरे में चहलक़दमी करने लगा।

"गाड़ी में? शोशानयों के साथ?.. उसके क्या मां-बाप हमारे क़ब्रिस्तान में दफ़नाये हुए हैं? बायें दिन आने लगा! तनैया कहीं का!.."

"अरे, तसल्ली रखो; वह यहां से होकर 'लाल झण्डा' जा रहा था! अगर वह ज़िले का चक्कर काटता है, तो इसका मतलब है, उसे हमारी

. .सकीना रुस्तम की साम नियमित चलते सुन शान्त हो गयी और
भी सो गयी, जब कि रुस्तम अपना बहुत सोच-समझकर तैयार किया
भाषण ऐसे देता रहा जैसे जाग रहा हो

"पाचवीं टोली ने नहर से पानी निकालने का बीस मीटर लम्बा नाला
ने के लिए मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन से बुलडोज़र मगवाया, मशीन ने कुल
घंटे काम किया, जब कि इस मामूली-से काम के लिए किराया देना
—आधे टन दूध के बराबर "

उसे फिर किसी के स्नेहपूर्ण हाथ का स्पर्श अनुभव हुआ और उसने फिर उसे
कर कधे से हटा दिया। आखिर कौन है, जो अपने वास्तव मे मा-
श स्पर्श से उसे कष्टो से मुक्त करना चाहता है? तेल्मी चाची तो नही
सकती! . .

"इस आधे टन दूध की कीमत आपकी जेब से निकाली गयी है,
मरेड सामूहिक किसानो!" रुस्तम-कोशी ने जोश मे कहा। "अगर सहकारी
य का पैसा इस तरह फिजूल खर्च किया जाता रहा, तो दिवाला निकलने
ज्यादा देर नही लगेगी · श्रम-दिनो के भुगतान के लिए एक कोपेक भी
ही बचेगा।"

"ठीक कहा, बिलकुल ठीक कहा!" भीड़ मे से अनुमोदनकारी आवाजें
गयीं, लेकिन अचानक रुस्तम-कोशी के कानो को सुखद लग रही आवाजें
वे, कटु स्वर, मुर्गे की खनकती-सी बाग मे दबकर रह गयी

अन्त मे 'नवजीवन' के अध्यक्ष ने विश्वास व्यक्त किया कि सारे
सामूहिक किसान ... पर आस्तीनें चढ़ाकर उत्साहपूर्वक
मेहनत मे ... दूर कर देंगे और सामूहिक फार्म
को ... न मे प्रथम स्थान पर पहुचा देंगे।
... फ़सल उठायेंगे, हर परिवार को
की तुलना ... ज्यादा मिलेगा!
... भर जायेंगी।
... । फिर हमारा
और भारी हो,
बनना होगा! हा,
करते हुए दृढ स्वर
के

लेकिन क्लब में शान्ति छायी रही, लोग निराशा से एक दूसरे की तरफ देख रहे थे, कधे उचका रहे थे, व्यंग्यपूर्वक दात निपोड रहे थे।

अध्यक्ष का उत्साह ठण्डा पड गया, उसके बदन पर तेज, कटीली चींटियां रेंगने लगी, हड्डिया चरमराने लगी।

"तुमने रज़ाई गिरा दी," सकीना नीन्द में बड़बड़ायी। "तुम्हें यह क्या हो गया है? क्यो छटपटा रहे हो? ठीक से ओढ लो. ."

रुस्तम-कीशी ने जैसे ही रज़ाई कानो तक ओढी, वैसे ही पत्नी का मधुर स्वर अलाव के धुए की तरह कही दूर होकर विलीन हो गया और पास ही कोई अपरिचित, कटु व आग्रहपूर्ण स्वर सुनाई दिया ..

यह तेल्ली चाची तीसरी बार सभा को सम्बोधित करके कह रही थी कि कौन भाषण देना चाहता है, पर सब चुप लगाये बैठे थे।

"कृपा करके, साथियो," चाची आग्रह कर रही थी, "केवल दोषों के बारे में ही नही, उन लोगों के बारे में भी बोलिये, जो इन कमियों के लिए दोषी हैं! और समाजवादी प्रतियोगिता में अपनी की हुई प्रतिज्ञाओं का उल्लेख करना भी मत भूलिये। समझ गये?"

समझने को तो शायद सब ही समझ गये थे, पर बोलने को इच्छुक फिर भी कोई नही मिला। चाची ने आखिर नजफ को मच पर बुलाया।

और निस्सदेह वह घबराया नही, फौरन बेधडक आ पहुचा—यह तुरन्त स्पष्ट हो गया कि एक दिन पहले शेरज़ाद ने उसके खूब अच्छी तरह कान भर दिये थे और उसे सस्ती लफ्फाजी के लिए उकसा दिया था।

रुस्तम-कीशी की पहले तो इच्छा हुई कि रिपोर्ट पेश किये जाने के बाद सलमान बुद्धिमत्तापूर्ण भाषण दे, लेकिन फिर सोचा कि अपने विश्वस्त सहायक को वाद-विवाद के ज़ोरो पर होने पर मैदान में उतारना समझदारी का काम होगा, ताकि वह तथ्यों और केवल तथ्यों के द्वारा आलोचकों और विरोधियों को मुह की खिला दे।

रुस्तम-कीशी यह बात पकडने की पूरी कोशिश कर रहा था, जिस पर ज़ोर देने के लिए नजफ मच पर अपना एडी-चोटी का ज़ोर लगा रहा था। नजफ ने कहा था· "मैं हमारे अध्यक्ष को समझ नही पा रहा हूँ, खुदा गवाह है, बिलकुल समझ नही पा रहा हू! " और वह पूरी से, गेंद की तरह मच से नीचे लुढक-सा आया।

उसका स्थान टोली-नायक महमूद ने लिया, जो अनुभवी, ईमानदार मेहनतकश था, कई वर्षों से रुस्तम-कीशी से दूर रहा था और कभी-कभी

तो कई-कई हफ्तों तक कार्यालय में नहीं झांकता था। उसने स्पष्ट व संयत भाषण में अपनी टोली की स्थिति के बारे में बताया और रुस्तम के मितव्ययिता के हर सम्भव प्रयत्नों के आह्वान का समर्थन किया।

"साथियो, बेशक, अध्यक्ष में अपनी कुछ कमियां हैं, मैं इससे इनकार नहीं करता," टोली-नायक ने कहा, "और उसने गलतियां भी की हैं। लेकिन वह सहकारी संघ के हितों का सदा ध्यान रखता है और सामूहिक किसानों की आय के बारे में भी नहीं भूलता है। और इन सब बातों के लिए हमें हमारे रुस्तम की कदर करनी चाहिए! "

महमूद अपना मुंह बंद भी न कर पाया था कि गिज़ेतार मंच पर चिड़िया की तरह फुर्र से आ पहुंची और उसने माननीय अधेड़ पुरुष पर उलाहनों की बौछार कर दी

"पिछले वर्ष लगभग सारी आय श्रम-दिनों के भुगतान पर खर्च कर दी गयी थी, और सारा अविनिरित कोष खाली कर दिया गया था। और अब नये संस्कृति-भवन के निर्माण के लिए हमने अपने सिर कर्ज चढ़ा लिया है। क्या यह सामूहिक किसानों के हित में है? नहीं, हरगिज़, नहीं! .."

गिज़ेतार ने आत्मविश्वासपूर्ण स्वर में एकत्र लोगों को बताया कि वह बचपन से ही रुस्तम चाचा का आदर करती आयी है, पर आदर अपने स्थान पर है और काम – अपने।

"एक मिनट के लिए कल्पना कीजिये, कामरेडो, कि रुस्तम-कैशी हम सबको नाव में सवार कराके पतवार संभाले बैठे हैं और इतने ज़ोर-ज़ोर से खे रहे हैं कि नाव बस किसी भी क्षण उलट सकती है। ऐसी हालत में क्या हमें उनसे नहीं कहना चाहिए: चाचा, ज़रा धीरे, संभल के, हम में से कोई भी कूरा नदी में डूबना नहीं चाहता! . " समवेत हंसी के बीच गिज़ेतार ने कहा।

"वाह, क्या कहने, खूब सूझी! यह है औरत की अक्ल – मुर्गी की अक्ल से भी गयी-गुज़री सामूहिक फार्म की तुलना किसी टूटी-फूटी नाव से कर रही है, और अध्यक्ष की – माझी से। मुझे इसमें कोई अक्लमंदी की बात नज़र नहीं आती।"

इसके बावजूद नजफ व शेरज़ाद द्वारा उत्साहित युवक हर्षित हो उठे, तालियां बजाने लगे, चिल्लाने लगे, उत्तेजित हो उठे:

"बि ऽऽ स कु ऽऽ ल ठीक! .. शाबाश, खानम!"

की गड्डी निकाली।

"जरा तीस हजार के ड्राफ्ट पर दस्तखत कीजिये। वैगन मुझे मिल गये हैं, दो-एक दिन मे सस्कृति-भवन की नींव के लिए पत्थर ले आयेंगे। काश, आपको मालूम होता, चाचा, कि वैगनो की खातिर मैं लोगो के आगे-पीछे घूमता कितना थक गया हू! न जाने कितने दरवाजों के कब्जो मे तेल डालना पडा है मुझे!"

"कौन-सा तेल?" रुस्तम समझ नहीं पाया।

"ऐसा तेल," सलमान ने ही-ही करके अगूठे व तर्जनी को आपस मे रगडते हुए इशारा किया।

अध्यक्ष की भौंहें सिकुड गयीं।

"अपनी जबान बद रखो, वरना वही तेल खौलाकर तुम्हारे गले मे उडेल दिया जायेगा।"

सलमान लापरवाही से मुस्कराया।

"चिन्ता मत कीजिये, मैं अपना काम अच्छी तरह जानता हूं किसी को महगी सिगरेट पिला देता हू, किसी को पहले झुककर सलाम बजा देता हू, उसके बीवी-बच्चो की सेहत का हाल पूछ लेता हू, किसी को अपने यहा चाय पर बुला लेता हू। और कोई चारा नही है," उसने कधे उचकाये, "हर आदमी के साथ अलग-अलग ढग से पेश आना पडता है।"

किसी ने हौले से दरवाजा खटखटाया, कमरे मे यारमामेद तिरछा होकर घुसा।

"मैं पशुपालन फार्म की याद दिलाने आया हूं," उसने कहा।

"हू, पशुपालन फार्म हमारे लिए कम मुसीबतें नहीं खडा करेगा," सलमान ने समर्थन किया। "मुझे डर है कि यह तेल्ली चाची की औलाद [illegible] को पूरे जोर से हडपे जा रही है। जरा सोचिये [illegible] वहन भी काम करते हैं, पर हम उतना खर्च [illegible] वे लोग करते है। बेशक, उनका सारा मुग [illegible] को चट किये जा रहा है। इसके अलावा वे नय [illegible] रहे हैं। [illegible] काना है, कसम से! हमने त [illegible] आम

"हां, बेशक रखना ही," रुस्तम धीरे-धीरे, प्रत्येक शब्द तोलता कह रहा था, "अब तो हमें शेरजाद से भी पूछना होगा।"

इस अप्रत्याशित बात से यारमामेद और सलमान दोनों भौचक्के रह गये।

"कुछ भी हो, आखिर वह पार्टी संगठन का सचिव है," रुस्तम ने कहा, "वही जांच समिति का अध्यक्ष बने।"

"शेरजाद नीचे है," यारमामेद ने गरदन तानकर बताया। "बुलाऊं?"

शेरजाद यहां किसलिए आया था, यह यारमामेद नहीं जानता था, उसने केवल अहाते से होकर आते समय शेरजाद को माय्या, पेरशान व गिजेतार के साथ खड़ा और उनको जमीन पर कोई नक्शा-सा बनाते देखा था, जैसे वे कोई घर या शेड बनाने जा रहे हों।

"चलो, देखते हैं, उनका वहां क्या करने का इरादा है," रुस्तम ने सुझाया और बरामदे में निकल गया।

सचमुच शेरजाद, माय्या व गिजेतार जमीन में खूंटियां गाड़कर रस्सियां तान रहे थे और उनके बीच की दूरी कदमों से नाप रहे थे।

"ऐ, पार्टी सचिव!" रुस्तम ने रेलिंग पर झुककर आवाज दी। "हमारे पशुपालन फार्म से फिर धुएं की बू आ रही है, और धुआं बिना आग के नहीं उठता। हम जांच करवाना चाहते हैं। तुम्हारी क्या राय है इस बारे में?"

शेरजाद ने हाथ से माथे का पसीना पोंछा और कुछ सोचकर दृढ़ स्वर में बोला

"केरेम बहुत भला आदमी है, मैं उसकी जमानत देता हूं। जांच बेशक, ईमानदार कर्मचारियों की भी करनी चाहिए। लेकिन जांच के पहले से ही लोगों पर छींटाकशी नहीं करनी चाहिए, कुछ ठीक नहीं लगता।"

रुस्तम ने जवाब दिया कि अगर तेल्ली चाची हर वक्त लफ्फाजी करती रहती है, शिकायतें लिखती रहती है, तो इसकी पूरी सम्भावना है कि उसका बेटा भी उसके चरण-चिह्नों पर चल रहा है और पूरा का पूरा खानदान ही दोषी है। शेरजाद को चरवाहों का प्रार्थना-पत्र देख लेना चाहिए।

उसे मालूम पड़ा कि शेरजाद प्रार्थना-पत्र पढ़ चुका है – लिखावट बदली हुई है, जानबूझकर अनपढ़ों की तरह टेढ़ा-मेढ़ा लिखा गया है, नाम कल्पित

"हमें शक करने का रोग नहीं है यह सभी जानते हैं," सलमान ने शान्त स्वर में टिप्पणी की, "लेकिन किसी को पहले से ही अपने संरक्षण में ले लेना भी ठीक नहीं होता। बड़ी अजीब बात है—तेल्ली और उसका बेटा चाहे जो भी न कहे, लेकिन तुम जरूर उनकी रक्षा करने लगते हो।"

इन शब्दों ने, जैसा कि सलमान का अनुमान था, रुस्तम की सारी शंकाएं दूर कर दीं।

"मुझे पूरा यक़ीन है कि केरेम बेईमान है। फौरन जांच समिति भेजो। किसे भेजा जाये ? गूंगे हुसैन को, यारमामेद को या और साधारण सामूहिक किसानों में से किसी को . फौरन काम शुरू करो।" उसने तत्क्षण सलमान को आदेश दिया, बरामदे से नीचे उतरा और माय्या से सख्ती से पूछा कि वे वहां क्यों खोद रहे हैं।

माय्या का चेहरा लाल हो उठा और उसने घबराहट के कारण कांपती आवाज़ में बताया कि युवाओं ने गरमियों में हर घर में बावरचीखाना, हम्माम और शौचालय बनाने का निर्णय किया है। यह युवाओं का जीवन-स्तर ऊंचा उठाने का अभियान होगा, इसीलिए वे इस समय अंदाज़ लगा रहे हैं कि उन्हें किस तरह जल्दी से जल्दी और सस्ते में बना पायेंगे।

"क्या शिष्टता तुम लोगों के खयाल से जीवन-स्तर के सुधार में शामिल नहीं है ?" रुस्तम ने पूछा। "मुझे यहां श्रम-दान करवाने की जरूरत नहीं है। मैं खुद जानता हूं कि मुझे अपने घर में क्या बनाना है।"

माय्या का चेहरा उतर गया, वह बेलचा ज़मीन पर पटककर झटके से मुड़ी और बागीचे में चली गयी।

पर पेरशान ने न जाने क्यों हर बात के लिए शेरज़ाद को दोषी ठहराया :

"तुम घमण्ड के मारे फूले जा रहे हो, इसीलिए तुम हमें अपने अब्बा के खिलाफ भड़का रहे हो।"

केवल सलमान के सपाट चेहरे पर विजयी मुस्कान खिली हुई थी।

माव्का [illegible] निश्चल खड़ी थी और उसने नज़र दूर की [illegible] की कोशिश करी न कर [illegible] की [illegible] नज़रों से उसकी [illegible] [illegible] न रह गयी।

माव्का काम पर खूब जल्दी जाने की कोशिश करती, रात देर से लौटती, थककर चूर हो जाती और नींद में [illegible] करती, [illegible] के सपने [illegible] परिचित काम हुए दिखाती, पर दुःख था कि [illegible] [illegible] कर रहा था, एक क्षण के लिए भी उसे [illegible] नहीं छोड़ रहा था। जब तक माव्का लोगों के बीच में, बागों में, मैदान में हरे-भरे खेतों में, [illegible] पर रहती, वह अपना दुःख भूल जाती, पर कमरे में प्रवेश करते ही उसके दिल में मर्मभेदी टीस उठने लगती।

बुजुर्गों का कहना है कि वक्त सबसे बड़ा हकीम होता है। लेकिन वह भी हर किसी को शान्ति नहीं दिला सकता।

"आखिर मेरा कसूर क्या है ?" वह पलग पर लेटकर गराश के तकिये को बाहों में भरते हुए अपने से पूछती।

एक मिनट बाद ही यह समझकर कि उसे नीन्द नहीं आयेगी, वह उठकर कमरे में चहलकदमी करने लगती, खिड़की के पास खड़ी रहती, फिर लेट जाती। कमरे में हर चीज शीशा, फूलदान में रखे फूल, ताँबे के मोमबत्तीदान में लगी अधजली मोमबत्तियाँ – उसे अपनी सुहाग-रात की याद दिलाती, जब उसने दिल में अस्पष्ट आशाएं संजोये अपने से कहा था "यहां तुम अपने पति के साथ सुखी रहोगी!"

माव्का अकसर अपने को तसल्ली दिलाती कि सारे कष्ट और पीड़ाएं उसका वहम हैं, सामान्य स्त्री-सुलभ उत्तेजना की उपज है, पति दिन-रात खेत में काम करता है, सारे ट्रैक्टर-चालक बिलकुल वैसे ही जीते हैं, जैसे कि उसका गराश। जिन्दगी में क्या नहीं होता, – आदमी थक जाता है, जरूरत से ज्यादा चिड़चिड़ा हो जाता है, हो सकता है, मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन में कुछ कहा-सुनी हो गयी हो – इसीलिए पत्नी के साथ बदतमीजी से पेश आया, बुरा-भला बोला। हर बात का इस तरह बुरा नहीं मानना चाहिए। अगले बसन्त में भी गराश अन्य ट्रैक्टर-चालकों के साथ फिर स्तेपी में खाना-बदोशों की तरह रहेगा, अपनी गुदगुदी सेज पर सोने के बजाय सख्त तख्तों पर सोयेगा और हो सकता है खेत में हलरेखा पर ही।

माय्या गाउन पहने नंगे पैर खिड़की के पास गयी, गाव मे छायी निस्तब्धता को कान लगाकर सुनने लगी, उसका दिल धक-धक कर रहा था, वह हर मामूली-सी सरसराहट पर चौंक रही थी, आशा लगाये थी कि अभी दरवाजे पर खटखटाहट होगी और देहलीज पर गराश नजर आ जायेगा। उसे कितना अरसा हो चुका है रात को घर मे रहे। कभी-कभी तो वह सुबह केवल खाना लेने भागे-भागे आता, हड़बड़ाकर पत्नी से बात करता और चला जाता: "गली मे ट्रक मेरे इंतजार में खड़ा है! ."

गाव मे बहुत से लोग गराश के लंबे अरसे से घर पर न रहने की तरफ ध्यान दे रहे थे। वे फुसफुसाते, कानाफूसी करते, सिर हिलाते। माय्या भी समझती थी कि यह अजीब-सी स्थिति देर तक नही चल सकती, इसका कुछ न कुछ अन्त अवश्य ही होना है!

आखिर उनमें कभी तो प्रेम था, अवश्य था! . माय्या की कल्पना में प्रेम मनुष्य के हृदय में जन्मा दीप्तिमान तारा था, जो पर्वतीय निर्झर सदृश पवित्र होता है और उसकी दीप्ति कभी लुप्त न होनेवाली थी।

माय्या जानती थी कि कभी-कभी युवक और युवती प्रथम भेंट मे ही एक दूसरे के प्रति प्रेम में पागल हो उठते हैं, पर दो-तीन महीने के वैवाहिक जीवन के बाद उनका उत्साह ठण्डा पड़ जाता है, वे झगड़ने लगते हैं। लेकिन वे अशिष्ट और मोटी चमड़ीवाले लोग होते हैं। उनसे क्या आशा की जा सकती है? ऐसे परिवारों में पति व पत्नी एक दूसरे के आगे किसी मामले मे नही झुकते हैं, दया नही करते हैं, मामूली से मामूली बातो पर बहस करते हैं, झगड़ते हैं और इस तरह अपने प्यार को दफना देते हैं। और प्रेम के अभाव मे परिवार भी बिखर जाता है।

उसने गराश को क्यों चुना? माय्या ने इस बारे मे कभी सोचा भी नही था, लेकिन मन-ही-मन वह अनुभव करती थी कि गराश साहसी, बुद्धिमान और अपने वचन का पक्का है। क्या माय्या ने धोखा खाया है? नही, गराश को अवश्य लौट आना चाहिए, वह अपनी पत्नी को धोखा नही दे सकता।

अचानक उसे बाहर एक छाया की झलक दिखाई दी, कोई बिना आवाज किये उसकी खिड़कियो तले से गुजर गया। अलमेशियन बहुत धीमी आवाज में भौंका, मानो वह उसका जाना-पहचाना आदमी हो... माय्या कधो पर गाउन डालकर नगे पैर बरामदे में निकल आयी। रुस्तम के तूफानी, रह-रहकर लिये जा रहे खर्राटे घर के कोने-कोने में गूंज रहे थे।

ख़ज़ाना बाग नजर भ्रा रहा था, जिसमें बादशाह के ताज जैसा एक बडा लाल फूल खिला हुआ था। उसने फूल तोडने के लिए हाथ बढाया, पर वह उस क पहुंचा नहीं. लाला उससे धीरे-धीरे दूर सरकता घास मे गायब हो गया। माव्या ने दोनों हाथ बढाये, भ्रागे को झुकी और

किसी ने उसे पकड लिया और माव्या ने बिना ग्राखें खोले ही गराश के हाथों का स्पर्श महसूस किया, उसकी तरफ बढी और कुसफुसायी

"तुम? तुम हो?"

उसे तुरन्त ग्रांखो मे काटी रातें, इतजार की घडियां और ग्रासू याद हो ग्राये उसने पति के ग्रालिगन से मुक्त होकर पूछा

"तुम सारे हफ्ते कहा गायब रहे?"

गराश पीछे हट गया और ग्राखें चुराता हुग्रा कृत्रिम शान्ति के साथ बोला :

"जैसे नहीं जानती हो! खेत मे था।"

"चाय पियोगे?"

"शुक्रिया। मा सोयी नही थीं, उन्होंने खाना भी खिला दिया और चाय भी पिला दी। सो जाग्रो, बहुत रात हो चुकी है।"

हालांकि उस रात वे साथ सोये, पर माव्या को ग्रपनी एक ग्रभागी सहेली के शब्द याद हो ग्राये :

"... "

सिंचाई व निराई पर ध्यान देना जरूरी था, क्योंकि इन्हीं कुछ दिनों में फसल के भाग्य का निर्णय होनेवाला था। रुस्तम न खुद चैन से बैठ रहा था और न ही दूसरों को चैन से बैठने दे रहा था।

वह सुबह थोड़ी देर के लिए कार्यालय में जाकर यारमामेद द्वारा विभिन्न संस्थाओं के लिए तैयार की हुई रिपोर्टों पर बिना उन्हें दुबारा पढ़े हस्ताक्षर करता, फिर खेत रवाना हो जाता और अंधेरा होने तक वहीं रुका रहता। जब वह गाँव लौटता, उसकी घोड़ी धूल पर थके, लसलसे झाग गिराती लड़खड़ाती हुई चलती।

आज भी वैसा ही हुआ—उसने जल्दी-जल्दी में लेखा विभाग के दस्तावेजों पर हस्ताक्षर किये, टोली-नायक हुसन को राजमार्ग के दोराहे पर स्थित कपास के खेत को अतिरिक्त पोषण देने को कहा, सजमात की संस्कृति-भवन के निर्माण की रिपोर्ट सुनी और बरामदे में उसकी प्रतीक्षा कर रही दो बूढ़ियों से जल्दी में "फुरसत नहीं है, बिलकुल फुरसत नहीं है!" कहकर अहाते में निकल घोड़ी की लगाम संभाल ली। उसी समय बाड़ की उस ओर से गिजेलार की आवाज सुनाई दी

"चाची, तुम्हारी बालों की सफ़ेदी में कभी दाग न लगे, जाओ, जरा खुद ही उसे बता दो!"

"नहीं, बेटी, तुम भी चलो, एक और एक ग्यारह होते हैं!" तेल्ली चाची ने जवाब दिया।

रुस्तम ने खीज के मारे थूक दिया और खुद ही हमला बोलने का फैसला कर चिल्लाया

"क्या तकलीफ है आप लोगों को? आप लोगों को काम पर चाहिए, पर आप बाड़ की छाया में छिपी खड़ी हैं!"

"अरे, अरे, मेरे सफ़ेद बालों का बिलकुल भी लिहाज नहीं! मर्द के चार कान हैं, वह पास या बहते हुए भी सुन लेता है।" चाची आने में आनाकानी कर रही गिजेलार को खींचती हुई अहाते में गयी। "खाने का समय है और हमारा खेत पास ही में है," उसने रुस्तम को समझाया और आगे बोली "काम थोड़ी है और हमारा नाश्ता भी तुम्हें ही है।"

रुस्तम ने स्त्रियों का आना बड़ा न कुवारा। तेल्ली कमर के बीच पट पर हाथ बाँध रह गयी। उसका चेहरा पर वैसा ही भाव व्याप्त हो गया जैसा कि बूढ़े का दबाव मेलजोली स्त्रियों के चेहरे पर होता है। अ

गिज़ेतार घबराहट मे नज़रें झुकाये, गालो को एप्रिन मे छुपाती दहलीज़ र जडवत् खडी रह गयी।

"जल्दी कहो, नही तो मुझे कही जाना है," रुस्तम ने अनुरोध किया।

"तुम्हें जाना है, तो एक बात कहे देती हू अपने बेटे पर नज़र रखो, चा!" चाची बिना झिझके कह उठी।

ये शब्द सुनकर गिज़ेतार के मुह मे दबी हुई चीख निकल गयी और सका चेहरा इतना लाल हो उठा कि उसकी आखो मे आसू आ गये। स्तम को भी अपना चेहरा तमतमाता महसूस हुआ और उसके लिए सास ना मुश्किल हो उठा।

उसे हर बात की अपेक्षा थी—केरेम की हिमायत किये जाने की भी, राश द्वारा कपास की बोवाई गलत ढग से करने की जाने की शिकायत ी भी,—लेकिन तेल्ली चाची का स्वर और गिज़ेतार की घबराहट से उसे आभास हो गया कि क़िस्सा कुछ और ही है और कही ज्यादा भयानक भी।

रुस्तम ने, इस भय से कि कही उसकी बात बगल के कमरे मे कोई सुन न ले, दबी आवाज़ मे कहा

"चीखो मत! जरा ढग से बताओ। मेरी कुछ समझ मे नही आ रहा है..."

"इसमे समझना क्या है?" तेल्ली ने कधे उचकाये। "तुम्हारे बेटे ने सारे गाव की बदनामी करवा दी। अगर लडकी बाहर की हो, अनाथ हो, अनाथालय मे पली हो, तो इसका मतलब क्या यह है कि उसे पैरो तले रौंदा जाये? ज़रा सोचो तो, चचा, क्या इन सब बातो के बाद कोई शहरी लडकी हमारे गाव के लडके से शादी करने को तैयार होगी? तुमने उसे फूल-सी सुन्दर लडकी की जिन्दगी बरबाद क्यो करने दी?"

रुस्तम ने ऐसे हाथ झटकारे जैसे किसी मुर्गी को भगा रहा हो।

"लगता है आज तुम्हे लू लग गयी है, बुरी तरह गरम हो रही है! . बेटी, कम-से-कम तुम्ही बताओ," वह गिज़ेतार की ओर मुडा, "इसे मुझ से आखिर क्या चाहिए? इसने कितनी बार अनाम पत्र लिखकर मेरी नाक कर रखा है!"

रहे [illegible] ना," गिज़ेतार ने विरोध किया। [illegible] दिल मे है, वही ज़बान पर!

"

अगर जरूरत पड़ जाये, तो यह खुद अपना नाम लिखकर शिकायत कर सकती है। हम आये इसलिए हैं, क्योंकि हमारा दिल माय्या के लिए दुखता है। तुम्हारे लाडले ने अपनी कानूनी पत्नी को छोड़कर किससे रिश्ता कायम किया है? किससे? सलमान ने जान-बूझकर तो अपनी बहन उसके मत्थे नहीं मढ़ी है?"

"श-श ऽऽ! निकलो यहां से! ." रुस्तम मुक्के दिखाता हुआ फुंफुसाया। "मेरे खानदान पर कीचड़ उछालने की सोच ली? यह कभी नहीं होने दूंगा!"

तेल्ली चाची अचानक शान्त हो उठी और गिर्जेदार का हाथ पकड़कर बोली,

"चलो, चलो यह सुनना ही नहीं चाहता–फिर खुद ही पछतायेगा "

बरामदे में स्त्रियों की मुलाकात सलमान, गूंगे हुसैन और मारमामेद से हो गयी, जो अध्यक्ष के पास जा रहे थे। तेल्ली का तमतमाया चेहरा देखकर वे समझ गये कि अध्यक्ष और उसमें जोरदार झड़प हुई है, और उन्होंने आशंकित हो एक दूसरे की तरफ देखा "बड़े अच्छे मौके पर पहुंचे हैं! उस पर अगर भूत सवार हो जाये, तो अपने सगे बेटे को भी नहीं बख्शे, मार डाले!"

कक्ष में अकेला रह गया रुस्तम अपनी मूंछों पर बल देता चहलकदमी कर रहा था। उसका पिता का हृदय उसे बता रहा था कि तेल्ली ने सच्ची बात कही है।

उसके स्वाभिमान को ठेस पहुंची थी। वह यह बर्दाश्त नहीं कर सकता था कि यह बुरी खबर तेल्ली चाची लायी है, जिससे उसे नफरत हो चुकी थी।

"झूठ है, सरासर झूठ! घटिया किस्म का झूठ!" रुस्तम अपने को तसल्ली दिला रहा था। "उसने जान-बूझकर अपने बेटे को बदनामी से बचाने के इरादे से सलमान पर कीचड़ उछाली है।"

"अन्दर आ सकते हैं, बाबा?" सलमान का शान्त स्वर सुनाई दिया।

"आओ, आओ! अनुशासन कमेटी में क्या हो रहा है? चाची अभी कसम खाकर कह रही थी कि उसका बेटा इनसान नहीं, फरिश्ता है,' रुस्तम ने कहा।

सलमान ने बाप के इशारे से पास की सीट पर बैठते हुए कहा और

मूट ने मेज के पास खड़े-खड़े फील्ड-बैग में से कागजों की गड्डी निकाल जांच की रिपोर्ट में नजरें गड़ा लीं।

"अगर उसके बेटे की मानी जाये, तो इस बात पर विश्वास करना होगा कि पशुपालन फार्म में भेड़िये और भेड़ें एक घाट पानी पीते हैं। यह और वह भी क्या सकती है? क्या यह मान लें कि उसका लाड़ला पक्का चोर है?"

"परेशान मत करो!" अध्यक्ष ने चिरौरी की। "कहां चोरी की गयी है?"

"चोरी!" सलमान ने घृणापूर्वक हुंकार भरी। "लूट हुई है, दिन-दहाड़े लूट तुम लोग चुप क्यों हो?" उसने एकाएक हुसैन व यारमामेद की ओर पलटकर कहा· "बताओ, जो तुम्हें मालूम हुआ है।"

गूंगे हुसैन ने सकुचाते हुए अध्यक्ष की ओर घूरकर देखा और ज़बान से "टक्च" करके चुप रह गया।

उसके बजाय यारमामेद बोला। वह छाती ठोक-ठोककर, थूक के छींटे उड़ाता कभी चीख रहा था, तो कभी थकावट के मारे बुदबुदा रहा था। उसका सारा सूखा बदन गुस्से के मारे कांप रहा था। वह अपने आदरणीय रुस्तम-बीशी की क़सम खा-खाकर कह रहा था कि सारे चरवाहों को आश्चर्य हो रहा था कि केरेम को इतना लालच कैसे हो गया—ठूस-ठूसकर खाता रहता है, पर उसका पेट ही नहीं भरता यारमामेद ने रुस्तम के सामने रिपोर्टें हिलाईं· ये मेमने ठिठुर कर मर गये, ये तीन मेढ़े खड़ा किनारा ढहने से नदी में गिर गये, यह रेवड़ में प्लेग फैल गयी। सिर्फ़ जनवरी में अस्सी मेमने मर गये। ये सारी रिपोर्टें केरेम के ज़बानी कहे पर लिखी गयी हैं, चरवाहों ने एक भी खाल अपनी आंखों नहीं देखी . पचास मेमने गोया ठण्ड से मर गये और केरेम को लम्बी उम्र जीने को कह गये। यारमामेद के पतले, टेढ़े-मेढ़े होंठों पर कुटिल मुस्कान फैल गयी।

उसे देखकर रुस्तम भड़क उठा:

"अरे, बेशर्म, यह कोई मज़ाक़ करने का वक्त है? रोना चाहिए .."

यारमामेद ने चेहरे पर उदासी लाकर एक ठण्डी सांस ली।

"आपकी बात हमेशा की तरह सही है। सचमुच ऐसी सरे आम लूट देखकर दिल रोने को चाहता है... इस हद तक पहुंच गये हैं कि उन्होंने तीस किलोग्राम का एक मेढ़ा काटकर शिक्षाविभागाध्यक्ष को दावत भी दी।"

"गोमालगो को?" रुस्तम ने पूछा।

"और क्या," सलमान बोल उठा। "और टीटी ने रिपोर्ट में लि दिया कि भेड़िया बाड़े में घुसकर उस दुम्बे को दुम उखाड़कर ले गया है न मजेदार बात? और अब चरवाहे सफाई पेश कर रहे हैं: हम केरेम पर विश्वास करके दस्तखत कर दिये थे..."

गूंगे हुसैन ने ये शब्द सुनकर फिर जवाब में "टच्च" की और " भी इतनी ज़ोर से कि सब चौंक उठे।

"मैंने केरेम से कहा 'तू किसके भरोसे था, करमफूटे? गोमाल तो दुमकर चलता बना, पर अब तुझे सीक पर चढ़ाकर कबाब की त पकाया जायेगा,'" सलमान बोलता रहा। "अगर हमारी राय मानना चाह चाचा, तो हम एक ही बात कहेंगे – यह आगे नहीं चलता रह सकता है केरेम को फौरन काम से हटाकर पशुपालन फार्म पर किसी भरोसेमंद आद को भेजना चाहिए, जिस पर हम वैसा ही विश्वास कर सकें, जैसे यु पर।"

"किसे?" रुस्तम ने यारमामेद की थमायी रिपोर्टें देखते हुए पूछा

"बेशक, हुसैन को," सलमान ने कुछ हिचकिचाकर सुझाव दिया और कनखियों से अध्यक्ष की तरफ देखा।

रुस्तम ने भेड़ों के रेवड़ पर भेड़िये के हमले की मुड़ी-तुड़ी, चबायी हुई-सी रिपोर्ट पर किसी के हस्ताक्षर पर उंगली रखकर कहा.

"ठहरो, ठहरो यह किसने दस्तखत किये हैं? बूढ़े बाबा ने? मैं उसे अच्छी तरह जानता हूं, वह कभी झूठ बोलकर अपनी सफेदी पर दाग नहीं लगने देगा।"

"हमने जांच जो की थी।" सलमान बुरा मान गया। "उस भेड़िये का क्या दिमाग खराब हुआ था, जो शाम को बाड़े में घुसता? कुत्ते चहुत हैं।"

"अक्लमंद मत बनो। भूखा भेड़िया आदमी पर भी हमला कर सकता है," रुस्तम ने ऊंची आवाज में कहा और रिपोर्ट को दोबारा पढ़ा। उसके चेहरे पर अविश्वास का भाव झलकने लगा।

अध्यक्ष को दुविधा में पड़ा देखकर सलमान ने हुसैन को आंख मारी और हुसैन "टच्च" करके याचनापूर्ण स्वर में बोला.

"चचा, अगर तुम हुक्म दो: 'मर जाओ!' तो मर जाऊंगा, पर बुढ़ापे में मैं पशुपालन फ़ार्म का काम नहीं संभाल पाऊंगा। मुझे तो इस

समय भी बस एक ही चिन्ता रहती है – शाम को किसी तरह घर पहुचू और चैन से सो जाऊ।"

"तुम अपने बारे मे नही, सामूहिक फार्म के बारे मे सोचा करो," सलमान ने उलाहनाभरे स्वर मे कहा। "अजीब लोग हैं!" उसने रुस्तम से शिकायती अदाज मे कहा। "सवाल हजारो जानवरो का है, पर इस आलसी को यह कहते शर्म नही महसूस होती कि यह चैन से सोना चाहता है। जरा ठहरो, चचा, अभी तुम्हे पशुपालन फार्म रवाना कर देंगे, ताकि चरागाहो मे तुम्हारी चर्बी उतर जाये "

"सच्ची बात है, हुसैन, तुम्हे शर्म नही आती!" रुस्तम ने कहा और टोली-नायक को बुझा हुआ पाइप दिखाकर धमकी दी। "मन के सब बस अपने आराम की सोचते हो, बस खुद किसी तरह चैन से सो ले। कल ही पशुपालन फार्म का चार्ज सभाल लो!" उसने अचानक आदेश दिया।

रुस्तम ने ध्यान नही दिया कि सलमान ने कितने आत्मसतोष के साथ अपने मित्रो की तरफ देखा।

"गिरेतार की तरक्की कर टोली-नायक बना देंगे और उसकी उपटोली नेल्ली को सभला देंगे," सलमान ने सुझाव दिया। "इस तरह हम इन आलोचको के मुह बद कर देंगे। अगर नही सभाल पाये, तो खुद ही दोषी रहेंगे। जिला समिति मे भी स्त्रियो को उत्तरदायित्वपूर्ण पद दिये जाने पर सतोष प्रकट किया जायेगा," उसने चलते-चलते कह दिया।

यह सुझाव रुस्तम को पसद आ गया।

गूगा हुसैन दयनीय ढग से आखें मिचमिचाता हुआ बोला

"तुम्हारे लिए, चचा, मैं जान देने को तैयार हू, लेकिन जब मुझे पशुपालन फार्म सभालना ही पड रहा है, तो केरेम को वहा से हटा लो। वह चोर का बच्चा मेरी जडे खोदने लगेगा। चोरी खुद करेगा और जवाब मुझे देना पडेगा। नही, मैं इसके लिए तैयार नही हू।"

"तुमसे कोई नही पूछ रहा है कि तुम तैयार हो या नही!" रुस्तम चिल्लाया, पर उसे तुरन्त रहम आ गया। "ठीक है, केरेम को कपास की खेती पर भेज देंगे, जरा कुदाल चलाकर पसीना बहाये। वहा उसे पता चल जायेगा कि सामूहिक फार्म का माल हडपने का क्या नतीजा होता है," और वह जाच रिपोर्ट लोक अभियोजक को भेजने का आदेश देकर, बिना उनसे विदा लिये कार्यालय से चला गया।

माय्या मन-ही-मन में सिकुड़ गयी, मुरझा गयी, अपने को निरस्कृत और कुरूप अनुभव करने लगी। वह गराश से कुछ नहीं पूछती, उसस बातचीत करना उसने लगभग बंद कर दिया, पति जब घर आता, वह अपनी रिपोर्ट तैयार करने बैठ जाती, हालांकि उसके लिए कोई दूसरा समय चुन सकती थी।

गराश भी चुप रहता। केवल एक बार जाते समय वह पत्नी का हाथ थामकर फुसफुसाया "माय्या! " लेकिन तुरन्त ही चुप हो गया और निराशा में हाथ झटकार कर भाग चला।

गराश अपने आप को तसल्ली दिलाता रहता "न मैं ऐसा करनेवाला पहला मर्द हूं, न ही आखिरी।" उसके परिचित युवकों में ऐसे भी थे, जो पत्नी के पास से प्रेमिका के पास जाते और उन्हें ज़रा भी खेद नहीं होता। लेकिन गराश का दिल दुखता, वह समझता जो था कि उसे माय्या के समान सच्चा और निष्ठावान मित्र कभी नहीं मिल सकेगा। उसकी तुलना नज़लाऊ के साथ करना पाप होता। तुलना गराश करता भी नहीं था, वह नज़लाऊ के साथ अपने को सहज व स्वतंत्र अनुभव करता था, वह उसका स्वामी, अधिपति था, वह उससे कुछ नहीं पूछती थी, न कुछ मांगती थी और न ही अपनी आरज़ुओं से उबाती थी।

उस वसन्त में रुस्तम के घर में जीवन माय्या के लिए ही नहीं, सकीना के लिए भी दूभर रहा। जब उसके कानों में गांव की औरतों की खुसुर-फुसुर पड़ी, तो उसे विश्वास नहीं हुआ। लेकिन ज्यों-ज्यों दिन बीतते गये, बेटे को घर से दूर रहने, अपनी पत्नी से कतराने और बहू को मुरझाते व घुलने देख सकीना समझ गयी कि दोषी वास्तव में गराश है।

क्या उसे रुस्तम से बात करनी चाहिए, उससे मदद मांगनी चाहिए? ऐसा तूफान मचेगा, आसमान टूट पड़ेगा, वह फ़ौरन कोड़ा उठाकर बेटे के पीछे भागेगा। पिछले कुछ दिनों से रुस्तम वैसे ही गुस्से में घूम रहा है, मुंह से शब्द निकालना ही नहीं है, मूछों, चमड़ी और कमीज़ से भी तम्बाकू की बू आने लगी है।

वास्तव में पूरे एक हफ्ते में रुस्तम चैन से नहीं बैठ पा रहा था। वह खेतों में गेहूं, कपास, मक्का के ... पौधों को निहारता, टोली-नायकों से ... ना, केवल फसल के बारे में सोचता ... र में या घोड़े पर अकेला रह जाता, ... के साथ हुई बात कौंधने लगती।

दुख भी होता है और गुस्सा भी आता है। बहू को आवाज दो, हम्माम बनायेंगे। उसी ने छेड़ा है यह काम, उसे मदद भी करनी चाहिए।"

रुस्तम खाना खाकर बग़ीचे में चला गया, जहां हम्माम की पत्थर की दीवारें जमीन से कोई दो मीटर ऊंची की जा चुकी थीं। शीघ्र ही माय्या सलवार व गहरे रंग का कुरता पहने आ पहुंची, – उसे इस बात की बहुत ख़ुशी हुई कि आख़िरकार ससुर ने स्वयं उसे बुलाया। अहाते में खेत से लौटकर आयी पेरशान की हंसी गूंज उठी, मिनट भर में वह भी हम्माम बनाने में मदद करने आ पहुंची।

माय्या पिछले कुछ दिनों में कमज़ोर हो गयी थी, उसकी आंखों के नीचे नीली झाइयां पड़ी हुई थीं। रुस्तम अपने दया-भाव से उसे ठेस न पहुंचाने के इरादे से आवश्यकता से अधिक ज़िन्दादिली से बात करने लगा

"चलो, मेरी बेटियो, काम शुरू करें! जब हमने रहन-सहन का स्तर ऊंचा उठाने की ठानी ही है, तो पूरी कोशिश करें ताकि रुस्तम का घर गांव में सबसे अच्छा बन जाये। यह हम्माम बहू की तरफ़ से हम बूढ़ों के लिए एक तोहफ़ा होगा।"

काम ज़ोर-शोर से शुरू हो गया। माय्या रुस्तम को पत्थर पकड़ा रही थी, और पेरशान बाल्टी में चूने का घोल तैयार कर रही थी। रुस्तम मसाला फैलाकर पत्थर जमाता हुआ लगातार बोले जा रहा था। मदीना उसके पास आयी तो आश्चर्यचकित रह गयी, बीबी इतना बातूनी कैसे हो गया?

"दीवारें एक मीटर और ऊंची करके पाइप डाल देंगे और इतवार को, अगर ज़िन्दा रहे, तो छत का काम शुरू कर देंगे"

माय्या की उदासी ससुर की असाधारण शिष्टता के कारण और अधिक बढ़ गयी। उसे चाहिए था कि वह मुस्कराये, रुस्तम-बीबी की ही तरह मज़ाकिया लहजे में जवाब दे, पर उसने कितनी ही कोशिश क्यों न की उसके मुंह से एक शब्द भी नहीं निकल सका।

अंधेरा हो जाने पर जब काम मजबूरन बंद करना पड़ा, माय्या सिर-दर्द का बहाना करके अपने कमरे में चली गयी, और बिना बत्ती जलाये सोफ़े पर लेटकर ऊंघने लगी या न जाने उसे झपकी आ गयी।

उसकी आंख सीढ़ियों की चरमराहट से खुल गयी। पति बरामदे में चढ़ रहा था, इसमें माय्या को कोई सन्देह नहीं हो सकता था . गराश ने क़मीज़ व बूट उतारकर हाथ-मुंह धोये – उसके लिए बरतन में पानी व

...पानी थी। वह कुर्सी द्वार में रोशनी के...
...सुनाता, सिगरेट पीता और शान्त रात की शीतलता का...
...बरामदे में बैठा रहा।
...माया को भी हुई कि पति उसके कमरे में नहीं...
...बारे में... तब इसके न नजरें कैसे मिलाते? और...
...दिखाना, कुछ न जानने का दिखावा करना, यह सब...
...था।

थोड़ी देर के बाद सबीना बरामदे में निकली। उसने कुर्सी...
बिना सीने पर हाथ धरे बैठे बेटे की तरफ सख्ती से देखा।

"तुम अच्छा नहीं कर रहे हो, बेटे, बिल्कुल अच्छा नहीं...
हो।" उसने रुंधे गले से कहा। "तुम्हारी बीवी फूल जैसी है। ...
शहर से लाये हो, तो उसका ख्याल रखो... तुम्हें हो क्या गया...
बताओ। मिलकर सोचेंगे कि क्या किया जाये।"

माया सांस रोके सुन रही थी, उसका दिल इतने जोर से धड़...
करने लगा था कि उसे सीने पर हाथ रखना पड़ा,—लगता था कि...
अभी निकल ही पड़ेगा। सराश मां को आखिर क्या जवाब देता है...
कह देना चाहिए कि उसे किसी और से प्यार हो गया है... यह...
अत्यन्त असह्य होता, पर निर्मम सत्य कपटपूर्ण असत्य से अच्छा हो...
अब सन्देहों को दूर कर डालने का समय आ गया है। सराश का ईमान...
में दिया जवाब दोनों को स्वतन्त्र कर देता, फिर दोनों अपना-अपना...
सम्भालें और अपनी-अपनी किस्मत आजमायें। लेकिन शायद सराश हम...
वह दे, "ऐसा शक आखिर किस लिए? मैं थक गया, काम में सब...
गया—बस यही कारण था।"

लेकिन पति हठपूर्वक मौन साधे हुए था।

"ऐसा कोई घर नहीं, जिसमें कलह नहीं होता हो," सबीना ने प्यार...
कहा। "अनबन और झगड़े भी होते हैं। पर तुम उसे माफ कर दो,...
...बार वह तुम्हें माफ कर देगी... तुम्हें कौन-सी बात खटक रही है?
...मत। क्या मां-बाप मदद कर सकते हैं?"

"मां, आप हमारी क्या मदद कर सकती हैं?" सराश ने गुस्से से...
"मुझे चैन से रहने दीजिए। सच कहूं, तो मेरा घर न आना ही...
होगा, बीवी ताने दे-देकर उबा देती है, और अब तुम मेरे पीछे...
...ही हो..."

उसकी कृत्रिम हंसी से मा के सन्देह की पुष्टि हो गयी उसका अन्त करण शुद्ध नही है। सकीना बेटे को सब माफ कर सकती थी, शायद तुरन्त नही, पर उसके सारे पाप क्षमा कर सकती थी, केवल उसके झूठ को छोडकर। और जब गराश ने अनजाने ही पिता की नकल करते हुए उठकर चले जाने के इरादे से बात एकदम बद कर दी, तो उसने उसे रोक लिया

"मैं तुमसे इसीलिए कह रही हू—हमारे पवित्र घर में गदगी मत लाओ! परायी औरत की मुस्कान तुम्हे क्या अपनी बीवी की मुस्कान से ज्यादा मीठी लगती है? इसलिए यह जान लो कि इस शहद मे जहर मिला है,—इसीलिए तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है। लेकिन तुम्हे इस मीठे की बहुत भयानक कीमत चुकानी पडेगी . तुम्हारे अब्बा और मैं दोनों बुढा गये हैं। अगर तुमने रात को खुलनेवाले मनहूस दरवाजे से मुह नही फेरा, तो हम तुम्हे बददुआ देंगे! तुम्हारे अब्बा और तुम्हारी मा हरगिज तुम्हे बुढापे मे अपनी बेइज्जती नही करने देंगे!"

गराश इस बार भी चुप लगा गया, माय्या समझ गयी कि मा ने गलती नही की है, गराश दोषी है, पर उसमे अपना दोष स्वीकार करने का साहस नही है। उसे बरामदे में लपककर निकल "मुझे तुम्हारी कोई जरूरत नही, ढोगी!" कहकर चिल्लाने और हमेशा के लिए घर छोडकर चले जाने की इच्छा हुई, पर उसे कोई चीज रोक रही थी, और उसने मुह में शाल की किनारी दबा ली, ताकि उसके मुह से आह न निकल पाये और लेटी रही. .

लेकिन मा के दिल से और न रहा गया, वह पिघल गया, और सकीना आसू पीती हुई बोली.

"लेकिन जरा तो सोचो आखिर वह अनाथ है... उसे तुमसे उम्मीद थी, वह तुम्हारे साथ परदेस आयी, और तुमने उसे सता डाला। लोग क्या कहेगे?"

"मुझे भीख नही चाहिए," माय्या ने दुख के साथ सोचा।

बरामदे मे निस्तब्धता छा गयी। सकीना मुलायम जूतियों से सपड-सपड करती चली गयी। गराश रैलिंग पर सिर टिकाकर शान्त बैठा रहा। वह पछता रहा था कि उसने मा को बिना यह कहे जाने दिया कि वह खुद तड़प रहा है, पर अब रोने-पीटने से क्या फायदा. . "आखिर मैं इस चक्कर मे फसा कैसे?"—वह अपने से पूछने लगता, पर उसका जवाब

नही मिला था। वह पगडण्डी पर मुडा ही था कि अधेरे मे अचानक उत्तेजित व तेज़ आवाजें सुनाई दी। गराश नही चाहता था कि कोई उसे खुले मैदान मे देखे, इसलिए वह झुककर खर-पतवार मे छिप गया।

दो मर्द लडखडाते हुए किनारे-किनारे जा रहे थे।

"अगर माय्या खानम इसी तरह उस गदे ट्रैक्टर-चालक की बनी रही, तो मैं चमत्कारो मे विश्वास करने लगूगा," किसी का अपरिचित स्वर सुनाई दिया।

"कलतर भैया, तुम्हारे सिर की क़सम," अधेरे मे नज़र न आ रहे सलमान ने कहा, "मुगान ने ऐसी सुन्दरी कभी नहीं देखी है। वह तो इसान की शक्ल मे फरिश्ता भी है और दानिशमद भी।"

"देख चुका हू, खुद देख चुका हू, दोस्त। अहा, कितना अच्छा नाची थी वह – देखते ही रह जाओ! शायद "

कलतर के अतिम शब्द गराश सुन नही पाया। उसने झाडी मे से झाककर देखा, जिला कार्यकारिणी समिति का अध्यक्ष और सलमान एक दूसरे के गले मे बाहे डाले गली मे मुड गये।

एक मिनट बाद फिर सन्नाटा छा गया। रास्ते पर पहुचने पर बूटो के तले रेत की चर्र-मर्र ही उसके कान पडने लगी। यानी आज क्लब मे *गैरपेशेवर कलाकारो का रगारग कार्यक्रम हुआ था, और माय्या पति की* अनुमति लिये बिना पराये मर्दो को, इस शराबी कलतर को घुटनो से ऊपर अपनी नगी टागें दिखाती हुई नाचती रही पूछिये मत, बडा सुन्दर दृश्य रहा होगा! चलिये, यह माना कि उसे धोखा माय्या ने नही दिया होगा, लेकिन किसी और पर उसका दिल आ तो सकता है न? "तुम भी तो नज़नाज़ के साथ फसे हुए हो, वह क्या पाकीज़ा है?" गराश ने अपने आप से पूछा, लेकिन इससे उसे बिलकुल भी शान्ति नही मिली। माय्या कभी किसी परायी मोटर मे फर्राटे से घूमती है, तो कभी किसी और की काठी पर बैठकर घोडे पर खेतो मे घूमती है। वह यह ज़रूर जान-बूझकर करती है .. ज़ाहिर है, उसे ढोग रचना खूब आता है: हमेशा पति को ताने देती रहती है, जब कि खुद कई बार तलाक़ का सकेत दे चुकी है। हा, अब्बा ने ठीक ही कहा था, वह हमेशा ठीक ही कहते है, गराश को शुरू से ही लगाम ज़रा कसकर रखनी चाहिए थी।

इस प्रकार गराश अपने को उचित ठहराकर और पत्नी पर बुरी तरह गुस्सा होकर अपने घर के नज़दीक पहुच गया। सारे कमरो मे अधेरा था,

नहीं, गुस्सा भी हूं! अगर मेरा कोई दोष हो, तो बताओ। लेकिन मैं भी कह दूंगी कि तुम्हारा क्या दोष है। कमरे में चलो।"

"वहां गरमी और घुटन है," गराश ने अपनी घबराहट छिपाने के इरादे से कहा।

"नहीं, वहां अच्छा रहेगा। कुछ ऐसी बातें हैं, जिनके बारे में तुम्हारी मां को भी मालूम नहीं होना चाहिए। गांव में लोग वैसे ही हमारे बारे में तरह-तरह की बातें करते हैं।"

माय्या को खेत में काम करनेवाली स्त्रियों की सहानुभूतिपूर्ण और कुछ की द्वेषपूर्ण नजरें, उनके सवाल याद आ गये। "कैसा है गराश? रात को घर में रहता है? और ससुर के क्या हाल हैं? ससुर को तो दया आती है न? पति से झगड़ा होता है?"

गराश ने माय्या का हाथ कसकर पकड़ उसे जबरदस्ती खूबानी के नीचे रखे तख्त पर बिठा दिया।

"मैंने कह तो दिया, घुटन के मारे मेरा सांस लेना मुश्किल हो रहा है। हां, तो बताओ तुम्हारे मन में क्या घुट रहा है। वैसे ही मतली आती है!"

उसकी अशिष्टता माय्या के दिल में चुभ गयी।

"नहीं, तुम पहले बताओ कि तुम घर से अलग क्यों हो गये हो?"

गराश ने दांत निकाल दिये।

"लो सुनो! . मेरा एक हैदर-कुली नाम का परिचित है। कुछ दिन पहले उसका पत्नी से तलाक हो गया है, उसके तीन बच्चे हैं। क्यों? क्योंकि जब भी हैदर-कुली घर लौटता, पत्नी का कुछ अता-पता नहीं होता। 'मैं क्लब गयी थी ज़िले में गयी थी . मीटिंग में देर हो गयी मुझे एक और सार्वजनिक काम सौंप दिया गया!' ऐसे ही और बहाने। हैदर-कुली ने देखा कि उसकी पत्नी पत्नी नहीं है, खुदा ही जाने क्या है, उसने उस पर थूक दिया और तलाक ले लिया।"

"कैसा ओछापन है!" माय्या के मुंह से निकल गया और वह घृणा के मारे पति से दूर हट गयी।

"कोई क्या करे, मैंने और हैदर-कुली ने उच्च शिक्षा नहीं पायी, मामूली ट्रैक्टर-चालक हैं। अब तुम्हारे लिए यह समझ लेने का वक्त आ गया है कि मर्द शादी इसलिए करता है, ताकि उसे घरवाली मिले, खयाल

"खुदा के वास्ते उपदेश देना बंद करो!" गराश भड़क उठा। "मुझे पत्नी की ज़रूरत है न कि अध्यापिका की।"

माय्या ने उसकी बात अनसुनी करने का बहाना किया और हठपूर्ण आत्मविश्वास के साथ बोलती रही

"तुम्हारी पत्नी बनने को तैयार होते समय मैंने सोचा था कि मैं तुम्हारे रूप में मित्र, साथी पा लूंगी। मुझे विश्वास था कि तुम कम-से-कम किसी सीमा तक मेरे लिए पिता और माता का स्थान ले लोगे।"

"मित्र, साथी!" गराश ने अशिष्टता से उसकी नक़ल उतारी। "सबसे पहले पति की इज़्ज़त बनाये रखने का ख़याल रखना चाहिए था, न कि "

उसने बात पूरी नहीं की, अपने विचार से स्वयं ही भयभीत हो उठा।

माय्या के काटो तो ख़ून नहीं – उसका चेहरा बिलकुल फक हो गया। उसे यह स्पष्ट हो गया कि गराश उससे कहीं दूर, बहुत दूर चला गया है और अब कभी वापस लौटकर नहीं आयेगा।

उसकी आंखों में आंसू आ गये और वह घर के अंदर चली गयी।

गराश अनचाहे उसके पीछे कुछ कदम बढ़ा, पर बरामदे में रुक गया। उलाहने, आंसू, पश्चात्ताप – क्या उसे इन पर ध्यान देना चाहिए? क्या इस समय निःस्वार्थ भली स्त्री दूसरे घर के दरवाज़े की ओट में खड़ी गली में अपने क़दमों की आहट सुनती अपने प्रियतम की बाट जोह रही है? वह गराश का आलिंगन कर हृदय से लगा लेगी। उसे लोगों की नुक़ताचीनी और बददुआओं की क्या परवाह! वह हर कष्ट सहने को तैयार है, बस उसका गराश उसके साथ रहे

उस घर की औरत झिड़कियों, तिरस्कार, गुस्से से फूले मुंह के बारे में कुछ नहीं जानती थी – वह सदा स्नेहपूर्ण, प्रिय और आतिथ्यशील रहती थी।

गराश को लगा जैसे किसी ने उसे धकेल दिया हो वह दबे पांव दरवाज़े की ओर बढ़ा, पर बरामदे में मां की सर्द आवाज़ आयी

"कहां जा रहे हो?"

"टोली में काम है।"

"लौट आओ! वक़्त रहते संभल जाओ। ऐसा कोई गिला नहीं रहेगा, जिसका तुमसे बदला न लिया जाये, यह याद रखना। घर में बीवी के पास जाओ।"

"पीछे ही पड़ गयी हैं!" युवक ने आंसू रोक रखने से कांप रही मां

से नज़रें मिलाने से डरते हुए खिन्न मन से सोचा। "यह क्या ज़िन्दगी है! ज़रा भी आज़ादी नहीं!"

"मां, ख़ुदा के वास्ते, आप तो मुझे परेशान मत कीजिये। मेरा वैसे ही दम घुटता है!"

मां का दिल कांप उठा बेटे ने इतनी अशिष्टता से उससे कभी बात नहीं की थी। ऐसे अवसर आये थे, जब मां बेटे पर नाराज़ होती, रूठ जाती, पर यह थोड़ी ही देर रह पाता मां स्वयं किसी तरह गराश को उचित ठहराने की कोशिश करती, इसीलिए क्षमा भी कर देती। इस समय उसका पहला बच्चा उसके सामने केवल अशिष्ट ही नहीं, बल्कि बिलकुल पराये की तरह, अत्यन्त दूर का जैसा खड़ा था

गराश सिटकनी खोलने लगा था, पर अचानक उसके सामने पिता आ खड़ा हुआ–वह सोने के कपड़ों में था, पैर नंगे थे। उसकी मूछें बिखर रही थीं, सफ़ेद बाल हिल रहे थे, क्योंकि क्रोध के मारे रुस्तम का बल-शाली शरीर कांप रहा था।

"क्या अपने और हमारे खानदान का नाम नीचा करके तुम्हें सब्र नहीं हुआ?" क्रुद्ध पिता का स्वर रुंध गया। "क्या अनाथ की खिल्ली उड़ाकर सब्र नहीं हुआ, जो अब मां से बदतमीज़ी कर रहे हो?!"

और उसने बेटे के इतने ज़ोर से थप्पड़ जड़ा कि गराश लड़खड़ा गया।

सकीना डर के मारे चीख पड़ी।

गराश भागकर फाटक से निकला, स्तेपी की ओर मुड़ा और धुंध में नज़रों से ओझल हो गया।

नज़नाज़ उस रात अपने प्रियतम की बाट जोहती रह गयी

४

जब माय्या पीला चेहरा लिये, जैसे लम्बी बीमारी के बाद उठी हो, हाथ में सूटकेस पकड़े नीचे आयी, सकीना व परेशान बरामदे में नाश्ते की तैयारी कर रही थी, जबकि रुस्तम शेड से 'पोब्येदा' कार निकालकर उसकी जांच कर रहा था।

उसने अप्रत्याशित सहृदयता से बहू के साथ दुआ-सलाम की, हालांकि ससुर अगर माय्या की तरफ़ वैसे ही तिरछी नज़रों से देखता, जैसा कि पहले अनेक बार हो चुका था, तो उसे ज़रा राहत मिलती।

"मा," माय्या ने सकीना से कहा, "मुझे लगभग एक सप्ताह 'लाल झण्डा' में रहना होगा। वहाँ के लोगों ने अछूती धरती के एक टुकड़े में बोवाई की, लेकिन मिट्टी की बिलकुल जाच नहीं की, गलत सिचाई के कारण कई हेक्टेयर ज़मीन में नमक बढ़ गया है। मुझे दिन-रात उसकी सभाल करनी होगी।"

वह सच्ची बात नहीं कह सकी। हालांकि वह सारी रात इस बातचीत की तैयारी करती रही थी, लेकिन सास की सहानुभूतिपूर्ण दृष्टि देखकर और रुस्तम-कोशी का स्नेहपूर्ण अभिवादन सुनकर वह किंकर्तव्यविमूढ़ हो गयी और झूठ बोल गयी। लेकिन अब इरादा बदलने का अवसर निकल चुका था। पति के साथ सुलह का रास्ता बद हो चुका था।

सकीना ने केवल तब छोटा-सा नीला पर्स, सफेद खोल चढ़ा सूटकेस और माय्या के हाथ पर झाड़ा पड़ा चौड़ा भूरा कोट देखा और उसे याद हो आया कि यही चीज़ें लेकर माय्या उनके घर में बहू बनकर आयी थी और वह सब समझ गयी।

"तुमसे विनती करती हू, बेटी, मत जाओ," उसने बड़ी मुश्किल से कहा। "हालात चाहे जैसे हों, तुम्हारे ससुर तुम्हें मोटर में 'लाल झण्डा' पहुचाने रहेंगे और लेते आयेंगे। आखिर हमने 'पोब्येदा' खरीदी किसलिए है?" उसने समर्थन की इच्छा से पेरशान की तरफ देखा, पर वह पूर्णतया अपने पर काबू नहीं रख पा रही थी कभी वह मेज से प्लेटें उठा लेती, कभी फिर वहीं रख देती, कभी कापती उगलियो से सीने पर पड़ी रूमाली को मसलने लगती।

माय्या ने आमू पीते हुए जवाब दिया:

"नहीं, मां, यही बेहतर रहेगा, मेरे लिए भी और आपके लिए भी।"

सब समझ चुके, पर चेहरे से ज़ाहिर नहीं होने दे रहे रुस्तम ने बरामदे में आकर सूटकेस ले लिया।

"काम, घरवाली, दुनिया में सबसे ज़रूरी होता है," उसने प्रभावोत्पादक तरीके से सकीना से कहा। "तुम इसे मनाने की कोशिश मत ..., जाने दो। मैं सारा केरेमोगन् को इसका ध्यान रखने की ज़िम्मेदारी दूंगा। अगर नमक की तह जमी ज़मीन को साफ़ करना है, सही सिचाई का इन्तज़ाम करना है, तो इसका मतलब है, ज़रूर ही ..."

... हुए होंठो से ज़बरन् घटी सकीना को चूमा, ... और इस भय से कि यदि वह एक मिनट

और खड़ी रही, तो खुद फूट-फूटकर रो पड़ेगी, कार की तरफ लपकी।

"कम-से-कम नाश्ता तो कर लेते!" सकीना ने पुकारा, पर मान्या ने सिर हिला दिया, रुस्तम ने अप्रत्याशित चिन्ताशीलता के कारण कहा कि उसे ढेरो काम करने हैं पहले वह बहू को 'लाल झण्डा' छोड़ने जायेगा फिर फौरी काम से जिला मुख्यालय जायेगा, वहीं नाश्ता कर लेगा। परेशान ने यह कहकर कि उसके गले से गस्सा नहीं उतरेगा, तौलिया कुर्सी पर फेंक दिया, गीली तश्तरिया मेज़ पर पटक दी और खेत रवाना हो गयी।

अकेली रह जाने पर सकीना दिल खोल कर रोयी। उसके बाद होश आने पर उसने सारा नाश्ता कुत्ते को डाल दिया, साफ बरतन उठाकर अलमारी में रख दिये, दरवाज़े पर ताला लगाया, चाबी बरामदे मे गलीचे के नीचे छिपा दी (सारा गाव इस गुप्त स्थान के बारे मे जानता था) और कपास के खेत रवाना हो गयी काम में लगे रहने पर सारे दुख और अप्रिय बाते भूल जाती हैं।

शाम को वह बिना अपने घर मे झाके शेरज़ाद के यहा गयी। उसकी बहन कुछ दिनो से बीमार थी और उसकी मा उसे जिले के चिकित्सालय ले गयी थी। जाने से पहले उसने सकीना को अपने पास बुलाकर अनुरोध किया था

"तुम पर कुरबान जाऊ, बहन, शेरज़ाद का खयाल रखना। घर के काम-काज की उसे बिलकुल समझ नहीं है, उसे याद नहीं रहता कि तश्तरी कहा पड़ी है, गिलास कहा रखा है "

शेरज़ाद के अलावा उसे दो वर्ष पूर्व यारोस्लाव्ल प्रान्त से लायी गयी बढ़िया नस्ल की गाय जैरान की भी सभाल करनी थी। निस्सदेह सकीना इस काम को भी नहीं टाल सकती थी।

रुस्तम इस बात पर झल्ला उठा था कि उसकी पत्नी शेरज़ाद का खयाल रख रही है, जिससे उसे घृणा थी, लेकिन मातृवंशजानी गाव की परम्पराओ— पड़ोसी को मुसीबत मे अकेले नहीं छोड़ना चाहिए,—का पालन करते हुए उसने कुछ नहीं कहा।

अब सकीना कभी शाम को, तो कभी दिन मे एकाध घंटे का समय निकालकर शेरज़ाद के यहा जाती, आगन झाड़ती-बुहारती, गाय के लिए चारा तैयार करती, खाना पकाती।

"सूना घर, मिट्टी का राज।" वह वहां सफाई करते समय सोच रही थी।

शेरजाद के आने का इन्तजार किये बिना सकीना ने बुझले चूल्हे में भी टहनियां डाल दीं और मालवाडियों से होती हुई घर रवाना हो गयी।

अहाते के बीचोंबीच धूल में सराबोर 'पोब्येदा' खड़ी थी। रुस्तम ल्मा करता और हांफता हाथ-मुंह धो रहा था, उसने वहां पहुंची सकीना ' साफ तौलिया लेते हुए कहा कि वह मुवह बाकू जा रहा है। सलमान ो भेजना चाहता था, पर इरादा बदल गया।

"बिजलीघर के निर्माण के अनुबंधों का काम तो लड़का निबटा लेगा, समें कोई शक नहीं," रुस्तम ने कहा, "पर मुझे आजरइत्तिफाक* में मारती लकड़ी और छत के लिए स्लेट के चौकों के लिए पैसा मंजूर करवाने ाना है, पार्टी की जिला समिति ने इजाजत दे दी है।"

"अगर जिला समिति ने इजाजत दे दी है, तो मेरी सारी दुआएं तुम्हारे साथ हैं," सकीना ने ठण्डी सांस लेकर कहा और पति के सफर की तैयारी करने लगी।

उसे पहली बार इस बात की खुशी हुई कि पति कम-से-कम एक सप्ताह के लिए घर में नहीं रहेगा, – यह भावना उसके लिए अप्रत्याशित थी, इसलिए कष्टप्रद भी थी।

४

धूल के ललछौंहा पीले, दमघोंटू गुबार में पशुओं का झुण्ड धीरे-धीरे रेंगता-सा गांव की ओर बढ़ रहा था, चरवाहा अनिच्छापूर्वक चल रही गायों को हांकता बीच-बीच में कोड़ा फटकार रहा था, पर गायों को जल्दी नहीं थी, वे गड्ढों में उगी ऊंची, रसदार घास को चरती जा रही थीं।

सकीना ने फाटक खोला और नजरों से खूबसूरत गाय जैरान को ढूंढ़ने लगी।

"सलाम, सकीना चाची!" चरवाहे ने पुकारा, उसके हवा व धूप से काले पड़े चेहरे पर केवल आंखें चौंधिया देनेवाले सफेद दांत ही चमकते

* आजरबैजानी उपभोक्ता संघ।

नज़र आ रहे थे। "इस मेहमाननवाज़ घर पर भी मातमिन की क्या नज़र है!"

"सलाम, बेटा! अभी तो हालत सुधरने के कोई लक्षण नज़र नहीं आते। आज तुम क्यों इतनी देर से लौटे?"

"खेतों में घास बहुत घनी उगी है, गायों को घास से हटाना मुश्किल हो जाता है," चरवाहे ने बताया।

भीमकाय, चौड़े, सुनहरे रंग की गाय भारी क़दम रखती हुई झुं से अलग हो गयी और फाटक की ओर जाने लगी।

"बेटा, तुम्हारा क्या ख़याल है, इसके ब्याने में अभी काफ़ी देर है?"

"इस हफ़्ते में ब्या जायेगी, मेरे अंदाज़ से बछिया ही होगी। स लक्षण उसी के दिखाई देते हैं।"

"ख़ुशख़बरी के लिए शुक्रिया।"

जैरान ने अलसाये ढंग से सकीना के कंधे पर अपना माथा रखा सकीना ने उसकी गरदन में हाथ डाल दिये और उसे सफ़ाई से सजी हुई कच्ची गोशाला में ले गयी। जैरान की मखमल-सी मुलायम खा सहलाती हुई कहने लगी.

"ओफ, कितने भारी लगते हैं ये आख़िरी दिन! लेट जा जल्दी से सुस्ता ले ."

गाय ने मानो सकीना की बात समझ ली, उसने अपनी गरम, खुरदु जीभ से उसका हाथ चाट लिया।

गाय को अकवारभर ख़ुशबूदार सूखी घास डालकर सकीना शा शहतूत के तले लट्ठे पर बैठ गयी। शाम का झुटपुटा तरह-तरह के क दायक विचार पैदा कर रहा था। दिन में खेत में लोगों के बीच समय जाने कब बीत जाता था, शाम को घर पर कोई न कोई काम निकल आता था, पर अकेले शेरज़ाद के घर का सारा काम सकीना ने बड़ जल्दी निबटा लिया। खाना पक चुका था, समोवार में पानी खदक र था, बस गाय के लिए पानी लाना बाक़ी रह गया था, पूरी बाल्टी पा उठाने की ताक़त सकीना में अब नहीं रह गयी थी—दम फूल जा था .. बेहतर होगा शेरज़ाद के आने का इंतज़ार करे, उसे याद दिलाये

पराये घर में बेकार बैठे रहने पर मन में बरबस विषादपूर्ण विचा आने लगते हैं। अपने को और धोखा देना और आशा रखना अब व्य है कि माय्या लौट आयेगी। पहली नज़र में ही स्पष्ट हो गया था कि व के लिए रुस्तम ख़ानदान का घर छोड़ गयी है। अब निराश बा

होगा? क्या उस लुच्ची ने उस पर जादू कर दिया है? पहले पड़ोसिनें कुछ तो झिझकती थी, मुह पर कुछ नही कहती थी, लेकिन अब माय्या के जाने के बाद से तेल्नी चाची हर चौराहे पर चिल्ला-चिल्लाकर कहती है कि रुस्तम के घरवालो ने ग्रभागी ग्रनाथ की बेइज्जती कर दी

सकीना ने शेरजाद से ग्रवसर मिलते समय देखा था कि उसे ग्रौर नजफ को रुस्तम-कौशी से कोई लगाव नही रह गया है, वे उससे दूर-दूर रहने लगे हैं। ग्रध्यक्ष के सलाहकार ग्रब चालबाज़ यारमामेद ग्रौर ढीठ सपाट सलमान रह गये हैं। उफ़, उसके सामने वे कितने खुशामदी ढग से मुस्कराते हैं, जब कि पीठ पीछे ज़रूर ग्रपनी काली करतूतें करते रहते हैं। कही पति को किसी मुसीबत मे न फसा दें...

सामूहिक फार्म मे वसन्तकालीन बोवाई का काम पूरा कर लिया गया था, निराई शुरू हो गयी थी, ज़िले मे रुस्तम-कौशी से ग्रधिकारी बहुत खुश थे, कुछ भी हो, हाल ही मे कलतर भैया रुस्तम के घर ग्राया था, उसने चिखिर्मा खाया, वोदका पी ग्रौर गृहस्वामी की तारीफ के पुल बाधे। रुस्तम फिर घमण्ड से फूल उठा, सिर ऊंचा उठाकर चलने लगा ग्रौर केवल उन्ही लोगों पर ध्यान देने लगा, जो उसके सामने सिर झुकाते, जब कि ग्रवज्ञाकारियो को वह मरखने बैल की तरह सीगो से टक्कर मारने को तैयार रहता इसका ग्रन्त ग्रच्छा नही होनेवाला. .

सकीना को होनेवाला ग्रनर्थ ग्रवश्यभावी लगने लगा।

वह क्या करे? पति से बात करने पर हमेशा की तरह झगडा होगा। जिला समिति मे शिकायत करे? नही, उसमे ऐसा करने का साहस नही है! न जाने कौन मामले की जाच करे। ग्रगर वह रुस्तम का दुश्मन निकला तो? वह मौक़े का फायदा उठाकर उसकी मदद करने के बजाय सकीना ग्रौर उसके पति की बदनामी करवा दे, बूढ़े के हाथ-पैर मोडकर गिरा उसके सीने पर घुटना दबाकर बैठ जाये। नहीं, इस तरह के विचारों से ग्रादमी पागल हो जाये। बेहतर होगा, जल्दी से जल्दी घर चली जाये

"शेरजाद ग्राखिर कहा गायब हो गया? गाय को पानी पिलाने का वक्त हो गया है!" सकीना ने प्रकट मे कहते हुए सोचा।

"मा, तुम्हे पानी चाहिए क्या? ग्रभी लायी!"

सकीना ने ग्राखें उठायी ग्रौर पेरशान को सामने खड़े देखा।

"तुम दबे पाव कैसे ग्रा पहुची? क्या कुछ हो गया है? ग्रब्बा का तार ग्राया है?"

"कितना अच्छा हुआ, जो तुम आ गयीं!" उसके मुह से निकल गया। "घर मे चलो "

लेकिन पेरशान ने रूखे लहजे मे कहा कि वह केवल एक किताब लेने आयी है, उसका नाम क्या है, उसे याद नही रहा शायद आज़रबैजान के सामूहिक फार्मों के अग्रणी किसानो के बारे मे है। पुस्तक रुस्तम-कौशी को चाहिए।

"'नयी समस्याए – नयी आकाक्षाए'– यही नाम है न?" शेरज़ाद ने यह याद करके कहा कि अध्यक्ष कई बार इस पुस्तक को पढने की डीग हाक चुका है, पर जाहिर है उसने उसके पन्ने भी नही उलटे है। खैर, देर आये दुरुस्त आये . "बस यह मत बताना कि तुमने यह किताब मुझसे ली है, नहीं तो वह इसे देखने को भी तैयार नहीं होंगे।"

"तुम्हें यह मालूम होना चाहिए कि मैं अपने प्यारे अब्बा से कुछ नही छिपाती हू। तुम क्या मुझे अपने मा-बाप को धोखा देना सिखा रहे हो? मा, सुना तुमने?!"

"चुप कर, लडकी!" सकीना चिल्लायी।

"किताब के लिए शुक्रिया, घर जाने का वक्त हो गया," पेरशान ने औपचारिकता से कहा और फाटक पर पहुचकर आगे बोली "उम्मीद है, मा, तुम इस नौजवान से बातें करते समय यह नहीं भूलोगी कि तुम्हारा अपना परिवार भी है?"

और वह ठहाका लगाकर अधेरी गली से घर भाग ली।

सकीना ने केवल हाथ झटकारे और ठण्डी सास ली, जब कि शेरज़ाद उल्लसित किन्तु किंचित् उदास मुस्कान के साथ जहा खडा था, वही बरामदे की सीढी पर कैनवस के धूल मे सराबोर बूट पहने हुए ही थकान के मारे झल्ला रहे पैर फैलाकर बैठ गया।

देर कैसे हुई? काम हमेशा की तरह ढेरों हैं, जिले से जाच समिति ने आकर कपास की और निराई की जाच की। क्या वे सन्तुष्ट थे? युवक सकुचा गया और इधर-उधर देखने लगा . वह जानता था कि सकीना का दिल पति की सारी असफलताओ के कारण बहुत दुख रहा है, लेकिन वह उससे झूठ बोलने का साहस न कर सका।

"नहीं," चाची, लोग खुश नहीं हैं। बहुत से खेतों मे पौधे काफी छोटे हैं, उनकी ऊचाई कम है .." शेरज़ाद ने जान-बूझकर "बहुत से खेतो मे" कहा, न कि "कुछेक टोलियो में" ताकि सकीना कहीं यह न

तुम विश्वास रखो। तुम कोशिश करो कि उन्हें गुस्सा न आये, ढग से पेश आओ, इस तरह कि उन्हें शक न हो, तब सब ठीक हो जायेगा।"

शेरजाद ने सोचा कि उसकी भी अपनी प्रतिष्ठा है अगर सामूहिक फार्म के कम्युनिस्टो ने उसे सचिव चुना है, तो रुस्तम को भी इस तथ्य को स्वीकार करना चाहिए। लेकिन चाची के दिल को ठेस न पहुचाने की इच्छा से उसने कृत्रिम उत्साह के साथ कहा

"तुम्हारी बात सही है, हमारे बाद बस हमारा नेकनाम और नेक काम ही रह जायेंगे। तुम जानती हो, चाची, मेरी जिन्दगी फूलो की सेज नही रही है। शायद मैं किसी और ही ढग से जीना "

"तुम्हें जरी के कपडे पहनकर भी कभी घमण्ड नही होगा," सकीना ने उसे टोक दिया।

"कह नही सकता, कह नही सकता " शेरजाद ने आखें झुका ली। "*बुजुर्ग कहते हैं कि किसी आदमी को दौलत अधा कर देती है, किसी* को यश और किसी को सत्ता। तुम्हें साफ-साफ बता दू, चाची, कि पिछले कुछ दिनो से रुस्तम-बोबो को बहुत घमण्ड हो गया है। वह सोचते हैं कि उनमे ज्यादा अक्लमद जिले मे और कोई है ही नही।"

"मैं मानती हू, बेटा, मानती हूं, लेकिन अब क्या किया जाये? क्या सब उनसे मुह फेर ले? या तो क्या उनकी आखें खोलना और भूल से बचाना बेहतर नही होगा? क्या उन्हे बुढ़ापे मे सही रास्ते से न भटकने देना बेहतर नहीं होगा?"

शेरजाद सोच मे डूब गया। उसे देखते हुए सकीना को अफसोस होने लगा कि उसने अपने सारे कष्ट युवक के कधो पर लाद दिये हैं, जब कि उसके ये सुख से जीने के दिन हैं। बचपन मे उसे बहुत कम खुशिया नसीब हो पायी थीं...

"जाकर तुम्हारे लिए चाय ले आती हू ."

६

सकीना चूल्हे के पास रुक गयी, जब कि शेरजाद उसकी कही बात के बारे मे सोचता रहा। बात कितनी सही है—जीवन-पथ केवल सूर्यास्त, क्षीणता और वृद्धावस्था की ओर ले जाता है। उस पर रुकना असम्भव

सोचे कि वह शेखी बघार रहा है। उसकी टोली के टुकड़े में, जाच समिति के मतानुसार, कपास बहुत अच्छी हालत में थी।

"तुम लोग आखिर क्या करते रहते हो?" सकीना ने उलाहनाभरे में कहा।

"बुरा मत मानो, चाची, पर यह सवाल किसी और आदमी करना बेहतर होगा।"

"मैं उसी आदमी से तो पूछ रही हूं। तुम और रुस्तम एक ही की रोटी जो हो, क्या छोटी, क्या मोटी, इसलिए उसकी तरफ से तुम जवाब दो," सकीना ने प्रतिवाद किया।

शेरज़ाद ने कंधे उचका दिये। क्या वह ज़िम्मेदारी से कतराता है क्या वह अध्यक्ष की मदद नहीं करना चाहता था? लेकिन जब शेरज़ का हर शब्द रुस्तम को जामे से बाहर कर देता हो, तो कोई क्या सकता है

सकीना ने बरामदे में गद्दा लाकर उसे तख्त पर बिछा दिया, तकि और रजाई रख दिये। फिर वह लौटकर शेरज़ाद के पास आ बैठी और ठण्डी सास लेकर सोच में डूबी बोली:

"मैं तुम्हारे लिए खाना बना रही थी और डूबते सूरज को देखती जा रही थी वह झुलसा रहा था, आखें चौंधिया रहा था फिर डूबने की जल्दी में नहीं था। लेकिन वक्त आ गया और वह क्षितिज के पीछे ओझल हो गया। वह चाहे आज डूब गया है, पर हम तो जानते हैं कि सूरज कल फिर निकलेगा और अपना सुखद प्रकाश हमें सौगात में देगा। और हम, इनसान क्या करेंगे? क्या हम अपना सूर्यास्त सह सकेंगे, जवान और बलशाली होकर पुनर्जन्म ले सकेंगे? नहीं ऐसा अभी इस दुनिया में नहीं हुआ है। हममें से हरेक की सुबह हुई थी, दोपहर हुई थी और सूर्यास्त भी होगा। वे लोग खुशकिस्मत हैं, जिन्हें उनके सूर्यास्त की घड़ी में कृतज्ञतापूर्वक याद किया जाता है। उनकी बदकिस्मती है, जिन्हें उनकी आखिरी घड़ी में लोग बददुआएं देते हैं तुम जवान हो, बेटे, बहुत जवान, जिन्दगी में तुम बहुत सी बातों को शुभ बुढ़िया से अलग नज़रों से देखते हो। रुस्तम मेरे पति हैं, मुझसे बेहतर उन्हें और कौन जानता है? हम इतने बरसों से एक ही तकिए पर सिर रखते रहे हैं। [illegible] है, इसमें कोई शक नहीं, पर ईमानदार हैं। मेरी इस बात का

ग्रंधेरा था, सकीना युवक को ठेस पहुंचाने के डर के बिना दयापूर्वक मुस्करा दी।

"हां, बेटा, तुम हो सनकी," उसने कहा। "ऐसी मामूली बातें तुम्हें परेशान करती हैं, तुम्हारी मां का दूध तुम्हारे लिए हमेशा बरक्ती हो! लेकिन तुम जब जन्म से ही रहमदिल हो, तो लोगों को बेकार ठेस मत पहुंचाओ। लोगों का खुले दिल से भला करो लोग यूं ही तो नहीं कहते हैं न नेकी ही रह जाती है। लेकिन बुरे लोगों से होशियार रहो, हर राह चलते पर विश्वास मत करो। लोगों पर जल्दी विश्वास करना भी अच्छा नहीं होता, यह मैं रुस्तम-कौशी को भुगतते देख चुकी हूं।"

शेरज़ाद समझ नहीं पाया कि इस बातचीत से रुस्तम का क्या सम्बन्ध है। सकीना एक मिनट के लिए हिचकिचायी, पर फिर उसने यह सोचकर कि जब बात कहनी ही है, तो दो टूक कहनी चाहिए, हाथ झटका और कहा कि यारमामेद शेरज़ाद से दोस्ती गाठना चाहता है, उसका विश्वासपात्र बनना चाहता है।

"खुदा न करे, उसे पास मत फटकने देना! सारे लोग यारमामेद के खिलाफ हैं, और लोगों के मुंह से कभी झूठी बात नहीं निकलती।"

पहले शेरज़ाद अपने को मनाता रहता था कि उसे यारमामेद और सल्मान का तिरस्कार नहीं करना चाहिए, पर वह अब अपने भोलेपन पर खुद पछता रहा था। ये चापलूस रुस्तम-कौशी के साये में ज़बरदस्ती आने की कोशिश यूं ही नहीं कर रहे हैं शेरज़ाद की आंखों के आगे कपास के पौधे के पास उगे मोटे-मोटे और मज़बूत परजीवी पौधे घूम गये जो उसका सारा रस चूस लेते हैं। उस खर-पतवार को जड़ से उखाड़ना आसान नहीं है! थककर चूर हो जाने तक कुदाल चलाकर उसके चारों ओर की ज़मीन खोद डालनी पड़ती है। कभी-कभी आस-पास के पौधों को छूत से बचाने के लिए उस पौधे को जला डालना पड़ता है। लेकिन खर-पतवार की जड़ों को ज़मीन के नीचे आपस में गुथने का मौक़ा दिया, तो सब बरबाद हो जायेगा, सारा खेत बेकार हो जायेगा।

- "चाची," शेरज़ाद ने भोलेपन से पूछा, "क्या तुमने इस बारे में रुस्तम-कौशी से बात करने की कोशिश की?"

"तुम क्या सोचते हो, बेटा, कि मैं अंधी भी हूं और गूंगी भी हूं?' सकीना रूठती हुई मुस्करायी। "मैं रोज़ यही कहती हूं: लोगों का सहारा लो, ठोकर भी खाओगे, तो गिरोगे नहीं।"

की पैनी नजर व्यवस्था का ध्यान रखेगी, तो बुरी नीयतवालों की चू करने की भी हिम्मत नहीं हो सकेगी। अध्यक्ष और सचिव को परेशान नहीं होना पड़ेगा : स्तेपी में मेमनों का क्या हो रहा है? कहीं अनाज चुरा तो नहीं लिया गया है? लोगों की नजरों में भूसे में पड़ी सूई भी छिपी नहीं रह सकेगी।

"अच्छा, अब घर जाने का वक्त हो गया है, अपने बच्चों को खिला-पिलाकर सुलाना है।" सकीना ने मज़ाक़ किया। "मेरी तुमसे एक विनती है, शेरज़ाद..."

उसका चेहरा अचानक लाल हो उठा।

"कहो, कहो, चाची, तुम तो आखिर मेरे लिए दूसरी मां की तरह हो।"

"अगर तुम्हारा कभी 'लाल झण्डा' जाना हो, तो वह से कहना कि परेशान और मेरा दिल दुख के मारे टूटा जा रहा है। कम-से-कम एक घटे के लिए ही मिल जाये," सकीना ने अनुरोध किया।

शेरज़ाद उसे बता सकता था कि हाल ही में नजफ, गिज़ेतार और उसने कैसे लापरवाही के लिए गराश को झाड़े हाथों लिया था, लेकिन वह शर्मा गया और उसने केवल वादा किया.

"कल उधर जाऊंगा और जरूर कह दूंगा।"

सकीना चली गयी, पर उस बातचीत व अपने विचारों से व्याकुल युवक बिना लैम्प जलाये काफ़ी देर तक बरामदे की सीढ़ियों पर बैठा रहा। उसके दिल को अच्छा लग रहा था, वह खुश था।

पौ फटे जैसे ही सूरज की पहली किरण हीरे सदृश निर्मल क्षितिज पर रक्ताभ रेखा-सी खिंच गयी, शेरज़ाद ने कुम्मैत घोड़े पर काठी कसी और ताज़गी से पुष्पित, सुगंधित खेतों की ओर उसे सरपट दौड़ा ले चला. युवक के हृदय में उमड़ रही उदात्त भावनाएं अब कुछ कर दिखाने, सघर्ष करने की उत्कट इच्छा में परिवर्तित हो चुकी थीं।

रगबिरगे फूलों व गेहूं की पोडी बालियों से सुसज्जित मुग़ान भद्र, स्नेहमयी मां के समान शेरज़ाद को अपने पास बुला रही थी।

उसने रकाबों में खड़े होकर पैनी नजर निस्सीम समतल प्रदेश पर दौड़ायी, काम पर निकले सामूहिक किसानों को देखा और युवक का हृदय सन्तोष से परिपूर्ण हो उठा कि वह भी उनके साथ है... और जब उसने धूप से काली स्याह हुई विनोदी व जिन्दादिल स्त्रियों व युवतियों के बीच

...दा का सहारा न मिले तो हर कोई गिर सकता है," शेरजाद ने स्वीकार किया।

"एक हाथ से तो ताली भी नहीं बज सकती," सकीना ने कहा। "यह सच भी है, पहला हाथ मदद के कारण [illegible] उठता है ... [illegible] खर-पतवार का पत्ता है या वह कोई सायादार पौधा है? ऐसी स्थिति में हजारों हाथों की, बुद्धिमत्तापूर्ण, जीवन के अनुभव के आधार पर [illegible] में विश्वास से परिपूर्ण शक्ति की आवश्यकता होती है। यह हर कोई समझता है कि जो भेंटी आग नहीं दब पाती, उसे हजारों हाथ तुरन्त दबा देते हैं। यह सत्य साधारण सामूहिक किसान के लिए स्पष्ट होता है [illegible] काफी समय तक कई सत्ताधारियों की समझ में नहीं आता।

"काफी," शेरजाद इतनी ईमानदार सम्भाषिणी मिलने की खुशी से चुप न रह सका, "दुनिया में आदमी से बढ़कर पेचीदा प्राणी कोई नहीं है। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि किसी आदमी को बिलकुल सीधा गुजरा, पक्का बदमाश समझ लिया जाता है, पर मालूम पड़ता है कि वह नेक है। जब कि दूसरा, जो देखने में अक्लमंद और हरफन-मौला लगता है, नजदीक से देखने पर पता चलता है, वह बिलकुल नीच है।"

"जाहिर है, इसीलिए तो सिर्फ अपने खयालों पर ही भरोसा नहीं करना चाहिए, अलग-थलग नहीं रहना चाहिए," सकीना ने सोचकर कहा "अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता "

शेरजाद को उसकी बातों में मेहनत की जिन्दगी जी चुकी आत्मविश्वासी किसान नारी की बुद्धिमत्ता दिखाई दी, जिसने कभी झूठ नहीं बोला, छल-कपट नहीं किया, पराये माल पर दांत नहीं गड़ाये, अपने कुछ परिचितों की आज़ाद जिन्दगी से कभी ईर्ष्या नहीं की और केवल अपनी मेहनत के फल पर ही भरोसा रखा। हां, उसे सकीना के शब्दों में पति, परिवार व अपनी सन्तान के सुख में अपना सुख देखनेवाली अभिजात नारी-हृदय का स्पंदन सुनाई दे गया।

सकीना ने उदास स्वर में कहा कि रुस्तम बूढ़ा हो चुका है, पांच साल और काम करेगा और फिर अलग हटकर नौजवानों के लिए रास्ता छोड़ देगा। शेरजाद के जैसों को खेती-बारी संभालनी होगी, लोगों का नेतृत्व करना होगा। अब शेरजाद पर भारी जिम्मेदारी आ चुकी है, अगर वह और रुस्तम एक दूसरे की मदद करें, तब सारे सामूहिक किसान उनके पीछे चल पड़ेंगे, तब पहाड़ काटना भी आसान हो जायेगा। अगर जनता

'कुछ खराबी हो गयी है। आपरेटर नदी की तरफ उतरा है, वह
है कि अभी आता हूं।"
'कैसे लोग हैं!" शेरज़ाद क्रुद्ध हो उठा और तेज़ कदमों से नदी की
चल दिया। "काम ज़ोरों पर है और मशीन छोड़ गया! मशीन से
दो-तीन दिन में काम निबटा लेते!"
ऊंची कटीली झाड़ियां घुटनों में चुभी जा रही थीं, जैसे उसे रोक
हो - जल्दबाज़ी मत कर, भाई घासस्थली और नदी के बीच एक
में घास के टुकड़े पर भेड़ें चर रही थी, शेरज़ाद ने आज़ादी से इधर-
चर रही भेड़ों व उनकी लटकी हुई मोटी-मोटी दुमों पर स्वामी
तरह नज़र डाली। दाढ़ीवाले चरवाहे ने पार्टी संगठन के सचिव का
वादन किया।
"तुम्हारी दौलत दिन दूनी रात चौगुनी बढ़े!" शेरज़ाद ने कामना
"नया इनचार्ज कैसा है? पसंद आया?"
चरवाहे ने टोपी उतारकर गुद्दी खुजलायी और अपनी बिखरी दाढ़ी
यी।
"यह तो अफसर ही जाने "
शेरज़ाद को चरवाहे के शब्दों में उलाहने का पुट महसूस हुआ, उसने
। को इस बात का दोषी अनुभव किया कि उसने समय रहते केरेम
पक्ष नहीं लिया।
"तुम ने यहां आपरेटर को तो नहीं देखा?"
"नजफ को? वह रहा बाल्टी लिये," चरवाहे ने लम्बा कोड़ा फटकारा
: एक तरफ हट गया।
नजफ बाल्टी लिये ढालवां किनारे पर बनी टेढ़ी-मेढ़ी पगडण्डी से ऊपर
रहा था। वह धीरे-धीरे चल रहा था, बीच-बीच में बाल्टी ज़मीन
रख देता था, सांस लेता था और पसीने से तर चेहरा पोछ लेता था।
"ऐ, ज़रा रफ्तार बढ़ाओ!" शेरज़ाद चिल्लाया। "अगर तुम्हें हांकना
गया, तो काम बिलकुल ही रुक जायेगा।"
नजफ ने फिर बाल्टी रखकर ठण्डी सांस ली, उसके भरे-भरे गाल
र्ख हो उठे थे।
"क्या तुम लोग, शैतानो, इतना भी नहीं कर सकते कि मशीन ख़राब
ने की नौबत ही नहीं आये?" शेरज़ाद उस पर बरस पड़ा। "हर मिनट

मशीनों को नमस्कार किया, जो उसे बहुत प्यारी लगती थीं। [illegible]
हो चली। उसने अब ही अब उस जनता की [illegible] और [illegible]
लिए हृदय से धन्यवाद किया और एक मिनट बाद ही उस [illegible]
मानों के बारे में उत्पन्न हुए विचार अत्यन्त महत्त्वपूर्ण [illegible] के [illegible]
व [illegible] विचारों के साथ घुल मिल गये।

'हे मेरी जनता, तुम ही मेरा भाग्य हो, [illegible] हो!' ये शब्द युवक के हृदय में गीत के समान गूंज उठे। "तुम मेरा गौरव हो,
मेरा गुण हो! जीवन के दुर्गम मोड़ों पर तुम मेरा हाथ पकड़कर ले
चली हो, निराशा के क्षणों में बचाती हो। मेरे हृदय में उज्ज्वल [illegible]
ही तुम से है! तुम्हारे आदेश पर ही मैंने आत्मविश्वास का यह [illegible]
से आगाह [illegible] किये हैं! तुम्हारी इच्छा से ही मैं ये नहरें और सड़कें बना
रहा हूं, नगरों का निर्माण कर रहा हूं, मरुभूमि में वनरोपण कर रहा हूं,
पृथ्वी के गर्भ में छिपी [illegible] तक पहुंचने का मार्ग बना रहा हूं!
तुम्हीं ने, मेरी जनता, मुझे समृद्धि के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा दी है।
जीवन के कटु क्षणों में तुमने मेरा साथ नहीं छोड़ा। उन क्षणों में जब
कायरों, भीरुओं ने मुझसे मुंह फेर लिया, तुम ने मेरा साथ नहीं छोड़ा।
मैं सदा तुम्हारे प्रति निष्ठावान रहूंगा, तुम्हारी आकांक्षाओं को मर्यादित
रखूंगा, तुम्हारे आगे सदा नतमस्तक रहूंगा, अहंकार को कभी धोखे से भी
अपने हृदय में नहीं आने दूंगा—यही मेरा धर्म है!"

७

घास बहुत अच्छी हुई, कमर से ऊंची उग आयी, तिस पर रसदार
और खुशबूदार थी। घसियारे घासस्थली में लम्बी-लम्बी हंसियाएं चलाते,
अपने पीछे घास के ढेर छोड़ते एक कतार में आगे बढ़ते जा रहे थे। हवा
घास की तीव्र गंध से संपृक्त थी। शेरजाद ने जब स्तेपी में पहुंचकर देखा
कि सुबह के समय से कितनी घास काट ली गयी है, उसे सुखद लगा,
लेकिन एक मिनट बाद ही एक ओर बेकार खड़ी घास काटने की मशीन
पर नज़र पड़ते ही वह उदास हो गया।

"मशीन काम क्यों नहीं कर रही है?" उसने एक घसियारे से पूछा।
[illegible]ने आस्तीन से चेहरे का पसीना पोंछकर कंधे उचका दिये।

कच्चे रास्ते पर पहुंच गये। वहां धूल, काले मैल, भेड़ों की मेंगनियों की बू आ रही थी.. दूर एक ट्रक दिखाई दिया, जिसमें पीछे एक स्त्री चौड़ा स्ट्रा-हैट लगाये खड़ी थी। ट्रक के पहियों से लगकर धूल के गुबार उड़ रहे थे, धूल गड्ढों व रास्ते के किनारे की झाड़ियों पर जम रही थी। शेरज़ाद और माय्या एक तरफ लपके, पर ट्रक अचानक रुक गया। गिज़ेतार स्ट्रा-हैट गुद्दी पर खिसकाकर खनकती आवाज़ में चिल्लायी

"आओ, बैठो, बैठो! . "

उसने माय्या की तरफ हाथ बढ़ाया, जब कि शेरज़ाद इस बीच बड़ी फुर्ती से उछलकर ट्रक के पीछे रसायनों के सिलिंडरों पर बैठ गया।

"ओह, माय्या बहन," गिज़ेतार बड़ी बेतकल्लुफी से जल्दी-जल्दी बोली, जैसे वे एक घंटे पहले ही एक दूसरे से अलग हुई हों, "कितनी मुश्किल हो रही है मुझे! मैंने कितना ही मना क्यों न किया मुझे गूंगे हुसैन के स्थान पर टोली-नायक बना दिया गया है। और इस जोंक ने भी मुझे नियुक्त करवाने में उनका साथ दिया," उसने मुस्करा रहे शेरज़ाद की ओर इशारा किया। "हुसैन के खेतों की जोताई देर से हुई, बोवाई लापरवाही से की गयी, अंकुर बहुत कम निकले हैं। मैं तो तंग आ गयी. कभी अतिरिक्त खाद दो, कभी निराई करो, कभी कीटनाशकों का छिड़काव, तो कभी पानी दो..."

"लेकिन जीने में मज़ा भी तो आ रहा है," शेरज़ाद ने उसे तसल्ली दिलायी।

"सच्ची बात है, बहन, सब ठीक हो जायेगा," माय्या ने अपने हृदय में उमड़ती सहानुभूति की भावना के साथ उसे गले लगा लिया। "ऐसा कोई काम नहीं, जो तुम्हारे फुरतीले नन्हे हाथ चट-पट न कर सकें।"

"नन्हे हाथ!" प्रशंसा से पुलकित गिज़ेतार कह उठी। "कितने चौड़े हाथ हैं! पंजे!" उसने अपने खुरदरे घट्ठे व खरोंचें पड़े, धूप में भूरे पड़े ताक़तवर हाथ दिखाये। शेरज़ाद ने सोचा कि परेशान के भी हाथ ऐसे ही हैं और सचमुच वे उसे शहरी कामचोर लड़कियों के गदराये, पालिश में सने नाखूनों से ज़्यादा प्यारे लगते हैं।

ऊबड़-खाबड़ रास्ते पर ट्रक बुरी तरह धचके खा रहा था, गिज़ेतार माय्या को अपने गरम बग़ल से सटाये सहारा दे रही थी। अचानक उसने माय्या

बेशकीमती है। तुम तो कोम्सोमोलों के नेता हो, सारे युवा तुम्हारा अ
शरण करते हैं।"

एक गिज़ेतार ही थी, जो नजफ़ को गुस्सा दिला सकती थी, व
भी हमेशा नही। टोली-नायक की बात का उस पर कोई असर नही हुआ।

"जहा मैं रहता हू, सब ठीक रहता है," नजफ़ निश्चिन्तता
मुस्करा दिया। "माय्या को देखा? वह रही वहा साइलो के पास।"

मित्र की बात पूरी सुने बिना ही शेरज़ाद टेकरी पर बने साइलो
ओर मुड गया, नजफ बाल्टी उठाकर धीरे-धीरे ऊपर चढ़ने लगा। "इ
गुस्सा करने की बात ही क्या है?" उसने सोचा। "दिन लम्बा है, सू
अभी सिर के ऊपर है, ट्रैक्टर घडी की तरह ठीक काम कर रहा है
कोटे से ज्यादा काम कर लेगें, गिज़ेतार ने शाम को चिख़िर्मा पकाने
वादा किया है,—कहने का मतलब है, ज़िन्दगी मजे मे कट रही है

इस बीच शेरज़ाद हाल ही मे निर्मित साइलो के निकट पहुचना
रहा था, जहा औरते डाडियो व टोकरियों मे रूखी दलदली घास, नरक
खर-पतवार आदि रखकर ला रही थी। उसने दूर से माय्या को देख
उसकी ओर हाथ हिलाया।

पीली पडी, मुरझायी माय्या मुस्कराकर सकुचाती हुई पास आयी
"आपने कारा केरेमोगलू चाचा को टेलीफोन किया था? क्या हुआ?

"यही कि आपको नही भूलना चाहिए, आप का नाम अभी तक हमा
कोम्सोमोल सगठन मे दर्ज है," शेरज़ाद ने कृत्रिम उत्साह के साथ कहा
"हालाकि नजफ सुस्त है, पर देर-सवेर वह आप तक पहुच ही जायेगा।

स्पष्ट था कि माय्या मज़ाक के मूड मे नहीं थी, वह बरबस मुस्करायी
शेरज़ाद ने बिना घुमा-फिराकर बात किये उसे उसकी सास का अनुरो
बता दिया।

माय्या सोच मे पड गयी, उसने उदासी से नजरे कहीं हथेली मे ग
ली, फिर दृढ़तापूर्वक घुघराले बालो को झटका दिया.

"मैं उससे खेत मे मिलने जाऊगी, वहीं बात कर लेगे। आपका उधर
जाने का इरादा है?"

"हा, मैं भी उधर ही जा रहा हू," शेरज़ाद ने, यह मानकर कि
उसकी उपस्थिति मे माय्या के लिए सास से मिलना आसान होगा, मुड
बोला।

गुजर ओर कपास का खेत पार करते

"यानी तुम सहमत हो न?" नजफ़ हर्षित हो उठा।

"सहमत क्यों न होऊंगा!"

"गोशातखां तुमसे मिलना चाहता था, वह रात को हमारे गांव में रहा था। क्या उसका अक्सर आना भलाई की निशानी है?"

शेरज़ाद मित्र के सन्देहों से सहमत नहीं था।

"परीक्षाएं सिर पर आ पहुंची हैं, सत्र समाप्त होने जा रहा है। मुझे उसके आने में कुछ अजीब नज़र नहीं आता।"

नाश्ते के बाद नजफ़ खेत रवाना हो गया, जब कि शेरज़ाद यह सोचकर कि गोशातखां रात को मुख्याध्यापक के यहां ठहरा है, स्कूल चला गया।

स्कूल की चौड़ी खिड़कियों और नीला पेंट किये हुए दरवाज़ोंवाली एकमंजिला सफ़ेद रंग की इमारत सजी-धजी लग रही थी। शेरज़ाद मुग्ध हुआ उसे देख सोचने लगा कि रुस्तम अगर किसी काम को संभाल ले, तो बहुत ही अच्छी तरह करेगा। ऐसे सुनियोजित स्कूल पर तो किसी भी शहर को गर्व हो सकता है। थोड़ी दूरी पर, जहां समतल निर्माण-स्थल पर तराशे हुए पत्थरों का ढेर लगा हुआ था, सामूहिक फ़ार्म के सस्कृति-भवन का निर्माण-कार्य चल रहा था। रुस्तम ने कारा केरेमोगलू और साथ ही मुगान के सारे सामूहिक फ़ार्मों के अध्यक्षों को मात देने के इरादे से भव्य भवन खड़ा कर डालने की ठानी थी। बाकू में उसने किसी तरह मंत्रियों तक पहुंचकर उनके सामने भावी संस्कृति भवन के सौन्दर्य का इतना भावविभोर होकर बखान किया कि उसे बिना किसी कठिनाई के सारा इमारती सामान मिल गया—सामूहिक फ़ार्म को सीमेंट, स्लेट के चौकों, केन्द्रीय तापन व पानी के पाइपों के वैगन पर वैगन भेजे जा रहे थे।

सोच में डूबे शेरज़ाद को पता भी न चला कि कब गोशातखां उसके पास आ पहुंचा। उसने सचिव से हाथ मिलाया। शेरज़ाद ने आश्चर्य व्यक्त किया:

"आप क्या रात को स्कूल में ही सोये थे?"

"गांव में भी मेरे बहुत से दोस्त हैं। जैसे तेल्ली चाची ..." गोशातखां मुस्कराया।

शेरज़ाद सतर्क हो गया: "यानी, यह हमारे अध्यक्ष के बारे में काफ़ी क़िस्से सुन चुका है। चाची बेलाग कहने की आदी थी। बिलकुल ठीक ही करती है! अगर सड़े-गले को संभालकर रखा जाये, तो सड़ायंध सारे में

मरा... और यह याद रखो," सलमान ने धमकी भरे स्वर में कहा।
"हाँ, जिसे कहते हैं, तुम्हारी खुशामद किसी हालत में नहीं करूँगा।"
शेरज़ाद का चेहरा फक हो उठा, उसने उचककर दुश्मन के मुँह पर धक्का मार दिया।

"पर तुम भी याद रखना, उपाध्यक्ष, कि अब तुम्हारे लिए अपने पहल को काबू में रखने और अपने ईमान को बरकरार रखने का वक्त आ गया है!"

इसके बाद उन्होंने एक भी शब्द नहीं कहा, पर दोनों को ही इतना स्पष्ट हो गया था कि चुप रहने का समय निकल गया है और खुल्लम-खुल्ला मुठभेड़ शुरू हो गयी है।

८

अगली सुबह नजफ ने शेरज़ाद के यहां पहुंचकर उसे निद्रा से जगा दिया। बड़े भोर का समय था, निचले इलाकों में धुंध छायी थी। शेरज़ाद ने कुतूहलवश मित्र की तरफ देखा यह कैसे आ धमका है, न पौ फटी है, न दिन निकला है? उसे मालूम पड़ा कि कल युवाओं ने गांव की सड़कों पर पटरियां बनाने का निर्णय किया है, यानी रोज़ाना खेत से लौटकर एक-दो घंटे काम करने का।

"मेहनत करिये, आपकी मेहनत सफल हो! यह खबर ज़रा देर से भी दी जा सकती थी," शेरज़ाद ने सोचा। "अभी समझ में नहीं आ रहा है कि माय्या और गराश की गुत्थी कैसे सुलझाऊं, नज़नाज को सामूहिक फ़ार्म से कैसे निकालूं. "

लेकिन नजफ पटरियों के बारे में इतने उत्साह से बोल रहा था कि शेरज़ाद को शर्म महसूस हुई और उसने हृदय से अपने साथी का उत्साह बढ़ाया :

"हम अपने कानों तक गंदगी में रहने के आदी हो चुके हैं। शहर में क्या दूसरी तरह के लोग रहते हैं? उनके लिए अस्फाल्ट जरूरी है, और हमें क्या उसकी ज़रूरत नहीं है? जब पेड़ लगाये जा रहे थे, बहुतों ने भविष्यवाणी की थी। 'सूख जायेंगे ..' पर कुछ नहीं हुआ, नहीं सूखे, इतने हरे-भरे हैं, तीन साल में आसमान नजर नहीं आयेगा, खूब छाया

"फूलों के पौधे लगा रहा हूं," मुख्याध्यापक ने छिपे व्यंग्य के साथ र दिया।

लडको ने एक दूसरे की तरफ देखा।

गोशातखा ने कंधे उचका दिये और एकाएक बेतकल्लुफ़ी से हैडमास्टर कोट के कॉलर को मोड दिया और नाखून से धूल झाड दी।

"ऐसी कडाके की ठण्ड तो पड नही रही है! तुमने क्या मुझे बुद्धू ने की सोची है? सोचते हो मैं टमाटर के पौधो को गुलदाउदी के पौधे झ लूगा? शर्म आनी चाहिए! कक्षा मे चलिये!"

बाहर से सजा-धजा स्कूल अदर से उपेक्षित और गदा निकला। लयारो के कोनो पर कूडे के ढेर लगे हुए थे, दीवारो पर धूल जमे चित्र पोस्टर टगे हुए थे। मुख्याध्यापक जभाइया ले रहा था, सिकुड रहा था, नों उसे आर-पार बहती ठण्डी हवा के झोके लग रहे हो, और गोशातखा बहुत अनिच्छापूर्वक उत्तर दे रहा था। और दीवारी समाचारपत्र? क्यो ही, वह नियमित रूप से प्रकाशित होता है, लेकिन पुराना अक कल ही टाया गया है और ताजा अभी तैयार नही है' उस पर एक भी नोट नहीं ।.. मुख्याध्यापक के कक्ष मे फटे हुए सोफे से कतरनें निकली हुई थी, बर्डकियो के दासे समाचारपत्रो की फाइलो, रजिस्टरो व कापियो के ढेर से टे पडे थे। छत पर टेढा-मेढा धब्बा गुमटे की तरह उभरा हुआ था।

"छत चूने लगी है," मुख्याध्यापक ने शान्ति से कहा। "दो हफ्ते हुए नि सामूहिक फार्म के अध्यक्ष को औपचारिक प्रार्थनापत्र भेजा था। छत ी मरम्मत करनेवालो को अभी तक नही भेजा गया है।"

"आप बडी कक्षाओं के कोम्सोमोल छात्रो को बुलाते और उनके साथ मेलकर मरम्मत कर लेते," गोशातखा ने लयात्मक आवाज मे शिष्टतापूर्ण व्यग्य के साथ सलाह दी।

"आपके निर्देशो को ध्यान मे रखकर उनका पालन करूगा," मुख्या-ध्यापक ने आदरपूर्वक सिर नवाया।

"क्या कामरेड शेरजाद छत के लिए स्लेट के चौके दिलवा सकते है?" गोशातखा ने वैसे ही व्यग्यपूर्ण स्वर मे पूछा।

शेरजाद घबरा गया।

जब छात्रो के अकों तथा उपस्थिति की बात छिडी तो हैडमास्टर सक्रिय हो उठा, फटी बोरी मे से गिरते चनो की तरह एक के बाद एक आकडे बताये जाने लगे, लेकिन गोशातखा अन्यमनस्कता से सुन रहा था।

और जायेगा। लगातार मुर्झाया करने से मट्टर में बद गये पौधे र
सख्तापूर्वक धूप दिखाती है, हवा देती है, इसी से पौध-रोपण इस लिए
देती है, ताकि उनमें कीड़े न लगें।"

"इतनी जल्दी कैसे उठ गये?" उसने पूछा।

"मैं हमेशा भोर में उठता हूं," गोशातखा ने बताया। "ईद
जिन्दगी ग्राम-शिक्षक रहा हूं और किसानों से मशवरे का नियम मं
पूरा हूं सांझ ढले सो जाना, पौ फटे उठ जाना। यहां और कई तरह
विचार परेशान कर रहे हैं।"

शेरजाद ने सतर्कतापूर्वक पूछा:

"क्या आप हमारे सामूहिक फार्म के हालात से परेशान हैं?"

"तुम क्या सारी बातों से सन्तुष्ट हो? ऐसा कुछ दिखता तो नहीं है।
गोशातखा के पतले होंठों पर नटखट मुस्कान फैल गयी। "मैं तुम से
मामले के बारे में बात करना चाहता था," उसने आगे गम्भीरतापूर्व
कहा। "क्या शिक्षक तुम्हारी मदद कर रहे हैं?"

शेरज़ाद को हर तरह की बात कहे जाने की आशा थी - यूगे हुए
के खेत में कपास के पौधे कम होने के लिए झिड़कियों की, निराई का
को जल्दी निबटाये जाने के तकाज़े की, – केवल स्कूल के ज़िक्र को छोड़क

"हमारे यहां शिक्षक बुरे नहीं हैं," उसने धीरे-धीरे बोलना शु
किया। "लेकिन कुछ अलग-अलग रहते हैं। युवा कोम्सोमोल अध्यापि
नियम से मीटिंगों में आती है, सदस्य-शुल्क देती हैं, लेकिन इसके अला
शायद और कुछ नहीं करती हैं। मुख्याध्यापक सभी बातों के बारे में को
उत्साह नहीं दिखाता। वह पार्टी का सदस्य नहीं है, मैं उस पर दबाव कै
डाल सकता हूं?"

"यह तो बड़ा आसान काम है... चलो, स्कूल चलते हैं," गोशातख
ने सुझाव दिया।

पाठ प्रारम्भ होने में अभी पूरा आधा घंटा बाकी था, स्कूल खाली पड़
था, केवल सागवाड़ी में मिट्टी में सने दो लड़के टमाटर के पौधों के पास
कुछ कर रहे थे। उदास व चिन्तित मुख्याध्यापक मुसे हुए कोट का कॉल
उठाये अहाते में मौन चहलकदमी कर रहा था। उसने सर्दमिज़ाजी से
गोशातखा व शेरज़ाद का अभिवादन किया: यह साफ़ नज़र आ रहा था
कि उसे इस मुलाकात से किसी अच्छे परिणाम की आशा नहीं थी।

"क्या कर रहे हैं?" गोशातखा ने पूछा।

तरह होता है, जिसके बारे में किसी शायर ने बिलकुल ठीक कहा है
"भीख मिल जाये, तो भी खुश, गाली नहीं मिलीं, तो भी खुश।"

बूढ़ा अध्यापक काफी पहले बातचीत में भाग लेना चाहता था, पर प्राचीन शिष्टाचार के नियमों में पालन-पोषण होने के कारण गोगालत्रों को टोक न सका।

"कामरेड गोशालग्रों, ग्राप ठीक कहते हैं," उसने अन्त में कह दिया, "मछली का खून ठण्डा होता है, पर उदासीन व्यक्ति की नसों में— पानी... लेकिन यह ध्यान में रखिये कि सामूहिक फार्म की सरगर्म जिन्दगी से अलग रहने के लिए केवल हम ही दोषी नहीं है, बल्कि यह नौजवान, मेरा शिष्य भी कुछ हद तक दोषी है," और वृद्ध ने शेरजाद की ओर इशारा किया। "यह एक बार भी हमारे पास नहीं आया, और अगर मैं गलती पर नहीं हूं, तो आज भी आप इसे जबरदस्ती यहां खींच लाये हैं। यही तो कारण है कि हम स्कूल की इमारत की चहारदीवारी में बंद पड़े हैं और हमारे ऊपर मकड़ी का जाला-सा बुन दिया गया है।"

गोल चेहरों व कपोलों पर लाली और भोली-भाली आंखोंवाली युवा अध्यापिकाएं वृद्ध के हर शब्द पर स्वीकृति में सिर हिला रही थीं।

"पर आप मुख्याध्यापक को बेकार डांट रहे है," वृद्ध अध्यापक बोलता रहा। "शहरी हैं, हाल ही में संस्थान की शिक्षा समाप्त की है, ग्राम-जीवन की जानकारी इन्हें नहीं है, अपने को पराया महसूस करते हैं। मुझे यह बात खुले आम कहने का अधिकार है, क्योंकि मेरी इनके साथ रोजाना नहीं, तो हर दूसरे दिन तो जरूर ही कहा-सुनी होती है। रूसी और जर्मन भाषाओं का अध्यापक हमारे यहां से भाग चुका है. वह यह न सका, साल भर परदेस में भटकता रहा, घर की याद उसे सताती रही और दोस्त वह बना न सका... लेकिन दोषी कौन है? मैं रुस्तम को जिम्मेदारी से मुक्त नहीं करता, लेकिन यह नौजवान भी," वृद्ध ने फिर शेरजाद की तरफ उंगली उठायी, "तो यह सब समझ सकता था, अपने दोस्तों में युवा अध्यापक को शामिल कर सकता था।"

शेरजाद की समझ में नहीं आ रहा था कि शर्म के मारे कहां मुंह छिपाये।

किसी ने दरवाजे को हौले से खटखटाया, और कक्ष में तेल्ली चाची अपने पीछे रुमासी गाराग्योज को खींचती दाखिल हुई। चाची ने मुख्याध्यापक के सामने मुंह पर कपड़ा बंधी हुई सुराही रखकर युयुत्सु मुद्रा में कहा:

यानी स्कूल जाने की उम्र के सभी बच्चे पढ़ते हैं?"

[illegible] सब दर्ज हैं। हमारे आंकड़ों के अनुसार!" [illegible] के साथ कह उठा।

और धनवानों के बच्चे?

मुख्याध्यापक चुप हो गया, उसे स्वीकार करना पड़ा कि कस्बे के धनवानों के बच्चों ने स्कूल जाना वास्तव में बंद कर दिया।

[illegible]

[illegible] और [illegible] में [illegible] की हुई [illegible] [illegible] हुए और [illegible]। एक दूसरे का [illegible] किया।

"आप ने हसनबेक जरदाबी* के बारे में जरूर सुना होगा!" [illegible] ने पूछा।

"कहीं आप 'किसान' नामक साप्ताहिक पत्र से हैं?" मुख्याध्यापक ने माथे पर बल डाल अपनी याददाश्त पर जोर दिया।

"हां, वही! आज से सत्तर साल पहले हसनबेक जरदाबी ने कहा था कि ग्राम-शिक्षक को मशाल की तरह जलते हुए किसानों को नये जीवन का मार्ग दिखाना चाहिए... लेकिन यह तो पिछली शताब्दी में कहा गया था। सोवियत शिक्षक से तो इससे भी अधिक की अपेक्षा की जानी चाहिए, उसे आदर्श, अनुकरणीय और जनता का नेता होना चाहिए!" गोशातवे बिना आवाज ऊंची किये बोल रहा था, केवल शेरजाद ही देख पा रहा था कि उसे अपना क्रोध रोकने में कितनी कठिनाई हो रही है। "आप बिना उत्साह के काम कर रहे हैं, कामचोरी, सुस्ती से, उदासीनता से"

"मेहरबानी करके सबको एक-सा मत समझिये!" मुख्याध्यापक एकाएक क्रुद्ध हो उठा, उसका चेहरा तमतमा उठा। "इक्के-दुक्के तथ्यों के कारण आपको सारे अध्यापकों पर छींटाकशी करने का अधिकार नहीं है।"

"माफी चाहता हूं, खुदा के वास्ते, माफ कीजिये!" गोशातवे ने हाथ पूरे फैलाये। "मैं तो बस यह याद दिलाना चाहता था कि उदासीनता भयानक रोग है। उदासीन, आलसी शिक्षक उस बदकिस्मत फकीर की

---

*हसनबेक जरदाबी – १० वीं शताब्दी के महान लोक-कवि।

"खेत मे जा रही हूं। तुम्हारी बीमारिया मुझे लगें, क्या हुक्म है?"

"तुम क्या खुद नही जानती हो? निराई पूरी रफ्तार मे करो।"

अधर कक्ष मे गोशातखा मुख्याध्यापक से कह रहा था कि शाम को शेरजाद, नजफ और सभी अध्यापकों को बुलाकर सलाह करनी चाहिए। क्योंकि इस तरह की जडता से आदमी पागल हो सकता है मुख्याध्यापक का चेहरा लाल हो उठा, उसने आश्वासन पर आश्वासन दिये कि वह सारे निर्देशों को ध्यान मे रखेगा, जबकि गोशातखा स्पष्ट देख रहा था कि शेरजाद की नियमित मदद के बिना यहा कुछ नही हो सकता।

बाहर निकलकर उसने शेरजाद से पूछा कि क्या कुछ दिनो में पार्टी मीटिंग बुलवाना सम्भव है। सचिव ने कहा कि वे कल शाम एकत्रित होना चाहते थे, पर रुस्तम ने बैठक शनिवार को करने का अनुरोध किया।

"रुस्तम को मैं जानता हू।" गोशातखा शरारती ढग से मुस्कराया। "बेशक, दो-तीन दिन मे टोलियो की स्थिति जल्दी-से-जल्दी अच्छी हो जायेगी, तब वह कम्युनिस्टो के सामने अपना श्रेष्ठ पक्ष प्रस्तुत करेगा खैर, शनिवार को ही सही, काम कही भागा नही जा रहा है," उसने सोचकर सहमति प्रकट की। "शाम को तुम्हारे साथ अध्यापकों के पास चलेंगे। उनमें उत्साह फूकना चाहिए, वे तुम्हारे ही मददगार बन जायेंगे। नजफ को भी बुलाना।"

संस्कृति-भवन की नीव रख रहे राजगीरो मे रुस्तम की भीमकाय आकृति नजर आयी। दूसरे ही क्षण उसका मद्र स्वर गूज उठा – किसी की शामत आ गयी थी गोशातखा व सचिव को देखकर रुस्तम ने अपनी जगह खडे-खडे चिल्लाकर कहा

"शिक्षाविभागाध्यक्ष को तो सचमुच हमारे सामूहिक फार्म से प्यार हो गया है! शैतान तुम्हे यहा ले कैसे आता है? काम ठीक-ठाक है, अनाज की फ़सल मे भी बालिया आने लगी हैं, तरबूजों और खरबूजो मे फूल आ रहे हैं... कौन-सा ठप्पा लगाने का इरादा है?"

"तीखे मज़ाक मत करो, कही तुम्हे ही न चुभ जायें," गोशातखा ने अध्यक्ष के पास आते हुए शान्त स्वर मे कहा।

"मैं तुमसे पूछ रहा हू," अपने पूरे कद मे नाटे गोशातखा को ताकते हुए रुस्तम ने स्पष्ट स्वर मे पूछा, "कौन-सा ठप्पा बना रखा है हमारे लिए?"

"खेत में जा रही हू। तुम्हारी बीमारियां मुझे लगें, क्या हुक्म है?"

"तुम क्या खुद नही जानती हो? निराई पूरी रफ्तार से करो।"

अधर कक्ष मे गोशातखा मुख्याध्यापक से कह रहा था कि शाम को शेरजाद, नजफ और सभी अध्यापकों को बुलाकर सलाह करनी चाहिए। क्योंकि इस तरह की जड़ता मे आदमी पागल हो सकता है मुख्याध्यापक का चेहरा लाल हो उठा, उसने आश्वासन पर आश्वासन दिये कि वह सारे निर्देशों को ध्यान मे रखेगा, जबकि गोशातखा स्पष्ट देख रहा था कि शेरजाद की नियमित मदद के बिना यहां कुछ नही हो सकता।

बाहर निकलकर उसने शेरजाद से पूछा कि क्या कुछ दिनों में पार्टी मीटिंग बुलवाना सम्भव है। सचिव ने कहा कि वे कल शाम एकत्रित होना चाहते थे, पर रुस्तम ने बैठक शनिवार को करने का अनुरोध किया।

"रुस्तम को मैं जानता हू।" गोशातखा शरारती ढंग से मुस्कराया। "बेशक, दो-तीन दिन मे टोलियो की स्थिति जल्दी-से-जल्दी अच्छी हो जायेगी, तब वह कम्युनिस्टो के सामने अपना श्रेष्ठ पक्ष प्रस्तुत करेगा और, शनिवार को ही सही, काम कहीं भागा नही जा रहा है," उसने सोचकर सहमति प्रकट की। "शाम को तुम्हारे साथ अध्यापको के पास चलेंगे। उनमे उत्साह फूकना चाहिए, वे तुम्हारे ही मददगार बन जायेंगे। नजफ को भी बुलाना।"

संस्कृति-भवन की नीव रख रहे राजगीरो मे रुस्तम की भीमकाय आकृति नजर आयी। दूसरे ही क्षण उसका मद्र स्वर गूज उठा – किसी की शामत आ गयी थी . गोशातखा व सचिव को देखकर रुस्तम ने अपनी जगह खड़े-खड़े चिल्लाकर कहा

"शिक्षाविभागाध्यक्ष को तो सचमुच हमारे सामूहिक फार्म से प्यार हो गया है! शैतान तुम्हें यहा ले कैसे आता है? कपास ठीक-ठाक है, अनाज की फसल मे भी बालियां आने लगी हैं, तरबूजों और खरबूजो मे फूल आ रहे हैं कौन-सा ठप्पा लगाने का इरादा है?"

"तीखे मजाक मत करो, कहीं तुम्हें ही न चुभ जायें," गोशातखा ने अध्यक्ष के पास आते हुए शान्त स्वर मे कहा।

"मैं तुमसे पूछ रहा हू," अपने पूरे कद से नाटे गोशातखा को ताकते हुए रुस्तम ने स्पष्ट स्वर मे पूछा, "कौन-सा ठप्पा बचा रखा है हमारे लिए?"

भाई शेरज़ाद, आप लोग यह बेइमानी होते कैसे देख रहे हैं? तुम्हारे ख़याल से मैं इनसान हूं या जानवर?"

रुस्तम ने अपेक्षा करते हुए आवाज़ दी "ऐ ऽऽ!" और यारमामेद को घूरकर देखा। यारमामेद समझ गया, पैर घिसटता घोड़ों के खूंटों की तरफ़ गया, जहां भूरी घोड़ी खड़ी ऊब रही थी।

शेरज़ाद को अन्तिम क्षण तक आशा थी कि रुस्तम चरवाहे की प्रार्थना स्वीकार कर लेगा,—क्योंकि मामला बिलकुल साफ़ था, बहस करना निरर्थक था, लेकिन रुस्तम को उछलकर काठी पर बैठते देखा, तो वह एक क़दम आगे लपका।

"आखिर सामूहिक फ़ार्म की प्रबन्ध समिति है, उसी में बेरेम की शिकायत पर विचार करना चाहिए। काम में सामूहिक नेतृत्व को अभी तक किसी ने समाप्त नहीं किया है। आप इस प्रकार के प्रश्नों का निर्णय ऐसे चलते-चलते क्यों करते हैं?" युवक ने अपने स्वभाव के प्रतिकूल सख़्ती से पूछा।

अध्यक्ष पल भर के लिए घबरा गया, पर तत्क्षण कड़क उठा

"मुझे ऐसे वक़्त में, जब काम ज़ोरों पर है, बैठक करने की फ़ुरसत नहीं है! अगर हर शिकायत पर बैठक बुलाई जाये, तो बेहतर होगा कि फ़ौरन किसी मुल्ला को बुला लो, ताकि वह फ़सल पर फ़ातिहा पढ़ दे।"

उसने घोड़े को चाबुक मारा, पर शेरज़ाद ने लगाम पकड़ ली।

"यह आपका आख़िरी जवाब है?"

"वह पशुपालन फ़ार्म वैसे ही कभी नहीं देखेगा, जैसे अपने कान बिना शीशे के। लगाम छोड़ दो!" रुस्तम ने हुक्म दिया।

"देखिये, कहीं बाद में पछताना न पड़े," शेरज़ाद ने धीरे से कहा।

रुस्तम लोगों के सामने सचिव से बहस नहीं करना चाहता था, लेकिन इस समय वह गुस्से में अपने पर क़ाबू न रख सका और यारमामेद को आंख मारकर बोला:

"हद हो गयी .. कल के दुधमुंहे मुझे धमकी दे रहे हैं," और वह पास्तीन की टोपी माथे पर खींचकर स्तेपी की तरफ़ घोड़ा दौड़ाता चला गया।

स्तेपी में, हरे-भरे खेतों पर नज़र डालते हुए और यह हिसाब लगाते हुए कि शरद् में वह कितनी कपास चुन लेगा और कितना अनाज उठायेगा, वह शान्त हो गया।

वहीं फफोलों जैसे कत्थई-से दाग हो गये हैं, पत्ते हल्के-से स्पर्श से पौधों को नंगा कर झड़ जाते थे।

सकीना का दिल दुःख के मारे टूटने लगा, वह पौधों को ध्यानपूर्वक देखती हुई हलरेखा पर चलने लगी। उस क्षण वह अपने को अनुभवी डाक्टर जैसा महसूस कर रही थी, जो रोगी के प्रफुल्ल चेहरे पर विश्वास न करने का आदी हो जाता है। किलनियाँ शुरू के दिनों में अंधेरे में पत्तियों के निचले, छायादार हिस्से में छिपी रहती हैं, और उन्हें अगर समय रहते नष्ट न किया जाये, तो सारी फसल बरबाद हो जाती है।

आधे घंटे में सकीना और तेल्ली चाची ने यह पता लगा लिया कि बीमारी कोई पांच हेक्टेयर जमीन में फैल गयी है। देर नहीं की जा सकती थी, उन्होंने एक फुर्तीली लड़की को खेत-कैंप भेज दिया, ताकि वह टेलीफ़ोन पर शेरज़ाद को इस खतरे के बारे में सूचित कर दे। टोली-नायक तुरन्त ट्रक में चूने और गंधक के घमोल के सिलिंडर ले आया और उसने सकीना को हार्दिक धन्यवाद दिया।

"पांचेक दिन की देर हो जाती, तो सारी फसल बरबाद हो जाती।"

पौधों की जड़ों और सबसे नीचे की पत्तियों पर छिड़काव करना जरूरी था। ऊंचे क़द के शेरज़ाद को कितनी ही मुश्किल क्यों न हुई, घुटनों के बल ही क्यों न रेंगना पड़ा, पर उसने पीठ पर सिलिंडर बांध लिया और तब तक खेत छोड़कर नहीं गया, जब तक उसने सारे खेत में दवाई न छिड़क ली।

जब शेरज़ाद ने खाली सिलिंडर हलरेखा पर डालकर कमर सीधी की, तो अंधेरा हो चुका था। उसने अपना सारा बदन दुख रहा महसूस किया। लेकिन लड़कियां और औरतें, खास तौर से सकीना व तेल्ली चाची थकान के मारे लड़खड़ा रही थीं, इसके बावजूद वे काम छोड़कर नहीं गयीं, किसी ने शिकायत नहीं की, जबकि उनमें से हरेक को घर पर अभी ढेरों काम करने बाक़ी थे।

चूंकि शेरज़ाद ने ड्राइवर को पहले से आगाह कर दिया था, ट्रक सड़क पर उनके इंतज़ार में था। स्त्रियों को ट्रक में गांव तक पहुंचाकर उसने सबको हार्दिक धन्यवाद दिया।

पेरज़ान अभी खेत से नहीं लौटी थी। सकीना घर में क़दम रखते ही रुस्तम का मूड खराब देखकर फ़ौरन समझ गयी कि वह भूखा है और बस फट ही पड़नेवाला है। लेकिन पत्नी का उदास चेहरा, अंदर को धंसी

डाडे-मेंडे पर घास ऊची और रसदार थी, रुस्तम ने लगाम छोड़, रकाबो मे खडा होकर अपने सामने फैले कपास के विशाल खेत पर ध्यान पूर्वक नजर दौडायी। वहा जमीन की ढग से गोड़ाई की गयी थी, खर पतवार पूरी तरह उखाड दिये गये थे। थोडी दूरी पर कुदाले पकडे सामूहिक किसान नारिया किसी बात पर बहस कर रही थी। रुस्तम की भौंहे सिकुड गयी "औरते इधर-उधर की लगा रही हैं, अब सारे दल का कच्चा चिट्ठा बखान डालेगी!" लेकिन स्त्रियो में सखीना को देखकर उसे शर्म महसूस हुई।

"जहा मेरी बीवी हो, वहा सब ठीक रहता है," रुस्तम ने अपने आप से कहा और घोडे को सडक की ओर मोड दिया।

अगर वह उस क्षण पलटकर नजर डालता, तो देख लेता कि स्त्रिया हाथ और रूमाल हिला-हिलाकर उसे बुला रही हैं और सखीना की पुकार सुन लेता

"रुस्तम, जल्दी से यहा आओ! मुसीबत आ गयी है!"

लेकिन रुस्तम तब तक दूर पहुच चुका था। तेल्ली चाची ने सखीना का मजाक उडाया

"तुम्हारा मर्द तो घोडे पर सवार सूरमा लगता है। [illegible] माहा कर दिया है। कहीं गर्मी बढ़ने से पागल न हो जाये! संभलकर रहना, कहीं किसी जवान औरत के पास न चला जाये!"

स्त्रिया हस पडीं, पर सखीना चुप रही। उसे ऐसी बातें कभी पसद नहीं आती थीं, फिर मानसिक परेशानी की इस हालत में तो और भी ज्यादा। वह उधर, बैठकर कपास की मोटी-मोटी कलियो के [illegible] से देख रही थी।

"कितना सुन्दर है, लेकिन इसकी हालत देखकर दिल दुखता है!" [illegible]

[illegible]

"[illegible]" [illegible]

[illegible]

में बताने समय इतना घबरा गया कि सचिव ने मुस्कराते हुए उसे पानी का गिलास दिया।

"मेहरबानी करके तसल्ली रखें।"

"आप यह मत सोचिये कि मैं शिकायत कर रहा हू," शेरजाद ने, गिलास कसकर पकड़े और हैरान होते कि उसे खनिज जल क्यों पीना चाहिए, अटकते-अटकते कहा: "कहने का मतलब है, शिकायत तो कर रहा हू, लेकिन धैर्य का बाध आखिर कभी न कभी तो टूट ही जाता है, मेरी बात समझिये . ."

"मैं तुम्हारी बात समझता हू," असलान ने स्वीकृति में सिर हिलाया।

"रुस्तम-कीशी लगता है अंधे हो गये हैं। अगर आपको मुझ पर विश्वास न हो तो कामरेड गोशातखा से पूछ लीजिये, उन्होंने सब अपनी आखो से देखा है..."

"नहीं क्यों नहीं होगा? मैं हर मामले में तुम पर विश्वास करता हू।"

जिला केंद्र जाते समय शेरजाद रास्ते में सोच रहा था कि उसकी बात सुनकर असलान सामूहिक फार्म में जाच समिति भेज देगा, फिर रुस्तम को और उसे भी जिला समिति के ब्यूरो की बैठक में बुलाकर उन्हें एक दूसरे से नाराजी के कारण साफ-साफ बताने, जाच समिति के निष्कर्षों से अवगत होने के लिए मजबूर करेगा, प्रस्ताव पढ़कर सुनायेगा। हमेशा ऐसा ही किया जाता रहा था, लेकिन जैसा कि दिखता था, असलान की अपनी ही आदतें थी।

"शर्म आनी चाहिये!" उसने झल्लाकर कहा। "शिकायत नहीं करना चाहता था, पर सारी बातचीत निराशाजनक शिकायतो तक ही सीमित रही। आखिर तुम हो कौन? सामूहिक फार्म के पार्टी सगठन का सचिव, जब कि रुस्तम इस सगठन का सदस्य है, और तुम चाहते हो कि पार्टी की जिला समिति सामूहिक फार्म के कम्युनिस्टो की उपेक्षा करके, उन्हें अलग रखकर तुम्हारे यहा की अव्यवस्थाओ की जाच करे? रुस्तम समुदाय की परवाह नहीं करता है! लेकिन तुम खुद भी तो यही करते हो। तुमने रुस्तम को काबू में करने की ठानी थी, जब सफलता नहीं मिली, तो जिला समिति में लपके। आखिर यह क्या हुआ? समुदाय पर भरोसा करने का अर्थ है–उसकी शक्ति, उसके प्रभाव का कुशलतापूर्वक उपयोग करना। अगर अध्यक्ष की आलोचना पार्टी सगठन करता, तो आज जिला समिति में रुस्तम आया होता, न कि तुम। कहता कि कम्युनिस्टो ने उसके व्यवहार

आखें और हाथो की उभरी हुई नसों को देखकर रुस्तम घबरा गया।

"सकीना खानम, तुम आखिर कहां गयी थी?" उसने रुंधे स्वर में पूछा।

किलनियों के हमले के बारे मे सुनकर रुस्तम ने भागकर कार्यालय मे जा सारे लोगों को सतर्क करना चाहा। पत्नी ने उसे तसल्ली दिलायी शेरजाद ने टोली-नायको को कह दिया है, सारे खेतो मे छिड़काव किया जा रहा है, कल भोर मे फिर दवाई छिड़कनी शुरू कर दी जायेगी।

"शुक्रिया, घरवाली," अध्यक्ष ने कहा। "शेरजाद को भी शाबाशी देनी चाहिए, वह घबराया नही।"

"तुम्हे बड़ी जोर की भूख लगी है न, क्यो?"

"कोई बात नही, कोई बात नही, अभी सब मिलकर बैठ कोले खायेंगे। याद है, बुजुर्ग कहते थे, खरबूजा ताजा अच्छा होता है और कोलें-उबले।"

६

अपनी नम्र व स्वप्निल प्रकृति के कारण शेरजाद को किसी भी कीमत पर अपनी बात पर अड़े रहने और बात-बात पर अध्यक्ष से उलझने के लिए अपने को बड़ी मुश्किल से तैयार करना पड़ा।

उसने काफी देर तक रुस्तम के व्यवहार पर विचार किया और इस निर्णय पर पहुंचा कि अब और देर नहीं की जा सकती है। सवाल (?) अध्यक्ष किसी भी पहलकदमी करनेवाले व्यक्ति को उसके कार्य के प्रति पूर्णतः उदासीनता की स्थिति तक पहुंचा सकता है। मगर लोग मनोयोग से काम नहीं करें, तो कोई भी काम जरा भी आगे नहीं बढ़ सकेगा। और अन्त में 'नवजीवन' सामूहिक फार्म सुगान के सबसे पिछड़े सामूहिक फार्मों में से एक हो जायेगा।

शेरजाद को जनता के हितार्थ अपने हृदय पर पत्थर रखकर सख्त बनना ही होगा। कम्युनिस्ट और पार्टी ब्यूरो के सचिव के लिए और कोई विकल्प नहीं रहा है।

शेरजाद ने पार्टी की जिला समिति में जाकर सहायता व सलाह मांगने का तय किया। "साफ-साफ कह दूंगा," उसने सोचा, "मैं अध्यक्ष को काबू में रखने में असमर्थ हूं।"

[illegible] समिति में बाबा नौजवान समसाराम को हठधर्मी रुस्तम के बारे

हमने तुममें बदला लेने के लिए बुलाया है। कम्युनिस्ट कम्युनिस्ट के साथ हमेशा मिलकर सब तय कर सकते हैं। कर सकते हैं न? तुम क्या चाहते हो कि हम यह सवाल ग्राम सभा में उठायें, ताकि हमारे विवादों के बारे में सामूहिक फार्म को ही नहीं, सारे जिले को भी मालूम हो जाये?"

"यही चाहता हूं!" रुस्तम बिना सोचे समझे बोल उठा। "आप लोग ग्राम सभा का नाम लेकर मुझे मत डराइये! अगर मेरी बात सही है, तो सही ही है। चाहे कल ही कम्युनिस्टों को जमा कर लीजिये। बूढ़ा रुस्तम जानता है कि उसे लोगों को क्या बताना है।"

"तो ठीक है, कल पार्टी-ब्यूरो की बैठक बुलवा लेंगे। आप जा सकते हैं, कामरेड रुस्तम," शेरजाद ने कहा।

"काम बना नहीं! सभा में भी कम्युनिस्ट मेरा ही साथ देंगे, न कि *शेरजाद का,"* *रुस्तम ने सोचा और विजयी मुद्रा में घर चला गया।*

उसकी आशाएं पूरी नहीं हुईं पार्टी-ब्यूरो की बैठक तीन घंटे चली, बहुत तूफानी रही और किसी ने रुस्तम का पक्ष नहीं लिया।

जब शेरजाद ने पार्टी-सदस्य रुस्तमोव को घमण्ड, आत्मालोचना के दमन और सामूहिक किसानों से अलगाव के लिए झिड़की देने का प्रस्ताव किया, सभी ने उससे सहमति व्यक्त की।

लेकिन रुस्तम को इससे भी अक्ल नहीं आयी।

"जिला समिति आपका निर्णय बदल देगी," उसने धमकी दी। "देख लीजिये! मैंने ऐसा कई बार होते देखा है: गलतफहमी केवल नेताओं को ही नहीं होती है, कभी-कभी पूरी की पूरी संस्थाएं लफ्फाजों के इशारों पर चलती हैं। मुझे कोई धोखा नहीं दे सकता।"

१०

शाम देर गये सकीना बरामदे में बैठी कपड़े रफू कर रही थी। उसका दिन कुम्हला रहा था: घर में अव्यवस्था व्याप्त थी—रुस्तम को झिड़की दी गयी, गराश का पत्नी के साथ मेल-मिलाप नहीं हुआ... रुस्तम पिछले कुछ दिनों से परेशान रहता था, रेगिस्तान में रास्ता भटके कारवां के हरकारा की तरह दौड़-धूप करता रहता था। कभी-कभी सकीना को अपनी नजरों में पति को सही ठहराने की इच्छा होती थी, पर वह इसमें असमर्थ रहती

थी और खिन्न मन से सोचती रहती थी कि रुस्तम को तोड़ा जा सकता है, पर बदला नहीं जा सकता। उसका स्वभाव ही कुछ ऐसा है।

सकीना को मनमौजी रुस्तम की निर्भीकता पर गर्व होता था, उसे अच्छा लगता था कि वह कभी निराश नहीं होता है, हर बात को बहादुरी से मानना करता है।

वैसे इस बात की प्रशंसा केवल सकीना ही नहीं करती थी,—बहुत सी बातें रुस्तम के दृढ़ स्वभाव की डींग हाकते थे।

लेकिन इन सब बातों से रुस्तम के परिवार में सुख-शान्ति स्थापित हो सकी।

अकेली परेशान ही थी, जिससे मा को कुछ खुशी होती थी। वह बुद्धिमान थी, कठिन परिस्थितियों में किंकर्तव्यविमूढ़ नहीं होती थी और उसे लोगों की पहचान थी। हा, कभी-कभी चचल हो उठती थी, लेकिन चचल किशोरीपन में न होगी, तो आखिर कब होगी? ·

सकीना ने मेज पर हिसाब-किताब की सूचिया तैयार कर रही बेटी की तरफ मुस्कराते हुए नजर डालकर धीरे से कहा :

"जरा अब्बा को आवाज देना। बहुत देर हो गयी उन्हें थोड़ी समाप्त करते हुए। उनसे बात करनी है। और तुम भी शायद मन हो जाओ, मुझे तुम्हारी भी जरूरत है।"

परेशान अपने स्थान से हटे बिना ड्योढ़ी की तरफ मुड़कर जोर से आवाज देने लगी :

"अ ऽऽ ब्बा ऽऽ!"

सकीना की भौंहें सिकुड़ गयीं।

"चिल्लाना तो मुझे भी आता है। क्या उतरकर नीचे जाते आता है? जाकर आवाज दो!"

बेटी और ज्यादा दुखी स्वर में पुकारने लगी·

"अ ऽऽ ब्बा ऽऽ, अा ऽऽ बा ऽऽ! "

अस्तबल के दरवाजे में बिखरे बाल रुस्तम हाथ में छुरी लिये आया, उसकी आस्तीनें चढ़ी हुई थी, मूछों में भूसे के कण अटके हुए थे।

"प्रधान मंत्र[illegible] आदेश है: मां कहती है कि आप फौरन आ जावें!" [illegible] शब्द पर जोर देते हुए कहा।

[illegible] हारी, पर उतना ही अधिक [illegible]

"

श्याम दिखाता था। इस समय भी वह हाथ-मुह धोकर अपने को पूरी तरह टीक-ठाक कर चुका था और मूछो पर हाथ फेरता बरामदे मे आ पहुचा।

"क्या हुक्म है, बीवी? मैं सुन रहा हू।"

सकीना चुप रही, उसने आखें सिकोड़कर सूई के छेद मे सफेद धागा पिरोया, गाठ लगाकर बाकी बचा धागा दात से काट दिया, पर सूईवाला हाथ अचानक काप उठा ..

"तुम्हे झिड़की कैसे मिली?" सकीना ने आसू रोकते हुए पूछा। "यह सब हुआ कैसे? सुनो, जिला समिति मे जाकर उनसे प्रार्थना करो कि वे तुम्हे मुक्त कर दें। तुम्हे वे कोई हल्का काम दे दें, तुम बुढा गये हो, मैं भी जवान नही हो रही हू। कम-से-कम बचे-खुचे दिन तो चैन से जी लें!"

परेशान सूचिया समेटकर जाने लगी, लेकिन मा ने उसे सख्ती से रोक दिया· "बैठो! तुम सयानी हो चुकी हो.. "

रुस्तम देर तक शाम के धुधलके मे लिपटे बाग की तरफ देखता रहा।

"तुम्हें यह क्या सूझी है·" उसने हाफते हुए कहा। "मैं क्या आधे रास्ते मे रुक जाऊ, जब इतने बड़े काम अपने हाथ मे ले चुका हू? मेरा तो दिल टूट जायेगा!"

"तुमने काम शुरू किया—खतम नौजवान करेंगे," सकीना ने शान्त स्वर मे बोलने की कोशिश करते हुए उत्तर दिया। "सदियो से यही होता आया है: एक किसान जमीन मे बीज बोता है, दूसरा फसल काटता है।"

रुस्तम ने कड़वाहट भरा ठहाका लगाया।

"तुम डरो मत, बीवी, मत डरो। मैं जैसा इस दुनिया में आया हू, वैसा ही मरूगा। मैं निडर होकर जिया हू और मरूगा भी निडर होकर। मैं अपना पके बालोंवाला सिर किसी के आगे नही झुकाऊगा। मैं एक हफ्ते के अदर लफ्फाजो और बलवाइयों को खुद ही झिड़की वापस लेने को मजबूर कर दूगा। मौत आ जाये इन्हे। मैं कल ही जिला समिति मे जाऊगा।"

"पर तुम्हे क्या पक्का भरोसा है कि जिला समिति में वे तुम्हारा पक्ष लेंगे?" परेशान दुसाहस करके बीच मे बोल पड़ी।

"तुम्हें चुप रहना चाहिए," रुस्तम ने खिन्न स्वर मे उससे कहा। "तुम वही पेड़ काटो, जो तुम्हारे बस का हो!"

"तुम्हारी कसम, अब्बा, कुल्हाड़ा पकड़ना मैं तुम्ही से तो सीखी हूं! लेकिन एक शर्त है: उस पर विश्वास नहीं किया जायेगा, जो दलदल मे ले जाकर फसा दे।"

डाल दिया गया है। अब याद रखेगा कि कलतर-लेलेश की सलाहों को न मानने का क्या नतीजा होता है।"

कैसा मनहूस बातून है! अगर कोई यह बात सुन ले तो? कलतर झल्लाकर फुफकारा:

"शुक्रिया, दोस्त, तसल्ली रखो,—मुझे तुम्हारी याद है, याद है सारी बातें ध्यान में रखूंगा। कभी भी फोन करते रहना, शर्माना नहीं।"

रुस्तम अभी अपने घर में हाथ-मुंह ही धो रहा था, जबकि कलतर भागा-भागा अमल्लान के कक्ष में पहुंच चुका था।

"सुना आपने? 'नवजीवन' में कैसी जुत्तमपैजार हुई है, लोग एक दूसरे का गला दबोच रहे हैं।"

अमल्लान किसी कारण से उदास था और गहन चिन्तन में डूबा बैठा था। उसे कलतर का दूसरों का बुरा होने पर खुश होना अच्छा नहीं लगा।

"वहां क्या हुआ?" उसने अनिच्छापूर्वक पूछा।

"रुस्तम ने अपने इर्द-गिर्द कुछ सामूहिक किसानों को जमा कर लिया था, और शेरजाद, उस आत्मविश्वासी दुधमुंहे ने अपने यार-दोस्तों को एक कर लिया,—बस झगड़ा-फसाद मच गया। वे एक दूसरे को जिन्दा चबा रहे हैं! मुझे तो अब विश्वास नहीं रहा कि हमें उनसे कपास मिल सकेगी, सच कहता हूं। जिले का सर्वश्रेष्ठ सामूहिक फार्म बरबाद हुआ जा रहा है।"

अमल्लान ने भौंहें सिकोड़कर हथेली से कनपटी सहलाई।

"पर तुम क्या सुझाव देते हो?"

"इसका निष्कर्ष स्वतःस्पष्ट है दोनों को जिला समिति के ब्यूरो की बैठक में बुलाकर बड़ी चेतावनी दे दी जाये और जाहिर है, दोनों को ही पदच्युत कर दिया जाये। दोनों को!" कलतर मेज पर कोहनियां टिका और अमल्लान के निकट अपना पसीने से तर चेहरा लाकर फुसफुसाया। "मुझे उनमें से एक पर भी रत्ती-भर विश्वास नहीं रहा है।"

उसकी बात सुनते हुए जिला समिति का सचिव सोच रहा था कि कलतर अपने यार को 'नवजीवन' के पशुपालन फार्म में जमाने की कोशिश केवल यूं ही नहीं कर रहा था। उस घटना में रुस्तम-बीबी ने उससे सहमत न होकर बहुत सराहनीय काम किया था।

अमल्लान चुप रहा और उसने एक बार फिर दर्द करती कनपटी मलकर रुखाई से कहा:

"'नवजीवन' की स्थिति के बारे में मुझे मालूम है। यह मानना

डाल दिया गया है। अब याद रखेगा कि कलतर-लेलेश की सलाहों को न मानने का क्या नतीजा होता है।"

कैसा मनहूस बातून है! अगर कोई यह बात सुन ले तो? कलतर तन्नाकर फुफकारा

"शुक्रिया, दोस्त, तमन्ना रखो,—मुझे तुम्हारी याद है, याद है सारी बातें ध्यान मे रखूंगा। कभी भी फोन करते रहना, शर्माना नही।"

रुस्तम अभी अपने घर में हाथ-मुह ही धो रहा था, जबकि कलतर भागा-भागा असलान के कक्ष मे पहुच चुका था।

"सुना आपने? 'नवजीवन' मे कैसी कुत्ताघसीटी हुई है, लोग एक दूसरे का गला दबोच रहे हैं।"

असलान किसी कारण से उदास था और गहन चिन्तन मे डूबा बैठा था। उसे कलतर का दूसरो का बुरा होने पर खुश होना अच्छा नही लगा।

"वहा क्या हुआ?" उसने अनिच्छापूर्वक पूछा।

"रुस्तम ने अपने इर्द-गिर्द कुछ सामूहिक किसानो को जमा कर लिया था, और शेरजाद, उस आत्मविश्वासी दुधमुहे ने अपने यार-दोस्तो को

बात ध्यानपूर्वक सुनता और प्रीतिकर ढंग से मुस्कराने की भी कोशिश
।
सलान इससे असन्तुष्ट था।
'तुम लोगो की आदत बिगाड रहे हो, रामरेड शराफ। यह तो सचमुच खराब बात है, हर मामूली-से काम के लिए लोग तुम्हारे पास भागे हैं।"
'फिक्र मत करो," शराफोगलू अपनी सफाई देता, "मैं दूसरो का अपने कधो पर नही लादूँगा। वक्त ही ऐसा है! जरा सोचो अगर टेलीफोन देर तक नही घनघनाता है, तो मैं घबरा उठता हू। ता हू कही कोई दुर्घटना हो गयी है और लोग मुझसे छिपा रहे हैं। जब रात को टेलीफोन की घटियों के मारे चैन नही मिलता, तो दिल खुश हो उठता है। बेशक कुछ ऐसे लोग भी है, जो बेकार मेरे मत्थे पडते हैं, पर उनकी वजह से आम लोगो के लिए दरवाजा बद तो नहीं सकता।"
शराफोगलू मुगान की स्तैपी के बिना अपने जीवन की कल्पना भी नही सकता था। मुगान का भविष्य फसल पर निर्भर करता था, और शराफ फसल उठाने की चिन्ताओ में ही डूबा रहता था।
उसका जन्म और पालन-पोषण पचास से भी अधिक वर्षों तक ग्राम-शाला मे पढानेवाले शिक्षक के परिवार मे हुआ था। क्रान्तिपूर्व के वर्षों ही शराफ के पिता गाव-गाव जाकर प्रतिभाशाली लडको को बडे ध्यान चुनने लगे थे और उनके माता-पिताओं की सहमति से उन्हें शिक्षा प्राप्ति लिए बाकू और गजा भेजने लगे थे।
वृद्ध अध्यापक के शिष्यों में से अनेक सोवियत आजरबैजान के महत्त्वपूर्ण बने और उन्होंने सदा के लिए अपने भाग्य की डोर कम्युनिस्ट पार्टी साथ बाध ली। अध्यापक ने अपने एकमात्र पुत्र को अपनी जनता, वियत सत्ता से प्रेम करना सिखाया, उसमें धीरज, दृढ़निश्चयता व निष्ठा जैसे गुणो का पोषण किया।
जब शराफ कोम्सोमोल का सदस्य बना, उसने पिता से कहा:
"मैं गाव जा रहा हू। आपका काम आगे जारी रखना चाहता हू।"
वृद्ध बहुत खुश हुआ।
"तुम अध्यापक बनना चाहते हो, बेटा? अज्ञान और पिछडेपन—री जनता के चिर शत्रुओ से सघर्ष करना चाहते हो?"

फिर भी एक बार जब रुस्तम और टोली-नायक सिर खपा रहे थे कि सेना में दस और रीपर कहां से लाये जायें, सलमान से रहा न जा सका

"चाचा, आप इतने क्यों अडे हुए हैं? हम परेशान हो गये हैं, अपने पसीने में नहा रहे हैं। टेलीफोन का चोंगा उठाकर शराफ़ोग्लू से दो कम्बाइनें भिजवाने को कहने में आपका क्या जाता है?"

रुस्तम उपेक्षापूर्वक हंस पड़ा

"वाह रे, सपाट माथेवाले!" उसने कहा, और सारे टोली-नायक एक साथ हंस पड़े। "तुम यह समझ लो कि सरकार ने हमें जरूरत से ज्यादा मशीनें दी हैं। हमें उन्हें ढंग से काम में लेना नहीं आता—यही हमारी मुसीबत है। मेरी और शराफ़ोग्लू की मोर्चे पर दांतकाटी रोटी रही, लेकिन अब, तुम सोचते हो कि मैं उसके पास भागा जाऊं और कहूं मदद करो! ऐसा काम तुम और गफ़ूर हुसैन जैसे ही कर सकते हैं, मुझ, बुड्ढे ने अभी अपना ईमान नहीं गंवाया है। मैं इतना बता दूं कि मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन में काम करना हमारे सामूहिक फ़ार्म के मुकाबले कहीं ज्यादा मुश्किल है। हर तरफ़ से हाथ बढ़ाये जाते हैं, यह दे दो, वह दे दो। कुछ ऐसे सामूहिक फ़ार्म हैं, जिनकी अगर समय रहते मदद न की जाये, तो फ़सल का नाम-निशान भी न बचे। आखिर मैं, कम्युनिस्ट, पिछड़नेवाले सामूहिक फ़ार्मों को नहीं भूल सकता। मैं 'बस अपना काम बन जाये, दूसरों की क्या परवाह' जैसे नियम का पालन करके नहीं जी सकता—यह नीचता है। यह व्यक्तिवाद है! स्वार्थ है! समझे?"

सलमान ने कुछ नहीं समझा और सोचा: "कंगाल हुए जमींदार की तरह झूठी शान दिखाने को ठाठदार कपड़े पहन रहा है! जब कि हमन के खेत में अनाज बिखर रहा है।" लेकिन अपने स्वाभाविक पाखण्ड से बोला:

"तुम्हारी शराफ़त के आगे सिर झुकाता हूं। मेरी छोटी खोपड़ी में इतनी बारीक बातें कहां समा सकती हैं। बस पेंसिल उठाकर तुम्हारे मुंह से निकली बातें लिखकर दानिशमंदी की किताब लिख डालनी चाहिए।"

"हर कुत्ते की अपनी मांद होती है। बाकू में लेखक संघ है, उसी के सदस्य किताबें लिखा करें, पर तुम सब रात की पाली में काम करने खेत में पहुंचो," रुस्तम ने जवाब दिया।

बात यहीं खतम हो गयी।

"नहीं, अम्मा, आप मेरी बात नहीं समझे। मैं सुखीवों में मरुर्ग बनने चाहता हूं। यह बुराई अंधविश्वास से भी अधिक भयानक है। मैं नहरें पानी की नहरें खुदूंगा, प्यास के मारे तड़प रही मुगान की स्तेपी को साफ़ पानी पिलाऊंगा।"

वृद्ध ने बेटे को आशीर्वाद दिया और शराफ़ नयी मुगान का निर्माता बन गया।

उसने स्तेपी में नहरें व सड़कें बनाईं, बस्तियां बसाईं, बाग व वन लगाये और कृषि संस्थान के पत्राचार-पाठ्यक्रम में शिक्षा प्राप्त करता रहा। पिता ने, यह जानते हुए कि उसका पुत्र सच्चे मार्ग पर चल रहा है, सदा के लिए आंखें मूंद लीं। उसी समय शराफ़ कम्युनिस्ट बन गया।

शराफ़ोगलू ने युवा अध्यापिका से विवाह किया, उसकी पत्नी सुन्दर सुशील और स्नेहमयी थी। तीन वर्ष बाद उनके यहां उजली आंखों खनकदार आवाज़वाली बेटी प्यारी गेयारचिक का जन्म हुआ। शराफ़ोगलू अपनी पत्नी और पुत्री को बहुत प्यार करता था, पर अचानक उस पर घोर विपदा टूट पड़ी उसकी पत्नी बीमार पड़ी और उसकी मृत्यु हो गयी। उसे बेटी को पालन-पोषण के लिए अपनी सास के पास छोड़ना पड़ा।

शराफ़ोगलू जब मज़ाक करता या हंसता, तो कोई अंदाज़ नहीं लगा पाता कि उसे यह खुशी ज़ाहिर करने में कितनी मुश्किल होती है, उसका

ा जा रहा है। मुझे तो उससे जिन्दगी भर के लिए प्यार हो गया है। इतनी इच्छा होती है कि कोई बड़ा और महत्वपूर्ण काम करूँ ''

"क्या करना चाहती हो?" शराफ़ोगल् ने, इस बात से प्रसन्न होकर दुख देखने से कोमल इस नारी को तोड़ने में असमर्थ रहा है, सतर्कता-क पूछा।

"यह व्यक्त कर पाना कठिन है..." माय्या सोचने लगी। "आप मुझसे बेहतर जानते हैं कि हर गाव, हर सामूहिक फार्म की अपनी ज़रूरतें, अपनी चिन्ताएं और अपने दुख होते हैं। इसीलिए लोगों का ना करने को दिल करता है—पानी की व्यवस्था करने को, बिजली लाने , सुनियोजित घर बनाने को, पुस्तकालय और क्लब खोलने, वाद्यवृन्द ापित करने को, ओह्, कोई अपने सपनों के बारे में सिलसिलेवार ढग बता सकता है!"

"पर मैं सब समझ गया," शराफ़ोगल् ने सिर हिलाया।

माय्या उसे पहले परिचय से ही पसंद आ गयी थी, लेकिन इस समय ब उसने देखा कि वह सृजन, निर्माण के लिए उत्कंठित है, तो वह फिर न्म का ख्याल आने पर खीज उठा, जो इस स्त्री की प्रतिभा की तरफ ान भी नहीं देना चाहता था। दुख की सबसे अच्छी दवा होती है नुप्राणित श्रम। शराफ़ोगल् यह अपने अनुभव से जानता था माय्या शब्दों से विह्वल होकर उसने उसे अपनी युवावस्था और सुखान की रेपी में अपने जीवन के बारे में बताया।

"अब जब मैं दूर-दूर क्षितिज पर जगमगाती बिजली की बत्तियां देखता , नहर में पानी का कलकल स्वर और छपाके सुनता हूँ, मुझे इतनी खुशी होती है, मानो दुनिया की सारी दौलत मेरे पास तले है। क्योंकि इस सब मेरी अपनी आत्मा का और मेरे योगदान का अंश भी है," शराफ़ ने कहा। "ऐसे क्षणों में दिल पच्चीस बरस पहले जवानी के अल्हड़ दिनों की तरह धड़कने लगता है और विश्वास होने लगता है कि बुढ़ापा तुम्हारे पास कभी नहीं फटकेगा .."

माय्या सोच में डूबकर चुप रही।

"बताओ, बेटी," शराफ़ोगल् ने मिनट-भर बाद पूछा, "तुम क्या मेरे पास किसी काम से आयी हो?"

उसने तुरन्त उत्तर नहीं दिया, कहीं दूर नजर डाली, रूमाल से होंठ पोंछे और सांस ली।

[illegible]

यह देखकर मराशोव ने [illegible] की फिर [illegible] दरवाजा का धागा उड़ा दिया।

[illegible] 'नवजीवन' के दफ्तर में [illegible] स्थापित कर [illegible] खासा रहा। मराशोव को केवल इतना सूचित किया गया कि [illegible] मे आया था।

"न तो वह गोदाम है न दूसरा का मान देता है। मैं जानता हूँ इनके ढोंग को। बरदाश्त दूर हो गया है," मराशोव ने फौरन मोर्चे और 'ऊषा' मार्मिक फार्म [illegible] छापकर तत्काल 'नवजीवन' भेजने का आदेश दे दिया, सम्पादन-कार्य को चेतावनी दे दी कि मशीनें चौबीस घंटे बिना टूट-फूट के चलनी चाहिए।

फिर भी उसे चिन्ता लगी रही और उसने कोरी दस्तावेजों पर दस्तखत करके स्वयम् के यहां जाने का फैसला किया।

उसी समय बाहिरड में परिचित स्त्री स्वर सुनाई दिया। मराशोव ने मन में से झाँककर देखा। उसके सामने माय्या खड़ी थी।

वह ठाठदार सफेद पोशाक पहने हुई थी, सुडौल व सुन्दर दिख रही थी, लेकिन घबराहट के मारे उसकी नजरें ही टिक नहीं पा रही थी मराशोव को लगा जैसे माय्या वहां आने पर पछता रही है।

उसने शिष्टतापूर्वक उसका अभिवादन किया और उसे कक्ष मे बुलाकर आराम-कुरसी पर बिठाया।

"क्या हाल हैं, बेटी?" और माय्या के पति से तलाक लेने के बारे मे फैली अफवाहों को याद कर पूछा "तुम्हारा हमारी मुगान छोड़कर जाने का इरादा तो नहीं है?"

माय्या ने दृढ़तापूर्वक सिर पीछे किया, उसके स्वर में आत्मविश्वास झलक रहा था.

"आप भी क्या मुझे तो उल्टे दिन-प्रतिदिन मुगान में गहरा लगाव

"तुम किसी भी दिन, किसी भी समय मेरे पास आ सकती हो, बेटी! अपना दुख और सुख लेकर आ सकती हो।"

२

असलान अक्सर सामूहिक फार्मों को देखने जाया करता था। लोगों के साथ बातचीत करने और उनके साथ मिलकर लवणकच्छों और सूखे के विरुद्ध संघर्ष करने से उसने अपने मन में उदात्त आत्मिक उत्थान अनुभव किया, जिसको कवि प्रेरणा का नाम देते हैं। इस मामले में उसे भ्रम नहीं हुआ था।

अपनी यात्राओं में उसे सृजन के सुख की तीव्र अनुभूति हुई, उसने स्वयं अपने श्रम और निर्माता जनता की शक्ति को भी देखा।

अनेक सामूहिक किसानों से उसकी घनिष्ठ मित्रता हो गयी। असलान को उद्धत और देखने में हठीले लगनेवाले लोग पसंद थे, जो अपनी धारणाओं के लिए डटकर संघर्ष कर सकते थे। वह चापलूस लोगों को बर्दाश्त नहीं कर पाता था, जो जिला समिति के सचिव के हर शब्द पर कहा करते थे

"वाह, वाह! बिलकुल बजा फरमाया!"

भेड़ों की तरह मिमियानेवाले तुच्छ लोग उसके सारे निर्देशों को बिना चू किये स्वीकार कर लेते थे, पर बिना उत्साह के उबाऊ ढंग से काम करते थे, हमेशा तरह-तरह की दस्तावेज़ों और स्मरणपत्रों से अपने को सुरक्षित रखकर जिम्मेदारी से बचने की कोशिश करते रहते थे।

असलान जानता था कि वे लोग, जिनके साथ बहस करते-करते उसका गला बैठ जाता था, जिनके आगे उसे कुछ मामलों में झुकना पड़ जाता था, जो न खुदा से खौफ खाते थे, न शैतान से, जो जिला पार्टी समिति और जिला कार्यकारिणी समिति की ग़लतियों की बेधड़क आलोचना किया करते थे, केवल वे ही उसकी सहायता करते थे, स्वेच्छा से उसके साथ कंधे से कंधा भिड़ाकर काम करते थे।

अगर असलान किसी की प्रशंसा करना चाहता, तो प्रायः कहता:

"वह सच्चा कम्युनिस्ट है।"

असलान के विचार में ऐसे सच्चे कम्युनिस्ट—मन से, दृढ़ विश्वास और शुद्ध हृदय से—शराफ़ोवन्, गोशानवां, मेरदाद और कारा केरेमोवन् थे।

गराफोगल और गोशानखा ने हैरत-भरी नजरो से एक दूसरे की तरफ
–प्रश्न अत्याधिक अप्रत्याशित था, जब कि कलंतर-लेलेश ने व्यग्यमिश्रित
मे दात भीचकर कहा·
"ऐसी जिम्मेदारी के मौके पर हमे बेकार के कामो मे पडने की क्या
न पडी है?"
असलान ने कुछ नही कहा और सहायक से यारमामेद को कक्ष मे
ने को कहा।
यारमामेद अपने को जहन्नुम में पडा महसूस कर रहा था और उसने
त होकर खुदा से दुआ करनी भी बद कर दी थी।
असलान के कक्ष मे यारमामेद चलकर नही, रेंगकर आया,–उसके
जैसे मन-मन-भर के हो गये थे, कमर झुक गयी थी, होंठ फडक रहे

"बैठिये," जिला समिति के सचिव ने रुखाई से कहा।
"इतने बडे लोगों के सामने बैठना मुझे बेअदबी लगती है," यारमामेद
ाते हुए बोला।
कलतर ने उसका कोट पकडकर खीचा।
"बैठो, बैठो, सुनो, कामरेड असलान क्या कहते हैं।"
"जिला समिति के आदरणीय सचिव ने कुछ भी क्यो न कहा हो, मैं
से सहमत हू," यारमामेद ने कहा।
असलान ने मेज की दराज से कुछ कागजातो की फाइल निकाली,
उसे खोला नही और अपने सामने रखकर पूछा
"आप रुस्तम को अच्छी तरह जानते हैं?"
"क्यो नही, आखिर वह अध्यक्ष हैं! . "
"उसके बारे मे आपकी क्या राय है?"
यारमामेद भयभीत हो उठा। उसे सुबह सलमान के साथ हुई बाते
द हो आयी। "डरो मत, तुम्हें कोई काल-कोठरी मे बद करने नही जा
हा है, ऐसे पेटू को मुफ्त में खिलाना सरकार के बस का काम नही है।
ह तो आम काम-काजी बुलावा है," उसके यार ने उसे तसल्ली दिलायी
ी। सलमान के लिए अपने घर बैठे इस तरह सोचना आसान है, पर
ारमामेद के लिए जिला समिति मे घिघियाना कितना मुश्किल है! अगर :
रुस्तम को हटाना चाहते हैं, तो इसका मतलब है, उसे बडी बेरहमी

[illegible]
था।

[illegible]

कोई भी कह सकता है कि [illegible] [illegible] पूछो [illegible] क्या हम मामूली, [illegible] की बात है, जो मुश्किल से [illegible] बैठे रहते हैं [illegible] किसी प्रकार की [illegible] नहीं रखते हैं किसी चीज़ में रुचि नहीं लेते हैं, कुछ नहीं करते हैं --

इसके बावजूद असलान को बार-बार यारमामेद का ख़याल आ रहा था। सब मालूम पर नज़र रखते हुए उसकी माँद का पता चलाया जा सकता था, वहाँ उससे भी कहीं ज़्यादा ख़ूँख़ार जानवर छिपे हुए थे।

असलान शहर में आम [illegible] था, उसे शहर से बाहर कर [illegible] मुश्किल था, लेकिन ख़ूँख़ार जानवरों की माँद की ओर जानेवाली पगडंडी पर एक बार क़दमों की परछाईं देखकर वह भी चौंक उठा।

नहीं, यह असंभव है [illegible] बहुत ऊँचे पद पर आसीन है, उन पर बहुत ज़्यादा उत्तरदायित्व है, यारमामेद से सम्बन्ध रखनेवाला व्यक्ति या तो भूर्त होना चाहिए या बिलकुल नीच।

विशेषज्ञ इस निर्णय पर पहुँचे कि 'नवजीवन' में जिले की संस्थाओं को भेजे गये सभी बारह बनाम पत्र यारमामेद के द्वारा लिखे गये थे। उनकी जाँच का परिणाम मिलने पर असलान ने यारमामेद को ज़िला समिति में बुलवाया।

जब तक पीला पड़ा, काँपता यारमामेद अपनी पतली गरदन निकाले याचना-भरी नज़रों से ज़िला समिति के सचिव के स्वागतकक्ष में हर आने-जानेवाले का अभिवादन और उसे विदा करता रहा, असलान कलंदर, पारांकोगलू और गोशतस्था के साथ अनाज की फ़सलें अलग-अलग काटने के बारे में बातचीत करता रहा।

कक्ष में सचिव का सहायक आया, दरवाज़ा खुला रह गया। असलान ने देख लिया कि यारमामेद स्वागतकक्ष में बैठा है।

"जानते हैं 'नवजीवन' में हम पर बनाम पत्रों की बौछार किसने की थी?" असलान ने पूछा।

"मैं कोई पागल हूं, जो अपने उपकारी रुस्तम-कीशी पर छींटा-कशी करूं। क्या मुझे मालूम नहीं है कि पार्टी की जिला समिति रुस्तम पर विश्वास करती है? फिर क्या जरूरत पड़ी है मुझे लिखने की? ."

कलन्तर निर्लिप्त मुद्रा में पेंसिल छीलने के चाकू से अपने नाखून साफ कर रहा था।

"अरे, आप इस बेचारे को चैन से जीने दीजिये," उसने अलसायी आवाज में सलाह दी। *"जब यह अपने कहे पर इतना अड़ा हुआ है, तो इसका मतलब है, इसका अनाम पत्रों से कोई सम्बंध नहीं है।"*

यारमामेद का हौसला तुरन्त बढ़ गया

"वल्लाह, नेक लोगों, मेरा इसमें कोई हाथ नहीं है, बिलकुल हाथ नहीं है, मेरे दुश्मन बहुत हैं, उन्होंने ही मुझे डुबोने की ठान रखी है।"

"बारह अनाम पत्र हैं। और सब तुम्हारे हाथ के लिखे हुए हैं। मैं मामला अभियोजक को सौंप रहा हूं!" असलान ने मेज से फाइल उठा ली।

यारमामेद घुटनों के बल गिर पड़ा और हाथ ऊपर उठाकर दया की भीख मांगने लगा।

"कामरेड असलान, आप मेरे नेता और गुरु हैं! मैं कसूरवार हूं, मैंने, मैंने लिखे थे, और बारह नहीं सत्तरह। बाकी शायद डाक में खो गये। खुद मुझे सजा दें, जान से मार डालें, पर अभियोजक को न सौंपें। मुझे लाइलाज बीमारी है, कामरेड असलान, शिकायतें गढ़ने की। किसी अभागे को नशे में बकवास करने की हालत में पहुंचने तक पीने की लत होती है, किसी को लापरवाही से जूए में हारते जाने की, किसी को . आप तो खुद समझते हैं,—औरतों के साथ तफरीह करने की। पर मुझ गरीब के हाथ खुजलाते हैं—बड़े-बड़े कार्यालयों में पत्र भेजने को। मैं अपने लिए नहीं, सार्वजनिक कार्य के भले के लिए पचता हूं। मैं सोचता हूं, उस आदमी की एक बार और जांच कर लें, उसकी ईमानदारी के बारे में पूरा यकीन कर लें," यारमामेद ने ऐसे हिलते और रोते हुए कहा, मानो वह किसी के यहां गमी में आया हो। "और अगर पुष्टि हो जाये? तो इसका मतलब है मैंने अपराधी को निहत्था कर दिया, यह भी मैंने जनता की भलाई के लिए ही किया।"

शराफ़ोगलू और गोशातखां दोनों ही मौन उसको देखते रहे, उन्हें लगा

से बरताव करना होगा। लेकिन अगर सवाल का किसी स्तर के किसी उच्च पद पर नियुक्त करना तय कर लिया गया हो तो?

"अफसोस! इस बारे में ज्यादा जानकारी है," यारमामेद ने फिक्र में अपने से गिलास की कालिख करता हुआ बुदबुदाया। "मेरा बूढ़ा दिमाग इस तरह के सवाल हल नहीं कर सकता। जब शराब के पास बैठे आदमी की आँखें चौंधिया जाती हैं। दूर से कहीं ज्यादा नज़र आता है।"

सरताज की और शाहमस्ता की असलान की शालीनता और आत्मसंयम से आश्चर्यचकित रह गये। उन्होंने अपनी जिन्दगी में बहुत कुछ देखा था, पर यारमामेद जैसा आदमी शायद वे पहली बार देख रहे थे।

"कामरेड यारमामेद, हम पुराने कम्युनिस्ट रुस्तम-गोगी को काफी अच्छा और ईमानदार व्यक्ति मानते हैं," असलान ने शान्त स्वर में कहा। "ऐसा आदमी सार्वजनिक सम्पत्ति पर दाँत नहीं गड़ा सकता। लेकिन क्या हम गलती पर हैं? हमारी मदद कीजिये।"

"सचमुच ऐसा ही है," यारमामेद ने स्वीकृति में सिर हिलाया, "सारे जिले में रुस्तम-गोगी की जोड़ का आदमी नहीं मिलेगा – निहायत ईमानदार आदमी है, उसका दिल शीशे-सा साफ़ है।"

"देखा! लेकिन हमें अनाम पत्र मिला है, जिसमें लिखा है कि रुस्तम सामूहिक फार्म के तीन भेड़ें ले गया और उन्हें बाजार में बेचकर अपनी पत्नी और बेटी के लिए नयी चीजें खरीद लाया। जरा पढ़िये तो! ." असलान ने फाइल खोलकर यारमामेद को पत्र दिया।

वक्त निकालने और साहस जुटाने के इरादे से यारमामेद ने नाक पर धागों से बंधा चश्मा चढ़ाया, कागज आँखों के पास लाकर दुख से सिर हिलाया।

"कितनी घसीट लिखावट है। लानत है उसकी माँ पर, जिसने ऐसे पढ़े-लिखे को पैदा किया!"

"क्या इसमें सच लिखा है?" असलान ने ऊँची आवाज़ में उसे टोक दिया।

"इसका हर अक्षर झूठी निन्दा से भरा है!" यारमामेद कह उठा। "हाथ सूख जायें ऐसी भद्दी बातें गढ़नेवाले का! "

"यारमामेद, हमें पक्का पता है कि यह पत्र तुमने गढ़ा है। तुमने!" असलान ने घृणापूर्वक कहा।

"मैंने नहीं लिखा!" यारमामेद ने दोनों हाथ फैलाये।

साथ-साथ उसे हटाने, बदनाम करने और उसका स्थान लेने की भी चेष्टा करता है। उसे अपने लक्ष्य तक पहुंचानेवाला हर साधन जायज होता है सच और झूठ, ईमानदारी और ठगी, सज्जनता और नीचता। रेशम का कीड़ा खुद अपना कफ़न बुनता रहता है, जब कि स्वार्थजीवी अत्यधिक हठपूर्वक अपनी क़ब्र खुद खोदता रहता है।

सामूहिक फ़ार्म का उपाध्यक्ष बन जाने के बाद सनमान ने महसूस किया कि उसके मन में ऐसी लालसा जाग उठी है, जो जुआरी के जोश और स्त्रियों व सुरापान के व्यसनों से भी अधिक प्रचण्ड है, सत्ता व ख्याति की भूख ने उसकी बुद्धि कुंद कर दी, उसके मन में अत्यन्त अभाव्य और दुःसाहसपूर्ण सपने जगा दिये। वह अपना रुस्तम का सहायक चुना जाना केवल स्वाभाविक ही नहीं मानता था, बल्कि बुरा भी मानता था कि उसकी पदोन्नति करने में देर कर दी गयी है, उसकी प्रतिभाओं का समय पर मूल्यांकन नहीं किया गया है। अब उसे शीघ्रातिशीघ्र अध्यक्ष बनकर अपने विलम्ब की क्षतिपूर्ति करनी है। इसके लिए अपने इर्द-गिर्द ऐसे विश्वसनीय लोगों को जमा करना जरूरी था, जो किसी भी तरह के कारनामे और अपराध के लिए तैयार हों। आरम्भ में उसे कभी चालाकी से, कभी खुशामद से, कभी धमकियों से अपने नेतृत्व में पिछलग्गुओं की एक टुकड़ी तैयार करने में सफलता मिली। ढुल-मुल और भीरुओं के साथ वह हठधर्मी और कठोरता से पेश आता, गर्वीले और दुर्दान्त लोगों को खुद कुछ रियायतें देता, उनकी ठकुरसुहाती करता। लालची लोगों को वह चुपड़ी रोटी का लालच देकर ऐसे खेतों में भेजता, जहां वे आसानी से जरा ज्यादा श्रम-दिन का काम दिखा सकते। धूर्तों को यह साफ़ बता देता कि वह उनकी सारी काली करतूतें जानता है, लेकिन अगर वे उसका कहना मानेंगे, तो वह चुप रहने को तैयार है।

पिछलग्गू उसकी तारीफ़ के पुल बांधने लगे, घर-घर जाकर कहने लगे कि खुद अल्लाह ने सनमान को ऊंचे पद पर आसीन होने का आशीर्वाद दिया है।

सनमान यह देखने लगा कि कुछ सामूहिक किसान उसका आदर करते हैं, उस पर विश्वास करते हैं। इसका मतलब है कुछ ही दिनों में वह पूरा सामूहिक फ़ार्म ही अपने हाथों में ले सकता है। इसके लिए यह जरूरी था कि जिला केन्द्र में उसके अपने मित्र और गुरु हों जब कि वहां अभी तक कलतर भैया को छोड़कर सनमान का और कोई सहारा नहीं था।

जैसे फर्श पर कोई [illegible] रहा है, जो छू देते ही [illegible] से मार रहा हो।

"दफा हो जाओ," असलान ने आदेश दिया।

पारमामेद उठ खड़ा और अपनी मुक्ति पर विश्वास न कर पाकर उसे बराबर देखने लगा।

"जा रहा हूँ, जा रहा हूँ, सम्मानित कामरेड," पारमामेद तुतलाया। "मुझे बीमारी है, बहुत बुरी बीमारी ... क्या मुझे सामूहिक फ़ार्म में रहने दिया जायेगा?"

"इसका फैसला खुद सामूहिक किसान ही करें," असलान ने जवाब दिया, और जब चुगलखोर के पीछे दरवाजा बंद हो गया, उसने गहरी सांस ली। उसे लगा मानो वह अंधेरी गली में भटककर घूरे पर पहुँच गया हो और घिनौनी बदबू में सांस ली हो। "कौन इसे कमीने को घूरे से उठा लाया है और किसने उसे अपनी बदबूदार सांसों से दुनिया में ज़हर फैलाना सिखाया है?" असलान ने सोचा।

"मेरी समझ में किसी तरह नहीं आया कि तुमने उसे माफ़ कैसे कर दिया," शराफोगलू ने खुले झरोखे के पास आकर ताज़ा हवा में गहरी सांस लेते हुए कहा।

"जानते हो, कामरेड शराफ, यह आदमी उस चाण्डाल-चौकड़ी में सबसे मामूली है। हमें इस सरगना तक पहुंचना है," असलान ने समझाया। "आइये अब फसल अलग-अलग उठाने के बारे में सलाह-मशविरा करें।"

"इनका सरदार तो सलमान है," गोशातखा अचानक कह उठा। "वही है, जिसमें अभियोजक को और दूसरे कुछ लोगों को दिलचस्पी लेनी चाहिए।"

अचानक कलतर-लेलेश चीख पड़ा और पेंसिल छीलने का चाकू, जिससे वह नाखून साफ कर रहा था, फिसलकर उसकी खाल में धंस गया। सबने मुड़कर देखा। कलतर मुंह में उंगली डालकर खुशामदाना ढंग से मुस्करा पड़ा।

३

महत्त्वाकांक्षी, चालबाज और कमीने आदमी के किसी तरह बस किसी उच्च सरकारी पद तक पहुंचने की देर है कि वह तत्क्षण पुरजोशी दिखाने लगता है, अपने उच्चाधिकारी की खुशामद करने लगता है और इसके

गूंगे हुसैन ने हथेली कान से लगाकर बड़ी भोली नज़रों से सलमान पर नज़र डाली और ज़बान से "टच्च" की आवाज़ की।

"ठीक है, ठीक है, तुम्हारी ये चालें मैं जानता हूं जब तुम्हें फायदा होता हो, तो तुम बहरे बन जाते हो, अमल में घास के बढ़ने की आवाज़ तक सुन लेते हो!" वृद्ध सलमान ने आगे कहा।

यारमामेद उसके लहजे से समझ गया कि बातचीत बिना किसी लाग-लपेट के होनेवाली है और उसने फौरन अपनी स्थिति निश्चित कर ली

"हां, हां, तुम ठीक कहते हो, सलमान, पशुपालन फार्म में गड़बड़ चल रही है, फौरी कदम उठाने चाहिए.. "

हुसैन एकाएक हंस पड़ा।

"अरे, तुम कितने डरपोक हो, जितना मैं देखता हूं," उसने सलमान से कहा। "ज़रा-सी बात हुई नहीं कि तुम घुन हो जाओगे।"

उसकी बेतकल्लुफी से सलमान का सब्र का बांध आखिर टूट गया। बालवाज़ का भला किया, और अब वह जिस दरख्त की छाया में बैठा है, उसी की जड़ काट रहा है। रुस्तम के सामने तो वे उसके कदमों की धूल चाटने को तैयार रहते हैं, पर उसके आगे ढीठ हो गये हैं। लेकिन तुम्हारा पाला किसी ऐसे-वैसे से नहीं पड़ा है

सलमान पूरे ज़ोर से मेज़ पर हाथ मारकर हंस पड़ा और नेकदिली से बोला '

"तो सुनो, दोस्तो! हमारे बीच में पहले जो कुछ हुआ था सब खतम हो चुका। हमने अपने-अपने घरों के इर्द-गिर्द दीवारें खड़ी कर ली हैं।" उसने मेज़पोश पर उंगली से तीन वृत्त खींचे ' यानी अब हरेक का अपना घर है। "आपस का सारा हिसाब-किताब चुकता हो चुका है। दोस्ती की कीमत नहीं समझनेवाले लोगों की मुझे ज़रूरत नहीं है। मुझे ज़िन्दगी एक ही बार मिली है, मैं उसकी कीमत समझता हूं, वह मुझे सड़क पर तो मिली नहीं है। अपने यार सलमान को भूल जाओ। पर मेहरबानी करके डरो मत, डरने की कोई बात नहीं, तुम्हारी करतूतें राज़ ही रहेंगी। लेकिन आगे जो होगा, वह अभियोजक जाने, मैं कुछ नहीं जानता।"

यारमामेद ने महसूस किया कि उसके दांत बजने लगे हैं और हड्डियां तक कांप उठी हैं। अभी वह अनाम पत्रों से तो बरी भी नहीं हो पाया और फिर "अभियोजक" आ गया।

गूंगा हुसैन व्यर्थ अपने को यकीन दिला रहा था कि सलमान बन रहा है,

पिछले कुछ दिनों से सलमान आशंकित था, क्योंकि कुछ खेतों में गेहूं की फसल उठाने का काम ढंग से नहीं चल रहा था, मराफोंगनू सामूहिक फार्म में भौंहे सिकोड़े असन्तुष्ट चला गया था। पशुपालन फार्म में स्थिति खराब थी। "इस गूंगे कामचोर और चालाक लोमड़ी यारमामेद को थोड़ी ढील देने की देर है, कि ये खुद भी कुएं में जा गिरेंगे और मुझे भी साथ घसीट ले जायेंगे," सलमान सोचता। उसने उन्हें अपने पास बुलाकर इतनी बुरी तरह झाड़ लगायी कि उसके वफादार मददगार केवल आश्चर्य से आंखें मलते रह गये।

कुछ दिनों तक हुसैन और यारमामेद ने ईमानदारी से काम किया, फिर उनका जोश ठण्डा पड़ गया, और फिर पहले की तरह ढील पड़ गयी। जब पशुपालन फार्म में दुहे गये दूध की मात्रा घट गयी, तो सलमान घबरा गया। वह अपने सहायकों पर विश्वास नहीं करता था, वैसे ही जैसे वह दुनिया में किसी आदमी पर विश्वास नहीं करता था, सबको बेईमान मानने के कारण। यारमामेद गूंगे हुसैन को बचा रहा था, फाइल में रिपोर्ट पर रिपोर्ट लगाये जा रहा था कभी दूध फट गया, कभी अनाड़ी चरवाहे भेड़ों को धूप में झुलसी घासवाले मैदान में चराने गये। "अगर उनमें साठ-गांठ हो चुकी है, तो मैं मारा गया!" सलमान ने अपने आप से कहा। पशुपालन फार्म के लिए हुसैन की सिफारिश करते समय उसकी योजना सामूहिक फार्म के मास में दूध का अपनी बपौती की तरह उपयोग करने की थी। पशुपालन फार्म के इनचार्ज और लेखाकार की साठ-गांठ खतरनाक थी। अगर वे रंगे हाथों पकड़े गये और उन्हें अभियुक्तों के कटघरे में खड़ा कर दिया गया, तो सलमान की भी खैर नहीं होगी। सब जानते हैं कि हुसैन की सिफारिश उसी ने की थी।

नहीं, उसे शीघ्रातिशीघ्र कारगर कदम उठाने चाहिए।

रस्तम के शाम को जिला केन्द्र जाने का फायदा उठाकर सलमान यार-मामेद के साथ हुसैन के पास गया।

बिनबुलाये मेहमानों को देखकर गृहस्वामी का मुंह उतर गया।

शान्तचित्त सलमान ने गृहणी से शिष्टतापूर्वक अलाव में चूल्हे के पास बैठने का अनुरोध कर किवाड़ अन्दर से बन्द कर लिये और हुसैन के सामने सीने पर आड़े हाथ रख उसे खा जानेवाली नजरों से देखता खड़ा हो गया।

"तुमने क्या ठान ली है, जोक?"

पाना बडा मुश्किल था। उसने नखरीली ग्रदा के साथ अपना स्कर्ट एक तरफ से थोडा ऊपर उठाया और मथर गति से कधे और कूल्हे मटकाती सडक पर चल पडी।

"ऐसी होनी चाहिए चाल असली खानम की!" उसने हसी के मारे दोहरी हुई जा रही युवतियों को समझाया। "जब कि तुम हमेशा ऐसे सिर पर पैर रखकर भागती हो, जैसे आग बुझाने भाग रही हो।" चाची ने पेरशान के ग्राड़ू जैसे रोयेंदार गुलाबी कपोलो पर चिकोटी भर ली। "जब तुम्हारी चाल ऐसी हो जायेगी, गाव के सारे लडके तुम्हारे मजनू हो जायेंगे। मेरे अगर कुआरा बेटा होता, तो मैं उसे सिखा देती कि तुम्हें कैसे उडाकर ले जाये।"

"और मैं तुम्हारे बेटे का सिर मूँडकर गले मे रस्सी बाध वापस उसकी मा के घर भेज देती," पेरशान ने भी मजाक किया।

"बहादुरी तो तुम अभी दिखा रही हो और अगर किसी अडियल लडके के पजे मे फस गयी, तो दूसरे ही सुर मे गाने लगोगी।"

"अरी, चाची, क्या जरूरत है ऐसी मनहूस भविष्यवाणियां करने की?" गिऊेतार ने सहेली का पक्ष लिया। "तुम खुद ही न जाने कितनी बार कह चुकी हो कि प्यार शरबत-सा मीठा होता है।"

"शरबत-सा! " तेल्ली चाची वितृष्णा से फुफकारी। "मेरी जिन्दगी जी कर देखो, इस शरबत का स्वाद जान जाओगी।" कुछ सोचकर वह आगे बोली. "बेशक, अगर अध्यक्ष की बेटी की मुलाकात ऐसे लडके से हो गयी है, जो लडकियों से भी ज्यादा शर्मीला है, तो शुरू मे यह जरूर शरबत लगेगा! "

"किसी से नही हुई मेरी मुलाकात," पेरशान ने मुह फेर लिया।

वे थोडी देर तक मौन चलती रही, पर तेल्ली चाची से अब चुप रहना मुश्किल हो गया। उसने पेरशान पर विजयी दृष्टि डालकर कहा

"इनकार मत करो, वरना बहुत बुरी बददुआ दूगी।"

"कौन-सी बददुआ?" गिऊेतार ने दिलचस्पी दिखाई।

"जिन्दगी भर कुआरी बैठी रहने की!"

"लडाका सास मिलने की!"

सब अपनी-अपनी अटकलें और अनुमान लगाने लगी।

"क्या कभी अच्छी सासें मिलती हैं?" सबसे छोटी उम्र की लडकी ने जो लगभग किशोरी ही थी, आश्चर्य से पूछा।

"माया, सोने जाओ ... लेकिन पहले ..." और उसने अपने गंदे भारी हाथ फैलाकर उबासी ली।

"एक बार में भी सलाम पत्र लिखना पड़ेगा, लेकिन अब दिमाग काम नहीं, बाद लिखना पड़ेगा," कासमामेद ने अंधेरे में घर की तरफ जाते हुए फैसला किया।

उसने नरवदान में जिना सर्मिन में जा हुआ, सब छिपा लिया · विनोद मामला के बारे में बुलाया गया था, इसमें घबराने की कोई बात नहीं। लगता है उसने विश्राम कर लिया है। और अगर विश्राम नहीं किया हो, तब क्या हो तो?

"मुझे टाइपराइटर खरीदकर उस पर प्रार्थनापत्र टाइप करने चाहिए" कासमामेद के मस्तिष्क में जीवनस्पर्शी विचार कौंधा।

४

काम के थका डालनेवाले लम्बे दिन के बाद, जब सूरज का लाल गोला धुंधला पड़कर धूसर कोहरे से ढंक गया, गिऊंतार की टोली की स्त्रियां व युवतियां अपने-अपने घर लौटने लगीं। वे अपने कुदाल हिलाती मौन चल रही थीं, चलते-चलते उनके चेहरे लाल हो रहे थे। युवतियां सहर्ष अपनी रफ्तार धीमी कर देतीं, पर स्त्रियां जल्दी मचा रही थीं घर पर ढेरों काम करने थे—नाली से पानी लाना था, चूल्हा सुलगाना था, खाना पकाना था और बच्चों को नहला-धुलाकर सुलाना था।

अन्त में पेरशान चुप्पी से ऊब उठी।

"अरी, तेल्ली चाची, तुम कलहंसिनी की तरह क्यों कूद रही हो? यह कौन-सी चाल है?" पेरशान ने बड़े भोलेपन से पूछा।

चाची ने अपने अनगिनत झालरोंवाले स्कर्ट को झटकाकर रुक गयीं।

"मुझे तो जितना कूदना था, कूद चुकी हूं, अब तुम कूदो, अध्यक्ष की बेटी!" पेरशान को उसने नेकदिल रुखाई के साथ सलाह दी।

लड़कियां मुंह दबाकर हंस पड़ीं।

"सचमुच, चाची," गिऊंतार ने गम्भीर स्वर में कहा, "तुम ऐसे चल कैसे लेती हो? गरदन भी कलहंसिनी की तरह निकाले रहती हो और कूल्हे मटकाती चलती हो, जैसे नदी में कोई बतख तैर रही हो।"

अब युवतियां खुलकर हंस पड़ीं, लेकिन तेल्ली चाची को शर्मिंदा कर

परशान न इस बात से खुश होकर कि कोई उस पर ध्यान नहीं दे रहा है, सोचा कि उसकी मा ने तो खुशी-खुशी बहू का आने पर स्वागत किया था।

लेकिन नन्हा चाची परशान की बात से नहीं भूली और मुहँ में उसे पास आकर फुसफुसायी

तुझे ऐसी सास नसीब होगी कि हर कुर्सी में कील निकली होगी जगह पर—पावा, तेरी लकड़ी बनायेगी और बुहारी से समेटकर कोने में टिका देगी और तेरे पति को तब तक भड़कायेगी, जब तक कि तुझे से झगड़ा न करा देगी। तभी लगेगा तुम्हें प्यार शरबत-सा।" और चाची कमर पर हाथ रख, अपने लम्बे स्कर्ट से धूल बुहारती, नाचती हुई सड़क पर चलती गाने लगी

> घर मे हो फुर्तीली तुम ही, मेरी सास,
> मालकिन हो तेज घर की, मेरी सास।
> बेटा आ जाता है तब हर काम को
> फिरती हो तुम दौड़ी-दौड़ी, मेरी सास।

परेशान ताली बजाने लगी।

"वाह, चाची, वाह शाबाश! क्या तुम सचमुच मेरी होनेवाली सास को बहुत अच्छी तरह जानती हो? देख लेना, तुम दातो तले उगली दबा लोगी, ऐसे लडके से शादी करूगी, जिसकी मा टेढे मिजाज की होगी, और एक महीने मे वह मेरे हाथों मेमने मे बदल जायेगी।"

चाची का तांबे के थाल जैसा गोल चेहरा गम्भीर हो उठा।

"और तुम्हारा क्या खयाल है, लडकियो? यही होगा। अध्यक्ष की बेटी से हर सास दूर भागेगी। इसे तो फौज मे भरती होकर तोप चलानी चाहिए। यह खानम नहीं, तोपची है।"

उन्हे इसी तरह बतियाते चलते पता भी नहीं चला कि वे कब गाव गयी,—धूलभरा, तपता रास्ता बहुत छोटा लगा। गाव के छोर पर , हो गयी और अपने-अपने घर चली गयी, जब कि गिजेतार घर की तरफ चल दी, जिसके पास शहतूत का अकेला लम्बा । यहा विधवा बादाम रहती थी। उसका पति युद्ध से अपग , बीमार रहता था और कुछ वर्ष पहले उसकी मृत्यु हो

शिशुशाला मे छोड़ने शर्म आती है ! क्यों न आये ! पड़ोसी कहेंगे 'सगी दादी और सगे बाप ने बच्चो को पराये लोगों को सौंप दिया, खुद उनकी सभाल नही कर सकते।'"

तेल्ली चाची भाप छोड़ती देगची लेकर कमरे में आयीं और उलाहनेभरे स्वर में शेरज़ाद से बोली

"तुम बैठ क्यो नहीं रहे हो? कुछ नहीं किया जा सकता, बेटा, हमारी यही जायदाद है घर मे कुरसियां नही हैं। काश, ट्रक मिल जाता, दो दिन में पत्थर ढो लाते और देखते-देखते पतझड़ तक नया घर तैयार हो जाता ."

"चिन्ता मत कीजिये, चाची," शेरज़ाद ने कहा और दरी पर केरेम के पास बैठ गया।

फाटक के सामने ट्रक आकर रुका और केबिन में से सलमान उतरा—रुस्तम की अनुपस्थिति मे उसने ट्रक का इस्तेमाल अपनी सैर के लिए करने की ठानी। पशुपालन फार्म मे ही शेरज़ाद के अनुशासन सुधारने मे जुट जाने की खबर पाकर उपाध्यक्ष फौरन गाव आ पहुचा, ताकि ऐसा मौका कहीं उसके हाथ से न निकल जाये।

सलमान को आशा नहीं थी कि पार्टी सचिव तेल्ली के यहां मिलने आया हुआ है, वह दरवाज़े के बाहर से ही रूखी आवाज़ मे चिल्लाया

"ऐ, चाची काम पर जाने का वक्त हो चुका है। आराम में बैठे रहने की फुरसत नही है! कपास बरबाद हुई जा रही है। और अपने आलसी बेटे को भी जल्दी से खेत रवाना करो. "

केरेम की आखो मे खून उतर आया, लेकिन उसने अपने पर नियत्रण रखा और केवल ठण्डी सांस ली।

दरवाज़े को ज़ोर से धक्का मारकर सलमान घर में घुस आया। शेरज़ाद को देखकर वह चुप हो गया और घबराहट में हसकर समझाने लगा

"देख लो, क्या-क्या काम करने पड़ते हैं, दोस्त—लोगो को काम पर हांकना पड़ता है।"

"तुम गलत जगह तो नहीं आ गये हो?" शेरज़ाद ने पूछा। "लगता है तेल्ली चाची ही तुम्हारे हमवतन दोस्त हुसैन की कपास को बरबाद होने से बचा रही हैं।"

चाची हाथ गाल पर रखकर कर्णभेदी स्वर मे चिल्लाने लगी:

"वाह, भई, वाह, क्या कहने, हमारा सलमान कपास की दिलनी

को कोई नहीं कह रहा था काफी कामचोर खेत छोड़कर शीतल चायघरों में पहुंच गये, चायखानों में मटरगश्ती करने लगे।

यह देखकर शेरज़ाद समझ गया कि अब विलम्ब नहीं किया जा सकता। हर दिन, हर क्षण कीमती था। उसने कम्युनिस्टों व कोम्सोमोलों को इकट्ठा करके उन्हें याद दिलाया कि वे केवल अपने काम के लिए ही नहीं, बल्कि सारी फसल के लिए उत्तरदायी हैं। उन्होंने तय किया कि हर टोली में रोजाना ताज़ा दीवार-पत्र निकाले जायेंगे, कोटे से अधिक काम करनेवालों को बोनस दिया जायेगा, अवकाश केवल गृहणियों को दिया जायेगा जब कि पुरुष, लड़के और युवतियां बिना विश्राम के लगातार काम करेंगे, रात को खेत-कैम्पों में सोयेंगे।

लगता था काम ठीक से चलने लगा है, पर शेरज़ाद असन्तुष्ट यह क्या हो रहा है? रुस्तम चला गया और अनुशासन बिगड़ गया। क्या सब चिल्लाने, डांटने-फटकारने और अध्यक्ष के डर के कारण होता नहीं, यह ठीक नहीं है। विशाल, बहुउद्योगी सामूहिक फार्म में हर सामू किसान को अपना कर्त्तव्य जानना चाहिए, उसे डर के कारण न आत्मसन्तोष की खातिर मेहनत करनी चाहिए।

एक बार भोर में तेल्ली चाची के ज़मीन में धंसे हुए-से घर के सा से गुजरते समय शेरज़ाद ने उसका हाल-चाल पूछ चलने की सोची। चा अहाते में चूल्हे के आगे कुछ खटर-पटर कर रही थी। पार्टी-संगठनक को देखकर उसने शिष्टतापूर्वक कहा

"तुम्हारी बीमारियां मुझे लगें, भाया, मैं अभी बच्चों के लिए दलि पका देती हूं, फिर साथ चलेंगे।"

शेरज़ाद दोहरा होकर कच्चे घर में घुसा। कमरे में धुंधली रोशनी थी छोटी-छोटी खिड़कियों में से प्रकाश बड़ी मुश्किल से आ रहा था, कच्चे फर्श पर दरी बिछी थी और गद्दों व दीवारों पर जाजमें टंगी थीं, — चा चिथड़ों से ही अपने घर की बदहाली छिपाना चाहती थी। पालने में कुछ बच्चे सो रहे थे, फर्श पर, आंगन तक बड़ भारी घनी दाढ़ीवाला बेरम और उसका बेटा आलथी-पालथी मारे बैठे नाश्ते का इन्तजार कर रहे थे, गालगोल दरी पर बरतन रख रही थी।

शेरज़ाद ने दुआ-सलाम करके सब तरह की शुभकामनाएं प्रकट कीं और मन-ही-मन गुस्से और लाचारी से सोचने लगा "कैसे गरीब हैं। घरवाली अस्पताल में पड़ी है, पर तेल्ली और बेरम की बच्चा का

है। आप चिन्ता मत कीजिये, मैं रोज़ाना खेतो का चक्कर लगा रहा हू।"

"बहुत ही अच्छी बात है। इधर हमारे यहा रविवार को सामूहिक फार्मों के पार्टी सगठनो के सचिवो की एकदिवसीय सेमीनार आयोजित की गयी है। वक्ता बाकू से आयेगा। तुम्हारा पक्का इतज़ार करेंगे, कोई दस बजे के करीब।"

"निमत्रण और याद रखने के लिए धन्यवाद। जरूर आऊगा!"

रिसीवर रखकर शेरज़ाद अपने मे शक्ति व दृढसकल्पता अनुभव करता हुआ कार्यालय से बाहर निकला। आधे घटे बाद वह तेज कदमबाज पर सवार हो 'लाल झण्डे' के खेतो मे लगनेवाले दूरस्थ खेत देखने जा रहा था। हर जगह रगबिरगी पोशाके पहने स्त्रिया व युवतिया लगन से, बिना हडबडी के काम कर रही थीं: दूर तक फैले और पुष्पित कपास की पृष्ठ-भूमि मे वे हरी-भरी घासस्थली पर खिले पहाडी पोस्ते के फूलो की याद दिला रही थी।

६

रुस्तम बाकू से उत्साहित और प्रसन्नचित्त लौटा, उसने बताया कि वह ओपेरा थियेटर मे गया था, ओपेरा 'केर-ओगली' सुना और सब के लिए उपहार लेकर आया है दो जोड़ी पेटेन्ट चमडे के जूते, दो रगीन पोशाके और दो रेशमी रूमाल।

"बहू के साथ आधा-आधा बाट लेना," उसने बेटी से कहा, और पेरशान खुशी के मारे उछलती अपने कमरे मे उन्हें पहनकर देखने भाग गयी।

पत्नी को रुस्तम ने केलागाई* दी, लेकिन सकीना बहू की याद आने मे इतनी उदास हो गयी थी कि उसने धन्यवाद देकर उपहार को सन्दूक मे रख दिया, उसे खोलकर भी नही देखा।

पेरशान खाने के कमरे मे लौटकर पिता के पास आयी और उसके कधे पर सिर रखकर बोली:

"राजधानी से और क्या लाये?"

"मेरा सबसे अच्छा उपहार सामूहिक फ़ार्म के लिए है: रूसी व जर्मन

---

*केलागाई—बड़ा रेशमी रूमाल।

के अन्यायपूर्ण आदेश का जिक्र किया, तो गृहस्वामिनी ने बेझिझक उसे टोक दिया

"अब बस करो। आदमी सफर से लौटा है, थका हुआ है, अभी होश भी नहीं सभाल पाया है... कल कार्यालय मे आयेगा, वहीं सारा कच्चा चिट्ठा सुना देना।"

"ठीक है, सल्मान, अब तुम घर जाओ," रुस्तम ने हाथ हिलाया। "मेरे पसीने से तर चेहरे को जरा सूख जाने दो, उसके बाद उस पर ठण्डे पानी के छींटे मारना।"

सल्मान ने कधे उचकाये और अपने चेहरे पर आया असन्तोष का भाव छिपाकर अहाते से चला गया।

डटकर भोजन करने और देर तक चाय की चुस्किया लेने के बाद रुस्तम सोने के लिए लेट गया और मिनट-भर बाद ही उसके प्रचण्ड खर्राटों से सारे घर मे आइनीर काप उठे।

सकीना मेज साफ करके अहाते मे चली गयी। केवल पेरशान के कमरे मे जल रहे लैम्प का प्रकाश जमीन पर रगबिरगे धब्बे की तरह पड रहा था। अचानक वह शहतूत के वृक्ष के तले सफेद कमीज और कैन्वस की पतलून पहने आदमी को देखकर चौक उठी। मा अधेरे मे गराश को पहली नजर मे नहीं पहचान पायी।

"किस का इतजार कर रहे हो?"

"मैं एक मिनट के लिए आया हू, मुझे टोली मे और काम करना है," गराश ने आखें चुराते हुए कहा।

"और मुझे तुमसे काम है, बैठो!" सकीना ने गराश के लिए अप्रत्याशित सख्ती से कहा और बरामदे की ओर मुडकर आवाज दी· "पेरशान, जरा लैम्प यहा लाना!"

पेरशान मिट्टी के तेल का लैम्प टुटियल मेज पर रखकर चुपचाप जाने लगी, जैसा कि शिष्ट कन्या को करना चाहिए, पर मा ने उसे रोक दिया

"और तुम भी बैठो, बच्ची तो हो नहीं, अपने घर का दुख भी बाटना सीखो, शायद अपनी सलाह से मा की ही मदद कर दो।"

पेरशान एड़ियो तक की सोने की सफेद पोशाक पहने थी और कधो पर शाल डाले थी। उसने सिर पीछे झटककर धृष्टतापूर्वक कहा:

"मैं ऐसे बेशर्म के साथ बैठना भी नहीं चाहती।"

ज़िन्दगियां मिलतीं, तो भी उन पर क़ुरबान करते कभी दिल नहीं दुखता।"
यारमामेद ने ऐन गराश की नाक के आगे भनभना रहे कीड़े को फूंक मारकर उड़ा दिया· "मरदूद, पीछे ही पड़ गया. "

"किसके लिए तुम सौ ज़िन्दगियां क़ुरबान करने को तैयार हो?"
कलतर ने अंधेरे से निकलकर हंसते हुए पूछा। उसकी कोहनियों तक चढ़ायी हुई आस्तीनों से मांसल गोरे हाथ दिख रहे थे और खुले कालर से–बेबाल थुलथुल सीना। उसका उभरी आंखों और नाक के बांसे पर जुड़ी घनी भौंहोंवाला चेहरा सुन्दर था, पर कलतर छोटे-छोटे पैरों और लटके हुए पेट के कारण बदसूरत लगता था। वह रंगबिरंगे गाउन में सजी-धजी सुन्दरी नज़नाज़ की कोहनी थामे हुए था।

यारमामेद ने बड़ी सावधानी से कलतर के कंधे से गीला तौलिया उतार लिया।

"अगर तुम कहते कि निनानवे ज़िन्दगियां क़ुरबान करते तुम्हारा दिल नहीं दुखता, तो मैं विश्वास कर लेता," कलतर बोलता रहा। "बेशक, परायी[1] पर सौवीं यानी अपनी ख़ुद की ज़िन्दगी के बारे में मुझे शक होता है," और उसने अपनी हाज़िरजवाबी पर ख़ुश होकर ज़ोरदार कहकहा लगाया। उसने एक बार भी यारमामेद को अमलान के कक्ष में हुई बातचीत का इशारा नहीं किया उसका मत था कि आड़े वक्त के लिए ऐसे खिदमत-गुज़ार और किसी भी प्रकार की नीचता के लिए तत्पर ओछे आदमी के साथ अच्छे सम्बन्ध बनाये रखना लाभदायक होगा।

कलतर के धृष्टतापूर्ण मज़ाक़ गराश को अच्छे नहीं लगे और जब उसने उससे पूछा "क्या हाल हैं, रुस्तम-सीशी के वंशज?" युवक की भौंहें तन गयीं, पर वह चुप लगा गया।

लेकिन कलतर उससे जवाब की उम्मीद भी नहीं करता था· वह बेतक़ल्लुफ़ी के सवाल करना, बात करते-करते प्रति क्षण विषय बदलना, अपने ही मज़ाकों पर ज़ोरदार ठहाके लगाना उच्चपदाधिकारियों की विशिष्टता मानता था, जो साधारण लोगों की पहुंच से बाहर होती है।

"मैंने सुना है, रुस्तम के घरवाले नर्द* खेलने में बहुत माहिर हैं," कलतर ने कहा। "ज़रा खेलकर देखें "

---

*नर्द–आज़रबैजान व ईरान में लोकप्रिय एक प्रकार का पासों व गोटियों से खेला जानेवाला खेल।

की कोशिश करता था, केवल अनिश्चित टिप्पणिया किया करता था "हा, हा, बेशक! सन्देह करने का सवाल ही नहीं उठता।" वह हर बैठक में पक्ष में मत देता था, अगर अल्पमत में रह जाता, तो गला फाडकर चिल्लाता कि उसे ग़लतफ़हमी में डाल दिया गया था। कलतर के पास शिक्षा-शास्त्री की उपाधि भी थी, पर वह न आज़रबैजानी भाषा में ढग से लिख सकता था और न ही रूसी मे, वह किसी काग़ज़ पर तब तक हस्ताक्षर नही करता था, जब तक कि उसका सहायक उस पर अपने हस्ताक्षर नही कर देता था।

बुरी तरह हारे यारमामेद की घबराहट और नज़नाज़ की खुशामदाना तारीफो का आनन्द लेकर कलतर ने सलमान के साथ मुकाबला करना चाहा, जो कहीं ग़ायब हो चुका था। ग़राश उसकी यह आदत कई बार देख चुका था मेहमानो के आने पर सारी ज़िम्मेदारी बहन के कधो पर डाल देना और खुद कही ग़ायब हो जाना।

आखिर सलमान को ढूढ लिया गया, वह खेलने लगा, और बेशक कुछ ही मिनट में उसने अपने को हारा मान लिया, खीजकर पासे फेंक दिये और खुद को कोसा भी।

"अब तुम्हारे साथ खेलते हैं, सुन्दरी?"

नज़नाज़ ने नखरे नही किये, उसने पासो की तरफ हाथ बढाया, यह ग़राश सहन न कर सका और वह अधेरे से बाहर निकल आया।

"अहा, ट्रैक्टर-चालक ने हिम्मत जुटा ही ली!" कलतर हस पडा। "सावधान, सावधान, मैं चाल चलता हू पांच!"

"ज़रा बताना तो, कामरेड, तुम्हे मशीन-आपरेटरो से क्या काम है, फिर मैं जाऊ!" ग़राश झल्लाहट से कापती आवाज मे बोला।

"ज़रा देखिये तो, यह मज़ाक तक नही समझता!" नज़नाज़ कह उठी।

"तुम्हें क्या हुआ है, लडके, ज़रा चैन से बैठो!" सलमान ऐसे उचका, जैसे उसे किसी स्प्रिग ने उछाला हो, और उसने ग़राश का आलिगन करने की कोशिश की।

इस पर कलतर नाराज़ हो गया।

"यह गरम क्यों हो रहा है? खेलना नही चाहता, तो न खेले, अपने झोपडे मे जाये। ज़्यादा डींग मत हांको। एक ही आदेश से तुम्हारे सम्मानजनक को पदच्युत कर सकता हूँ। उसके उत्तराधिकारी बहुत मिल जायेंगे।"

[illegible] से [illegible] था, पर [illegible] हुए कि [illegible] है [illegible] उदास और [illegible] के [illegible] पर [illegible] आये।

"अभी नहीं था!" मरजान बोली, [illegible] से [illegible] दोनों [illegible] और मरजान की [illegible] पकड़कर उसे अपनी तरह [illegible] लिया। उसकी बाहों में लिपटी हुई मरजान मर्मभेदी स्वर में चीखती रही, "नहीं मरार!"

लेकिन मरार कुछ नहीं सुन रहा था। जिस आदमी के [illegible] की [illegible] में गिर गये हों वह अपनी जान से दूर भागता है, [illegible] उस अंधेरी, सुनसान रेती में भागा जा रहा था, ताकि अपने [illegible] अपनी [illegible] से, [illegible] से बच कर दूर भाग सके।

तेरहवाँ परिच्छेद

१

घनी घास से ढकी नाली कपास के खेतों के चारों ओर हरी झालर की तरह लग रही थी। कलकल करता पानी लोगों को याद दिला रहा था कि नाली अभी जिन्दा है। शेरजाद किनारे पर रुककर झरने के कलकल का आनन्द लेने लगा।

कपास के पौधे दो बालिश्त ऊंचे हो चुके थे और उनमें घने पत्ते आ चुके थे। थोड़ी दूरी पर ट्रैक्टर काम कर रहा था, उसके पीछे-पीछे रंगबिरंगी पोशाकें पहने औरतें चल रही थीं और कुदालों से बचे हुए खर पतवार उखाड़ रही थीं। नाली के पास हरे फीतेवाला स्ट्रा-हैट लगाये एक युवती खनिज खाद पानी में मिलाकर खेत में बह रहे पानी में डाल रही थी।

वह पेरशान थी।

"तुम्हें कभी थकान न हो," शेरजाद ने उसके पास आकर कामना की।

पेरशान ने पलटकर भी नहीं देखा न जाने वह अपने कोहनियों तक

नगे हाथ पांस मे सने होने के कारण शर्मा गयी थी या फिर काम में तल्लीन थी।

"तुमने क्या कहा?"

"मैंने कहा 'खुश रहो'।"

"इससे ज्यादा अक्लमंदी की बात नहीं सूझी?" युवती बड़बड़ायी।

युवक ने नाली फांदकर जमीन पर पड़ा बेलचा उठा लिया और पांस पानी मे फेंकने लगा। ज़िद्दी पेरशान से यह बर्दाश्त न किया जा सका, उसने आंखें चमकायी और शेरज़ाद से बेलचा छीनकर उसे ज़ोर से पटक दिया।

"कामरेड टोली-नायक, जाकर अपना काम कीजिये। मैं आपके साथ अपने श्रम-दिन नहीं बांटना चाहती।"

"मैं तो तुम्हें बस पांस के छोटे-छोटे टुकड़े करना सिखाना चाहता था।"

"मैं बहुत पहले सीख चुकी हूं। आप फ़िक्र मत कीजिये। और अगर करने को कुछ नहीं रहा है, तो कुदाल उठाकर औरतों की मदद कीजिये, थकान के मारे शायद उनकी कमर टूटी जा रही है," लड़की ने गुस्से मे कह दिया।

शेरज़ाद ने आंख दबाकर देखा कि टेढ़ी-मेढ़ी क़तारों में उगे कपास के छोटे पौधों के बीच गिज़ेलार ज़ोर-ज़ोर से कुदाल चला रही है।

"अपनी सहेली पर रहम आ गया क्या? उसका पति मशीन-आपरेटर है, वही मुक्ति दिलाये अपनी पत्नी को कुदाल से।"

"और तुम खड़े देखते रहना चाहते हो?" पेरशान उपेक्षापूर्वक हँस पड़ी। "ठूंठ की तरह क्यों खड़े हो? अगर खाली हो, तो कोई गाना या ग़ज़ल सुनाओ,—दिल खुश हो जायेगा।"

वह नाली से नीचे की ओर फैले खेत में बह रहे पानी में बराबर पांस मिला रही थी, पर इस एकरस काम से उसे ज़रा भी तसल्ली नहीं मिल रही थी। शेरज़ाद नाली के किनारे एक तरफ खड़ा, युवती को निहारता सोचने लगा कि पेरशान के सीने में मां का नेक दिल धड़कता है, पर उसका स्वभाव पिता की तरह हठीला, कठोर और दृढ़ है। अगर ऐसी लड़की प्यार करने लगे, तो जीवन भर के लिए करेगी। हमेशा वफ़ादार रहेगी—जुदाई में भी और मुसीबतों में भी...

"मैं ने तो अपनी याददाश्त रूमाल में लपेटकर एक ऐसे आदमी को भेंट देने के लिए रख दी है, जो परिवार के प्रति अपने कर्त्तव्य भूल गया है," लेन्नी ने मीठी मुस्कान के साथ जवाब दिया।

सब तत्क्षण चुप हो गयी गगराश बराबर के कमरे मे नाश्ता कर रहा था और दरवाजा पूरा खुला हुआ था

पेरशान ने रोटी की तरफ बढाया हाथ खींच लिया। वह अपने भाई से नाराज जरूर थी, पर लोगो के सामने उसका पक्ष लेना उसने उचित समझा

"अरी, चाची, बैंत सुनाते वक्त तुम्हारी जबान कितनी मीठी थी, लेकिन अब तुम्हारे मुह से मिर्च जैसे तीखे शब्द निकल रहे हैं।"

"अपनी मीठी जबान मैं तुम्हे सौगात मे दे रही हू, बेटी, तुम इस्तेमाल करो उसे तुम सभी को ठीक ठहराती हो, किसी के मुह पर कडवी बात, चाहे वह सच्ची क्यो न हो, नही कहती हो "

सरकस के पहलवान जैसे भुजदण्डोवाली मोटी औरत बीच मे बोल उठी

"कल खेत मे पानी देते वक्त मैंने तुम्हारे घर की बहू को देखा था। बेचारी पतझड के पत्ते जैसी पीली पड गयी है। कही बीमार तो नही है?"

"वह तो ईद के चाद की तरह दिखाई ही नही देती है," पडोसन ने हा मे हा मिलाई। "कही हमेशा के लिए 'लाल झण्डा' मे तो नही बस गयी है?"

"वहा अध्यक्ष ज्यादा भला है!" एक लडकी ने अपनी पडोसन के पीछे छिपकर द्वेषभाव से कहा।

पेरशान के गालो पर लाली आने और गायब होने लगी। गिर्झेतार ने सहेली पर दया करके सख्ती से कहा '

"बडी जबान चलाती हो! शर्म नही आती! अगर माय्या का काम ही ऐसा हो तो? क्या सुना नही कि कारा केरेमसोगलू के यहाँ जमीन में नमक बढ गया है? कई हेक्टेयर में। कैसी मुसीबत है यह! ज्यादा अच्छा होता, उपाध्यक्ष को अपनी जरूरतों के बारे में बताती," और उसने कुमैत घोडे पर सवार होकर आये सलमान की तरफ इशारा किया।

उसने घोडे से उतरकर लगाम चौकीदार को पकडा दी और बाकी चाल से बरामदे मे आकर सबको स्वाद से भरपेट भोजन करने की कामना की।

"शुक्रिया!" गिर्झेतार ने सब की तरफ से जवाब दिया। "आओ,

हमारे साथ दस्तरख्वान पर बैठो, पर मुश्किल यह है कि हमारे प
पून नहीं है। हम तो नाश्ते में लेते ही सालों रोटी, पर मुझे
न होने से और मन के नीचे नहीं उतरता

"कैसी मनहूस औरत है! सब्जी खाने से भी बुरी," सारे
सलमान ने मुह बनाया, पर उस बार गुस्सा नहीं, उसने शेरजाद को
इशारा किया, जो सलमान के पास बैठा था और उसके मेहमान
मक्खन और रोटी उड़ाता जा रहा था। परमानेन्स पिवनिव थी, वे
करीब एक दूसरे से सटे हुए बैठे थे। सलमान का बहुत दम्भ, पर
जाहिर नहीं होने दिया और मुस्कराकर टालता बोला

"आप लोग पार्टी सगठनकर्ता से पूछिये। इसका सर्वप्रथम कर्तव्य
लोगों का ध्यान रखना। मुझे तो संस्कृति-भवन के निर्माण और विस्तार
के काम निबटाने है।"

फराश सलमान की आवाज सुन कर कमरे से निकला और उसके
के पास चला गया।

"हा, खेत-कैम्पो मे अब दोपहर का गरम खाना तैयार करने का
आ गया है," शेरजाद ने स्वीकार किया। "बेशक, इसमे दोष मेर
मैं इनकार नही करता। हम लोगो ने हमारी औरतों और लड़कियो के
पर इतना भारी बोझ डाल दिया है कि आश्चर्य होता है कि वे अभी
खड़ी कैसे रह पा रही है "

पेरशान को यह अनुभव कर आश्चर्य हुआ कि सलमान से घृणा के व
उसे सास लेने मे भी मुश्किल हो रही है। उसे उसकी हर आदत से चिढ़
होती थी' उस की विनीत मुस्कान से, सुराही से निकलती शराब की
जैसी चापलूसी भरी आवाज से, कधे पर आड़े डाले गये फौजी अफसर
फील्ड बैग से और उसके असीमित आत्मविश्वास से भी। उसने जान-बूझ
उसे चिढ़ाने के लिए हक्के-बक्के हुए शेरजाद के हाथो मे छिला और न
बुरका हुआ अण्डा और मक्खन लगाया हुआ रोटी का टुकड़ा रख दिये

"खाओ, खाओ, बिना मा के बिलकुल सूखे जा रहे हो," पेरश
ने उसी तरह अशिष्टता से कहा, जिस तरह ग्रामीण बालाए अपरिचि
के सामने अपने प्रेमियो से बात करती हैं। "सलमान से उम्मीद रखनेव
तो उम्मीद करता-करता मर ही जाये हमारे सामूहिक फार्म मे क
नहीं है। गोश्त भी है, हरी सब्जिया, तरकारिया और तेल सभी कु
एक रकाबी सूप की लागत ज्यादा से ज्यादा साठ कोपेक ।

आधा स्वल पड सकती है। पैसा महीने के अन्त मे श्रम-दिनो के लिए मिलनेवाली एडवास की रकम से काटा जा सकता है। कितना आसान है!"

चारों ओर से इसके समर्थन की आवाजें आने लगी

"बिलकुल ठीक है!"

"बहुत अच्छा सुझाव है!"

"वादा करो, सलमान, कि इसका इन्तजाम कर दोगे!"

सलमान ने शान्त मुद्रा मे सिर नवाया।

"तुम्हारी बातों से तो, खानम, लगता है कि तुम्हे लेखा-परीक्षण समिति का सदस्य बना देना चाहिए। सर्दियों मे, चुनावो के समय मैं तुम्हारे नाम की सिफारिश ज़िला सोवियत मे प्रतिनिधि बनाये जाने के लिए करूगा दोपहर का गरम खाने का इन्तजाम होगा, ज़रूर होगा," उसने अचानक बात खत्म कर दी. "कल तक तो नही हो सकेगा, पर परसो जरूर हो जाएगा।"

ऊबड-खाबड कच्ची सडक पर हल्के-हल्के हचकोले खाती, झाडियो पर धूल के गुबार उडाती कार जा रही थी। सलमान ने रुस्तम की 'पोब्येदा' कार को पहचानकर फौरन तेल्ली चाची के खेत रवाना होने का निर्णय किया।

वहा वह कतारों के बीच घूम-घूमकर आदेश पर आदेश देने लगा, कहने का मतलब है, वह पूरी तरह काम मे जुटा हुआ था।

कमजोर पौधो के इर्द-गिर्द की जमीन कुदालो

[illegible] उखाड रही थीं। वे फुरती से, सुव्यव-

[illegible] कर रही थी: पौधे इतने कमजोर थे कि सबके

[illegible] चल रहा है, बहुत धीरे," रुस्तम ने दूर से ही कहा। "ज़रा रफ़्तार बढ़ाओ। पौधे कमजोर हैं, इन्हे

[illegible] नहीं मिला -

[illegible] मे कुछ [illegible] थी, थकान महसूस हो

[illegible], और तेल्ली चाची बर्दाश्त

[illegible]

[illegible] काम कर रहे हैं, इसके बावजूद

[illegible] शुक्रिया चाचा... क्या यह तुम्हारे

[illegible] क्या मैंने तुम्हे टोका और समझाया

पगडण्डी बसन्त के खेत से निकलकर झुरमुटों मे घुस गयी, थोड़ी दूरी
: गुजरने कब्वीमडक मे धूप की बू आने लगी, शेरजाद की रफ्तार बराबर
धीमी होती जा रही थी .

केवल अब जब उसकी मा जिन्दे से लौट आयी, तब शेरजाद को समझ
। आया कि उन दिनों उसे मा के प्यार की कितनी कमी महसूस हुई।
कीना चाची उसका बहुत ख्याल रखती थी, पर फिर भी वह गैर थी,
उसके हाथ भी   अचानक न जाने क्यों उसका दिल तेजी से धड़कने लगा,
मानो नाली के किनारे उगे हुए पुदीने के कारण। बहुत हो गया, क्या उसे
केवल मा ही याद की सता रही थी, क्या वह अब उसी के पास जा रहा
है? उसने दबी आवाज़ मे, बहुत धीरे-धीरे, मानो कोई उसकी आवाज
सुन लेगा, बैत गाना शुरू कर दिया, पर एक मिनट बाद ही मनचाहे
उसमे खो गया, निरन्तर ऊची आवाज में गाने लगा, एकसार लहलहाते
गेहू के खेत केस्मा-शिकस्ते* राग के मधुर गान मे मन्त्रमुग्ध हुए शान्त हो गये:

> ऐ दोस्त, खूब भर के प्याला शराब दो,
> यारो, उँडेलो, अपने प्यालों को तुम भरो।
> चाहो जो दोस्त बनना, बनो मेरे अच्छे दोस्त,
> होगी नही तो तुम से लड़ाई, यह जान लो!

एकाएक किसी ने झाडी से बाहर लपककर शेरजाद के कधे पकड लिये
और जोर से पीछे खींचकर चिल्लाया "होप!" जगली फूलो की भीनी-
भीनी सुगन्ध, अपनी गरदन पर महसूस हुई गरम-गरम सासो और खनकदार
हसी ने उसे बता दिया कि दुबकनेवाला कौन था। शेरजाद ने विरोध नहीं
किया और जैसे गिर रहा हो, झुका और पेरशान का आलिंगन कर उसे
उठा लिया।

उसके गले मे पोस्ते के फूलो से गूथी माला पडी हुई थी, स्ट्रा-हैट की
किनारी पर लाल फूल चमक रहे थे।

वह अशक्त और थककर निढाल हुई-सी उसके हाथो पर लेटी हुई थी।

दूर से मोटर के भोपू की आवाज़ आयी, पेरशान चौंक पडी। शेरजाद
ने युवती को हौले से जमीन पर रख दिया। पेरशान ने अपना कुरता और
हैट ठीक करके सास ली और आख दबायी:

---

*केस्मा-शिकस्ता – एक आज़रबैजानी राग।

गठनकर्त्ता बनने के बाद तो वह बौरा ही गया है। ऐसे ज़िद्दी से रिश्ता कायम करना सगी बेटी को आग में झोंकने के बराबर होगा.. गलमान नम्र, आज्ञाकारी है, जीवन में अपना स्थान जानता है, बड़ों का आदर करना भी उसे आता है और अधीनस्थों से काम लेना भी। वह पेशवान और रुस्तम का सेवक हो जायेगा। लेकिन क्या द्वेषी लोग यह नहीं कहेंगे कि रुस्तम-बीजी ने अपने दामाद को उपाध्यक्ष बनाकर सामूहिक फार्म को अपने बाप की जायदाद बना लिया है? कोई बात नहीं, उसे किसी दूसरे काम पर लगाया जा सकता है। वैसे इसमें खतरे की बात ही क्या है, अगर दामाद अपने पुराने पद पर ही रहे? और मचानेवालों और लफ़ंगों को तो किसी भी हालत में खुश नहीं किया जा सकता है ..

"खैर, तुम्हें क्या उसकी 'हां' कहने की उम्मीद है?" रुस्तम ने अप्रत्याशित नरमाई से पूछा।

"अल्लाह कसम, मुझे तो सिर्फ़ आपकी 'हां' की ज़रूरत है," गलमान ने जवाब दिया और उसे स्वयं भी अपनी दृढनिश्चयता पर आश्चर्य हुआ।

रुस्तम फिर सोच में डूब गया।

"तुमने सब सोच-समझ लिया है या यह सनक तुम्हारे दिमाग में अभी ही आयी है? खबरदार रहना, अगर एक महीने बाद ही तुमने उसे आंसू बहाने को मजबूर ... अपने को मरा समझ लेना। मैं यह सहन नहीं ...

... क्या आप मुझे पहली बार देख ... बुरी बात सुनी? तुम बाप हो, गुलाम बनकर रहूंगा।"

बनेगा," परिवर्तनशील रुस्तम ने अचानक

... "जो मर्द ... बनने को तैयार

... , उसका

... पर दबाकर कह

... घबराहट से कह गया

... सकता है," वह देख

... हाथ फेरने लगा, ...

ो बनने के बाद तो वह बौरा ही गया है। ऐसे जिद्दी से रिश्ता रना मगी बेटी को आग मे झोकने के बराबर होगा   सलमान नम्र, ी है, जीवन मे अपना स्थान जानता है, बडो का आदर करना आता है और अधीनस्थो से काम लेना भी। वह पेरशान और का सेवक हो जायेगा। लेकिन क्या द्वेषी लोग यह नही कहेगे कि शैसो ने अपने दामाद को उपाध्यक्ष बनाकर सामूहिक फार्म को अपने ी जायदाद बना लिया है? कोई बात नही, उसे किसी दूसरे काम गाया जा सकता है। वैसे इसमे खतरे की बात ही क्या है, अगर अपने पुराने पद पर ही रहे? शोर मचानेवालो और लफ्फाजो को सी भी हालत मे खुश नही किया जा सकता है .

"खैर, तुम्हे क्या उसकी 'हा' कहने की उम्मीद है?" रुस्तम ने ाशित नरमाई से पूछा।

"अल्लाह कसम, मुझे तो सिर्फ आपकी 'हा' की जरूरत है," सलमान जवाब दिया और उसे स्वय भी अपनी दृढनिश्चयता पर आश्चर्य हुआ।

रुस्तम फिर सोच मे डूब गया।

"तुमने सब सोच-समझ लिया है या यह सनक तुम्हारे दिमाग मे भी ही आयी है? खबरदार रहना, अगर एक महीने बाद ही तुमने उसे ासू बहाने को मजबूर कर दिया, तो अपने को मरा समझ लेना। मै ह सहन नही करूगा।"

"आप भी क्या कह रहे हैं, चाचा? क्या आप मुझे पहली बार देख रहे हैं? आपने कभी मेरे बारे मे कोई बुरी बात सुनी? तुम बाप हो, मनपरस्त हो, मैं तुम्हारी बेटी का गुलाम बनकर रहूगा।"

"नही, बेटा, ऐसा नही चलेगा," परिवर्तनशील रुस्तम ने अचानक सलमा ... मर्द बीवी का गुलाम बनने को तैयार ... की क़ीमत समझो, उसका बने रहो।"

... पर दबाकर वह ... मे कह गया ... बक देना

... लगा, अब

लडके ने हालाकि आवाज का जवाब दे दिया, पर आया नही। वह दिन-भर सूखी टहनियों को गूथकर बनाई गयी और सरकण्डे की छाजन-वाली गोशाला मे हाल ही मे ब्याई गाय के पास मडराता सुनहले रग और गरदन पर सफेद हार-से निशानवाले बछडे को निहारता रहा था।

जैनब और माय्या को गोशाला मे जाना पडा। वे चुपचाप खडी गाय को अपने बच्चे को चाटते देखती रही, जब कि बछडा, लगता था, जैसे उनके देखते-देखते बडा हो रहा है, वह अपने खपच्चियों जैसे पावो पर खडे होने की चेष्टा कर रहा था।

"बढिया है," जैनब ने गर्व से कहा। "बढिया नसल की है! अगर मा पर गयी, तो दुधारू गाय बनेगी।" उसे अचानक याद आया और वह चिल्ला उठी: "चलो, खाना खाओ, अभी कारा चाचा माय्या को लेने आयेंगे। तुम्हे आज सिचाई करनेवालो के साथ काम करना है।"

"अभी काफी समय है," माय्या ने कहा।

"मेरे अब्बा हमेशा कहा करते थे. काम जल्दी-जल्दी करना चाहिए और खाना धीरे-धीरे खाना चाहिए। अगर मैं जल्दी करती हूँ, तो कौर गले से नीचे नही उतरता।"

बेटा गोशाला से निकलकर भागा, उसने जल्दी से नाली मे हाथ-मुह धोये और एक मिनट बाद ही वह शान्ति से बरामदे मे बैठा था।

उन्होने खाना शुरू ही किया था कि कारा केरेमोगलू की प्रीतिकर आवाज सुनाई दी.

"जैनब, माय्या, कहा हो तुम लोग? लोग इकट्ठे हो गये हैं।"

जैनब ने मेहमान से सोधा पडा पुलाव खाने का अनुरोध किया: बहुत स्वादिष्ट बना है!

कारा केरेमोगलू ने इनकार कर दिया: उसने अभी-अभी खाना खाया है, हा, अगर पीने को कुछ खट्टी और ठण्डी चीज हो, तो दूसरी बात है। पर जैनब और माय्या को जल्दी करने की कोई जरूरत नही. थोडा इन्तजार कर लेगे, सिगरेट पियेंगे, गपशप करेंगे, और वह भी शहतूत के नीचे बैंच पर बैठकर सुस्ता लेगा।

माय्या अय्यस के लिए श्रोवदुग* की एक प्याली लायी। कारा केरेमोगलू ने उसे पीकर आस्तीन से होठ पोछे और कह उठा:

---

*श्रोवदुग—खट्टी छाछ जैसा पेय।

, उसका दम घुटने लगा। "अगर उसके पास न घर होता, न पैसा, खाने को रोटी, तब भी मैं अपने को सौभाग्यशाली समझ लेती। पर मैं कौन हूं? बिना घरवालों के, बिना रिश्तेदारों के परदेस में पड़ी मेरा दिल दूसरी औरत के पैरों तले रौंदा जा रहा है। ऐसे जीने का क्या मतलब हो सकता है?"

"माय्या, सुनो, तुम जवान हो, पढ़ी-लिखी हो, दुनिया देख चुकी हो और तुममें अक्ल भी मुझ गवांई औरत से ज्यादा है," जैनब ने कहा। "लेकिन मैं कष्टों की राह से गुजर चुकी हूं। विश्वास करो, यह रास्ता उस फाटक की तरफ जाता है और अगर वह तुम्हारे पीछे बंद हो गया, तो तुम फिर कभी न सूरज को देख सकोगी, न चांद को और न ही किसी आदमी को। तुम खुद कई बार कह चुकी हो कि प्रेम ही जीवन होता है। लेकिन क्या केवल पुरुष का प्रेम ही होता है? क्या श्रम के प्रति प्रेम से लोग सुखी नहीं होते? जरा ध्यान से सुनो, नालों कलकल करती क्या कहती है भूलो मत, तुम्हारी हमें जरूरत है! और जन्मभूमि के प्रति प्रेम? तुम्हें और मुझे चांद से भी प्यार है, आकाश से भी, बाग में फूल खिले पेड़ों से भी और खेतों से भी, —हमें उनसे भी सुख मिलता है "

जैनब माय्या को कभी विवेकपूर्ण युक्तियों से, तो कभी स्नेहपूर्ण बातों से सान्त्वना दिलाने लगी, माय्या कुछ शान्त हो गयी। जैनब तभी गयी, जब उसे प्रगाढ़ निद्रा में निमग्न माय्या की एक समान सांसें सुनाई देने लगीं।

प्रभात धुंधला हुआ। जैनब अहाते में चिंतामग्न घूमती-फिरती माय्या के साथ ऐसे बातें कर रही थी, जैसे कुछ हुआ ही न हो—जिन्दादिली और काम-काजी ढंग से।

खेत में अपने बारे में सोचने की फुरसत बिलकुल नहीं मिली—माय्या बिना थकान महसूस किये डग भरती एक खेत से दूसरे में, एक नाली से दूसरी पर जाती रही।

वह काफी देर गये घर लौटी, उसे वहां कोई नहीं मिला—शायद जैनब बेटे के साथ संस्कृति-भवन चली गयी थी। माय्या के अपने कमरे में कदम रखते ही उसे फूलों की अत्यन्त मादक सुगन्ध आयी, उसने बत्ती जलायी और देखा कि मेज पर लालों का, तड़ित-झंझा के बाद स्तेपी पर तने

मतलब यही होता है। लेकिन देखो, बूढ़े की ममता तुम्हीं पर [illegible] पर [illegible] के [illegible] [illegible] सिपाई [illegible] नहीं भर्ती [illegible] का भाषण [illegible] के दिन न [illegible] का ज्ञान पर बैठने का [illegible] है। फिर वह [illegible] पाकर [illegible] [illegible] न होगा, फिर [illegible] होती मेरी प्यारी मुलान की धरती! "

सिपाई [illegible] मार्शल [illegible] के कार्यालय की इमारत के एक कमरे पर बैठे [illegible] की प्रतीक्षा कर रहे थे। माश्या का भाषण के [illegible] सुन रहे थे कि उस समय [illegible] नहीं आपको इस [illegible] के लिए [illegible] [illegible] [illegible] दिया? यह मुझको बहुत कम अनुभव है और सिपाही ज्ञान मुकाम में हमेशा काम नहीं आ सकता है [illegible] बातचीत शुरू हो गयी। माश्या को मित्री और सिपाई के निजी बारे में ही नहीं, बल्कि मार्क्सवादी शक्ति, विदेशी साम्राज्यवादियों की कार्रवाइयों, समुद्र से तेल निकालने आदि के बारे में भी प्रश्नों के उत्तर देने पड़े। वह जानती थी कि ये लोग दिन भर चिलचिलाती धूप में काम करते रहने के बावजूद अपने-अपने घर नहीं गये और उससे नये, मनोरंजक प्रश्न पूछ रहे हैं। माश्या अपने को सौभाग्यशाली अनुभव कर रही थी कि वह उन लोगों में ज्ञान प्राप्त करने की आकांक्षा जागृत करने में सफल हो गयी है। उसकी आवाज़ सशक्त हो उठी, उसमें आत्मविश्वास झलकने लगा, और उन क्षणों में वह इतनी सुन्दर लगने लगी कि चहारदीवारी से, जहां युवक बैठे थे, जब तब ठण्डी सांसों की आवाज़ें आ रही थीं।

जब वह लौटकर आयी, घर में शान्ति व्याप्त थी। चांद ने फर्श पर अपनी चांदनी का हल्का नीला कालीन बिछा रखा था, निद्रा-मग्न बालक की एक समान सांसों की आवाज़ आ रही थी। माश्या बिस्तर पर लेट गयी और उस रात्रिकालीन निस्तब्धता में उसे इतना अकेलापन महसूस हुआ कि वह फूट-फूटकर रो पड़ी।

नंगे पैरों की आवाज़ आयी, जैनब ने सोने के लम्बे कुर्ते में तख्त के किनारे बैठकर माश्या को अपने सीने से लगा लिया।

"नहीं, नहीं, मुझे तसल्ली मत दिलाओ। मुझे मालूम है कि तुम अच्छी हो, पर मुझे तसल्ली मत दिलाओ," माश्या फुसफुसायी। "किसे जरूरत है मेरी अब? अगर मेरा पति मोर्चे से घायल होकर लौटता, तो मैं अपने को सौभाग्यशाली समझ लेती..." उसने मुंह पर हथेली रख

आ जायेगा, फौरन हमारे बेटे को छोड जायेगी। इसका और कोई अजाम नही होगा। लेकिन अगर गराश दूसरी बीवी के साथ घर बसा ले, तो भी मैं माय्या को नही भूलूगी। उसे हमेशा अपना समझती रहूगी।"

रुस्तम ने अत्यन्त दु ख मे मुह बनाते हुए कहा कि वह केवल कपास के खेत से जल्दी खर-पतवार को साफ कर डालने की चिन्ता मे ही डूबा रहता है। इस समय केवल एक कम्बाइन काम कर रही है, तीन खडी हैं. खराब हो गयी हैं। आम बात है। लोगों को गेहू की कटाई के लिए भेजा, तो कपास बरबाद होने लगती है, उन्हें वापस कपास चुनने भेजा, तो तरबूज़-खरबूजे सूखने लगते हैं। अध्यक्ष को हजारो चिन्ताए होती है, जब कि उसकी बीवी उसे शायर ग़रीब* का किस्सा सुनाने बैठ गयी है .

"मेरा दिल ग़म के मारे टूटा जा रहा है, गला रुधा जा रहा है," सकीना ने दर्दभरी आवाज मे कहा। "आखिर मैं तुम्हारे साथ अपना दु ख न बाटू, तो और किसके साथ बाटूगी?"

"क्यो नही, क्यो नही, इसके अलावा बच्चो के सारे दु ख भी मेरे ही मत्थे मढोगी।" रुस्तम ने गुस्से मे चाय मेजपोश पर छलका दी। "मैंने सोचा था, वे बडे होकर बाप के लिए सहारा बनेंगे। मुझे बस यही नसीब हुआ है.. इसका कभी अन्त नही होना।"

"पर, *कौशो, तुम ऐसे खयाल मन में लाकर अपने को तडपाओ मत*," पत्नी ने सलाह दी। "सब ठीक हो जायेगा।"

पत्नी की शान्तचित्तता से रुस्तम अपना धीरज बिलकुल खो बैठा।

"कभी रोती हो, कभी सीख देती हो। साफ-साफ कहो, तुम चाहती क्या हो?"

"कार निकालो और मुझे 'लाल झण्डा' छोड आओ, बहू को देखकर लौट आऊँगी।"

पत्नी ने चाद की तरफ इशारा किया, जो अपना क्षीण प्रकाश वृक्षो के शिखर पर बिखेर रहा था।

"आजकल चाद जल्दी सिर पर आ जाता है," सकीना ने बेफिक्री से कहा। "रात होने मे अभी बहुत देर है.. सब से अच्छा मौका है। माय्या घर पर होगी, दिन मे उससे घर पर मिलना मुश्किल होगा..."

---

*शायर ग़रीब – दो प्रेमियों के बारे में प्रचलित दत-कथा 'ग़रीब और सनम' का नायक।

इन्द्रधनुष जैसा, रंगबिरंगा विशाल गुलदस्ता रखा है। उसने फूलों को चेहरे के पास लाकर अपनी आँखें मूँद लीं।

यानी कोई माय्या को याद करता है, उसे प्यार करता है!..

४

सकीना के दो बच्चे हुए थे, लेकिन अगर उसके दस बच्चे होते, तो वह और भी अधिक सुखी होती। बच्चे को अपनी कोख में सम्भालना, उसे जन्म देना और अपना दूध पिलाना, – भला इससे बढ़कर सुख कोई हो सकता है?

सकीना कहती थी कि हर मां पर जनता को गर्व होता है, वह धरती का आभूषण होती है। बच्चे की आवाज़ से – चाहे वह अपना हो या पराया – उसका हृदय वात्सल्य से ओत-प्रोत हो उठता था... बुढ़ापा आने पर सकीना पोते खिलाने के सपने देखती रहती थी। आज़रबैजानी लोकोक्ति में भी यही कहा गया है "बच्चे तो मीठे होते ही हैं, पर बच्चों के बच्चे उनसे भी ज्यादा मीठे होते हैं।" गराश के विवाह करते ही वह उस घड़ी का इन्तज़ार करने लगी, जब वह पोते को पालने में झुलाने का सुख प्राप्त करेगी। वह अकसर कल्पना करती कि तब वह पति से कहेगी "ऐ, कीशी, अब मिठाई खिलाओ, आज नहीं तो कल तुम दादा कहलाने लगोगे।"

रुस्तम खानदान का घर छोड़कर जाते समय माय्या सकीना की आशाएँ भी अपने साथ ले गयी।

अगर वह नालायक होती, तो उसे घर से जाने देते समय सकीना का दिल नहीं दुखता। उसे माय्या से बहुत लगाव हो गया था, और उसे जितनी ज्यादा बहू की याद आती, दिल में उतने ही ज़ोर से हूक उठती।

अन्त में सकीना ने पति से दृढ़तापूर्वक कह ही दिया कि वह बहू से मिलना चाहती है।

रुस्तम का इरादा शाम की चाय आराम से पीने का था: घरवाली ने यह बात बहुत बेवक्त छेड़ी है।

"मैं वैसे ही नहीं जानता कि इस किस्से का अन्त कैसा होगा, और इधर तुम मेरे कान खाये जा रही हो!" उसने गुस्से में जवाब दिया।

"मैं तो, कीशी, अभी कहे दे रही हूं कि इस सबका नतीजा कैसा निकलेगा। बदचलन औरत कभी वफ़ादार नहीं होती। कोई दूसरा पसंद

ठण्डक से तुम्हारा गुस्सा कुछ कम हो गया होगा। मैं जानना चाहता हूं : तुम्हें इंसाफ में विश्वास है या नहीं? मेरी जिन्दगी चरागाहों में बीती है, मैं वहीं मरना चाहता हूं।"

रुस्तम ने सिर झुका लिया, उसे दिन में जिला समिति के सचिव के साथ टेलीफोन पर हुई बात याद आ गयी। असलान ने पूछा था कि खेती का काम कैसा चल रहा है और चेतावनी दी थी कि कुछ दिनों में भयंकर सूखा पड़नेवाला है,—उन्हें मिनट-मिनट की कीमत समझनी चाहिए, सिंचाई ढंग से करनी चाहिए और पानी की बूंद-बूंद की बचत करनी चाहिए। अन्त में उसने उसे पशुपालन फार्म की समस्याओं का समाधान करने और साथ ही चरवाहे केरेम को वापस वहां लगाने की सलाह भी दी थी। रुस्तम ने सफाई देने की कोशिश की थी. इनचार्ज को इसलिए हटाया गया, क्योंकि वे गम्भीरता से पशुपालन फार्म की समस्याओं का समाधान करने में जुट गये हैं और उसके संचालन को सुदृढ़ बना रहे हैं . खड़खड़ाहट के बीच उसे असलान की अविश्वासपूर्ण हंसी सुनाई दी थी. सचिव को अभी इन परिवर्तनों की आवश्यकता का विश्वास नहीं हुआ, अभी कुछ और बातें स्पष्ट करनी हैं, उनका गहराई में जाकर अध्ययन करना है। "वहां गहराई में अध्ययन करने की जरूरत क्या है?" रुस्तम को आश्चर्य हुआ। "सब कुछ स्पष्ट है!" और उसने सोच लिया कि फिर अनाम पत्रों की बौछार होने लगी है जब तक वह मौन रहा, केरेम मुट्ठी में दाढ़ी मसलता रुस्तम के सिर के ऊपर से चांदनी में नहायी स्तेपी में कहीं देखता रहा।

"अरे, कीशी, जिद मत करो," सकीना फुसफुसायी, "क्यों दुश्मनी मोल लेते हो? सिर्फ नेक कामों से ही नाम होता है।"

रुस्तम जैसे नीन्द से जाग उठा, उसने तीखी आवाज में पूछा :

"अच्छा, बताओ, तुम ईमानदारी से काम करोगे या फिर पहले की तरह अपनी चाल चलाने लगोगे?"

"तुम्हारी बात मेरे दिल में तीर-सी चुभ गयी है, कीशी," केरेम ने ठण्डी सांस ली। "मैं जवाब देता, पर तुम्हारी उम्र का ख़याल आ जाता है। लेकिन एक न एक दिन तुम्हारी आंखें खुल ही जायेंगी। तुम ख़ुद देख लोगे कि तुमने कितना बुरा काम किया है।"

रुस्तम कृपापूर्वक हंसकर बोला .

यह समझकर कि पत्नी का इरादा पक्का है, रुस्तम ने कहा कि श भी 'लाल झण्डा' आयेगा. उसे कारा केरेमोगलू से मिलना है, उसका गरेबान पकड़कर कहना है "कितनी बार कह चुका हूं, अपने मामूलि किसानों को चेतावनी दे दो कि वे नाली के निकास पर कूड़ा-कचरा न डाला करें।"

"अरे, कौशी, अगर डण्डा लेकर जा रहे हो, तो मेरा घर पर रहना बेहतर होगा!" सबीना ने ठण्डी सांस लेकर कहा।

रुस्तम ने सिर थाम लिया। कैसी बेवकूफ औरत है! अब सिखने लगी कि लोगों के साथ कैसे पेश आना चाहिए.. उसने कुछ सोचकर पत्नी को शान्त किया: उसका झगड़ा करने का कोई इरादा नहीं है, फिर कारा केरेमोगलू ऐसा आदमी नहीं है, जिसके साथ झगड़ा किया जाये," यह तो यह सब मजाक में कहेगा   पेरशान ने, यह सुनकर कि माता पिता कहां जा रहे हैं, कहा कि वे उसे भी मामा के पास ले चलें। उसकी चुटिया पकड़कर उसे सोने भेज देना कहीं ज्यादा उचित होता, पर न जाने क्यों गुस्से में हांफता हुआ कार निकालने शेड में चला गया।

उधर बैठी बगीचे में घूमघूमकर प्रीम सिक्त लाले चुन रही थी।

किसी ने जोर से गली का फाटक खटखटाया।

"खुदा करे कुछ खुशखबरी हो," रुस्तम ने कहा और सबीना को चुप रहने को कहकर बूढ़ों की तरह पैर घिसटता फाटक की तरफ बढ़ा।

बाहर केरेम खड़ा था।

"बस तुम्हारी ही कसर रह गयी थी," गृहस्वामी बड़बड़ाया, पर उसे अपनी परम्परा तोड़ने का साहस नहीं हुआ और उसने एक ओर हटकर मेहमान को अन्दर आने दिया।

केरेम ने कार, सजी-धजी सबीना और पेरशान के हाथों में [illegible] दुपट्टे पर [illegible] नजर डाली।

"लगता है मैं बेवक्त आया हूं [illegible] पर मैं [illegible] हूं [illegible] मेरे बच्चे हैं [illegible] और [illegible] है। [illegible] बच्चों में [illegible] की [illegible] है [illegible]।"

"[illegible] आप [illegible]? फिर [illegible] हाथ [illegible] रुस्तम ने [illegible] को [illegible] के [illegible]।

"[illegible] के [illegible] हुए [illegible] के [illegible] है"

"उन्हें वहां होना चाहिए? मिचाई के काम पर," रहीम ने समझदारी से जवाब दिया, जमाई ली और खिड़की बंद कर ली।

५

माय्या लालों का गुलदस्ता अपने होंठों पर दबाये बरामदे में खड़ी थी। अचानक सीढ़ियां चरमरायीं, पेरशान बरामदे में भागी आयी और बवण्डर की तरह माय्या पर टूट पड़ी।

"कितनी तड़प गयी हूं तुम्हारी याद में! लगता है तुम तो मुझे और मां को बिलकुल ही भूल गयी हो।" वह जवाब का इंतज़ार किये बिना बोलती रही। "अब्बा और मां कारा केरेमोगलू को ढूंढने खेत में गये हैं, पर मैं बगीचे में तुम्हारा इंतज़ार करती रही। मैंने ठान ली थी कि चाहे सुबह तक बैठना पड़े, पर मिलूंगी ज़रूर। कैसी हो? क्या सचमुच अभी तक यहां ऊबी नहीं?"

माय्या मुस्करा भर दी। उसे पेरशान के साथ अच्छा लग रहा था, इस मुलाक़ात से काफ़ी ख़ुशी हुई, पर उसकी परी सदृश बरौनियोंवाली आंखों में उदासी की छाया झलक रही थी।

रुस्तम व सकीना जब खेत से लौटकर आये तो उन्होंने देखा कि माय्या व पेरशान बरामदे की सीढ़ियों पर एक शाल ओढ़े बैठी हैं और फुसफुसाकर बातें कर रही हैं।

"बेटी!" सकीना आह भरकर बहू की तरफ़ लपकी, माय्या के गाल पर आंसू की गरम बूंद गिरते ही [illegible] उठी।

रुस्तम ने [illegible]हू के साथ [illegible] दुआ सलाम की और तुरन्त कारा [illegible] पड़ा [illegible] तो, इनके बताने से पहले जैसे [illegible] पता [illegible]। इसके अलावा भाषण देने की [illegible] रात में गेहूं की कटाई करते थे। [illegible] इससे [illegible] प्रचारात्मक भाषणों से [illegible] अपने लोगों से कूड़ा-कचरा [illegible] हो। [illegible] ने रुस्तम को क्या जवाब [illegible] लगवा लेना चाहिए [illegible] नहीं जानना हो कि उसे

"अगर मेरी आँखों पर पट्टी बंधी होती, तो मैं कैसे देखता कि तुम कैसे पशुपालन फार्म का उजाड़ रहे हो।"

"तुम, चाचा, आदमी ईमानदार हो, पर न जाने किसने तुम्हारे कान भर दिये हैं। तुम बेकार मेरा मज़ाक उड़ा रहे हो, मुझ पर ठप्पा लगा रहे हो। मेरा बच्चा ये मालूम न तुम भी माफूने नहीं रहोगे।"

"ठीक है, ठीक है, मुझे हुसैन के पास जाओ," रुस्तम ने उसे टोक दिया, "उससे कहना, वह तुम्हें काम पर लगा ले। लेकिन," उसने मुद्रा बनाई, "अगर लापरवाही में फंसे, तो फिर खुद ही को दोष देना। तुम्हारे खानदान की यह कमज़ोरी है—पराये मामलों में टांग अड़ाने और झूठी शिकायतें लिखने की।"

चरवाहे ने मिनट भर अध्यक्ष की तरफ एकटक देखा, पर कहा कुछ नहीं, माथे पर टोपी खींची और धीरे-धीरे बाहर चला गया।

फाटक के पास उसे भागकर पहुँची पेरशान ने रोक लिया और उसकी ओर कुछ लाले के फूल बढ़ाये।

"ये साराग्योज के लिए हैं, चाचा!"

केरेम के होंठो पर मुस्कान खेल गयी।

"तुम बहुत अच्छी लड़की हो, शुक्रिया!"

आधा घंटे बाद 'पोबेदा' कार जैनब कुलियेवा के घर के बाहर रुकी। गाव में सन्नाटा छाया हुआ था, चादनी घास पर छिटक रही थी, लगता था जैसे वे नीली बर्फ से ढके डबरे हो।

"हम बहुत अच्छे वक्त पहुचे हैं," रुस्तम गाड़ी से निकलता हुआ फुफकारा। "कारा घोड़े बेचकर सो रहा है, उसे शहनाई भी नहीं जगा सकती।" उसने हथेलिया मुह से लगाकर आवाज दी: "प्यारी बहन, तुम्हारे मेहमान आये हैं!"

आवाज बगीचो मे गूज उठी, पर किसी ने जवाब नहीं दिया। कार के पास खड़ी पत्नी और पेरशान की तरफ मुड़कर रुस्तम ने हाथ हिला दिये। उसी समय खिड़की खुली और नीन्द से भरी आखें मलते हुए रहीम ने झाककर देखा।

"आपको किससे मिलना है? मा से? अभी वह खेत मे हैं, कटाई ..."

"कारा भाई अपना नाम अखबार में छपाने की खातिर मरे जा रहा," रुस्तम ने मज़ाक किया। "सुन्ने, पर साथ्या क्या है?"

ते उसकी किसी को प्यार करने, किसी का प्यार पाने की उत्कट इच्छा
ईर्ष्या हो रही थी और उसने ठण्डी सास लेकर आगे कहा. "लेकिन
इतनी ही उमग को अपने पर हावी मत होने देना। लडका कितना ही अच्छा
गों न हो, पहले उसे अच्छी तरह देख-भालकर आज़मा लेना, सचमुच
यार करता है या नही ? हम लडकिया भोली-भाली और बहुत जल्दी
विश्वास कर लेनेवाली होती हैं, इसीलिए तो आसू बहाती रहती हैं।"

उसकी बातो मे अपनी क़िस्मत से शिकायत झलक रही थी और
वेदनशील पेरशान का हृदय सहानुभूति से भर उठा। उसने सोचा कि उसे
किसी भी तरह माय्या को सान्त्वना दिलानी चाहिए और वह बडे उत्साह
से झूठ बोलने लगी

"माय्या, सच, मेरी कसम, तुम्हारे जाने के बाद गराश सूख कर
कांटा हो गया है। वह तुम्हे बेहद प्यार करता है। कुछ दिन हुए मुझे
वह बगीचे मे ले गया और उसने अपना दिल खोलकर मेरे सामने रख दिया,
कहने लगा : 'बुरे लोगो का घर ढह जाये, मैंने बेकार अफ़वाहो पर विश्वास
करके पत्नी को नाराज कर दिया ' "

पेरशान को उस क्षण पूर्ण विश्वास था कि वह बिलकुल सच बोल रही
है और उसकी बातो पर ही माय्या व भाई का सुखी जीवन निर्भर करता
है। और युवती माय्या का हाथ अपने दिल पर रखकर बोलती रही .

"कल घर चलते हैं! गराश ने कहा है 'अगर खेत से घर लौटने
पर माय्या मुझे सोने के कमरे मे नज़र आ जाये तो मैं चमत्कार पर
विश्वास कर लूगा .' चलोगी? 'दुनिया मे मेरे लिए मेरी माय्या से
बढकर प्यारा कोई नही है!' उसने यही कहा था। चलोगी?"

माय्या भाप गयी कि पेरशान की बातो मे रत्ती भर भी सच्चाई नही
है, लेकिन उसे युवती के दिल को ठेस पहुचाने की इच्छा नही हुई, उसने
नरमी से कहा।

"चलो, सोने चलते हैं। सोच-समझ लेगे, अभी रात पडी है। कल
दोनो को काम पर तो जाना है . "

दोनो ने परो का गद्दा फर्श पर ही बिछा लिया और सो गयीं। भोर
मे जब ज़मीन और पेडो से ठण्डक निकलती होती है, बहुत मीठी नीन्द
आती है, लेकिन पेरशान चौंककर उठ बैठी, जैसे किसी ने उसे धक्का दे दिया
हो। उसे किसी विपत्ति का पूर्वाभास हुआ। उसने घुटनो के बल बैठकर
बगीचे मे झाका : वहा सलमान और रहीम ख़ुबानी के घने वृक्ष के नीचे

माय्या की काली आंखों में इतना क्रोध उमड़ रहा था कि सलमान ली के फाटक की तरफ भागा, लेकिन टोकरी और पोटली भी उठा ले जाना नहीं भूला।

जैसे ही पीली पड़ी और गुस्से से कांपती माय्या घर के अंदर आयी, परेशान ख़ुशी से चिल्लाती उसके गले में हाथ डाल लिपट गयी।

"तुमने उस उल्लू को ख़ूब अच्छा सबक सिखाया, क़ुरबान जाऊं तुम पर।"

६

रुस्तम को बताया गया कि कार्यालय में असलान, शराफ़ोगलू और गोशातख़ा उसकी प्रतीक्षा में हैं।

यह अंदाज लगाने की कोशिश करते हुए कि सब एक साथ कैसे आये हैं, रुस्तम जल्दी से उनसे मिलने रवाना हो गया। अपने मोर्चे के साथी के साथ मिलने की उसे ख़ुशी थी, पार्टी की ज़िला समिति के सचिव के आगमन से वह परेशान नहीं था: अनाज की फसलें उठाने का काम एक प्रकार से ठीक ही ढंग से चल रहा था . लेकिन गोशातख़ा 'नवजीवन' में किस इरादे से आया है? वह शायद फिर किसी घाव को कुरेदने की कोशिश करेगा।

अगर सचिव काफ़ी ऊपर चढ़े सूरज की तरफ इशारा करके कहेगा, "देर तक सोते हो, कामरेड अध्यक्ष," रुस्तम जवाब में कह देगा कि वह रात की कटाई से तीन बजे लौटा था। जहां तक रात की कटाई का सवाल है, तो उसने उसे इसलिए बिलकुल नहीं शुरू किया है, क्योंकि कारा कैरेमोगलू सफलतापूर्वक उसका उपयोग कर रहा है, इसलिए भी नहीं, क्योंकि शेरज़ाद ने इस पर ज़ोर दिया था, बल्कि इसलिए, क्योंकि रुस्तम के पास पर्याप्त बुद्धि और अनुभव है।

लेकिन असलान रुस्तम को देखकर उसकी तरफ़ बढ़ा और उसने बिलकुल और ही बात पूछी.

"अरे, चचा, आंखों के नीचे कितने नीले निशान पड़ गये हैं! आख़िर तुम सोते कब हो?"

"कटाई ज़ोरों पर होने पर सोने की फुरसत ही नहीं मिलती।" अध्यक्ष हंस पड़ा।

"ऐसे मौक़ों पर ही तो नियम से काम करना चाहिए..." असलान

"तो मैं शाम को झाकता जाऊगा," वृद्ध सिर नवाकर लाठी टेकता हुआ बाहर निकल गया, उसके पीछे-पीछे अन्य सामूहिक किसान भी चल दिये।

रुस्तम का मूड खराब हो गया. उसने सलमान से नजर मिलायी। लेकिन कुछ किया नहीं जा सकता था, उच्चाधिकारियो के साथ ढग से ही पेश आना चाहिए। उसने कृत्रिम मुस्कान के साथ सचिव से पूछा.

"शुरू कहा से किया जाये: अनाज से या कपास से?"

वृद्ध महत के साथ हुई बातचीत से अमलान भी अशान्त हो गया था। वह आखें दबाकर कही दूर देखता हुआ अपने पर काबू करके बोला कि शराफोगलू और गोशातखा अपने-अपने काम करेगे, जब कि वह स्वय घर-घर जाकर सामूहिक किसानो का रहन-सहन देखेगा।

रुस्तम ने सचिव पर सरपरस्ती के अन्दाज मे दृष्टि डाली। ऐसा आदमी एक साल से ज्यादा नही टिक सकता। मुगान की जलवायु कठोर है, जबकि इस नौजवान का कोई ठोस सहारा नही है, इसका अवश्य ही चुनावो मे पत्ता काट दिया जायेगा।

"हा, तो, कामरेडो, हम यहा कार्यालय मे ठीक सात बजे मिलेगे," अमलान ने कहा।

रुस्तम को लगा कि इन बातो के पीछे कोई चाल है, शायद इनमे पहले से साठ-गाठ हो चुकी है और ये उसे किसी अचम्भे मे डाल देने के लिए एकत्र होने जा रहे हैं।

अपने विरोधियो की पहलकदमी को नाकाम करने के इरादे से उसने शराफोगलू से जोर से कहा:

"जरा कुरा के किनारे चलकर अपनी कम्बाइन पर एक नजर डाल लो. एक घटा काम करती है, पांच घटे खड़ी रहती है."

"हा, मैं सुबह नजफ को वहां मरम्मत करने रवाना कर चुका हू," शराफोगलू ने शान्ति से उत्तर दिया। कुछ मिनट बाद उसवान को निर्माणाधीन सस्कृति-भवन दिखाते समय रुस्तम जोवत हो उठा, भावविभोर होकर भावी भवन की सुन्दरता का बखान करता रहा और खूब डींग हाकता रहा।

"काम, सचमुच बहुत अच्छा है, पर भरत् मे तुम्हें बैंक को पाच लाख रुबल लौटाना पड़ेगा," सचिव ने सरसरी तौर पर टिप्पणी की। "और श्रम-दिनो का भुगतान कैसे किया जायेगा? अतिरिक्त निधि का क्या होगा?"

"मेहरबानी करके चिन्ता मत कीजिये!" रुस्तम कह उठा। "ऋण सदा

"क्यों, तुम्हारे रोगी का क्या हाल है, यारमामेद?" अमलान ने पूछा।

"तन और मन दोनों दुखी हैं।"

"तुम्हारा इलाज कर देंगे, यारमामेद, जरूर कर देंगे।"

"आपका साया हम बेसहारों के सिर पर हमेशा बना रहे!" और मामेद ने करीब-करीब जमीन तक सिर झुका दिया।

एकाएक अमलान ने ठहाका लगाया और हाथ हिलाकर लम्बे-लम्बे डग ता कार्यालय की ओर चल दिया, जहां उसकी मोटर खड़ी थी।

रुस्तम उस द्वयर्थक बात में कुछ नहीं समझ पाया, उसने भौंहें सिकोड़कर आकार को फाइल लौटा दी और उसे खा जानेवाली नजरों से देखा हो जा मेरी नजरों से जब वह अमलान के पास पहुंचा, जिला मति के सचिव ने उसे खीजभरी झिड़की दी

"यह क्या आदत है—चलते-चलते कागजात पर दस्तखत करने की? मे कोई ऐसा कागज भी रखा जा सकता है कि तुम्हें फिर बरसों ताना पड़ जाये। चालाक को चालाकी से ही मात दी जा सकती है।"

रुस्तम ने सचिव को तसल्ली दिलायी: उसके कर्मचारी जानते हैं कि का वास्ता किससे पड़ रहा है,—उसके सामने कोई कागज पेश करने पहले सौ बार उसकी जाच करते हैं।

अमलान ने उससे बहस नहीं की।

अध्यक्ष का उत्साह अत्यधिक बढ़ गया और उसने गर्वपूर्वक घोषणा कि महान अक्तूबर क्रान्ति की उनतालीसवीं वर्षगांठ के अवसर पर मूहिक फार्म सभी मदों के सरकारी कोटे पूरे कर लेगा, संस्कृति-भवन निर्माण सम्पन्न कर लेगा और नल व बिजली की व्यवस्था कर लेगा।

अमलान फिर चुप हो गया, पर जब वे मोटर के पास पहुंचे, वह छ बैठा:

"रुस्तम-कोशी, तुम क्या करोगे, अगर तुम्हें मालूम पड़ जाये कि अनाम त किसने लिखे हैं?

"उसका गला घोंट दूंगा!" रुस्तम अचानक इतने जोर से दहाड़ा कि उसका गला बैठ गया।

यह इतना भयावह लगा कि अमलान चौंककर एक ओर हट गया और सके मुह से केवल इतना निकला

"अच्छा! अच्छा!"

कर दिये जायेंगे और परिवर्तित सिंचाई से कम-से-कम दस लाख [illegible] दे देंगे। पैसा कहाँ से आयेगा? इस साल सामूहिक फार्म इसका [illegible] कि [illegible] के [illegible] अंगूरों की हालत खराब हो जायेगी। यह सच है कि बड़ी-बड़ी कपास की फसल अच्छी नहीं है, पर [illegible] में औसत दर्जे की शराब भी ला रहा है ..."

अध्यक्ष ने दुःखी हो हल्की सांस ली और मन-ही-मन सोचा: "मुझे कुछ मान लेना चाहिए, जमीन तैयार करनी चाहिए ..."

निर्माण-स्थल पर काम तेजी से चल रहा था, दीवारें काफी ऊँची उठ चुकी थीं। ईंटों, तराशे पत्थरों, बजरी के ढेर लगे हुए थे, सीमेंट के ड्रम पड़े हुए थे। रुस्तम हाथ हिला-हिलाकर दिखा रहा था कि पुस्तकालय कहाँ होगा, हाल कितना बड़ा होगा। ऐसा सब कुछ तो किसी शहर में भी नहीं मिलेगा ...

असलान तेवरियाँ में हँस पड़ा।

"बस यह सस्कृति-भवन महीने में उन्तीस दिन खाली न पड़ा रहे!"

रुस्तम ने बुरा मानकर प्रतिवाद किया कि सामूहिक फार्म में शौकिया कलाकार मण्डली की स्थापना हो चुकी है, उन्होंने हाल ही में एक शानदार कसर्ट आयोजित किया था, कामरेड कलन्दर उसमें आये थे और उन्होंने उसकी प्रशंसा की थी।

मोड़ पर यारमामेद का लम्बोतरा चौखटा दिखाई दिया और तत्क्षण गायब हो गया।

रुस्तम के नथुने फूल गये, वह चिल्लाया

"ऐ, दुबक क्यों गया मुर्गी का पीछा करती लोमड़ी की तरह?"

यारमामेद असलान और अध्यक्ष को झुक-झुककर सलाम करता और अपने न मुड़नेवाले पैरों से धूल समेटता उनके पास आया।

"हमारा लेखाकार है। लड़कियों से भी ज्यादा शर्मीला है," रुस्तम ने परिचय कराया। "बिलकुल शरीफ, शान्त और शिष्ट है ..."

"कहीं उस बादशाह का नाती तो नहीं है, जिसकी बेटी समुद्र में नर मछलियों के डर से नहीं नहाती थी?" असलान ने व्यग्यपूर्वक पूछा और उसके चेहरे पर वितृष्णा की ऐंठन फैल गयी।

"नहीं, यह सचमुच शर्मीला है," रुस्तम ने लेखाकार की तारीफ करते हुए यारमामेद से फाइल लेकर बिना दस्तावेज देखे उन पर हस्ताक्षर कर दिये।

था किशोरों ने तेज धारवाले कुदालो से उसके कई टुकडे कर दिये थे, र घिनौने जानवर का हर टुकडा छटपटा रहा था, फडक रहा था।

असलान ने स्त्रियो से दुआ-सलाम की, उन्हे मज़ाक मे डरपोक कहा और जाकर नाली मे हाथ-मुह धोने की सलाह दी।

एक तरफ ताने हुए तिरपाल के नीचे एक दूसरे को धकेलते, नन्ही-नन्ही कमीजें पहने दो बालक घुटनो के बल चल रहे थे।

असलान को गुस्सा आ गया

"क्या शिशुशाला नही है?"

सलमान ने फौरन बताया कि शिशुशाला यहा से दस किलोमीटर दूर स्थित केंद्रीय खेत-कैंम्प मे है। बीमारी के कारण पीले पडे और धूप के प्रभाव मे अभी सावले न हो पाये चेहरेवाली स्त्री उनके पास आयी, केवल मुगान के लिए अत्यन्त आश्चर्यजनक रूप से गोरी चमडी के कारण रुस्तम करेम की पत्नी को पहचान पाया।

"यही है शैतान का खानदान!" उसने सोचा। "आखिर मैं कब तक हर कदम पर इन से टकराता रहूगा?"

"अच्छा, अच्छा," असलान ने उलाहनाभरे अदाज मे सिर हिलाया और अध्यक्ष को अपने पास आने का सकेत करके पूछा · क्या रुस्तम यह नही महसूस करता कि शिशुशाला भव्य सस्कृति-भवन से कही ज्यादा जरूरी है? यह अच्छी, बहुत अच्छी बात है कि वहा का मच बाकू के थियेटरो के मचो से बहुत बडा है, फिर भी

"अरे, भाई!" करेम की पत्नी ने पीले पडे गाल पर हथेली रखकर कहा। "मुझे काम करते हुए आज दूसरा ही दिन हुआ है, मैंने जुडवा बच्चो को यहा छोड दिया था. . सब गवाह हैं, अगर मैंने एक मिनट की भी देर की होती, तो साप ने हूरी को डस लिया होता। मैंने इसकी पुकार कैसे सुनी, अभी तक समझ नही पा रही हू! मैं इधर लपकी, पर हूरी साप की तरफ रेंग रही थी, और साप बच्चे की ओर। मैं इतने ज़ोर से चीखी कि स्तेपी काप उठी। शुक्रिया इन किशोरों का, जिन्होंने फौरन भागकर आ इसके टुकडे-टुकडे कर दिये "

"तुम अपनी सास की उपटोली मे क्यो नही हो?" रुस्तम को आश्चर्य हुआ। "तुम वहा बच्चो को शिशुशाला मे भरती करवा सकती थी।"

"अरे, बाबा, मुझे कैसे मालूम हो सकता है कि मैं दायी तरफ चलू

ग्रीष्म के मध्य में गरम दिन चल रहे थे। स्तेपी झुलस कर पीली पड़ चुकी थी, ऊँट की खाल जैसी लग रही थी, केवल सिंचित ज़मीन के टुकड़ों पर घनी हरियाली थी, और अनुन्मूलनीय ऊंटकटारा और नागफनी धृष्टतापूर्वक सूरज की तरफ बढ़ रहे थे। धूल की नमदे जैसी मोटी तह में अधढकी रास्ते के किनारों की झाड़ियां धूसर नज़र आ रही थीं। रास्ता देखने में साफ और समतल लगता था, धूल गड्ढों में भर गयी थी, लेकिन असलान का उसके साथ ज़िले के दौरे का आदी चालक सहज ज्ञान से गड्ढों का पता लगाकर आये क्षण गाड़ी के ब्रेक लगाता जा रहा था। खिड़कियों में से ललछौंहा भूरी धूल के दमघोंटू गुबार उड़कर अंदर आ रहे थे। असलान को खांसी आ गयी और उसने शीशे चढ़ाने को कह दिया। दम घुटने से पसीने में नहा जाना कहीं बेहतर होगा। पिछली सीट पर बैठे रुस्तम, शेरज़ाद व सलमान को सांस लेने में कठिनाई हो रही थी, वे आस्तीनों से अपने चेहरे पोंछ रहे थे, — रूमालों को निचोड़ा जा सकता था।

सलमान की देख-रेख में बनाये जा रहे ट्रांसफोर्मर सब-स्टेशन का निरीक्षण करके असलान बगारा के खेतों के लिए रवाना हो गया। रुस्तम ने उसे अपने सब से बढ़िया व सब से खराब खेत दिखाने का वादा किया था। जब गाड़ी गुगँ हुसैन की विरागन छोटे व दुर्बल कपास के पौधों के खेत के पास से गुज़र रही थी, असलान ने अचानक मोटर रोककर दरवाज़ा खोल दिया, और नीचे कूद गया। उसके पैर घुटनों तक वहां जमी धूल की तह में धंस गये।

"क्या सचमुच गोशालाया ने चुगली खायी है?" रुस्तम ने सोचा, पर बेधड़क असलान के पीछे-पीछे चलने लगा।

लेकिन असलान की कपास में दिलचस्पी नहीं थी। वह सीधे धूल में के खर-पतवार उगे गड्ढे को पार करके मेंड़ के सहारे अंदर पहुंच गया, जहां स्त्रियां एकत्र थीं। वे दो किशोरों को घेरे हुए थीं, जो बड़े जोश से ज़मीन पर कुदालें मार रहे थे और बार-बार ये चिल्ला रहे थीं

एक बार और, फिर एक बार!

मारो, मारो, इस मनहूस को!'

' खड़ी हुई घास पर [illegible] बाहर [illegible]

को सुबह दुहा जाये, तो दूध का स्वाद ग्राप कभी न भूलें... चम्याहा बेरेम..." उसने बात शुरू की और फिर एकदम चुप हो गया।

असलान ने उसकी बात अनसुनी करके कम्बाइन के स्टियरिंग ब्रिज पर खड़े तजफ़ की तरफ़ अपनी टोपी हिलायी।

"यह लड़का लड़का नहीं, आग है!"

"हां, बहुत शाबाशी का काम किया है इसने, आख़िर फ़सल को बचा ही लिया। एक दिन की देर और हो जाती, तो गेहूं पूरा झड़ जाता।

उसने स्नेहपूर्ण दृष्टि खेत पर डाली। कम्बाइन तब तक दूसरे छोर पर पहुंच गयी थी और उसके चक्कर में अनाज ले रहे ट्रक खिलौनों जैसे छोटे लग रहे थे।

कम्बाइन के पीछे-पीछे चल रहे स्कूली बच्चे गेहूं की बालियां उठा रहे थे। शेरजाद ने गाराग्योज़ को रोका और उसका परिचय असलान से करवाया

"यह हूरी और परी की बड़ी बहन है। कितनी मेहनती है – पूरा एप्रन बालियों से भरा है।"

असलान ने बालिका के उलझे हुए घुंघराले बालों पर हाथ फेरा।

"अच्छा, यही गाराग्योज़-ख़ानम है! मेलक और गोशातखा इसे अक्सर याद करते हैं।"

धूप निरन्तर तेज होती जा रही थी। गीली कमीज़ें कंधों से चिपक गयी थीं। रुस्तम ने आंखें आकाश की ओर उठाकर शिकायत की

"बिलकुल दहकती भट्टी है!"

"चाचा शुभ ग्रह से नाराज़ है!" असलान हंस पड़ा।

"खुश हो ही किस बात से सकता हूं? हमें मुग़ान में इतनी गर्मी और रोशनी की ज़रूरत नहीं है। आदमी परमाणु का भंजन करना, समुद्र की गहराइयों से तेल निकालना और ध्वनि की गति से आकाश में उड़ना सीख गया है। काश अब सूरज की गर्मी का कुछ हिस्सा अपने पड़ोसियों को देना सीख जायें, कम-से-कम केल्बजार ज़िले को ही।"

"ऐसा ही होगा," शेरज़ाद ने सिर हिलाया। "और बहुत जल्दी होगा।"

"तुम्हें इसका पूरा विश्वास है?" रुस्तम ने व्यंग्यपूर्वक पूछा।

"पूरा। आप सबर रखिये, यह कर दिखायेंगे। हमारे वैज्ञानिक इस समस्या का समाधान खोज रहे हैं।"

"हां, मैंने भी पढ़ा था," असलान ने पुष्टि की।

पड़ता था, कभी उसकी भौहें सिकुड़ जाती थीं, तो कभी पाइप की नली का छोर चबाने लगता था।

"इसमें कोई शक नहीं," असलान ने कहा, "कि 'नवजीवन' इस वर्ष प्रगति करेगा, पर यह लम्बी छलांग नहीं होगी। उसकी समृद्ध क्षमताओं का विगत के वर्षों की तरह उपयोग नहीं किया गया, प्रबन्ध समिति और टोली-नायकों का सारा ध्यान कपास व अनाज की फसलों पर केंद्रित रहा, जब कि पशुपालन व साग-सब्जियों की खेती की उपेक्षा की गयी।"

शराफोगलू जब बता रहा था कि मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन इस वर्ष शरत् में खेतों में कितनी कपास चुनने की कम्बाइनें भेजेगा, सामूहिक किसान एक दूसरे को टहोके मारते हुए कानाफूसी कर रहे थे, फिर वृद्ध असद खड़ा हुआ और उसने अपनी लाठी जमीन में गाड़कर कहा

"हमारे सामूहिक फार्म में आलोचना और आत्मालोचना नहीं की जाती है! .."

यह शब्द सुनते ही रुस्तम चौंक उठा और उसने पाइप में इतने जोर से फूंक मारी कि राख का फव्वारा छूट गया।

"और इसके अलावा?" असलान ने पूछा।

लेकिन वृद्ध तब तक जमीन पर आलथी-पालथी मारकर बैठ चुका था, मुट्ठी में दाढ़ी ही मसल रहा था और आगे कुछ कहने को तैयार नहीं था।

भीड़ में उसके अनुमोदन की भनभनाहट होने लगी।

उसी समय कार्यालय के बाहर एक कार आकर रुकी, उसमें से कलक्टर बाहर निकला और निर्लिप्त व गम्भीर मुखमुद्रा में, जो शायद जिला कार्यकारिणी समिति के अध्यक्ष को शोभा देती है, एकत्र लोगों के पास पहुंचा।

सलमान ने अपनी कुरसी उसके लिए सरका दी।

असलान की प्रश्नात्मक दृष्टि देखकर कलक्टर ने स्पष्ट किया

"बाकू से टेलीफ़ोन आया था। हम ऊन का कोटा पूरा करने में पिछड़ रहे हैं। मुझे पशुपालन फार्मों में जाना पड़ा।" और उसने अपनी भूजी हुई आंखें मलीं।

बाकू से उसे कोई फोन नहीं आया था, लेकिन गूंगे हुसैन के पशुपालन फार्म में वह सचमुच गया था, वहां उसने छककर पी, सीक-कबाब खाये और फिर मेहमाननवाज नज़नाज के यहां चला गया, जहां शहतूत के तले ठण्डक में लेटकर सोता रहा. .

"श-श! .." और सलमान की ओर मुड़ा। "और आपके खयाल मे किसने लिखा है?"

"मैं कोई पक्की बात नही कह सकता," सलमान हकलाता और आंखें ा डरता हुआ बुदबुदाया और उसने अपनी कांपती उगलियों से बालों को ठीक किया।

"अच्छा, अच्छा!" अमलान उठ खड़ा हुआ और कठोर स्वर मे बोलता : "अनाम पत्र लिखनेवाला खुद जनता के सामने इसे स्वीकार करे।" सब स्तब्ध रह गये. पत्तो मे मच्छर के भिनभिनाने की आवाज भी ी सुनाई देने लगी।

"मैं, मैं, मेरे मेहरबान!" और यारमामेद अपनी पतली, नमदार न निकालकर पजो के बल भीड से बाहर निकल आया।

रुस्तम को लगा जैसे उसके पैर पत्थर के हो गये हैं, जमीन मे गहरे जा रहे हैं, जब कि तेल्ली चाची काली चील की तरह उस पर टूटकर का कधा दबोचकर चिल्लायी

"मैने कहा था या नही—इस नीच से बचकर रहना?!"

"अरे, शर्माओ मत, आओ, आगे आओ", अमलान ने वितृष्णापूर्वक ा, "अपना दोष स्वीकार करो। तुमने हमसे जिला समिति मे क्या कहा ?"

यारमामेद ने बडी मुश्किल से थूक सटका और थर-थर कांपते, हकलाते अपनी राय मे अपनी चमत्कारी सफाई दोहराने लगा

"मेरे मेहरबान, हर आदमी मे कुछ कमियां होती है कुछ शराब शौकीन होते हैं, कुछ ताश के और कुछ के होठो से सिगरेट अलग होती नही... और मुझसे अनाम प्रार्थना-पत्र गढ़े बगैर नही रहा जाता। त स्वभाव ही ऐसा है! . "

"अरे, कुत्ते!" रुस्तम गरजा और कुरसी उलटकर, लपककर उसने नो हाथो मे यारमामेद का गला दबोच लिया। यारमामेद शेर के मुह मे र खरगोश की तरह किकिया उठा और उसका दम निकलते-निकलते बचा।

आस-पास खडे लोगो ने बडी मुश्किल से चुगलखोर को रुस्तम के हाथो छुड़ाया,—यारमामेद के दांत बजने लगे, वह शिथिल हो गया और सा भरे बोरे जैसा हो गया।

नजफ ने, उसकी पत्नी ने उसे कितनी ही क्यो न रोका, भागकर यार-

"श-श! .." और सलमान की ओर मुड़ा। "और आपके ख्याल में उन्हें किसने लिखा है?"

"मैं कोई पक्की बात नहीं कह सकता," सलमान हकलाता और आख उठाते डरता हुआ बुदबुदाया और उसने अपनी कांपती उंगलियों से बाकी मूंछों को ठीक किया।

"अच्छा, अच्छा!" असलान उठ खड़ा हुआ और कठोर स्वर में बोलता रहा: "अनाम पत्र लिखनेवाला खुद जनता के सामने इसे स्वीकार करे।"

सब स्तब्ध रह गये: पत्तों में मच्छर के भिनभिनाने की आवाज भी गूंजती सुनाई देने लगी।

"मैं, मैं, मेरे मेहरबान!" और यारमामेद अपनी पतली, तमदार गर्दन निकालकर पंजों के बल भीड़ से बाहर निकल आया।

रुस्तम को लगा जैसे उसके पैर पत्थर के हो गये हैं, जमीन में गहरे धंसे जा रहे हैं, जब कि तेल्ली चाची काली चील की तरह उस पर टूटकर उसका कंधा दबोचकर चिल्लायी

"मैंने कहा था या नहीं—इस नीच से बचकर रहना?!"

"अरे, शर्माओ मत, आओ, आगे आओ", असलान ने वितृष्णापूर्वक कहा, "अपना दोष स्वीकार करो। तुमने हमसे जिला समिति में क्या कहा था?"

यारमामेद ने बड़ी मुश्किल से थूक गटका और थर-थर कांपते, हकलाते हुए अपनी राय में अपनी चमत्कारी सफाई दोहराने लगा।

"मेरे मेहरबान, हर आदमी में कुछ कमियां होती हैं कुछ शराब के शौकीन होते हैं, कुछ ताश के और कुछ के होंठों से सिगरेट अलग होती ही नहीं... और मुझसे अनाम प्रार्थना-पत्र गढ़े बगैर नहीं रहा जाता। मेरा स्वभाव ही ऐसा है! .."

"अरे, कुत्ते!" रुस्तम गरजा और कुरसी उलटकर, लपककर उसने दोनों हाथों से यारमामेद का गला दबोच लिया। यारमामेद शेर के मुंह में फंसे खरगोश की तरह किंकिया उठा और उसका दम निकलते-निकलते बचा।

आस-पास खड़े लोगों ने बड़ी मुश्किल से चुगलखोर को रुस्तम के हाथों से छुड़ाया,—यारमामेद के दांत बजने लगे, वह शिथिल हो गया और भूसा भरे बोरे जैसा हो गया।

नजफ ने, उसकी पत्नी ने उसे कितनी ही क्यों न रोका, भागकर यार-

"अच्छा, अच्छा," मगनान ने निश्चिन्त भाव से कहा और मुड़ [illegible]
शहिन [illegible] का जैसा कि स्पष्ट था, लोगों का ध्यान मानो [illegible]
आकर्षित करने की इच्छा हो रही थी, और वह बड़ी बेतकल्लुफी से बोल
उठा

"कामरेड मगनान, आप तो प्रबन्ध समिति और व्यक्तिगत तौर पर
रुस्तम काकी को अनाम पत्रों की लिखनेवाले के बारे में सूचित करनेवाले थे।"

यह कहना कठिन था कि कलनर-लैनेश को अनाम पत्रों की बात उसी
दिन छेड़ने की क्या सूझी। या तो उसने मारमामेद को दूध में मक्खी की तरह
निकाल फेंकने की सोच ली थी, या वह उसे और बुरी तरह डराकर पूरी
तरह अपना दास बना लेना चाहता था।

अमलान के चेहरे पर चिन्ता की रेखा झलकी, उसने शोभानखा व
शगाफोगल् से नज़रें मिलायीं। कैसा बेशऊर आदमी है यह कलार!
बातचीत फसल के बारे में हो रही है, अवितरित निधि के बारे में भी
विचार-विमर्श करना जरूरी है। और वृद्ध का यह कहना कि 'नवजीवन'
में आत्मालोचना का नाम-निशान भी नहीं है, कितनी चिन्ताजनक और
अप्रिय बात है। उसने दो शब्दों में यह बात कह दी, पर स्पष्ट है कि
वह बहुत दिनों से कहना चाहता था, हिचकिचा रहा था, हिम्मत जुटा
रहा था, अपने दोस्तों से सलाह कर रहा था।

सामूहिक किसान उचक उठे, शोर मचाने लगे, जबकि रुस्तम का
चेहरा ऐसा लाल हो उठा, मानो उस पर किसी ने चेरी का रस मल दिया
हो।

"तुम्हारे खयाल से हम पर अनाम पत्रों की बौछार कौन कर सकता
है?" सचिव ने रुस्तम को सम्बोधित किया।

वह बिना सोचे-विचारे कह उठा

"तेल्ली चाची और उसका बेटा!" उसने पोपलर के पास खड़े शेरजाद
पर नजर डाली और एकाएक चुप हो गया, पर गुस्से में आगे
"और उनके अलावा कुछ और दिल के काले आदमी.."
में से तेल्ली चाची की कर्णभेदी चीख गूंज उठी.

अच्छा हो मुझे जल्दी से जल्दी कब्र में दफना दो! क्या यहां मेरा
[illegible]

"श-श! .." और सलमान की ओर मुड़ा। "और आपके खयाल में उन्हें किसने लिखा है?"

"मैं कोई पक्की बात नहीं कह सकता," सलमान हकलाता और आखें उठाते डरता हुआ बुदबुदाया और उसने अपनी कांपती उगलियों से बाकी मूछों को ठीक किया।

"अच्छा, अच्छा!" असलान उठ खड़ा हुआ और कठोर स्वर में बोलता रहा: "अनाम पत्र लिखनेवाला खुद जनता के सामने इसे स्वीकार करे।"

सब स्तब्ध रह गये. पत्तों में मच्छर के भिनभिनाने की आवाज भी गूंजती सुनाई देने लगी।

"मैं, मैं, मेरे मेहरबान!" और यारमामेद अपनी पतली, नमदार गर्दन निकालकर पजों के बल भीड़ से बाहर निकल आया।

रुस्तम को लगा जैसे उसके पैर पत्थर के हो गये हैं, जमीन में गहरे धसे जा रहे हैं, जब कि तेल्ली चाची काली चील की तरह उस पर टूटकर उसका कधा दबोचकर चिल्लायी

"मैंने कहा था या नहीं—इस नीच से बचकर रहना?!"

"अरे, शर्माओ मत, आओ, आगे आओ", असलान ने वितृष्णापूर्वक कहा, "अपना दोष स्वीकार करो। तुमने इससे ज़िला समिति में क्या कहा था?"

यारमामेद ने बड़ी मुश्किल से थूक गटका और थर-थर कांपते, हकलाते हुए अपनी राय से अपनी चमत्कारी सफाई दोहराने लगा

"मेरे मेहरबान, हर आदमी में कुछ कमियां होती हैं कुछ शराब के शौकीन होते हैं, कुछ ताश के और कुछ के होंठों से सिगरेट अलग होती ही नहीं... और मुझसे अनाम प्रार्थना-पत्र गढ़े बगैर नहीं रहा जाता। मेरा स्वभाव ही ऐसा है! .."

"अरे, कुत्ते!" रुस्तम गरजा और कुरसी उलटकर, लपककर उसने दोनों हाथों से यारमामेद का गला दबोच लिया। यारमामेद शेर के मुह में फसे खरगोश की तरह चिचिया उठा और उसका दम निकलते-निकलते बचा।

आस-पास खड़े लोगों ने बड़ी मुश्किल से चुगलखोर को रुस्तम के हाथों से छुड़ाया,—यारमामेद के दांत बजने लगे, वह शिथिल हो गया और भूसा भरे बोरे जैसा हो गया।

नजफ ने, उसकी पत्नी ने उसे कितनी ही क्यों न रोका, भागकर यार-

हम इसके हाथों को सज़ा दे देंगे, इसको फटकार देंगे, शर्मिंदा करेंगे, पर इसे सामूहिक फार्म से निकालना ज़रा जल्दबाजी होगी। यह हद हो जायेगी, कामरेडो, हद हो जायेगी! हमें लोगों को शिक्षित करना चाहिए, पर आप लोग फ़ौरन इस पर मुकदमा चलाने की बात करते है नहीं, नहीं, कामरेडो, कर्मचारियों के साथ हमें मेहनत करनी चाहिए, मान-ममतावश धीरज से काम लेना चाहिए।"

"तुम्हारा, लेलेश, क्या यह ख़याल है कि इसे लेखाकार बनाये रखना चाहिए?" विस्मित रुस्तम ने पूछा।

"लेखाकार क्यों?" कलतर ने अपनी श्रेष्ठता की अनुभूति से कंधे उचकाये। "इसे कोई मामूली काम सौंप देना चाहिए, इस पर नज़र रखनी चाहिए और सख्त निगरानी ."

रुस्तम के लिए असलान का व्यवहार पहेली बना रहा जिला समिति का सचिव एक बार भी ऊंची आवाज़ से नहीं बोला, नरमाई से बोलता रहा... बड़ा अच्छा आदमी मिला है इसे लिहाज़ करने का! अगर यारमामेद को नदी में न डुबाया जाये, तो कम-से-कम पैरों तले तो रौंदना चाहिए ही। उसने ऐसे नीच को अपना करीबी बनाया, उस पर कृपा की हर तरह से खुश रखा। उसे अपने सफेद बालों पर राख लगा लेनी चाहिए, शर्म के मारे स्तेपी में भाग जाना चाहिए! लेकिन रुस्तम को और भी अधिक आश्चर्य तब हुआ, जब असलान ने कलतर के यारमामेद को कठोर काम दिये जाने पर सामूहिक फार्म में रखने के सुझाव को मान लिया।

"पर तुम खुद काम करना चाहते हो? असलान ने पूछा।

कितनी आश्चर्य की बात है! वह इस नीच चुगलखोर की इच्छाओं का भी ख़याल रखता है! रुस्तम का खून खौल रहा था। क्यों नहीं, अगर बेनाम पत्र खुद असलान के बारे में होते, तो यह दूसरे ही ढंग से बात करता। अभी तो यह अलग खड़ा देखता रहना चाहता है वाह रे, नरमदिल सचिव, जल्दी ठण्डा हो जानेवाले,—अगले चुनावों में इसका पत्ता ज़रूर ही काट दिया जायेगा।

"अगर आदरणीय चाचा इजाज़त दें," यारमामेद सकुचाता हुआ बुदबुदाया, "तो मैं पशुपालन फार्म पर काम करने चला जाऊं।"

रुस्तम ने थूक दिया।

"मैं तेरा कोई चाचा-वाचा नहीं रहा। तुझे मरते दम तक माफ़ नहीं करूंगा कि मैंने तुझ पर इतना विश्वास किया, इतनी मेहरबानी की।"

"हमें किसी भी आदमी को बिलकुल गिरा हुआ नहीं समझ लेना चाहिए, यारमामेद को भी आजमायेंगे, उसके साथ सख्ती बरतेंगे, हमेशा उस पर नजर रखेंगे।"

मोटर के पास खड़े-खड़े असलान ने पूछा कि कलतर किधर जा रहा है। मालूम पड़ा कि कलतर-लेलेश का इरादा रात को एक पशुपालन फार्म में दूसरे में जाकर सामूहिक किसानों को निश्चित समय से पहले ऊन सरकार को देने के लिए तैयार करना है।

"हम रात को केन्द्रीय खेत-कैम्प में सोयेंगे," असलान ने कहा।

जैसे ही मोटर रवाना हुई, कलतर ने आत्मसन्तोष से मुस्कराकर चौडी मेंटी में कमी तोंद पर हाथ फेरा और घृणापूर्वक रुस्तम व सलमान से बोला

"मैंने देखा, तुम लोग तो बिलकुल ही घबरा गये थे मर्द कहलाते हो! अगर मैं न बचाता, तो बुरी तरह बेइज्जती होती। इसकी कीमत समझना!"

"हा, कामरेड असलान ने हद कर दी!" सलमान कह उठा। "हमें दिन-भर दौडाते रहे: जहा भी गये, हर जगह उन्हे सिर्फ कमिया ही नजर आयी।"

"शर्म आनी चाहिए!" रुस्तम गरजा और कलतर से विदा लिये बिना अपने घर रवाना हो गया।

उस समय कच्ची सड़क पर धूल उडाती जा रही ज़िला समिति की मोटर में जोरदार बहस चल रही थी शराफ़ोगलू और गोशातखा असलान को असम्य दयालुता के लिए उलाहने दे रहे थे, वे भविष्यवाणी कर रहे थे कि उसे यारमामेद के साथ इतनी नरमाई से पेश आने के कारण आगे पछताना पड़ेगा।

"ठहरिये, कामरेडो, ठहरिये," उसने मित्रों को शान्त किया। "मेरे खयाल से यारमामेद ने चुराये गये बीजों के बारे में सच लिखा था। लेकिन उन्हें चुराया किसने था? न तो उसने और रुस्तम की तो बात ही छोड़िये! इसीलिए मैं सोचता हू कि हमें चौकन्ना रहना चाहिए, उस पर, गूगे हुसैन पर और खास तौर से सलमान पर नज़र रखनी चाहिए।"

कलतर-लेलेश शाम के खाने पर सलमान के यहा गया और रात को वहीं रुका। उसे वास्तव में रात को रास्तों में हचकोले खाने और स्तेपी की धूल फाकने की आखिर क्या जरूरत थी ..

६

गवीला की भविष्यवाणी सच नहीं निकली। नजनाज ने गराश
नहीं छोड़ा। यह सच है कि उसने कलतर को लुभाने की कोशिश को
ठुकराया नहीं, लेकिन वह दो पुरुषों को कैसे काबू में रख पा रही थी,
यह बात तेज नजरवाली अक्लमन्द तेल्ली चाची की भी समझ में नहीं आती
निस्सन्देह महत्वाकांक्षी नजनाज ने सोच लिया कि जिला कार्यकारिणी
समिति के अध्यक्ष की पत्नी बनना साधारण ट्रैक्टर-चालक से शादी करने
में कहीं ज्यादा फायदेमन्द होगा, और एक बार उसने कलतर को इशारा
भी किया था कि अब उन्हें अपने सम्बन्धों को कानूनी जामा पहना देना
चाहिए।

"जानम, जल्दबाजी मत करो, दो-तीन महीने में तुम्हारे लिए दूल्हा
ढूँढ दूंगा, जिसके मैं पैर की धूल के भी बराबर नहीं हूं। मैं खुद तुम्हारी
शादी करवाऊंगा।"

नजनाज ने कलतर को पाने की आशा न रहने पर अपनी सारी शक्ति
गराश पर लगा दी, वह उसकी सारी इच्छाएँ संकेत मात्र से समझ जाती
थी, उसके पैरों में सिर रखती रहती थी। खेत-कैम्प जाते समय वह अपने
साथ अत्यन्त स्वादिष्ट व्यंजन ले जाती थी, उसकी खातिरदारी करती थी
और उसकी ईर्ष्या का शमन करती थी कलतर बुड्ढा है, तोंदल है और
उसके बाप की उम्र का है।

वह कल्पना किया करती थी कि गराश से शादी करके वह कैसे उसके
पिता की नीली कार में बैठेगी, कैसे वे दोनों बाकू जाकर 'इन्टूरिस्ट' होटल
में बाथरूमवाले कमरे में ठहरेंगे। वे दिन में हर दुकान में झांकते हुए
छायादार चौड़ी सड़कों पर घूमेंगे, शाम को उनके सम्मान में दिये प्रीति-
भोजों और थियेटरों में जाया करेंगे। हर जगह सुखी वर-वधू के पीछे-पीछे
नीली 'पोबेदा' कार चलेगी, जाहिर है ड्राइवर रख लिया जायेगा, और
नहीं तो क्या   इधर कार ओपेरा थियेटर के बाहर रुकेगी। कायदे के अनुसार
पहले गराश प्रिय पत्नी को गाड़ी से उतरते समय सहारा देगा, जबकि
नजनाज नायाब की मखमली पोशाक, नाइलोन की झीनी जुराबें पहने
सुनहरी कानों में हीरे जड़े कर्णफूल पहने, सुन्दर पति के हाथ में हाथ डाले
हॉल पार करेगी, सब उसकी तरफ देख रहे होंगे.. नजनाज को लोग
प्रोफेसर की पत्नी समझेंगे। महँगी इत्र के मारे पागल हो जायेंगे। वह

दुआ-सलाम तक नहीं करेगी। सच पूछिये, यदि चाहेगी—सिर झुकायेगी, चाहेगी—मुह फेर लेगी...

यह मालूम होने पर कि माय्या जैनब के यहां रहने चली गयी है, नाज को अपनी आशाएं पूर्ण होने का पूरा विश्वास हो गया। यहां तक जब पड़ोसिनों ने उसे बताया कि सकीना ने बहू को नहीं त्यागा है और से मिलने गयी है, नजनाज केवल मुस्करा दी "दिल छोटा मत करो, री सास, मैं पीछे नहीं रहनेवाली उस सूखी शहरी लड़की के अपनी बेदरजनी करती रहो, पर अराश मेरी आगोश से नहीं निकल सका।"

घर मे खूब खुशिया मनायी गयी, जब सलमान ने बताया कि रुस्तम अगूठा भिजवाने की इजाजत दे दी है। उसने गुप्त स्थान से पैसा निकालकर बहन को तोहफे खरीदने शहर भेज दिया। नजनाज की आखें हिरे की भाति जैसी चमक उठी . अब वह सकीना के गले में दुहेरी जजीर ल देगी, उसका एक छोर उसके भाई के हाथ में होगा और दूसरा खुद सके हाथ में। सास ने जरा भी चू की और वे कुत्ते के पट्टे से बुढ़िया ा गला घोंट देंगे। देख लेना! ..

उसने सलमान के दिये हुए पैसों से एक अगूठी, एक हार, कर्णफूल रीदे और कुछ अपनी जेब मे भी डाल लिये।

"अध्यक्ष की बेटी ऐसे तोहफे देखकर पागल हो जायेगी। अगूठी कौ ब भेजें?"

सलमान ने अपनी उगलियो से कीमती चीजो को टटोलते हुए कहा

"जल्दबाजी मत करो। रुस्तम बूढ़ा घोड़ा है और अड़ियल भी। न जाने कब काठी से गिरा दे। उस पर गम जरा हावी हो जाने दो, वह देख ले कि हमारे लिए उससे रिश्ता कायम करना कोई बहुत इज्जत की बात नहीं है, फिर खुद ही दिन तय करेगा. "

जब यारमामेद का भण्डाफोड़ किया गया था, तो सलमान बुरी तरह घबरा गया था। उसने बहन को सारा सामान बाधकर चलने की तैयारी करने को कह दिया था। नजनाज की समझ में कुछ नहीं आ रहा था कि ऐसी जल्दबाजी का कारण है क्या। जब कि उसका भाई यारमामेद की सात पीढ़ियों को कोसता हुआ लाचार गुस्से मे घर में फड़फड़ाता चहलकदमी कर रहा था।

सामूहिक फ़ार्म के जाने-माने अध्यक्ष, कम्युनिस्ट रुस्तम की आड़ में और डिप्टी कलक्टर का सहारा लेकर वे खतरे से साफ़ बच जायेंगे

"मैं इसी वक्त रुस्तम के घर मिलने जाती हूं," उसने कहा।

सलमान ने माथा पकड़ लिया और फुफकारा

"चुप रहो! रुस्तम के कानों में अफ़वाहें पड़ चुकी हैं, वह मुझे धमकी दे चुका है: 'अपनी बहन को काबू में रखो'!"

"तुम्हें मेरी तरफ़दारी करनी चाहिए थी, कहना चाहिए था ये बिलकुल ओछी, गंदी अफ़वाहें हैं! सिर्फ़ हमारे गांव जैसी जंगली जगह में ही ऐसी नीच झूठी अफ़वाहें उड़ायी जा सकती हैं। कलक्टर-नेतेश से जाकर शिकायत करो, वह मेरी बेइज़्ज़ती नहीं होने देगा।"

"चु ऽऽ प रहो ऽऽ!" सलमान चिल्लाया। "या तो उससे तलाक़ की नौबत ला दो, या यहां से अपने अस्पताल चली जाओ!"

भीषण हताशा के कारण वह तख्त पर गिरकर लेट गया।

नज़नाज़ समझ गयी कि उसे जल्दी करनी चाहिए। वह अगले पूरे दिन कहीं न कहीं गराश से मिलने की आशा में सामूहिक फ़ार्म में भटकती रही। अन्त में निराश होकर उसने एक मुर्गी पकाई, रोटी बनाई, हरी सलाद तैयार की और उसे सफ़ाई से अपने लाल कासवाले प्रथम उपचार बैग में रख लिया, फिर कुछ सोचकर कोनक की एक नयी बोतल भी उसमें ठूंस ली।

जब सजी-धजी, पाउडर थोपने से गाल नीले-से किये, इत्र की भीनी खुशबू फैलाती नज़नाज़ चौराहे पर पहुंची तो अंधेरा हो आया था। उसने सामने से आते ट्रक को रोका।

"तुम्हारे बलायें मेरे सिर! मुझे ज़रा गराश के पास छोड़ दो सुना है, किसी ट्रैक्टर-चालक का हाथ मशीन में आ गया ..."

बैग पर बना बड़ा-सा लाल क्रास देखकर चालक को विश्वास हो गया और उसने नर्स को सीधे खेत पर पहुंचा दिया।

गराश कम्बाइन पर काम कर रहा था,—उसने आज कोटे का दोगुना काम करने की क़सम खायी थी। उसने चिढ़कर मेड़ पर खड़ी नज़नाज़ को देखा, ग़ुस्सा-और मिसोड़ी, पर फिर भी स्टियरिंग व्हील अपने सहायक को देकर नीचे कूद गया। स्तेपी का विशाल जहाज़ आगे चला गया।

"क्या कुछ हो गया है? क्यों आयी हो?" उसने रुखाई से पूछा।

नजनाज का उनका मन खिल उठा; उसने मन्द मुस्कान के साथ
भ गयी।

"अभी खाया हुआ बता।" गराश ने कहा।

"थैंक्स, मेरा यहां रात गुजारने का इरादा नहीं है," नजनाज
ने उसका मुंह चूम लिया। "पांच मिनट तो बैठ सकते हो न?"

गराश ने दूर जा पहुंची और अंधेरे में लगभग नजर नहीं आ पा रही
कम्पाउन्ड की तरफ चिन्तातुर दृष्टि डाली। शायद भरोसेमंद लड़का है,
मेहनती है, उसे स्वतन्त्र रूप से काम करने की आदत डालनी चाहिए। और
वह ठण्डी सांस लेता मेज की तरफ बढ़ा, जब कि नजनाज वहां नाती के
ऊपर झुके बेद-मजनू पेड़ के तले काम में जुटी हुई थी, अखबार पर खाना रख
रही थी, फिर उसने बोतल भी रख दी।

"घबराओ मत, कोई नहीं देखेगा, अंधेरा है!" उसने मजाक में
आवाज दी और कानक का लबालब भरा प्याला गराश की तरफ बढ़ाया।

भुनी हुई मुर्गी की खुशबू सूंघ कर गराश ने महसूस किया कि उस
बहुत तेज भूख लगी है। नशीला पेय पीने से उसने साफ इनकार कर दिया
उसे सारी रात काम करना है, सिर चकरा जायेगा नजनाज ने बहस
नहीं की, मनुहार नहीं की, हाथ से मुर्गी के टुकड़े कर-करके सबसे चर्बीदार
टुकड़े उसे देती हुई शिकायत करती रही

"गली में निकलते शर्म आती है। तुम यह काम खतम करो, मैं विनती
करती हूं, मैं चैन की जिन्दगी के लिए तड़प रही हूं।"

"कौन-सा काम?"

नजनाज ने जवाब देने के बजाय उसे चूम लिया। गराश को अपने
रे बदन में सिहरन महसूस हुई, फिर भी उसने उसे धकेल दिया।

"मैं तुम्हारे बिना नहीं जी सकती। तुमने मुझे बदनाम करा दिया,
इज्जत मिट्टी में मिल गयी। अब मैं कहां जाऊं—ऐसी हालत में? जल्दी
तलाक ले लो, हम शादी की रजिस्ट्री करवा लेंगे, घर बसा लेंगे,"
ज गराश का आलिंगन करती हुई फुसफुसायी।

गराश में पिता से विरासत मिला अनम्य स्वभाव जाग उठा। नजनाज
की बांहों से निकलकर युवक चिल्लाया

"दफा हो जाओ यहां से!"

और वह उससे दूर हो गया।

गुस्से से पागल हुई नजनाज ने उसका पीछा करके उसकी आस्तीन

वह ली और बार-बार यही दोहराने लगी, मानो उस पर भूत सवार हो गया हो।

"अपनी जान ले लूंगी और तुम्हें भी मार डालूंगी, याद रखना "

"पिण्ड छोड़ो मेरा!"

"अच्छा, यह बात है!" नज़नाज़ ने उसके थप्पड़ जड़ने के लिए हाथ उठाया, पर गराश ने पीछे हटकर उसके हाथ इतने ज़ोर से दबाये कि वह घुटनों के बल गिर पड़ी।

"हाय, मार डाला, बचाओ!" नज़नाज़ धूल में लोटती और नाखूनों से अपने गाल खरोंचती चीख उठी, लेकिन गराश सिर पर पैर रखे कम्पाउन्ड की तरफ़ भाग लिया था।

हृदयविदारक चीखें सुनकर कच्चे रास्ते से खेत से घर लौटती लड़कियां भागी हुई आ पहुंची

सारी रात गांव में ताज़ा अफ़वाहें उड़ती रही

१०

रुस्तम अपनी मनपसन्द खाने की चीज़ शक्कर-से मीठे रसदार तरबूज का रसास्वादन कर रहा था, दिसम्बर में भी, जब गुमानवासी उसका स्वाद भूल चुके होते थे, रुस्तम की मेज़ पर कभी-कभी खास तरीके से रक्षित रखा हुआ, सीधा खेत-से तोड़कर लाया हुआ-सा ताज़ा तरबूज दिखाई दे जाता था।

विशाल तरबूज आधा रह गया था, रुस्तम ने बुद्धिमत्तापूर्वक खाना बंद कर सुस्ताने का फैसला किया।

"बेटी!" उसने बरामदे की रेलिंग पर झुककर आवाज़ दी। "अपने भाइयों को बुलाकर तरबूज चखने को कहो ."

परेशान गिज़ेतार व नजफ़ के साथ आंगन में हम्माम का बाकी बचा हिस्सा बना रहे थे। पिछले कुछ दिनों में गृहस्वामी के साथ इतनी अप्रिय घटनाएं घटी थीं, उसे इतनी परेशानियां उठानी पड़ी थीं कि वह गांव में नया हम्माम बनाने के अपने वादे के बारे में भूल गया था और अब जब बेटी ने मित्रों की मदद करने के लिए बुला लिया था, तो उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह खुश हो या बड़बड़ाये

"अभी आयी, अब्बा, ठहरो!"

"ऐ, बीवी, बिनबुलाये मेहमान का स्वागत करोगी ?"
परेशान ने अपना सिर पकड लिया
"मैं इस घमण्डी बौने को देख भी नहीं सकती। चलो, बगीचे में चले हैं।"
युवा चलने बने।
रुस्तम को कलतर को देखकर लगा जैसे उस पर खौलता पानी डाल या गया हो। सकीना भी उदास हो गयी वह कलतर-बेलेश से कभी मिले ी आशा नहीं करती थी। वह किस लालच से यहां आया है ?
फिर भी गृहस्थ चुप रहे। मेहमान से यह नहीं कहा जा सकता, चले जाओ! " न चाहते हुए भी दिल थामकर उसका शिष्टतापूर्वक ागत करना होता है. .
मर्जीले, आडम्बरपूर्ण कलतर के पीछे-पीछे बरामदे में दो मर्द और दो रतें आयीं। उनमें से एक, मोटी व ऊंचे कद की, अतलस के झालरदार लपोश से ढका थाल उठाये हुए थी।
गृहस्वामी और गृहस्वामिनी ने एक दूसरे से नजरें मिलायीं अगए ये हैं ..
थाल को विधिवत् मेज़ के बीच में रख दिया गया, मेहमान उसके रों ओर बैठ गये और थोड़ी देर चुप रहे। अन्त में ऊंचे कद की मोटी रत बोली·
"अरे, चचा! बेटी अखरोट के पेड़ की तरह होती है हर राह चलता की तरफ डाहभरी नजरों से देखता है, जबकि अखरोट मालिक को ाते हैं। आपको अपनी बेटी प्यारी है—आपका खज़ाना है, पर हमारे ों का कहना है कि बेटी बाप के घर में मेहमान होती है। देर-सवेर का पति उसे अपने घर ले जाता है। मां-बाप का फ़र्ज़ सभी को मालूम बस गलती न करे, लड़की की शादी अच्छे और लायक आदमी से ।..."
"हां, अच्छे आदमी से ही करे।" अगुआ औरत को लम्बी नाक व टे होंठोंवाले मर्द ने टोक दिया। "सबसे अहम बात है कि आदमी दिल कैसा है... भला मैं मिसाल के तौर पर, अपनी खूबसूरती से अपनी री को लुभा सकता था? लेकिन वह मुझे समझ गयी, उसे मेरे स्वभाव प्यार हो गया और कभी नहीं पछताती "
अगुआ औरत ने फ़ौरन हां में हां मिलायी·

उसी समय पेरशान ने आकर मेहमानों को सलाम किया, इजाजत मिलने
का इंतजार किये बिना थाल पर से थालपोश उठाकर खोनचा* पर सरसरी
नज़र डाली, पर उसने मिठाइयों को नहीं छुआ, बल्कि अंगूठी व मोतियों
के हार में दिलचस्पी दिखाई।

"अहा, कितने सुन्दर हैं! और महंगे भी होंगे, क्यों? मुझे कबूल
है!"

अगुए खुश होकर बोल उठे, फलतर ने राहत की सांस ली और रिवाज
के अनुसार किंकर्तव्यविमूढ़ बेटीवालों से जल्दी से मीठी चाय पिलाने की
फरमाइश की।

"ठहरिये, ठहरिये!" पेरशान अचानक नखरीले अंदाज में चिल्लायी।
"लेकिन सबसे जरूरी आदमी तो यहां मौजूद ही नहीं है!" और वह पूरे
ज़ोर से चिल्लायी "सलमान, सलमान, यहां आओ!"

रुस्तम को अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हुआ। कहीं खुशी के मारे
पागल तो नहीं हो गयी है? लेकिन उसकी बेटी अविश्वासपूर्ण ढंग से
मुस्कराते युवक का प्यार से कुछ कहती बरामदे में खींच कर ला रही थी।

"उफ़, कितने खूबसूरत हो तुम, मेरे दूल्हे! " और उसने चाकू से
छीलने किये हुए तरबूज के छिलके को उठाकर पूरे ज़ोर से सलमान के
सर पर रख दिया। "तुम्हारे लिए मेरा शादी का तोहफ़ा है! शाह का
ताज! अब याद रखोगे कि लड़की की मर्ज़ी के बिना अगुआ भिजवाने
का क्या नतीजा होता है!"

सलमान के चेहरे और गरदन पर से तरबूज के रस की धारें बह
निकलीं, उसकी बूंदें उसकी सफ़ेद-झक कमीज़ के कॉलर के अन्दर भी चली
गयीं, वह ऐसे थरथर कांपने लगा, जैसे उसके अगल-बगल बिजली गिर रही हो,
और वह इतना हास्यास्पद लगा कि मिर्ज़ेकार व पेरशान खिलखिलाकर
हंसीं और उन्हें देखकर अगुए और मेज़बान भी हंसने लगे, यहां
तक कि गम्भीर मुखमुद्रा में भी हल्का-सा ठहाका लगाये बिना
रहा।

ताती रही थी। लेकिन ठण्डे, प्रेम व स्नेह से वंचित, बार-बार हवा
ने-जानेवाले घर में भी तो माय्या नहीं रह सकती थी।

"बहन, तुम फिर अपने आप से बातें कर रही हो! किसलिए!"
थ में भूगोल की पाठ्य-पुस्तक लिए कमरे में भागकर पहुंचा रहीम कह
ठा।

खिड़कियां खुली हुई थीं, गोशाला में गाय दुह रही जैनब ने सारी बात
ती और बेटे पर चिल्लायी:

"माय्या के पीछे मत पड़ो, उसे परेशान मत करो! बेहतर होगा
छ सेब ही तोड़ लो।"

कहने की देर थी कि आदेश का पालन कर दिया गया एक मिनट
ाद ही माय्या के सामने सेबों से भरी प्लेट रख दी गयी। वे विचित्र
गों में रंगी चीनी मिट्टी की प्यालियों जैसे लग रहे थे। रहीम शाबाशी
मिलने का इन्तज़ार कर रहा था। माय्या ने साहस करके, खट्टे रस के कारण
ुंह न बनाने की कोशिश करते हुए सेब चखा और बोली

"कितना रसदार है!"

बालक का चेहरा खिल उठा, वह खुशी के मारे उछल भी पड़ा।

"मैंने खुद पैवंद लगाया था, जब मैं चौथी कक्षा में पढ़ता था।
सचमुच बहुत बढ़िया है न?"

"हां, खूब रसदार हैं। तुम क्या बनना चाहते हो?"

"सच्ची बात कहूं?"

"और क्या? सच्ची बात ही कहनी चाहिए।"

"तुम हंसोगी तो नहीं न?"

"अरे, तुम भी क्या!" रहीम माय्या को अच्छा लगता था। वह
होशियार, फुरतीला था और मां को प्यार करता था। "काश, मेरे भी
ऐसा ही बेटा हो!" वह आंखों में रात काटती हुई सोचा करती थी।

"मैं भी तुम्हारी तरह जल-इंजीनियर बनूंगा," लड़के ने फुसफुसाकर
कहा। "मां अक्सर ज़मीन में नमक बढ़ने की शिकायत करती रहती थीं
नमक के कारण कभी पौधे मुरझा जाते थे, तो कभी बाग़ में सेब के पेड़।
और तुम लवणकच्छों से नहीं डरती हो! तुमने उन पर विजय पा ली!
और मैं सिर्फ सामूहिक फार्म की ज़मीन को ही नहीं, सारी मुग़ान को नमक

"हमें अभी यह पढ़ाया नहीं गया है   " रहीम शर्मा गया।

माय्या ने तुरन्त उसकी मदद कर दी.

"तलीश की तराई में फैली सारी मुग़ान का क्षेत्रफल सात लाख हेक्टेयर है, उसमें से छ. लाख हेक्टेयर हमारे क्षेत्र में है और एक लाख हेक्टेयर – दक्षिणी आज़रबैजान में।"

कारा केरेमोग़लू की आँखें उत्साह से खिल उठीं वह ये आँकड़े बचपन से जानता था, पर अपनी जानकारी के बारे में किसी को नहीं बताता था।

"उफ़ कितना असीम क्षेत्र है! नंगी आँख से पूरा नज़र भी नहीं आये, घोड़े पर पार करने की कोशिश की जाये, तो बेचारे कदमबाज़ के सुम घिस जायें!   पर तुम लोगों को पता है, मुग़ान की ज़मीन पके बालों-सी सफ़ेद क्यों है? वह नमक से कैसे ढक गयी, इस बारे में एक दंत-कथा है, और वह दंत-कथा भी लोगों ने रची है. "

रहीम ख़ुशी के मारे उछल पड़ा।

"कारा चाचा, सुनाओ, सुनाओ! मां, माय्या बहन, आप भी सुनिये!"

कारा केरेमोग़लू ने सफ़ेद-झक मेज़पोश में उलझी जेनब को ज़बरदस्ती बिठा दिया और माय्या को इशारे से बैठने को कहकर ठण्डी सांस ली:

"आज मेरा दिल ख़ुश है.   ठीक है, यही सही, तुम लोगों को एक हज़ार साल, शायद एक लाख बरस पहले रची गयी दंत-कथा सुनाता हूँ।" उसने आँखें आधी मूंद, स्वप्निल ढंग से मुस्कराते हुए सुनाना शुरू किया."बहुत पुराने ज़माने में यहां अग्वान क़बीला रहता था, वे बहादुर, नेक और ईमानदार लोग थे। क़बीले के सरदार की बेटी सयानी हुई, उसका नाम मुग़ाम था सारी दुनिया में कोई अक्लमंदी और ख़ूबसूरती में उसका मुक़ाबला नहीं कर सकता था। अग्वान क़बीले में कुल मिलाकर थीं तो एक लाख लड़कियां, पर उनमें से एक भी मुग़ाम के जोड़ की नहीं थी। क़बीले में एक लाख लड़के थे, बहादुर योद्धा, एक से एक बढ़कर सुन्दर और साहसी.. लड़कियां एक लाख नौजवानों में से किसी को भी आंख उठाकर देखते डरती थीं, नौजवानों की शौर्यपूर्ण व गर्वीली सुन्दरता पागल

मीन पाले की तरह ढक गयी। शोकाकुल मुगाम के आंसुओं की धारें पी में बह निकलीं, कड़वा नमक जमीन सोख गयी, धारें नदियों में रकर प्यारे मुलास की खोज में समुद्र की ओर बहने लगीं लेकिन मुलाम टकर नहीं आया। दूर-दूर के देशों से आनेवाले कारवां यहां से गुजरे पर टवान रेगिस्तान में बिखरे हुए स्त्री के सफेद बाल देखकर डर गये और न्होंने अपने ऊंटों को वापस मोड़ लिया। गरम देशों से उत्तर की ओर लौट हे पक्षियों के झुण्ड भी यहां आये, पर प्यास के मारे फटी किसी सुन्दरी होंठों-सी जमीन को देखकर दुखी मन वापस उड़ गये। अन्त में यहां क बूढ़ा शायर आया। वह अभागिन के जलकर राख हुए प्यार और प्यास कारण स्तेपी में बिखरे दिल को देखकर नहीं डरा, न ही वापस लौटा, ल्कि उसने उस बेचारी पर रहम खाकर उसके सम्मान में एक प्रेरणादायक ति रच डाला।

एक लाख लड़कियों और एक लाख लड़कों ने यह गीत गाया, जब बूढ़े हो गये और इस दुनिया को छोड़कर चले गये, तो दूसरी एक लाख ड़कियों और एक लाख लड़कों ने इस अधूरे रह गये दंतकथात्मक गीत को आगे गाना शुरू कर दिया। यही सदा होता रहेगा, – यह अमर गीत कभी न्त और समाप्त नहीं होगा और उस गीत का नाम है – मुगान।"

कारा केरेमोगलू ने सिर झुका लिया और काफ़ी समय तक मौन रहा। र्यहिन जैनब, माय्या और लड़के को भी गरम शाम की शान्ति भंग करने साहस नहीं हुआ। स्तेपी में, याद से बहुत दूर नीली छायाएं फिसलती ई आ रही थीं, गहरा रही थीं।

"धन्यवाद, चाचा," माय्या ने धीरे से कहा। "अब मुझे यहां की मीन से और भी गहरा प्यार हो गया! आप जानते हैं, चाचा, हमारे हीम ने अपने जीवन का उच्च लक्ष्य निश्चित कर लिया है मुगान का मेशा के लिए लवण-कच्छों से उद्धार कराने का।"

"कितना ऊंचा लक्ष्य है!" वृद्ध ने प्रशंसा की। "जनता के लिए इतने रूरी काम के लिए तुम्हें आशीर्वाद देता हूं। कभी पीछे मत हटना, बरना नहीं और हमेशा बहादुरी से काम करना।" वह उठ खड़ा हुआ। "अच्छा, मैं घर चलता हूं, और, बेटियो, तुम आराम करो!" और पने पुलकित हो उठे, खुशी के मारे फूले न समा रहे लड़के के रेशमी ालों पर प्यार से हाथ फेर दिया।

२

ढार की ढाले पार करते ही माय्या की हैरानी के मारे चीख
निकलते रह गयी। कुम्मैत घोड़े का मालिक सलमान कमीज के बटन
खुले हुए पटके और पैर व हाथ पूरे फैलाये गुलगुदार मुर्गी घास
पर लेटा था।

माय्या ने पलटकर भाग जाना चाहा, पर ऐसा कर नहीं पायी।

"अहा, सानम, सलाम, सलाम!" सलमान ने इस तरह प्यार
कहा, मानो उन दोनों में पहले कुछ भी नहीं हुआ हो, जैसे माय्या ने उ
दुतकार नहीं भगाया हो, उसका अपमान नहीं किया हो। "आइये, बैठिये
गुस्सा लीजिये। मैं पशुपालन फार्म में आ रहा हूं। मुझे अचानक महसूस
हुआ जैसे गरमी के मारे मेरा दिमाग ही पिघल गया है, इसीलिए मैंने
यहां बैठने और साथ ही कुछ मुंह में डाल लेने की सोची। यहां तो पहाड़ी
चरागाहों जैसा जन्नत-सा लगता है। बैठिये और जो खुदा ने दिया है,
खाइये।" उसने सफेद पोटली खोलकर देगची में रखा भुना गोश्त, रोटी
व हरी सलाद निकाले।

माय्या ने अपना ध्यान रखने के लिए उसे धन्यवाद दिया और खाने
से इनकार कर दिया।

"सुना आपने, मेरी कैसी बेइज्जती की गयी?" सलमान काठी के थै
से बोतल निकालता हुआ बोलता रहा। 'इजाजत है? सिर्फ एक प्याल
भूख बढ़ाने के लिए।"

"नहीं!" माय्या ने सख्ती से कहा।

"क्या करूं, बिना इजाजत के पिऊंगा,' सलमान ने दुखी स्वर में कहा
और कोनक की लबालब भरी प्याली मुंह में उलट ली। "गम के मारे
ता हूं।" उसने स्पष्ट किया। "बहुत गम है मुझे। कसम खाकर
ता हूं, नजनाज़ बच्चे की तरह भोली-भाली है, उसने तुम्हारे खिलाफ
ई गलत काम नहीं किया, उसे बेकार बदनाम किया गया। और यह
, छैलछबीली परेशान खुद आंखें नचानचाकर इशारे किया करती थी,
ती थी। उफ!" उसने फिर बोतल अपनी तरफ घुमायी और नशीला
र-गर उठा।

"मैं चलती हूं!" माय्या ने शुष्क स्वर में कहा और जाने के लिए
, पर सलमान मायूसी से चिल्लाया।

"माफ कर दो, खानम, माफ कर दो! हजार बार माफी मागता ! किसी ने ठीक ही कहा है 'गधा भी शहद का स्वाद जानता है।' पहले भी तुमसे वादा किया था, और अभी कहता हू तुम्हें सुखी बने की खातिर मैं मरने को तैयार हू! माय्या, मुझे गम खाये जा रहा !..."

"चुप रहो! बद करो यह सब।" माय्या ने वितृष्णा से कहा और मन-ही-मन अपने को सामान्य चाल मे चलने को मनाते हुए, न कि भागने जैसी कि उसे इच्छा हो रही थी, वह किनारे-किनारे डग भरने लगी, पर सलमान ने गुस्से से पागल भालू की तरह उसका पीछा किया और उसे कधों से पकडकर जमीन पर गिरा दिया। माय्या अपनी सारी ताकत लगाकर उसकी पकड से छूटने की कोशिश करती जमीन से चिपक गयी, जब कि सलमान ने उसके मुह पर शराब की बदबू छोड़ते हुए अपने घुटने से उसके जुड़े हुए पैरो को दबा दिया।

"मैं मैं चिल्ला पडूगी!"

"चिल्ला, चिल्ला!" सलमान ने बड़ी उदारता से कहा।" कोई नही सुनेगा, सब खेत-कैम्प मे खाना खा रहे हैं मेरी हो जाओ! मैं तुमसे शादी कर लूगा, खुदा की कसम, शादी कर लूगा, फिर हम वाकू चले जायेंगे, गजा या कजाख! जहा का हुक्म दो – वही चले जायेंगे!"

माय्या ने अपना दाया हाथ छुड़ाकर उसके सपाट, थलथल गाल पर पूरे ज़ोर से थप्पड जड दिया, उसकी आखें पल भर के लिए मिली, और माय्या ने उसकी आखों मे वह पाशविक व हिंसक भाव देख लिया, जो वह एक बार तब देख चुकी थी, जब सलमान ने मरणासन्न लोमड़ी को घोड़े के पैरो तले रौद दिया था।

उस समय स्तेपी में बोझिल, दमघोटू निस्तब्धता छायी हुई थी, न कोई आवाज, न कोई सरसराहट, केवल नीचे नदी की धारा एकरस कलकल करती बह रही थी। माय्या समझ गयी कि कोई उसे नही बचा-येगा। सलमान के घुटने के नीचे से जबरदस्ती अपना पैर निकालकर उसने उसके पेट में इतने ज़ोर से लात मारी कि वह लुढ़ककर दूर जा पडा।

माय्या उछलकर बाल बिखेरे, फटे स्कर्ट में खड़ी चट्टान की तरफ भागी। "मेरा मर जाना बेहतर होगा!" उसके मस्तिष्क में विचार कौंधा, पर सलमान ने भागकर उसकी कमर को अपने ताकतवर फौलादी हाथों में जकड लिया, पर माय्या ने यहा भी उसकी पकड से छूटकर उसे धक्का

"हुआ यही कि चाची को आखिरकार मनुष्य की सर्वशक्तिमान बुद्धि पर विश्वास हो ही गया।" नजफ ने चिल्लाकर कहा।

चाची ने ज़ोर से उसके हाथ पर मार दिया।

"झूठी बुराई मत करो। मैं हमेशा बुद्धिमान लोगों को इज्जत की नज़र से देखती आयी हूं।"

तभी पेरशान भागी आयी और आंख मारती हुई सहेलियों से बोली

"पर तुम बुद्धिमान किसको कहती हो, चाची ?"

"तुम जैसी को। मुझे दो साल पहले पता था कि तुम तरबूज का छिलका सरमान की खोपड़ी पर रख दोगी।" तेल्ली चाची ने तपाक से कहा। "पूछो, क्यों? क्योंकि मुझे तुम्हारी बुद्धि पर भरोसा था।"

पेरशान की समझ में नहीं आया कि वह सबके साथ हंसे या मुह फुला ले। इस बीच तेल्ली चाची हवा में सरसराते सरकण्डों-से अपने स्कर्ट उठाकर खेत के दूरस्थ दूसरे छोर की तरफ रवाना हो चुकी थी, जहां गराश मशीन चला रहा था। नजनाज़ के साथ सम्बन्ध समाप्त होने के बाद, जिसे बदनामी उठाकर गांव छोड़ना पड़ा था, गराश नामिलनसार हो गया था अगर कोई उससे बात करता, तो वह चुप रहता, पर तेल्ली चाची से पिण्ड छुड़ाना मुश्किल था। वह अपने विशाल वक्ष पर हाथ बांधे रखे, गराश पर बराबर नज़र रखे हुए, शान्तिपूर्वक मशीन के पीछे-पीछे चलती रही।

अन्त में युवक से रहा न जा सका, वह इंजन बदकर नीचे कूद आया, पर चाची फोड़े के चीरा लगाते हुए जर्राह जैसी मस्ती से बोली

"मेरी सलाह ध्यान से सुनो, उसे मानना, न मानना तुम्हारा अपना काम है।"

"लेकिन जो कहना है थोड़े में कहो।" गराश ने कहा और इतने ज़ोर से दांत भींचे कि धूप में काले पड़े गालों की नसें फड़क उठीं।

तेल्ली चाची ने झोले में कपास का गाला डालकर हाथ पीछे और ... स्वर में अपना लम्बा भाषण शुरू कर दिया

"एक बार एक दुनियादारी के मामले में अनाड़ी लड़के को समुद्र में ... और वज़न के हिसाब से दुर्लभ मोती मिल गया। उसने ... पर डालकर उलटा-पलटा, फिर चारों तरफ नज़र दौड़ायी, ... रंग-बिरंगी कौड़ियां पड़ी हैं, चमचमा रही हैं, आंखें चौंधिया ... । तो बेरंग, बिलकुल पनीर की गोली जैसा था। बस

नहीं हिचकिचायेगा। फिर भले ही जेल जाना पड़े यह इतनी भयानक बात नहीं होगी। बस उसे बदले का आनन्द लेना है।

एक बार अध्यक्ष सलमान को कपास के एक दूरस्थ खेत में ले गया। वह खेत गहरे पानी की नालियों के बीच फैला हुआ था, बोंडियों में कपास के रोयेंदार गाले हिम-कणों की तरह चमक रहे थे। सारे सप्ताह इतनी भीषण गरमी पड़ी थी कि अनखुली ढोंडिया भी चटक गयी थीं।

"अरे, यहां तो कपास का पूरा महासागर फैला है!" रुस्तम प्रसन्न हो उठा। "कम-से-कम दस हेक्टेयर में तो मशीन से चुनी जा सकती है। जब कि तुम लोग, ठस्स दिमाग के, कह रहे थे कि कपास अभी पकी नहीं है!"

"बोंडिया तो अभी खुली नहीं है," सलमान ने कंधा हिलाया। चापलूसी करने की मंशा न रहने से अब वह अध्यक्ष के साथ बड़ी मुश्किल से धृष्टतापूर्वक बोलने की इच्छा पर काबू करके बात करता था।

"खुली नहीं है, पर चटक गयी हैं। क्या देख नहीं रहे हो? इतनी तो अक्ल होनी चाहिए, मौसम कैसा है।"

"दिमाग में अक्ल ही तो कम है," सलमान ने जबरदस्ती मजाक किया।

"खेत को एक छोर से दूसरे छोर तक देख लो। जहां गड्ढे हों, ऊबड़-खाबड़ जगह हो, उसे समतल करने को कह दो," रुस्तम ने कहा। "और मैं कपास धुननेवाली मशीनें भिजवाने के लिए मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन टेलीफोन कर दूंगा। तुम्हें क्या सांप सूंघ गया है? सुनते हो?"

"कर लूंगा"

आसानी से उछलकर काठी पर बैठे रुस्तम को पीछे से घूरते हुए सलमान ने थूक दिया।

"जल्दी ही साठ का होनेवाला है, पर घोड़े पर नौजवान की तरह सवार होता है। शैतान बुढ़ाता नहीं है, सौ बरस तक जिन्दा रहेगा, अगर किसी ने इसकी खोपड़ी में कुदाल नहीं मार दिया" उसने सोचा और वह अलसाता, पैर घिसटता खेत में चलने लगा।

नाली पर बने तंग पुल में थोड़ी दूरी पर उसे दो सामूहिक फार्मवाली औरतों और चारों तरफ आंखें चकर-मकर करने पकौड़े-सी नाकवाले मर्द ने रोक लिया। औरतों ने पहले सलमान पर नजर डाली, फिर पकौड़े-सी नाकवाले पर और होंठ भींच लिये।

"क्या है?" सलमान ने खिन्न स्वर में पूछा।

[illegible] को [illegible] उसका [illegible] और भी बुरा हुआ [illegible] ने [illegible]
[illegible] में [illegible] यह [illegible] को [illegible] दी, [illegible] उसकी [illegible]
[illegible] आदमी नहीं है [illegible] बताता [illegible]।

“[illegible] कैसी [illegible] करती है!” रुस्तम ने उसकी
[illegible] और [illegible] विचारों से [illegible] किसी [illegible]
[illegible] लगा। [illegible] में [illegible] पौधों को [illegible] से [illegible]
[illegible] लगा।

[illegible] का उस पर दया आ गयी।

'बेहतर होगा, चाचा, आकर अपना काम करें! हम किसी व
[illegible] लेते दया नहीं देते '

पर रुस्तम की पीठ मुड़ गयी उसने किसी तरह कमर सीधी
और कमीज के पल्ले से चेहरा पोंछा।

शरद् ऋतु आ गयी थी, पर सूरज की गरमी कम होने का नाम
नहीं ले रही थी, केवल शाम को सूर्यास्त के बाद स्तेपी में कुछ ठण्डक
जाती थी। लेकिन झुटपुटा जल्दी ही हो जाता था और एकाएक गहरा
समतल प्रदेश पर मोटा आवरण गिरा देता था। पत्तियां कत्थई और
चमकदार सुनहली होकर कुंचित होने लगी थी और घास पर गिर रही
थी। घास भी मुरझाकर सूखने लगी थी। कपास के खेतों में हरियाली थी,
लेकिन वहां भी पौधे छीदे होकर सिकुड़ने लगे थे, उनकी शाखाओं की बाढ़
रुक गयी थी। खुदा न करे, कहीं रात का जोरदार ओस पड़ गयी, या
उससे भी बदतर, बारिश हो गयी, तो कपास की नकानिटी खराब हो
जायेगी, योजना पूरी नहीं की जा सकेगी।

गरमी और निरन्तर तनाव के कारण रुस्तम कुछ ही सप्ताह में काफी
बूढ़ा गया। उसकी मूछों और ठोड़ी पर एक भी काला बाल न बचा
आंखों के नीचे खाल लटक गयी, दम फूलने लगा, उसे सांस लेने के लिए
अकसर मेड़ पर बैठना पड़ने लगा। वह अब सामूहिक किसानों के साथ
पहले की तरह बात नहीं करता था, उन्हें हुक्म नहीं देता था, बल्कि उनकी
मिन्नत करता था, उन्हें मनाता था।

नेल्ली चाची दुःखी हो उठी

"लगता है, बुढ़ापा हर आदमी को उसकी असलियत बता देता है. "
उसने यह बात मन में नहीं रखी, सीधे रुस्तम के मुंह पर कह दी, पर
उसने उत्तर में कुछ नहीं कहा, मुंह फेर लिया।

कैंपाम के खेत से निकलकर रुस्तम ने मुड़कर स्तेपी पर नज़र दौड़ायी। पहाड़ों से ठण्डी हुई उत्तरी हवा का झोंका आया, कपास के पौधे लहलहा उठे, सूखी घास के गुच्छे उड़ने लगे, और सामूहिक किसानों ने चैन की सास ली। अहा, कितना अच्छा है! लेकिन जहा कपास साफ करने की मशीन खड़ी थी, खेत-कैम्प के पीछेवाले खुले मैदान में धूल का गुबार उठा और वहा काम कर रहे लोग धुधले आवरण से ढक गये। उनके नज़दीक पहुंचने पर रुस्तम को हृदयविदारक खांसी सुनाई दी, सामूहिक किसानों के चेहरे व कपड़े धूल और कूड़े-करकट से भर। बोर हो गये थे।

रुस्तम ने हाथ उठाया, मशीन रुक गयी।

"तुम लोगों का दम क्यों घोट रहे हो?" उसने मशीन-आपरेटर से कठोर स्वर में पूछा।

"धूल कोई मेरी मशीन से थोड़े ही उड़ रही है!" उसने जवाब दिया। "हमेशा ऐसा ही होता!"

"नहीं, हमेशा नहीं होता। मशीन को हवा के रुख की तरफ मोड़ो," रुस्तम ने सामूहिक किसानों को विस्मय में डाल देनेवाली नरमी से कहा और सबसे पहले कधा लगाया।

दूसरे लोग उसकी मदद को आ पहुचे और मशीन को मोड़ दिया। अब हवा धूल के गुबार, कूड़ा-कर्कट स्तेपी की तरफ उड़ाकर ले जाने लगी, और लोगों ने चैन की सास ली।

"ऐसे काम करना चाहिए!" रुस्तम ने धूल झाड़ी और खेत-कैम्प के पास पहुच गया।

६

शेरज़ाद को देर से कपास चुनने का कष्टदायक नज़ारा कई बार देखना पड़ा था। कपास के पौधे सिर झुकाये लगातार होती बारिश में खड़े रहते, ठिठुरी हुई औरतें कीचड़ में चलती हुई फूली हुई बोडियों से गाले चुनती। ऐसे में जिस्म का खयाल कैसे रहे! चिपकी हुई झिरझिरी रूई से बदली कपास को क्रय-केन्द्रों पर ले जाया जाता है, ताकि योजना किसी तरह तो पूरी हो सके, जबकि वास्तव में फसल बरबाद हो जाती है और बहुत से लोगों की कमरतोड़ और प्राय कष्टदायी मेहनत बेकार चली जाती है।

रुस्तम को काफी समय तक कपास चुननेवाली मशीन पसद नहीं आयी,

यह उसका मजाक उड़ाता रहा। शेरजाद यह मानने को तैयार था कि उसके लिए वृद्ध के पास अपनी टीम दलीलें थी मशीन रेशे को तोड़कर खराब कर देती थी, उसकी क्वालिटी बिगाड़ देती थी। लेकिन ऐसा प्राय इसी लिए होता था, क्योंकि मशीन की मरम्मत जल्दबाजी में, अन्तिम क्षणों में की जाती थी और उसको ठीक से जाच किये बिना खेत मे भेज दी जाती थी। अब जब मशीनों मे काफी सुधार किया जा चुका था और वे शराफ और नजफ जैसे कुशल लोगों के हाथों मे आ गयी थी, तो स्थिति काफी बदल गयी थी क्रय-केन्द्रों से शिकायते अब उतनी नही आ रही थी—कपास की क्वालिटी मे गिरावट उतनी नजर नही आ रही थी।

यह मालूम पड़ने पर कि रुस्तम ने नालियों के बीच के तिकोने खेत मे बहुत बढ़िया किस्म की कपास मशीनों से चुनने का आदेश दे दिया है, शेरजाद को बड़ी खु़शी हुई और वह जल्दी से खेत के लिए रवाना हो गया। उसे रास्ते मे परिचित अध्यापक मिल गया और वे बातचीत करते न जाने कब दस किलोमीटर का फासला तय कर गये, पर गहरी और ढालदार नाली पर बने पुल के निकट पहुचने पर वे दग रह गये।

पकौड़े-सी नाकवाला बहार अपनी पत्नी व पड़ोसन के साथ मिलकर बड़े जोरो से पुल तोड रहे थे, उसके फर्श के तख्ते उखाड़ रहे थे और शहतीर निकालकर किनारे पर फेंक रहे थे।

"यह क्या कर रहे हो? यह क्या कर रहे हो?!" शेरजाद अपनी आखों पर विश्वास न कर पाकर चिल्लाया।

पकौड़े-सी नाकवाला जड़वत् रह गया, जैसे मौत का फरिश्ता उसके सामने आ खड़ा हुआ हो, उसने हड़बड़ाहट मे स्त्रियों की तरफ तिरछी नजरो से देखा और थूक सटक कर कुछ नही बोला।

"क्या तुम बहरे हो गये हो?" शेरजाद और जोर से चिल्लाया।

बहार की पत्नी निस्स्वार्थ भाव से उसकी रक्षा को लपकी

"ऊपर से हुक्म मिला है, भाई! हमें इससे क्या! हम कोई अपनी मर्जी से थोड़े ही.. हमसे कहा गया—इसकी मरम्मत करो, तो हम मरम्मत करने लगे।"

"पर किसने हुक्म दिया?" पार्टी सगठनकर्त्ता ने उससे उगलवाने की कोशिश की।

औरत घबरा गयी, बगले झाकने लगी, जब कि बहार ने मुह बनाते हुए दात भीचे: चुप रहो...

वृद्ध अध्यापक अपनी स्वाभाविक नरमी से, मानो कक्षा में किसी ढबुद्धि छात्र से बात कर रहा हो, बोला

"अक्ल से काम लेना चाहिए था! तुम खुद ही देख रहे हो कि कपास झड़ चुकी है, यानी खेत फसल उठाये जाने के लिए तैयार है। लेकिन मशीन यहां से गुजरेगी कैसे, अगर तुम पुल तोड़ दोगे?"

"ऐ मौलाना, तुम ज्ञान का सागर हो और दुनियादारी की बातें मुझसे बेहतर जानते हो," पकाड़े सी नाकवाले ने उसे बदतमीजी से टोक दिया। "अगर सबसे भरपूर फसलवाले खेतों में मशीनें चलेंगी, तो हमारी बीवियों के श्रम-दिन कैसे बनेंगे? जरा समझाओ तो सही!"

"तुम्हारी बेवकूफी पर तो उबली मुर्गी भी ठहाके लगा-लगा कर बेहोश हो जाये!" अध्यापक ने व्यंग्य किया। "अरे, कपास तो सामूहिक फार्म की है, यानी–तुम्हारी! जितनी जल्दी चुनेंगे, उतनी जल्दी पैसा कमा लेंगे। सामूहिक फार्म में काम करनेवालों की कमी है अगर तुम्हारी बीवी आलस नहीं करती, बाजारों में नहीं घूमती-फिरती, तो ढेरों पैसा बटोर लेती।"

"बिना बाजार के जिन्दगी भी कोई जिन्दगी है?" बहार ने धृष्टता-पूर्वक धीमे निपोड़ी। "हम लोग बाजार में मेहनतकशों को खाने-पीने की चीजें मुहैया करते हैं।"

"दफा हो जाओ यहां से!" शेरज़ाद अपने को काबू में न रख पाकर चिल्लाया और बचे खुचे पुल पर नजर डालकर बोला "केन्द्रीय कैम्प में जाकर कह दो कि फौरन दो बढ़इयों को यहां भेज दें। फौरन!"

लेकिन जब बहार सिर कंधों में धमाये जल्दी-जल्दी जाने लगा, शेरज़ाद ने उसका पीछा करके सख्ती से पूछा

"हां, तो पुल तोड़ने का हुक्म किसने दिया था?"

बहार की बीवी पूर्णतया निराश होकर बोली

"उपाध्यक्ष ने, उपाध्यक्ष ने!"

सारे दिन शेरज़ाद को शंकाएं व्यथित करती रहीं कहीं अध्यक्ष ने जबानी तौर पर मशीन से कपास चुनने को उचित मानकर आखिरी क्षण में ... ... ो काम नहीं लिया है? कहीं उसने खुशामदी सलमान को ... दिया है कि मशीन के पक्ष तो है नहीं, जो उड़कर ... घोड़े पर काठी कसकर शेरज़ाद ने उजाला रहते ... लिया, रास्तों की जांच कर ली और फिर पुल

पर गौर आया तब उसे विश्वास हो गया कि डाकुओं ने दिन में मेहनत की है और रात को पार कर दिया।

शेरजाद रात में मैदान पर गया बिना कार्यालय रवाना हो गया, उसने अध्यक्ष को टूटे हुए पुल के बारे में बताया, रुस्तम ने चौकीदार से पतली-सी आवाजवाले बहार को फौरन उसके पास लाने का आदेश दिया।

बहार, उनींदा मुंह लटकाये लिये रुस्तम के कक्ष में मौत की सज़ा सुनाये गये अपराधी की तरह आया। उसके बदन से काफी दूरी से शराब की बदबू आ रही थी।

"बस इसी की कसर रह गयी थी।" अध्यक्ष गरजा। "सारी गर्मी काम से जी चुराता रहा, बहकाता रहा और तुझे अब मेहनत करने की सूझी है!"

"रुस्तम-आका," पतली-सी आवाजवाले ने कहा, "तुम खुद पहले मशीनों के बारे में क्या कहते थे? औरतें खेत के एक-दो चक्कर लगाकर कपास चुन लें, इससे क्या नुकसान हो जायेगा? फायदा ही होगा। और अलहमद मशीन बची-खुची कपास चुन लेगी।"

रुस्तम का क्रोध से दम घुटने लगा, पर उसने अपने पर नियंत्रण कर अप्रत्याशित शान्त स्वर में उत्तर दिया

"तुम्हें लोगों की बिल्कुल पहचान नहीं है, मेरे प्यारे। मैं मर्द हूं! जैसा हूं, वैसा ही कब्र तक बना रहूंगा। मैं बीच बाज़ार खड़े होकर भी अपने विचारों को त्यागने का इरादा नहीं रखता हां, कपास चुननेवाली मशीन में अभी काफी कमियां हैं, और मैं इस बारे में बाकू में मीटिंग में खुले आम बोल चुका हूं मैंने डिज़ाइनरों और इंजीनियरों को भी खूब आड़े हाथ लिया। लेकिन इस समय भी यह मशीन उपयोगी और ज़रूरी है, क्योंकि वह औरतों को कमरतोड़ मेहनत से छुटकारा दिलाती है!"

"नहीं, मालूम होता है बूढ़ा अभी काम से नहीं गया है, ऐसा ईमानदार आदमी कभी काम से नहीं जा सकता!" शेरजाद ने सोचा। उसके दिल में सुखद आशा की अनुभूति हुई।

"बता, अंधे, जाहिल, किसने हुक्म दिया पुल तोड़ने का?"

बहार ने लापरवाही से कंधे उचकाये।

"सफाट सलमान, उपाध्यक्ष ने कहा था।"

"भागकर जाओ, सलमान को यहां घसीट लाओ, चाहे ज़िन्दा हो या मरा।" रुस्तम ने चौकीदार से चिल्लाकर कहा।

सलमान अपने यहा मेहमान बनकर आये कलतर के साथ आया। वे बूटो से जोर से धप-धप करते कक्ष मे दाखिल हुए, वे निश्चिन्त खड़े थे, पर रुस्तम की खौफनाक नज़र से वे फौरन दब गये।

सलमान ने डर के मारे ऐसी बेतुकी और मूर्खतापूर्ण सफाई दी कि रुस्तम ने उसके एक भी शब्द पर विश्वास नहीं किया और उदास होकर बोला

"बेईमान!"

कलतर-लेलेश भी जल्दी ही नरम पड़ गया, बगलें झाकने लगा, पर साहस जुटाकर अपने हमजोनल की तरफदारी करने लगा

"मामला साफ है! शेरजाद नेतृत्वकारी कार्यकर्ताओं और ग्राम सामूहिक किसानो को अपना उल्लू सीधा करने के इरादे से एक दूसरे के खिलाफ भड़का रहा है। चलिये, माना कि कामरेड सलमान ने गलती की, समय का ठीक अदाज नहीं लगाया। उसे उम्मीद थी कि बहार शाम तक गले हुए शहतीर को बदल देगा। इसमे ऐसी क्या खतरनाक बात हो गयी? हर कोई जानता है कि फुरसौला उपाध्यक्ष सामूहिक फार्म का भला ही चाहता था। सिर्फ शेरजाद सरीखे बेशर्म लफ्फाज ही इस मौके का अपने हित मे फायदा उठाने की कोशिश कर सकते हैं।"

"बहार की पत्नी को आने दीजिये," शेरजाद ने सुझाव दिया।

"हम जाच-कर्त्ता नहीं हैं," कलतर ने गर्व से कहा और अपने चमचमाते बूटो के मोज़े ठीक किये। "खेल खतम हो चुका है, अब दाव पर कुछ नहीं लगा है, और सच कहूं, तो आपका पत्ता पिट चुका है, कामरेड शेरजाद।"

और उसने अपनी हाज़िरजवाबी पर खुश होकर जोरदार ठहाका लगाया।

जानी-पहचानी हसी, जाने-पहचाने मजाक, हमेशा के पिटे-पिटाये वाक्य .. कलतर के व्यवहार मे जैसे कोई परिवर्तन नहीं आया, पर रुस्तम की पैनी नज़र से परिवर्तन छिपा न रह सका। कलतर के व्यवहार मे उसे आत्मविश्वास की कुछ कमी दिखाई दी· ऐसे क्षणो मे कायर मामूली-सी सरसराहट से चौंक उठते हैं। .

"तो सुनो, बहार," रुस्तम ने कलतर से तत्वान्वेषी दृष्टि हटाये बिना बहार से शान्तिपूर्वक कहा, "कल छः बजे अपनी बीवी के साथ पशुपालन फ़ार्म पर पहुच जाना। नहीं पहुचे, तो बीस श्रम-दिनो का जुरमाना होगा।

अगर तुम्हें बाजार या चायख़ाने में देखा गया, तो तुम्हारा निजी प्लाट कम कर दिया जायेगा।"

"आप, चाचा, बेकार ही ..." सलमान बोल उठा, पर रुस्तम की कठोर दृष्टि देखकर तत्क्षण चुप हो गया।

"लानत है मुझ पर तुम्हारे साथ गन्दगी में घसीटे जाने के लिए!" कलन्तर-लेलेश ने खड़े होते हुए कहा और इन सब बातों के प्रति अपनी पूर्ण उपेक्षा का भाव दिखाने के लिए उसने अंगड़ाई ली।

लेकिन वह कक्ष से बड़ी मुश्किल से अपनी भाग निकलने की इच्छा पर काबू करके, पर जल्दी-जल्दी निकला। उसे रुस्तम के मौन ने इतना डरा दिया था। उसके पीछे-पीछे उदास सलमान भी धीरे-धीरे निकल गया।

अभी तक किसी को मालूम नहीं था कि ज़िला समिति के ब्यूरो में कर्मचारियों के चुनाव में पार्टी सिद्धान्तों का उल्लंघन करने के लिए कलन्तर को सख्त झिड़की दी गयी थी।

"उफ़!" रुस्तम ने ठण्डी सांस ली और कनखियों से शेरज़ाद की तरफ देखा। "लगता है, लड़के, हमारे सामूहिक फार्म में सारे काम फिर नये सिरे से शुरू करने होंगे ..."

७

कुछ दिन बाद, एक बार जब रुस्तम खेत से लौटा, उसे अराकोगलू, कलन्तर, शेरज़ाद और सलमान कार्यालय में बैठे मिले।

वृद्ध ने तुरन्त देख लिया कि सलमान का चेहरा नमकीन टमाटर जैसे सिकुड़ गया, जबकि कलन्तर उदास था, मानो उसे अपने ही जनाज़े में बुलाया गया हो।

दुआ-सलाम हुई।

"बात यह है, रुस्तम," अराकोगलू ने इतनी सावधानीपूर्वक बात छेड़ी, मानो किसी बीमार आदमी का ज़िक्र हो रहा हो, "हमने ज़िला समिति में अमरान के साथ सलाह की और इस नतीजे पर पहुँचे कि तुम्हारे सामूहिक फ़ार्म के हिसाब-किताब की जांच करना ठीक रहेगा। तुम्हारा इस बारे में क्या ख़याल है?"

"ठीक है," रुस्तम बोला। "बहुत अच्छी बात है। पर ...

सलमान एकदम पलटकर कलतर भैया की तरफ देखे बिना पैर घिसटता घर चल दिया।

८

संस्कृति-भवन के निर्माण-स्थल पर कुल्हाड़ों की खट-खट, आरों की सर्र-सर्र की आवाजें गूँज रही थीं भवन की छत डाली जा चुकी थी, बढ़ई तख्तों पर रंदा फेर रहे थे, खिड़कियों के चौखटे लगा रहे थे, पलस्तरकार दीवारों पर पलस्तर कर रहे थे, उन्हें हमवार कर रहे थे, इमारत के अंदर रँगसाज़ रंग कर रहे थे।

रुस्तम जिसके पास भी जाता, वह उसे तसल्ली दिलाता त्योहार तक काम पूरा कर लेंगे।

"अरे, ज़रा रफ्तार बढ़ाओ, दोस्तो," रुस्तम कारीगरों को जल्दी करने को कहता। "त्योहार सिर पर आ गया है। इमारत को दुलहन की तरह सजाना है, ताकि सब देखते रह जायें।"

कितनी इच्छा हो रही थी उसे निर्माण-कार्य जल्दी से जल्दी पूरा करने की! वह मुख्य द्वार पर लाल फीता काटकर एक ओर हट जायेगा और अपने गाँववालों को सम्बोधित कर कहेगा

"यह लीजिये चाबी, अब खुद ही सभालिये इसे! मुझ में अब ताक़त नहीं रही! मेरे आराम करने का वक्त आ गया है।"

वास्तव में रुस्तम महसूस करने लगा था कि उसका बोझ बहुत भारी है और उसे ज़मीन में दबाये जा रहा है। वह वर्ष के अन्त में सामूहिक किसानों से उसे अध्यक्ष के पद से मुक्त करने की प्रार्थना करना चाहता था, पर लेखा-परीक्षा समाप्त होने से पहले नहीं "सारा काम जमा दूँ, सब ठीक-ठाक कर दूँ, फिर सारे काम नये अध्यक्ष को सँभला दूँगा "

लेकिन आखिर किसे? यह विचार रुस्तम को कचोट रहा था। अब उसे सलमान पर विश्वास नहीं रहा था। "मैंने खुद उसे नियुक्त किया था, खुद ही हटा भी दूँगा," रुस्तम सोचता। "अगर हर आदमी अपना फैलाया कूड़ा-करकट साफ करता रहे, तो इस दुनिया के लोग चैन से जीने लगें . ."

वह संस्कृति-भवन में कार्यालय में गया। वहाँ उसे शेरज़ाद, गोशानसो और बूढ़ा चरवाहा बाबा मिले। रुस्तम ने शेरज़ाद के साथ सम्मानपूर्वक दुआ-

मेरी दायीं तरफ़ लेटा चरवाहा—हमारे यहा, खुदा माफ करे, एक कुछ बुद्धू-सा लड़का है—इतने मज़े से खर्राटे लेता है कि उसके खर्राटों को झाड़ू से समेटा जा सकता है। और बायी तरफ से एक मच्छर मेरे पीछे पड़ गया। गाल से उड़ाऊ, माथे पर जा बैठे, माथे से उड़ाऊ, तो नाक पर। और मच्छर शहनाई से भी ज़ोर से भन-भन कर रहा था ..."

"चादर तान लेते," रुस्तम ने सलाह दी।

"जाड़े की बात कर रहे हो?" बूढ़े को आश्चर्य हुआ। "स्तेपी की हवा ही तो चरवाहे की दौलत होती है ... हा, तो मैं क्या कह रहा था?"

"मतलब की बात कहो, बाबा!" अध्यक्ष ने उसे जल्दी करने को कहा।

"अरे, मैं क्या भटक गया हू? काम की बात ही तो कह रहा हू। हा तो मच्छर पीछा नही छोड़ रहा था, मैं उठकर थोड़ी देर टहला, भेड़ों को देख आया और तब मुझे याद आया कि गोल पत्थर के पास सुराही में लस्सी रखी है। और लस्सी—चरवाहे की ज़िन्दगी होती है, आप लोगों को मालूम होना चाहिए! लस्सी पी ली, फिर न गर्मी लगती है, न मौत पास फटकती है। पहाड़ी चरागाहों से जाड़े के पड़ाव पर लौट कर हाथ-मुह धोये लस्सी पी और सारी बीमारिया दूर हो गयी, फिर चाहे अभी शादी कर लो! अगर मैं किसी लेखक को लस्सी के बारे में जो जानता हू, बताऊ तो बहुत ही लाभदायक किताब बन जाये।"

"अच्छा, फिर क्या हुआ? लस्सी पीने के बाद ..."

"लस्सी पीकर भेड़ की खाल के पास लौट आया, पर मच्छर वही मौजूद था, सीधा गाल पर बैठकर खून पीने लगा। अब क्या करू? झाड़ी के पास गया और पीठ के बल लेट गया ... और अचानक मुझे फुसफुसाहट सुनाई दी। झाड़ियों मे पशुपालन फार्म का नया इनचार्ज और क्या नाम है उसका..."

"यारमामेद?" रुस्तम ने धीरे से नाम सुझाया।

"तुम्हारे मा-बाप को जन्नत नसीब हो, हा, वही। मैं छिपकर उन की बात नही सुनना चाहता था, मुझे क्या मतलब उनसे? पर उनकी बातें मच्छरों की तरह कान मे घुसने लगीं। 'सुन, यारमामेद,' गूगे हुसैन ने कहा, 'अब सन्मान पर बिलकुल भरोसा नहीं किया जा सकता ... वह हम से ही पशुपालन फ़ार्म लुटवाकर, हमें ही कब्र मे धक्का दे देगा!' यारमामेद ने जवाब दिया: 'हां, हा, यह मेढ़क का बच्चा ठूंसे जा रहा है, ठूसे जा रहा है, पर इसका पेट ही नहीं भरता है! मैं मवेशियों के मरने की

रिपोर्टें दर्ज करते-करते ऊब चुका हूं.. पर अब रेवड़ कहां है? सारीकमीश मे है?' 'नहीं अभी सारीकमीश में कूरा तट पर।' हुसैन ने कहा। 'मुझे, यारमामेद चोरी की साठ भेड़ें बेचने से हमें दो-तीन हज़ार रूबल मिलेंगे, जबकि बाकी सलमान अपनी मूछों पर ताव देकर हड़प जायेगा। ऐसे बदमाश की शिकायत करने का वक्त आ गया है!' यारमामेद सोचने लगा, फिर बोला 'बेशक, लिखना तो चाहिए, पर तब हम तीन हज़ार रूबल से भी हाथ धो बैठेंगे। हमें इन्तज़ार करना चाहिए, उससे काफी अच्छा हिस्सा हथिया लेना चाहिए, सिर्फ उसके बाद ही, जहां ज़रूरी हो, वहां शिकायत करनी चाहिए ...'"

रुस्तम की कुरसी चरमरा उठी, शेरज़ाद के लिए चैन से बैठ पाना मुश्किल हो गया कभी वह उचककर उठ जाता, कभी बैठ जाता, और गोशातख्वा की आखें शर्म से झुक गयीं, होंठ टेढ़े हो गये।

"यह है असलियत," वृद्ध ने एकरस स्वर में कहा। "मुझे सुबह तक नींद नहीं आयी, जब मैंने इस आदमी को देखा," उसने गोशातख्वा की तरफ उंगली उठायी, "तो तुम्हारे पास आने की सोची ..."

"यानी साठ भेड़ें इस समय सारीकमीश में हैं?"

"मुझे क्या पता?" बाबा ने शान से पीली धूसर दाढ़ी पर हाथ फेरा। "वे वहीं रह रहे थे।"

"हमें उन्हें कब्जे में ले लेना चाहिए, इसी वक्त सारीकमीश पहुंचना चाहिए!" रुस्तम उचका और उसने गोशातख्वा व शेरज़ाद पर प्रश्नात्मक दृष्टि डाली। वे सहमत हो गये : बेशक, उन्हें पकड़ना चाहिए।

रुस्तम की रगों में सैनिक का खून जोश मारने लगा छज्जेदार टोपी अपनी भौंहों तक खींचकर उसने आवाज़ दी "मोटर तैयार करो!" लेकिन उसी समय कक्ष में [illegible] पाइप लिए दाखिल हुआ और उदास स्वर में बोला

"हाल खराब है, प्यारे दोस्त, बहुत खराब! ..."

शेरज़ाद ने उसे उड़ाकर ले जाये गये रेवड़ के बारे में संक्षेप में बताया, पर [illegible] को आश्चर्य नहीं हुआ, बल्कि उसने उन्हें मिलिशिया को [illegible] करने की सलाह दी. वहीं [illegible] इस [illegible] में [illegible] सम्पूर्ण [illegible] है। और उसने रुस्तम की कुरसी पर बैठे [illegible] [illegible] [illegible] मवेशी [illegible] की [illegible] को [illegible] [illegible] पर [illegible] हज़ार रूबल खर्च किये गए, अब कि [illegible]

केवल पन्द्रह हजार रूबल ही दिये गये, शहतीर, तख्ते और ईंटें ढोयी तो सामूहिक फार्म के ट्रकों मे गयी, पर न जाने कौन-कौन से ट्रक-चालकों को पन्द्रह हजार रूबल का भुगतान किया गया। और इस के लिए कुछ और भी जाली बिल और रसीदें हैं। सामूहिक फार्म के लगभग एक लाख से ज्यादा रूबल का गबन किया गया है, पर जांच अभी पूरी नहीं हुई है।

"और सलमान क्या कहता है?" रुस्तम ने कुरसी के हत्थे दबाते हुए भयानक फुसफुसाहट में कहा।

"सारा दोष तुम्हारे सिर मढ़ता है' कहता है, तुमने उसे मजबूर किया, तुमने पैसा खाया, उसे मामूली-सा हिस्सा दिया, ज्यादा बड़ी रकम नहीं, सिगरेट के लिए भी काफी नहीं होगी "

"मैंने?!" रुस्तम ने मर्रायी आवाज़ में कहा और उसका सिर सीने पर झुक गया।

"तुम फ़िक्र मत करो, दोस्त," शराफोगलू ने कहा। उसे रुस्तम पर दया आयी, लेकिन वह जानता था कि उसे सहानुभूति की भावना को अपने पर हावी नहीं होने देना चाहिए। "ये लिखित प्रमाणपत्र हैं नेल्ली चाची, वेरेस, गिडेनार, शेरज़ाद और दूसरे कई लोग तुम्हारी ईमानदारी की ज़मानत देते हैं।"

लेकिन रुस्तम को इससे भी शान्ति नहीं मिली। वह आखें उठाकर देखने डरता सोच रहा था कि उसने तेल्ली, उसके वेडे, शेरज़ाद और उन सबके खिलाफ, जिन्हें वह अपना शत्रु समझता था, कितना अक्षम्य अपराध किया है। और उसकी पत्नी? क्या सकीना ने उसे सही रास्ते पर लाने, चेताने की कोशिश नहीं की थी? क्या सकीना ने उससे बार-बार नहीं कहा था कि वह आस्तीन मे साप पाल रहा है? जो कुछ हुआ उसके बारे मे सोचता हुआ रुस्तम अपने को समर्थ भी अनुभव कर रहा था और असहाय भी, रौंदा हुआ भी और पुनर्जीवित भी।

"हा, मैं दोषी हू और मुझे सजा मिलनी चाहिए," उसने कहा और एकाएक गुस्से मे सिर झटका, पर फिर शिथिल हो गया।

सब आत्मग्लानि के कारण चुप थे।

गोशातखा अपनी सामान्य मुखमुद्रा में रहा: उसके चेहरे पर न विजयोल्लास था, न ही द्वेषपूर्ण प्रसन्नता का भाव।

"नहीं, रुस्तम, मुझे भी चोरी का शक नहीं हुआ था, मैं झूठ नहीं

काम के बाद वह फ़ौरन घर लौट आता और घंटों बरामदे में खड़ा अंधेरी रात में शून्य में ताकता रहता।

घर में वैसे ही गहरा अंधेरा छाया हुआ था। सकीना और रुस्तम चिन्ता में डूबे थे, मौन रहते थे, और पेरशान भी कुछ उदास रहती थी।

एक बार सकीना ने रुस्तम से हठपूर्वक कहा कि वह बेटे को लिवा लाये, वरना गराश बिलकुल ही सूख जायेगा।

वृद्ध नाराज़ होकर बोला।

"तुम कितनी बार वहां हो आयी हो? इतनी बेइज़्ज़ती तुम्हारे लिए क्या कम है? अब मुझे भी शर्मिंदा करवाना चाहती हो?"

"हमारा लड़का बेमौत मर जायेगा।" सकीना ने गहरी ठण्डी सांस ली।

"लड़का!" रुस्तम व्यंग्यपूर्वक मुस्कराया। "तुम्हारा लड़का ख़ुद ही जाये। आदमी का अपमान करना आसान होता है, पर पत्नी से सुलह करना, उसे वापस घर लाना इससे भी कहीं ज़्यादा मुश्किल होता है, इसके लिए हिम्मत की ज़रूरत है।"

"हां, वह तुम पर नहीं गया है," मां ने शिकायत की, "उसकी उम्र में तो तुम आग जैसे थे।"

"मैं कुछ नहीं कर सकता," रुस्तम ने सिर झुकाकर कहा। "किसी का बेटा बाप पर जाता है, तो किसी का मां पर।"

"ग़लत बात है," पेरशान बेदर्दी से बीच में बोल उठी। "गराश बिलकुल तुम पर गया है, हू-ब-हू तुम्हारा जैसा है। वैसा ही ज़िद्दी है, मनमौजी है, वैसे ही पत्नी की परवाह नहीं करता है।"

पिता ने उसकी चोटी पकड़ने के लिए हाथ बढ़ाया, पर पेरशान अपने कमरे में भाग गयी और दरवाज़ा बंद कर लिया।

फिर भी रुस्तम ने गराश को अपने पास बुलाया।

"बेटा," उसने दुबले और उदास युवक की ओर न देखने की कोशिश करते हुए कहा, "ज़रा कार लेकर जल्दी से कारा-केरमोगलू के पास जाओ और ट्रक की धुरियां उधार मांग लाओ। कहना, गोदाम से मिलते ही रुस्तम उन्हें लौटा देगा।"

गराश ने चुपचाप कहना माना, बरामदे से उतरकर खूंटी से शेड की चाबी उतारी, लेकिन तभी सकीना भागी हुई आयी और उससे कपड़े बदलने को बोली।

सूख गयी हो और उसने जीवन में किसी परिवर्तन की आशा छोड़ दी हो।

सेब के पुराने वृक्ष की लगभग सारी पत्तियां झड़ चुकी थीं, और सुनहरी शाखाओं में भी बड़े-बड़े लाल सेब नज़र आ रहे थे। माश्या और गराश उसी के पास आ न समझ पाये रह गये कि बात कहां से शुरू की जाये, एक दूसरे के साथ कैसे पेश आयें। आंसुओं में काटी रातों में माश्या ने कितनी बार इस क्षण की कल्पना की थी, उसे आशा थी कि गराश शुद्धहृदय से शक्तिशाली पुरुष की तरह आयेगा, जिस रूप में वह उसे जानती थी, लेकिन अब वह उसके निकट, बगल में था, पर माश्या को उस पर विश्वास नहीं रहा था, उसे लगता था कि यह विश्वासघाती व्यक्ति फिर उसका मज़ाक उड़ाने आया है। और गराश न जाने क्यों चुप था, मानो उसे आशा हो कि सुलह का पहला कदम माश्या उठायेगी।

"अच्छा, बोलो, तुम क्या चाहते हो?" उसने रुखाई से कहा।

गराश ने सेब की डाल अपनी तरफ़ खींच ली।

"मैं क्या कह सकता हूं? मैं दोषी हूं, सारा दोष मेरा है "

उसे आशा थी कि इस स्वीकारोक्ति के बाद पत्नी उसका आलिंगन कर लेगी और वे ख़ुशी-ख़ुशी घर लौट जायेंगे, पर माश्या को लगा कि वह इस समय भी कोई चाल चला रहा है, ढोंग रच रहा है।

"दोषी तुम नहीं, मैं हूं," उसने कटु स्वर में कहा। "हां, हां, तुम चुप रहो! मैं भोली-भाली थी और नहीं जानती थी कि प्यार के साथ खिलवाड़ किया जा सकता है, कि मर्द के सीने में दो दिल होते हैं एक जोशीले कसमों-वादों के लिए, दूसरा – दगाबाज़ी के लिए।"

उसकी आंखें लाल हो रही थीं, आवाज़ में सख़्ती झलक रही थी, लेकिन गराश ने अभी आशा नहीं छोड़ी थी।

"मैंने तुम्हारे दिल को ठेस पहुंचाई, लेकिन मेरी ज़िन्दगी में भी ज़हर घुल गया, मुझे बिलकुल चैन नहीं मिल रहा है, मुझे माफ़ कर दो .."

माश्या पर अपने अपमान, निराशा में काटे दिनों की यादें एक बार फिर हावी हो उठीं. उसे सुलह करना कल्पनातीत और अपमानजनक लग रहा था।

"चले जाओ!, धोखा सिर्फ़ एक बार दिया जा सकता है। मैं तुम्हें देख . . ."

गरदनी हिलने लगी। उसमें पिता से विरासत में मिला गर्व जाग उठा और वह माय्या से अलग खड़ा हो गया।

"मेरा प्यार मुझे यहां खींच लाया था। अगर तुम उसकी कीमत सेव से भी कम आंकती हो, तो उसे घास में पड़ा रहने दो! मैं किसी के सामने अपनी बेइज्जती नहीं कराऊंगा, हालांकि मैं अपना दिल तुम्हें दे चुका हूं। मैं यहां भीख मांगने नहीं, सुलह करने आया हूं . अच्छा, अलविदा!"

गराश बगीचे से बाहर भाग गया, और माय्या ने फाटक के पास उसे रहीम से यह कहते सुना:

"बेटा, मैं ट्रक की धुरियां लेने जा रहा हूं मेरी मां और बहन से कह देना कि हार्न की आवाज़ सुनते ही बाहर आ जायें ."

दिन-भर गरमी पड़ने पर भी घास अभी ठण्डी नहीं हो पायी थी, माय्या को आंसू बहाते हुए जमीन पर गिर पड़ने पर उसकी गरमी महसूस हुई।

११

जब लड़कों ने तेल्ली चाची से कहा कि अध्यक्ष ने उसे कार्यालय में बुलाया है, तो बुढ़ा घबरा गयी वह हमेशा बड़ी बहादुरी से रुस्तम के साथ झगड़ा करती थी, उस पर गला बैठ जाने तक चिल्लाती थी, इसके बावजूद वह उसके सामने कांपती थी। उसके कक्ष में दाखिल होने पर उसे अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हुआ. रुस्तम शान्त और बुझा-बुझा-सा था, जैसे स्तेपी में राख में दबा अलाव...

"केरेम कहां है?" उसने बिना किसी भूमिका के पूछा। "दोपहर के खाने के समय तक आ जायेगा? उसे यहां भेज देना।"

"कोई बुरी बात तो नहीं हुई, चाचा?" चाची का स्वर कांप उठा।

"हम उसे उसकी पुरानी जगह पर रखना और सारा पशुपालन फ़ार्म उसे सम्भलाना चाहते हैं।"

"देख लिया, चाचा, क्या हुआ।" चाची स्कर्ट सरसराती कुर्सी पर बैठ गयी। "तुमने खुद अपना दायां हाथ काट लिया और अब क्या बायां भी काट डालना चाहते हो?"

"बहन, मैं वैसे ही मारा गया।" रुस्तम ने हथेलियों में चेहरा भींच लिया। "आज तो मत रोदो।"

चाची का हृदय दयालु और स्नेहार्द्र था, उसने उसी क्षण रुस्तम को उस सब बुरे के लिए क्षमा कर दिया, जो उसने उसके बेटे के साथ किया था।

"ऐ, सुनो, छोड़ो इस तरह की बातें!" वह अपनी स्वाभाविक अशिष्टता से चिल्लायी। "मेरे बच्चों और पोतेपोतियों की कसम, सारे गांव को इकट्ठा करके झण्डा उठाकर हम जिला समिति चल पड़ेंगे, पर, बुढ़ऊ, तुम्हें बचाकर रहेंगे। तुम्हारा बाल भी बाका नहीं होने देंगे।"

तो यह नतीजा निकला सारी बातों का! मुझे लोग अब बुढ़ऊ कहने लगे हैं। जरा सोचिये तो सही तेल्ली चाची उसे संरक्षण देगी. . रुस्तम ने मुंह फेर लिया।

"शुक्रिया, बहन. इसकी जरूरत नहीं है। केरेभ को भेज देना"

उसने अपनी लाल हुई आंखें छिपाने के लिए कागजात में नजर गड़ा लीं।

आधा घंटे बाद कार्यालय से निकलकर अध्यक्ष ने सईस को भूरी घोड़ी पर काठी कसने को कहा। रुस्तम बड़ी फुर्ती से उछलकर घोड़ी पर सवार होकर उसे सरपट कूरा की ओर दौड़ा ले चला। उसका इरादा जाड़े की फसलें देखने और यह पता लगाने का था कि लवण-कच्छवाले टुकड़े का प्रक्षालन कैसा किया गया है। लेकिन मुख्य कारण यह नहीं था. काठी पर सवार होने से उसका चित्त प्रसन्न हो उठता था, और जब तेज घोड़ा सुनसान स्तेपी मे उसे लेकर सरपट दौड़ता था, ठण्डी हवा उसकी कटु स्मृतियों की तह को एक प्रकार से उड़ा देती थी। "कोई बात नहीं," रुस्तम बुदबुदा रहा था, "अभी रास्ता खुला है, सच्चा रास्ता. नराश और परेशान भी इस रास्ते से नहीं भटकेंगे। उनके लिए पिता से ज्यादा आसान होगा।" उसे जाड़े की फसलों के जमुरंदी खेत, भरपूर फसल की आशा जगाते नजर आने लगे। वृद्ध सन्तुष्ट हो गया` हां, बोवाई भी ढंग से की गयी है और सिंचाई भी शेरजाद का खेत है। शेरजाद बहुत अच्छा लड़का है, समझदार भी है और नेक भी। कितना अन्याय किया रुस्तम ने उसके साथ, उसकी बिलकुल भी कीमत नहीं समझी।

घोड़ी किनारे की तरफ मुड़ गयी। सूर्यास्त की ज्वालाएं प्रतिबिम्बित करती कूरा में वाकरेजी तरंगें उठ रही थीं, नदी के किनारे ठण्डक और ताजगी ज्यादा थी, और वृद्ध को साथ आराम से आ रही थी, उसकी गति था।

उसके पास उसके निकट सम्बन्धियों को नहीं आने दिया जा रहा था, लेकिन उसने विनती करके अपनी पत्नी और सराश से मिलने की अनुमति ले ली और बेटे से उसे सामूहिक फार्म के अध्यक्ष के पद से मुक्त करने का प्रार्थनापत्र बोलकर लिखवा लिया।

"अब मेरी तरफ से हस्ताक्षर भी कर दो," रुस्तम ने उससे कहा और सिर पर कम्बल ओढ़कर अपने आप से बोला "लो, बुड्ढ़, अब तुम्हारी नयी जिन्दगी शुरू हो गयी ..."

सामूहिक फार्म मे अफवाहे फैल रही थी कि पत्नी व पुत्र के अलावा माय्या भी बीमार से मिलने गयी थी। उसने खुद उसे अपने पास बुलवाया.. लेकिन किसी ने भी माय्या को वहा नही देखा था, इसलिए इस समाचार की सत्यता की पुष्टि करवाना असम्भव था। रुस्तम का प्रार्थनापत्र बेटा उसी दिन पार्टी की जिला समिति मे दे आया।

"यह किस्सा लम्बा है, कष्टदायक है और काफी सीमा तक स्वाभाविक भी है," कहते हैं जिला समिति के सचिव ने सराश से यह कहा था। "थोड़ा इतजार करेगे जब बुजुर्ग ठीक हो जाये, तभी इस पर विचार करेगे।"

और सामूहिक फार्म मे फिर अफवाहो का बाजार गरम हो गया। कुछ लोग यकीन दिलाने लगे कि जिला समिति जाच के निष्कर्षो की प्रतीक्षा कर रही है रुस्तम भी तो इस मामले मे फसा हुआ है, उसने सलमान, गूगे हुसैन और कारसामेद के साथ मिलकर सामूहिक फार्म का पैसा हड़पने की कोशिश की है। अभी तो देखना चाहिए कि जेल मे बद किये गये हुसैन और लेखाकार क्या कहते है। कुछ दावे के साथ कहते थे कि इस मामले म ज्यादा से ज्यादा उन लोगो को झिड़की दी जायेगी और रुस्तम-कीशी अपने पद पर बना रहेगा उसका दिल शीशे-सा साफ है, दोष उसका केवल इतना ही है कि उसने लफगो पर विश्वास किया। कुछ लोग कहते थे कि गलतियां की गयी हैं, बेशक बहुत गम्भीर गलतियां की गयी है, पर वृद्ध ने जो महान सेवाए की है, उन्हे भी नहीं भूलना चाहिए। उसे उसकी आयु के कारण पद से मुक्त कर देना चाहिए रुस्तम पेंशन पाने योग्य हो चुका है।

लेकिन यह कोई नहीं जानता था कि अस्पताल का दिन हुए, जिला समिति के ब्यूरो की बैठक के बाद शाम देर गये वृद्ध से अस्पताल मे मिलने गया था और उन्होंने काफी देर तक बड़े दिल से बात की थी।

असलान ने रुस्तम का दिल बहलाने और बातचीत का रुख दुनियादारी वातों की ओर मोडने की कितनी ही कोशिश क्यो न की, पर वृद्ध [illegible]बार 'नवजीवन' के भविष्य की बात छेड़ देता।

"मुझे अब इस बात की चिन्ता नही है कि मेरे सिर का बोझ उतर [illegible]ा, बल्कि इस बात की है कि सामूहिक फार्म किसी भरोसेमंद और [illegible]लमद आदमी को सौंपना चाहिए। और मैं सिफारिश करता हू—तुमने [illegible]ी सोचा भी न होगा—जैनब कुनियेवा के नाम की।"

साधारणतया शान्त रहनेवाला असलान भी आश्चर्यचकित रह गया।

"जैनब?!"

"बेशक।"

रुस्तम दिन-रात अपने उत्तराधिकारी के बारे मे सोचता रहता था, [illegible]ह मन में अब बिना किसी दुर्भाव के शेरजाद, नजफ और यहा तक कि [illegible]ज-जवान तेल्ली चाची के बारे मे भी सोचता रहा, पर उसने चुना कुलि-[illegible]वा को और वह अपने निर्णय से सन्तुष्ट था।

"दूसरे सामूहिक फार्म से?" असलान ने सावधानीपूर्वक उसे याद [illegible]देलाया।

"अरे, तुम भी क्या, वह है तो हमारे गाव की। श्रम-वीर है!" वृद्ध ने सख्ती से कहा। "अपने सामूहिक फार्म मे लौट आयेगी। और यह भी याद रखो, वह, वह मेरी शिष्या है," रुस्तम ने अन्त मे कहा और अपने आत्मसम्मान को बनाये रखने की चेष्टा की।

"अच्छा, अच्छा," असलान ने मजाक में कहा और कोई स्पष्ट उत्तर नहीं दिया।

इस प्रकार की अफवाहे और कानाफूसी से सकीना का चित्त और अधिक अशान्त हो उठा था।

गराश ने उसे कितना ही क्यो न समझाया कि उसे क्लब मे आयोजित सभा मे जाना चाहिए, पर मा ने दृढतापूर्वक कह दिया कि वह घर पर ही रहेगी।

"मुझे वहा जाने की क्या जरूरत है, लाडले, अगर मेरा मन ही नहीं करता?"

"मा, मेहरबानी करके मना मत करो। शिष्टाचार के नाते जाना चाहिए। लोग क्या सोचेंगे? समाजवादी प्रतियोगिता मे हम पीछे रह गये, प्रथम स्थान हमने 'लाल झण्डा' के लिए छोड़ दिया, तिस पर तुम,

शराफ़ की पत्नी, नहीं जाओगी? तुम्हें जाना चाहिए, वहाँ तुम्हें मौजूद रहना चाहिए। तुम ख़ुद जानती हो, भवन अभी तैयार नहीं है, अब तक दीवारों पर रंग नहीं हुआ है, बिजली नहीं है और कुम्हारखाना भी अभी पूरा नहीं बना है ... और सामूहिक किसानों ने सभा का आयोजन वहीं करने का निश्चय इसीलिए किया है, ताकि अब्बा को ख़ुशी हो।"

सकीना इन बातों से ख़ुश थी। मेम्नो चाची और प्रबन्ध समिति के दूसरे सदस्य किसी न किसी तरह संस्कृति-भवन को जल्दी से जल्दी दुरुस्त करने में जुटे हुए थे — क्योंकि यह स्तम्भ की सबसे प्रिय देन थी, — उनका यह मानकर चलना भी तर्कसंगत था कि नये भवन में सभा के आयोजन के समाचार से बीमार का उत्साह थोड़ा बढ़ जायेगा, उसे प्रसन्नता होगी।

"शुक्रिया, लाडले, मेरे लिए लोगों का आदर पाना ही काफ़ी है।"

"ख़ाली धन्यवाद से काम नहीं चलता, उठो और तैयार हो जाओ"

"मैं कहीं नहीं जाऊँगी।"

"अब्बा ने कहा है," शराफ़ ने अन्तिम दलील दी। "आज उन्होंने फिर याद दिलाया था बढ़िया कपड़े पहनकर जाओ और सारे परिवार के साथ सबसे आगे की क़तार में बैठना।"

सकीना बरबस मुस्करायी हाँ, ऐसी बात केवल उसका पति ही कह सकता है। प्रतियोगिता में क़ारा केरेमोग़लू की विजय को उसने धैर्यपूर्वक लिया और तुरन्त अगले मुक़ाबले में बदला लेने के सपने सजोते हुए अपनी तैयारी शुरू कर दी।

लेकिन फिर भी घर छोड़कर जाने का इसका कोई इरादा नहीं था उसके लिए लोगों की कुतूहली, बुरा चाहनेवाली और सहानुभूतिपूर्ण नज़रें सह पाना अत्यन्त कठिन था।

किसी ने फाटक खटखटाया, और सकीना का दिल धड़क उठा। यह फिर क्या हो गया? शराफ़ोग़लू और गोशातख़ा अपनी पत्नी के साथ अन्दर आये।

"हम आप लोगों को ले जाने के लिए आये हैं," मेलेक ख़ानम ने कहा।

पति के मित्रों और शत्रुओं की चिन्ताशीलता सकीना के हृदय को छू गयी: उसने आदतन गोशातख़ा की तरफ़ शक की नज़र से कनखियों से देखा...

मेनेक सकीना को एक तरफ ले जाकर बोली कि रुस्तम तेज़ी से स्वस्थ हो रहा है, उसका शरीर असाधारण रूप से स्वस्थ है। यह सच है कि उसका दिल कभी-कभी परेशान करता है, पर इतनी दुर्घटनाओं के बाद इसमे कोई आश्चर्य की बात नही है। अगर वह डाक्टरो की सलाह का पालन करते रहते, तो दो-एक हफ्ते मे उसे घर जाने की छुट्टी मिल जाती।

"क्या वह कहना नही मानते हैं?" सकीना मुस्करायी, हालांकि वह जानती थी कि उसके पति ने सारे जीवन मे किया ही यह है कि किसी का कहना नही माना।

"अरे, कहा मानते हैं!" मेनेक ने ज़ोर से कहा, ताकि सब सुन ले। "उन्हे अस्पताल के बाग मे एक घंटा टहलने की इजाज़त मिली थी, पर उन्होने क्या किया . ज़रा सोचिये तो सही, चहारदीवारी से बाहर निकलकर राजमार्ग पर एक ट्रक रोक लिया और जैसे गाउन और स्लीपर पहने थे, उसी हालत मे घर रवाना हो गये.. "

सकीना ने हाथ पर हाथ मारा।

"अच्छा हुआ कि नर्स ने यह सब तीसरी मंजिल की खिडकी से देख लिया और मेरे पास भागी आयी उन्हे वापस लाकर शर्मिंदा किया गया। बेशक दिल पर असर हुआ ही। सूई लगानी पडी.. "

"कैसे हिम्मत हुई उनकी डाक्टरो का कहना न मानने की?" सकीना ने हंसते हुए और रोते हुए भी आश्चर्य व्यक्त किया।

"अरे, उन्होने तो, चाची, बिना शर्माये हमसे कहा कि वह अपने को जेल मे बंद महसूस करते हैं। 'मुझे तो बस एक बार अपने घोडे पर काठी कसकर उसे कूरा तट पर सरपट दौडाने का मौका मिल जाये, फ़ौरन ठीक हो जाऊंगा,' ये उन्हीं के शब्द हैं।"

"मैं जानती हू रुस्तम-बेटो को!" सकीना दुःख मिश्रित गर्व के साथ मुस्करायी।

"और उसकी बात भी ठीक है," शराफ़ोगलू ने अपने मित्र का पक्ष लिया। "हरेवी की हवा फ़ौरन सारे रोग ठीक कर देती। आखिर वह मुग़ान मे पैदा और बड़ा हुआ है। आप लोगों को समझना चाहिए, यह आखिर मुग़ान है! .."

३

दूसरी मंजिल पर खिड़कियों में शीशे न लगाये जाने के कारण मुंह बाये-सी लग रही उजली इमारत के बाहर सजे-धजे लोगों की भीड़ लग गयी। उनमें लाठियां टेके खड़े सफेद-झक और सफाई से तराशी दाढ़ीवाले वृद्ध भी थे, सूट पहने हुए जवान मर्द भी थे, चहचहाती लड़कियां और बच्चों के साथ आयी स्त्रियां भी

सकीना भीड़-भाड़ से बचने के इरादे से किनारे ही खड़ी थी, उसे झुककर किये गये सलामों का गरिमा के साथ जवाब दे रही थी और सहेलियों के साथ धीरे-धीरे बातें कर रही थी।

"समय हो गया! समय! " भीड़ में से किसी विनोदी व्यक्ति ने [illegible]रे जोर से चिल्लाकर कहा और तुरन्त बैठकर अपने पड़ोसियों की ओट [illegible] छिप गया।

"हम 'लाल झण्डा' से आनेवाले मेहमानों का इंतजार कर रहे हैं।'

"सभा का उद्घाटन कौन करेगा?"

सबने एक दूसरे की तरफ देखा।

शराफोगल् ने सकीना के होंठ कांपने और आंखें नम होती देख ली [illegible]र शान्त स्वर में, मानो रोजमर्रा के कामों की बात हो रही हो, कहा

"बेशक, उपाध्यक्ष ही करेगा।"

भीड़ में शोर होने लगा कुछ दिन पहले सपाट सलमान भाग गया [illegible]। उसके घर के दरवाजों पर झाड़ें लटके टूटे हुए थे और जंगली हुई [illegible]मैना कभी उड़कर छत पर जा बैठती थी, तो कभी दूसरों के अहातों मारी-मारी फिरती रहती थी।

अचानक शान्ति छा गयी दरवाजे के पास हाथों में कैंची लिये पदभार [illegible] कारण लाल हुई जैनब कुलियेवा नजर आयी। सभी लोगों को याद आया [illegible] हाल ही में प्रबन्ध समिति ने जोरदार बहस के बाद उसकी उपाध्यक्ष पद पर नियुक्ति की पुष्टि कर दी थी।

यह सच है कि आरम्भ में किसी ने जिकेशार का नाम प्रस्तावित किया [illegible] वह बुद्धिमान, मेहनती लड़की है, हम काम चलाने में उसकी मदद [illegible]या करेंगे। लेकिन जिकेशार ने साफ इनकार कर दिया।

[illegible] सलमान ने दोनों की अनुमति [illegible]
[illegible]

"चलिये, हम अभी उसे उपाध्यक्ष नियुक्त किये देते हैं। फिलहाल उपाध्यक्ष। जरा आदी हो जायें, सब देख-समझ ले, काम संभाल ले, फिर आगे देखा जायेगा।"

जिला समिति के सचिव के प्रस्ताव का सभी ने समर्थन किया और जब मतदान हुआ, तो उसके विरोध में कोई मत नहीं दिया गया।

इसीलिए संस्कृति-भवन का उद्घाटन करने का सम्मान जैनब वुलियेवा को प्राप्त हुआ।

सकीना उसके नामजद किये जाने पर दिल में खुश हुई, उसे कोई सन्देह नहीं था कि वह अवश्य ही नये काम को संभाल लेगी।

अब वह मैत्री भाव से अन्तिम निर्देश दे रही जैनब की तरफ देख रही थी। वहां स्कूली बच्चे बड़े लैम्प हाथों में उठाये आ गये।

"बच्चो, दो लैम्प मंच पर रख दो।"

हां, हम तो जैनब खानम, लैम्प वहां रख चुके हैं।"

"मुझे मालूम है। अगर मैं कह रही हूं कि दो लैम्प और रखने चाहिए, तो इसका मतलब है, उन्हें रखना जरूरी है," जैनब ने अत्यन्त शान्त स्वर में कहा। "जितनी रोशनी होगी उतना ही अच्छा लगेगा।"

मोटरों का शोर सुनाई दिया, भीड़ ने बड़ी मुश्किल से उनके लिए रास्ता छोड़ा, भवन के सामने दो कारें और एक बंद गाड़ी आकर रुकी 'लाल झण्डा' से मेहमान आ पहुंचे थे।

सकीना की नजरें मेहमानों की भीड़ में माय्या को ढूंढने लगीं। वह 'पोब्येदा' कार से सब से आखिर में उतरती दिखाई दी। वह अपने फूले बदन को ढकनेवाली चौड़ी पोशाक पहने हुए थी, बदसूरत हो गयी थी और उसका चेहरा पीला और पिचका लग रहा था।

सकीना पुत्रवधू की तरफ लपकी, पर परेशान कोहनियों से रास्ता बनाती हुई उससे पहले माय्या के पास पहुंच गयी और उसका आलिंगन कर उसे चूम लिया।

लैम्प जल रहे थे, और भीड़ हाल में दाखिल हो गयी। बेटी और बहू के नजरों से ओझल हो जाने पर सकीना दीवार से सट गयी।

वह देर से आये सारे सामूहिक किसानों के अंदर जाने तक वैसे ही खड़ी रही, निस्सन्देह उसे देर हो गयी और वह शेरजाद की कांपती और घबरायी आवाज में प्रतियोगिता के परिणामों की घोषणा करते, 'लाल झण्डा'

दूसरी मंजिल पर खिड़कियों में शीशे न लगाये जाने के कारण मुँह बाये-सी लग रही उजली इमारत के बाहर सजे-धजे लोगों की भीड़ लग गयी। उनमें साफिया टँके खड़े सफेद-झक और सफाई से तराशी दाढ़ीवाले वृद्ध भी थे, सूट पहने हुए जवान मर्द भी थे, चहचहाती लड़कियाँ और बच्चों के साथ आयी स्त्रियाँ भी

सकीना भीड़-भाड़ से बचने के इरादे से किनारे ही खड़ी थी, उसे झुककर किये गये सलामों का गरिमा के साथ जवाब दे रही थी और सहेलियों के साथ धीरे-धीरे बातें कर रही थी।

"समय हो गया! समय! " भीड़ में से किसी विनोदी व्यक्ति ने पूरे ज़ोर से चिल्लाकर कहा और तुरन्त बैठकर अपने पड़ोसियों की ओट में छिप गया।

"हम 'लाल झण्डा' से आनेवाले मेहमानों का इंतज़ार कर रहे हैं।"

"सभा का उद्घाटन कौन करेगा?"

सबने एक दूसरे की तरफ देखा।

शराफोगलू ने सकीना के होंठ काँपते और आँखें नम होती देख ली और शान्त स्वर में, मानो रोजमर्रा के कामों की बात हो रही हो, कहा

"बेशक, उपाध्यक्ष ही करेगा।"

भीड़ में शोर होने लगा कुछ दिन पहले सपाट सलमान भाग गया था। उसके घर के दरवाजों पर आड़े तख्ते ठुके हुए थे और जंगली हुई मुर्गियाँ कभी उड़कर छत पर जा बैठती थी, तो कभी दूसरों के अहातों

गेहूं से कैसे रोटी पकेगी   यह बुरा दिन,
मैंने नहीं कभी भी देखा था, चक्कीवाले।

और उसकी सुन्दरता पर मोहित हुआ चक्कीवाला दुलहन को अधिक से अधिक समय तक अपने पास रोके रखने की कोशिश में उसे बड़े प्यार से मनाता है:

छाया हुआ है मेरे दिल में अंधेरा, खानम,
पानी नहीं है, नाली का तल है दिखता, खानम,
रोटी बिना भी आखिर जी लेंगे जैसे तैसे
दुख मेरा, आप का है बस एक जैसा, खानम।

"पार्टी संगठनकर्त्ता को ऐसे स्वांग रचना कुछ शोभा नहीं देता," सकीना को किसी की फुसफुसाहट सुनाई दी और उसने सोचा "मैंदक को उसकी टर्र-टर्र से पहचाना जा सकता है, जबकि यारमामेद के दोस्तों को उनके लोगों से नफरत करने से।"

उधर मंच पर याके सौजवाल तूफानी शक्ति के नृत्य में हवा में उड़ते रहे थे, उनके बीच में नजफ घूम रहा था, कूद रहा था, लगता था उसके मोटापे से उसकी फुर्ती और दक्षता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा था लेकिन तभी वस्त्र बदलकर आते ही शेरजाद वृत्त में कूद पड़ा और उसमें इतना पुरुष सुलभ आकर्षण था कि बहुत-सी युवतियां परेशान से मन-ही-मन डाह करने लगीं "अरे, कितनी नासमझ है, बेकार वक्त बरबाद कर रही है!"

हॉल में बुरसिया दीवारों से सटाई जाने लगीं, थके-हारे वादकारों ने 'न्यलबेको' और 'यल्ली'* की धुन छेड़ दी, केवल मेजबान ही नहीं मेहमान भी नाचने लगे: वे कारा केरेमोगलू को वृत्त में खींच लाये, गोशा नसा भी नहीं बच सका, उसे भी धकेलकर नाचने के लिए बाध्य कर दिया

गराश को साम्या कहीं नजर नहीं आयी। "क्या वह सचमुच रसम के बाद वापस चली गयी?" वह सोचकर दुखी हो उठा, उसे दुनिया में कोई दिलचस्पी नहीं रही। वह हॉल में अकेला एक सिगरेट पीकर धीरे धीरे अपने भूले और निरानन्द घर रवाना हो गया।

मेहमान वास्तव में जा रहे थे, कारा केरेमोगलू ने स्वागत व स्नेह के लिए धन्यवाद दिया और अपने यहां शरयोत्सव पर आने का निमंत्रण

---

*'न्यलबेको' और 'यल्ली'—आज़रबैजानी लोक-नृत्य।

"आयेंगे, आयेंगे," तेल्ली चाची ने वादा किया। "लेकिन यह उम्मीद छोड दो कि तुम्हारे लोग हमे नाच मे मात दे सकते हैं।"

"जब हमने पैदावार में मात दे दी, तो नाच मे भी मात देने की पूरी कोशिश करेंगे," कारा केरेमोगलू ने सोचा, पर सहृदय मुस्कान के साथ बोला

"अरी, बहन, सूत न कपास, फिर जुलाहो मे लट्ठमलट्ठा से क्या फायदा? आओ हमारे यहा, तुम्हारा सदा स्वागत है. "

मुख्यद्वार पर मिट्टी के तेल का लैम्प टिमटिमा रहा था, शरत्कालीन रात की काली चादर पूर्ववत् गाव के ऊपर तनी हुई थी, पर जिन्दादिल सगीत के सुर स्तेपी मे घरो व बगीचो के ऊपर गूज रहे थे। त्योहार अभी समाप्त नही हुआ था।

गराश अहाते मे घुसा। वहा सन्नाटा और अधेरा था, यहा तक कि अलसेशियन भी नही भौंका, पर बरामदे मे लैम्प जल रहा था – शायद मा लौट आयी थी।

लेकिन खाने का कमरा खाली था, बहन के कमरे का दरवाजा बंद था, गराश अपने कमरे मे गया और देहलीज़ पर जडवत् खडा रह गया

खिडकी के पास माय्या बैठी थी, लैम्प के प्रकाश मे उसके बाल सुनहले लग रहे थे, उसका पूर्णतया युवा मुख हल्के अधेरे मे सजीव हो उठा था। अपनी आखो पर विश्वास न कर पा रहे गराश ने उसके निकट आकर अपने दोनों हाथो मे उसका बर्फीला हाथ लेकर अपने होठो से लगा लिया।

"मेरी प्यारी माय्या!"

"चुप रहो [illegible] देखो, बिजली चमक रही है, जरूर तूफान आयेगा" माय्या ने कहा नही, केवल सोचा, पर गराश सब समझ गया और उसने निःशब्द माय्या को अपनी ओर खीच लिया।

सागर के ऊपर बिजली की लपटें रात के अधेरे को चीरती, अधेर[illegible] कभी ऊंची चट्टानो को, कभी तट की रेती को, तो कभी सब प्रकार को आलोकित करती आलोकित कर रही थी। तट के झुरमुटों का सरसराना [illegible]पवन का झोंका गाव के बागो तक आ पहुचा, वृक्षों के शीशों [illegible] लगा, और छत पर मोटी मोटी बूदे टप-टप गिरने लगीं

दूर पहाड़ मे घेरो मे घिर गई बाला और सगम मूसलाधार वर्षा [illegible] [illegible] कर रहे थे [illegible] मे लगभग बिलकुल [illegible] नहीं था [illegible]
[illegible] [illegible] रहे थे, और [illegible]

उतने सुखी, जितने कि श्रम को अपना जीवन अर्पित करनेवाले लोग.

खेतों के रास्तों में दूर-दराज के सामूहिक फार्मों से जीप में हवा के झोंके खाता जा रहा अमलान भी वर्षा की प्रतीक्षा कर रहा था, आगामी वर्ष की फसल के बारे में सोच रहा था, और उसे पूर्ण विश्वास था कि मुग़ान लोगों को ऐसा उपहार देकर निहाल कर देगा, जिसे उन्होंने सपने में भी नहीं देखा।

रुस्तम भी सो नहीं रहा था, अस्पताल के पतले गद्दे पर करवटें बदल रहा था। वह उठकर खिड़की के पास आया। बिजली की चमक को देखता, बादलों की गरज को ध्यानपूर्वक सुनता हुआ अपने जीवन के बारे में सोचने लगा।

और परिष्कारक बिजली कड़क उठी।

———

"आयेंगे, आयेंगे," तेल्नी चाची ने वादा किया। "लेकिन यह उम्मीद न करो कि तुम्हारे लोग हमें नाच में मात दे सकते हैं।"

"जब हमने पैदावार में मात दे दी, तो नाच में भी मात देने की पूरी कोशिश करेंगे," गराश केरेमोगलू ने सोचा, पर सहृदय मुस्कान के साथ बोला

"अरी, बहन, सूत न कपास, फिर जुलाहों में लट्ठमलट्ठा से क्या फायदा? आओ हमारे यहां, तुम्हारा सदा स्वागत है"

मुख्यद्वार पर मिट्टी के तेल का लैम्प टिमटिमा रहा था, शरत्कालीन रात की काली चादर पूर्ववत् गांव के ऊपर तनी हुई थी, पर जिन्दादिल संगीत के सुर स्तेपी में घरों व बगीचों के ऊपर गूंज रहे थे। त्योहार अभी समाप्त नहीं हुआ था।

गराश अहाते में घुसा। वहां सन्नाटा और अंधेरा था, यहां तक कि अलसेशियन भी नहीं भौंका, पर बरामदे में लैम्प जल रहा था—शायद मां लौट आयी थी।

लेकिन खाने का कमरा खाली था, बहन के कमरे का दरवाजा बंद था, गराश अपने कमरे में गया और देहलीज पर जड़वत् खड़ा रह गया

खिड़की के पास माय्या बैठी थी, लैम्प के प्रकाश में उसके बाल सुनहले लग रहे थे, उसका पूर्णतया युवा मुख हल्के अंधेरे में सजीव हो उठा था। अपनी आंखों पर विश्वास न कर पा रहे गराश ने उसके निकट आकर अपने दोनों हाथों में उसका बर्फीला हाथ लेकर अपने होठों से लगा लिया।

"मेरी प्यारी माय्या!"

"चुप रहो देखो, बिजली चमक रही है, जरूर तूफान आयेगा "
माय्या ने कहा नहीं, केवल सोचा, पर गराश सब समझ गया और उसने निःशब्द माय्या को अपनी ओर खींच लिया।

सागर के ऊपर बिजली की लपकें रात के अंधेरे को [illegible]
थे कभी खड़ी चट्टानों को, कभी तट की [illegible] को
को आलोकित करती अठखेलियां कर
[illegible] का झोंका गांव के बागों तक
[illegible], और छत पर मोटी-मोटी बूंदें
[illegible] के ढेरों में गिरे
[illegible] रहे थे। अंधेरे में

पाठकों से

रादुगा प्रकाशन इस पुस्तक के अनुवाद और डिजाइन संबंधी आपके विचारों के लिए आपका अनुगृहीत होगा। आपके अन्य सुझाव प्राप्त करके भी हमें बड़ी प्रसन्नता होगी। कृपया हमें इस पते पर लिखिये :

रादुगा प्रकाशन,
१०, नवाई स्ट्रीट,
ताशकन्द, सोवियत संघ

रादुगा प्रकाशन

हिन्दी मे छपनेवाली पुस्तकें

पुण्य पक्षी, उज़्बेक लेखकों की कहानियां

इस कहानी-संग्रह मे पुरानी पीढ़ी के लेखकों के साथ-साथ युवा पीढ़ी के उन लेखकों की कहानियां भी शामिल की गई हैं, जिन्होंने अभी-अभी उज़्बेक साहित्य मे पदार्पण किया है। विभिन्न विषयों एवं विभिन्न शैलियों मे लिखी ये कहानियां उज़्बेक-गद्य के उस असाधारण उत्कर्ष को प्रतिबिम्बित करती हैं, जिससे यह विधा अपने अस्तित्व के अपेक्षाकृत अल्पकाल (अर्द्धशताब्दी से कुछ अधिक) से होकर गुज़री।

प्रस्तुत संग्रह मे हमीद गुल्याम, रहमत फ़ैज़ी, अस्कद मुख़्तार, मिरमुह्सिन, गफ़ूर गुल्याम, आदिल याकूबोव, प्रिम्कुल क़ादीरोव आदि दूसरे सोवियत उज़्बेक लेखकों की कहानियां शामिल की गई है।

, रो रही माएं बडी मुश्किल मे मुस्कराकर उनकी तरफ देख रही थी।
ब्बे में मा ने माय्या को बर्थ पर बिठाकर उसे वह फोटो दिया और बोली

"सभालकर रखना, बेटी! यह तुम्हारे लिए मा-बाप की आखिरी
निशानी है।"

गाडी चल दी, मा प्लेटफार्म पर रह गयी, यह इतना भयानक लगा
कि रुलाई से माय्या का गला रुध गया, वह खिडकी के शीशे पर घूसे
मारने लगी। उधर मा डब्बे के पीछे भागती हुई चिल्ला रही थी

"मत रो, मेरी आखो के नूर, हम मिलेगे!"

रेलगाडी लेनिनग्राद के बच्चो को लेकर कजाखस्तान पहुच गयी। माय्या
ने वहा पढाई जारी रखी और जब वह छठी कक्षा मे थी, युद्ध समाप्त
हो गया, लेकिन लेनिनग्राद से उसे मा का कोई समाचार नही मिला।

युद्ध के बाद उसे कीरोवाबाद ले जाया गया, वहा वह अनाथालय मे
रही। उसने हाई स्कूल पास किया और उसके बाद कृषि सस्थान मे प्रवेश
ले लिया।

वह फोटोग्राफ – मा-बाप की आखिरी निशानी – उसकी किसी यात्रा
मे खो गया।

६

गराश मास लेकर माय्या के पास गया।

"जल्दी आओ, जल्दी!" तख्त पर माय्या के पास लेटी पेरशान ने
उससे कहा। "भाभी कितना दिलचस्प किस्सा सुना रही है!"

पेरशान ने गराश को तख्त पर बिठाकर चारो ओर गुदगुदे तकिये
लगा दिये।

"किस्सा किस बारे मे है?"

"मेरी जिन्दगी के बारे मे," माय्या ने खिन्न मुस्कान के साथ कहा।
"तुम उसे बहुत पहले सुन चुके हो "

"इस वक्त बात किसी और ही के बारे मे हो रही है," पेरशान ने
मुस्कराते हुए उसे टोक दिया। "कि मैं शादी करू या बुढापे तक बिना
ब्याह किये तुम्हारे पास बैठी रहू।"

"शादी, शादी..." सकीना ने किसी तरह माय्या का ध्यान बटाने
के लिए बेटी को खिझाया। "मुझे तो उस ससुर पर रहम आता है, जिसके

थे, रो रही माएं बड़ी मुश्किल से मुस्कराकर उनकी तरफ देख रही थी। डब्बे में मा ने माय्या को बर्थ पर बिठाकर उसे वह फोटो दिया और बोली

"सभालकर रखना, बेटी! यह तुम्हारे लिए मा-बाप की आखिरी निशानी है।"

गाड़ी चल दी, मा प्लेटफार्म पर रह गयी, यह इतना भयानक लगा कि रुलाई से माय्या का गला रुध गया, वह खिड़की के शीशे पर घूसे मारने लगी। उधर मा डब्बे के पीछे भागती हुई चिल्ला रही थी

"मत रो, मेरी आखो के नूर, हम मिलेंगे।"

रेलगाड़ी लेनिनग्राद के बच्चो को लेकर कज़ाखस्तान पहुच गयी। माय्या ने वहा पढ़ाई जारी रखी और जब वह छठी कक्षा मे थी, युद्ध समाप्त हो गया, लेकिन लेनिनग्राद से उसे मा का कोई समाचार नहीं मिला।

युद्ध के बाद उसे कीरोवाबाद ले जाया गया, वहा वह अनाथालय मे रही, उसने हाई स्कूल पास किया और उसके बाद कृषि सस्थान मे प्रवेश ले लिया।

वह फ़ोटोग्राफ़ – मा-बाप की आखिरी निशानी – उसकी किसी यात्रा में खो गया।

६

गराश मांस लेकर माय्या के पास गया।

"जल्दी आओ, जल्दी!" तख्त पर माय्या के पास लेटी पेरशान ने उससे कहा। "भाभी कितना दिलचस्प क़िस्सा सुना रही है!"

पेरशान ने गराश को तख्त पर बिठाकर चारो ओर गुदगुदे तकिये लगा दिये।

"क़िस्सा किस बारे मे है?"

"मेरी ज़िन्दगी के बारे में," माय्या ने खिन्न मुस्कान के साथ कहा। "तुम उसे बहुत पहले सुन चुके हो "

"इस वक़्त बात किसी और ही के बारे म हो रही है," पेरशान ने मुस्कराते हुए उसे टोक दिया। "कि मैं शादी करू या बुढ़ापे तक बिना ब्याह किये तुम्हारे आसरे बैठी रहू।"

"शादी, शादी..." सकीना ने किसी तरह माय्या का ध्यान बटाने के लिए बेटी को झिड़का। "मुझे तो उस ससुर पर रहम आता है, जिसे

न जाने क्यो, उदास रही अपने पुराने, आरामदेह आशियाने को छोड़कर जाने का अफसोस था या युद्ध के निकट आने की अनुभूति, कोई बता नही सकता . .

माय्या को वन के रास्ते से कार मे सनोबरो से विदा लेते हुए यात्रा करने मे बहुत आनन्द आया . हमे भूलना नही, प्यारे सनोबरो! स्टेशन पर पिता को अपने साथियो से विदा लेते हुए देखना भी कितना आनन्ददायक था। सावला मुगानवासी उन लोगो मे सबसे लम्बा और सुगठित था। पीछे छूटते जा रहे वनो, खेतो और गाँवो को देखते हुए उमरा दिल बाग-बाग हो उठता था।

लेनिनग्राद मे भी वे आराम से रहे। माय्या पहली कक्षा मे पढ़ती थी और उसे अपने स्कूल की कापियो मे पाच मे से पाच अक मिलने पर हर्ष होता था। लेकिन एक साल भी न बीता था कि युद्ध छिड गया।

युद्ध का आरम्भ भी जैसा कि माय्या को लगा, बहुत ही दिलचस्प था। बालिका को अच्छे कपड़े पहनाये गये, उसके बालो को सुन्दर ढंग से कघी करके बड़े-से गुलाबी फीते से बाध दिया गया, लेकिन उसे नदाई समारोह मे या थियेटर मे नही बल्कि फ़ोटो-स्टूडियो मे ले जाया गया। वहा वह अपनी मा की बढ़िया पोशाक को मसोसती उसके घुटनो पर बैठे रही, जब कि पिता घरमर करती पेटियो मे कसी अपनी नयी वर्दी मे माय्या का हाथ पकड़े खड़े थे। फोटोग्राफर के "मुस्कराइये" कहने पर न पिता के चेहरे पर उल्लासपूर्ण मुस्कान आ सकी, न ही मां के। फिर तो माय्या का चेहरा खिसा हुआ था।

पिता वह फ़ोटो बिना देखे उसी शाम को मोर्चे के लिए रवाना हो गये। और शरद् मे जब स्कूल मे पढ़ाई शुरू हुई, मां को सन्देश मिला, वह रो पड़ी, मुह के बल सोफे पर गिर पड़ी और उसने माय्या को बता दिया कि उसके पिता नही रहे हैं।

"तुम मत रोओ, मा, मत रोओ," माय्या उसको सान्त्वना देने लगी। "पापा जल्दी ही फासिस्टो का खात्मा करके वापस लौट आयेंगे! और अपनी मुर्गाबी मैं खुद रग कर दूगी, तुम मत रोओ मत."

लेकिन पिता नही लौटे। मां दिन रात अस्पताल मे रहती, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

थे, रो रही माएं बड़ी मुश्किल से मुस्कराकर उनकी तरफ देख रही थीं।
डब्बे में मां ने माय्या को बर्थ पर बिठाकर उसे वह फोटो दिया और बोली
"सभालकर रखना, बेटी! यह तुम्हारे लिए मां-बाप की आखिरी निशानी है।"

गाड़ी चल दी, मां प्लेटफार्म पर रह गयी, यह इतना भयानक लगा कि रुलाई से माय्या का गला रुध गया, वह खिड़की के शीशे पर घूंसे मारने लगी। उधर मां डब्बे के पीछे भागती हुई चिल्ला रही थी

"मत रो, मेरी आखों के नूर, हम मिलेंगे!"

रेलगाड़ी लेनिनग्राद के बच्चों को लेकर कज़ाखस्तान पहुंच गयी। माय्या ने वहां पढ़ाई जारी रखी और जब वह छठी कक्षा में थी, युद्ध समाप्त हो गया, लेकिन लेनिनग्राद से उसे मां का कोई समाचार नहीं मिला।

युद्ध के बाद उसे कीरोवाबाद ले जाया गया, वहां वह अनाथालय में रही, उसने हाई स्कूल पास किया और उसके बाद कृषि संस्थान में प्रवेश ले लिया।

वह फ़ोटोग्राफ़ – मां-बाप की आखिरी निशानी – उसकी किसी यात्रा में खो गया।

६

गराश मास लेकर माय्या के पास गया।

"जल्दी आओ, जल्दी!" तख्त पर माय्या के पास लेटी परशान ने उससे कहा। "भाभी कितना दिलचस्प क़िस्सा सुना रही है!"

परशान ने गराश को तख्त पर बिठाकर चारों ओर गुदगुदे तकिये लगा दिये।

"क़िस्सा किस बारे में है?"

"मेरी ज़िन्दगी के बारे में," माय्या ने खिन्न मुस्कान के साथ कहा।

"तुम उसे बहुत पहले सुन चुके हो।"

"इस वक्त बात किसी और ही के बारे में हो रही है," परशान ने मुस्कराते हुए उसे टोक दिया। "कि मैं शादी करूं या बुढ़ापे तक बिना ब्याह किये तुम्हारे घर में बैठी रहूं।"

"शादी, शादी..." सवीना ने किसी तरह माय्या का ध्यान बटाने के लिए बेटी को चिढ़ाया। "मुझे तो उस ससुर पर रहम आता है, जिसके

न जाने क्यों, उदास रही। अपने पुराने, आरामदेह घासलेटों को छोड़ जाने का अफसोस था या युद्ध के निकट आने की अनुभूति, कहा नहीं सकता ..

माय्या को वन के रास्ते से कार में सनोवरों से विदा लेते हुए सफर करने में बहुत आनन्द आया हमें भूलना नहीं, प्यारे सनोवरो! प्लेटफार्म पर पिता को अपने साथियों से विदा लेते हुए देखना भी कितना आनन्ददायक था। सांवला मुगानवासी उन लोगों में सबसे लम्बा और सुर्ख था। पीछे छूटते जा रहे वनों, खेतों और गाँवों को देखते हुए उसका दिल बाग-बाग हो उठता था।

लेनिनग्राद में भी वे आराम से रहे। माय्या पहली कक्षा में पढ़ती थी और उसे अपने स्कूल की कापियों में पांच में से पांच अंक मिलने पर गर्व होता था। लेकिन एक साल भी न बीता था कि युद्ध छिड़ गया।

युद्ध का आरम्भ भी जैसा कि माय्या को लगा, बहुत ही दिलचस्प था बालिका को अच्छे कपड़े पहनाये गये, उसके बालों को सुन्दर ढंग से कंघी करके बड़े-से गुलाबी फीते से बांध दिया गया, लेकिन उसे नये समारोह में या थियेटर में नहीं बल्कि फ़ोटो-स्टूडियो में ले जाया गया। वहां वह अपनी मां की बढ़िया पोशाक को मसोसती उसके घुटनों पर बैठी रही, जब कि पिता चर्रमर्र करती पेटियों में कसी अपनी नयी वर्दी में माय्या का हाथ पकड़े खड़े थे। फोटोग्राफर के "मुस्कराइये" कहने पर पिता के चेहरे पर उल्लासपूर्ण मुस्कान आ सकी, न ही मां के। फिर भी माय्या का चेहरा खिला हुआ था।

पिता वह फोटो बिना देखे उसी शाम को मोर्चे के लिए रवाना हो गये। और शरत् में जब स्कूल में पढ़ाई शुरू हुई, मां को सन्देश मिला, वह रो पड़ी, मुंह के बल सोफे पर गिर पड़ी और उसने माय्या को बताया कि उसके पिता नहीं रहे हैं।

"तुम मत रोओ, मां, मत रोओ," माय्या उसको सान्त्वना देने लगी। "पापा जल्दी ही फासिस्टों का खात्मा करके वापस लौट आयेंगे और अपनी जुराबें मैं खुद रफू कर लूंगी, तुम बस रोओ मत "

लेकिन पिता नहीं लौटे। मां दिन रात अस्पताल में रहती, शत्रु के वायुयान शहर पर अग्नि-बम बरसाते, शहर में जगह-जगह आग भड़क उठती, ऐसे में एक दिन माय्या को रेल्वे-स्टेशन ले जाया गया। वहां प्लेटफार्म पर सामान की बोरियां बांधे और हाथों में पोटलियां लिये बहुत-से बच्चे

रह रही थी कि पति कब बोलता है पर उसे चुप देख उलाहनाभरे स्वर में बोली

"वाह, कौशी, तुम्हारे मुह मे ऐसी चुभती बात निकली कैसे!"

"तुम्हे चाहिए था कि बहू को तहज़ीब सिखाती। तभी ठीक रहेगा। उसे सलीके मे पेश आना चाहिए। हमारे घर में अपने तौर-तरीके हैं। अगर वह उन्हें नही मानना चाहती, तो जहा मर्ज़ी हो जा सकती है!"

"ऐसी क्या बेहूदगी की है बहू ने?" सकीना ने हैरत से पूछा।

"गैर लोगो के सामने, मेरे तुम्हारे सामने अपने पति को चूमना—तुम्हारे ख्याल मे यह अच्छी बात है?"

सकीना को उसे याद दिलाने की इच्छा हुई कि कोई पच्चीस बरस पहले जवान रुस्तम ने, कौशी ने नही, सिर्फ़ रुस्तम ने मागवाड़ी मे सब ईमानदार लोगो के सामने उसका आलिंगन कर उस पर चुम्बनो की बौछार कर दी थी, पर वह चुप कर गयी। वह हर हालत मे कुछ नही समझेगा कौशी!

"वे जवान हैं, उनका खून ज़ोर मारता है, अगर वे ग़लती करते भी हैं, तो उन्हें माफ़ कर देना चाहिए। मैं और तुम तो, कौशी, अपनी ज़िन्दगी जी चुके हैं, अब उनका वक्त आया है। हमे किसने हक़ दिया है मामूली-सी बातों के लिए इनकी ज़िन्दगी मे ज़हर घोलने का? हमारा फ़र्ज़ है, सबर से काम लेना। यह बूढ़ो का फ़र्ज़ है, पर कोई क्या करे। अगर हमारे घर में लड़ाई-झगडे शुरू हो गये, तो बेटा-बहू हमसे नाता ही तोड़ लेंगे।"

"तोड़ ले—उन्हीं का बुरा होगा!" रुस्तम ने निर्ममता से टिप्पणी की। "दोज़ख ख़ुदा का है, पर यह घर मेरा है, अगर मैं ग़लती नही कर रहा हूं। घोड़ी रास्ते मे नाल खो दे, तो चलने में दर्द तो उसी को होगा, रास्ते को इससे क्या!"

१०

नराज़ की नीन्द सुबह जल्दी खुल गयी। कमरे में धुधली रोशनी थी, कोहरे में लिपटी मुग़ान के ऊपर पौ फटनी ही शुरू हुई थी।

उसने सिर के पीछे दोनों हाथ रखकर अगड़ाई ली और सोचा कि आज बड़े खेत मे बोआई शुरू हो जायेगी। नराज़ोगलू ने उसकी टोली को

घर में ऐसी सफ़ाई कर जाऊँगी! इसपर शर्त लो मुझे सारे घर [illegible]
भी नहीं पहचान लेगा ..."

"भाड़ में जायें सारे दूल्हे!" पेरशान भड़क उठी। "मैं उसे [illegible]
भी [illegible] पर [illegible] और अगर मैंने शादी की, तो किसी [illegible]
करूँगी, ताकि कोई ससुर मेरी ज़िन्दगी न उड़ा सके!"

सकीना हमदर्दी भरे ढंग से मुस्करा दी और पेरशान की तरफ़ देखकर
बोली

"मेरा कोई भाई होता, तो बिना किसी हिचकिचाहट के तुम्हारी उस[illegible]
शादी कर देती! तुम अच्छी हो, बहुत अच्छी हो।"

"अरे, भाई नहीं है, तो क्या हुआ, किसी जान-पहचानवाले को[illegible]
खोज दो," पेरशान हँस पड़ी। "बस ससुर नहीं होना चाहिए! य[illegible]
मेरी पहली शर्त है। और शादी जल्दी से जल्दी तय करवाओ!"

"हाय, ऐसी जल्दी क्या पड़ी है?" सकीना ने आश्चर्य से पूछा।
"अभी-अभी तो तुम क़सम खा रही थीं कि बुढ़ापे तक कुमारी बैठी र[illegible]
गी।"

"अरे, हा, तुम्हारे जैसा बुढ़ हो, तो उससे कभी शादी न करूँ!"
पेरशान ने मज़ाक़ में कहा।

"लगता है, सब ठीक हो गया है," सकीना ने राहत की साँ[illegible]
लेकर सोचा, पल्ले के किनारे से नम आँखें पोंछी और खाने के कमरे [illegible]
चली गयी।

मेज़ पर रुस्तम बैठा था, थुलथुल, गुस्से में, जब कि सलमान दरवा[illegible]
के पास खड़ा था।

"यानी कल शाम को टोली-नायकों को जमा करके दुबारा वसन्त [illegible]
बोवाई की तैयारी की रिपोर्ट सुनेंगे। हा, और यह ध्यान रखना कि लेखा
परीक्षक सुबह ही पशुपालन फार्म के लिए रवाना हो जायें," रुस्तम क[illegible]
रहा था।

"जो हुक्म। और क्या हुक्म है?"

"अभी बस इतना ही। अब जाओ।"

सलमान ने रुस्तम और सकीना को सिर नवाया — सकीना ने जवाब
में बेरुखी से सिर हिलाया — और बाहर निकल गया।

रुस्तम ने पत्नी को जैसे देखा ही नहीं, वह एकाग्रचित्त हो, आराम
से, बिना आँखें उठाये पाइप साफ़ करने लगा, जब कि सकीना इन्तज़ार

कर रही थी कि पति कब बोलता है पर उसे चुप देख उलाहनाभरे स्वर मे बोली·

"वाह, कौशी, तुम्हारे मुह मे ऐसी चुभती बात निकली कैसे!"

"तुम्हे चाहिए था कि बहू को तहज़ीब सिखाती। तभी ठीक रहेगा। उसे सलीके से पेश आना चाहिए। हमारे घर मे अपने तौर-तरीके हैं। अगर वह उन्हें नही मानना चाहती, तो जहा मर्जी हो जा सकती है!"

"ऐसी क्या बेहूदगी की है बहू ने?" सकीना ने हैरत से पूछा।

"ग़ैर लोगो के सामने, मेरे तुम्हारे सामने अपने पति को चूमना—तुम्हारे ख्याल में यह अच्छी बात है?"

सकीना को उसे याद दिलाने की इच्छा हुई कि कोई पच्चीस बरस पहले जवान रुस्तम ने, कौशी ने नही, सिर्फ रुस्तम ने सागवाड़ी में सब ईमानदार लोगों के सामने उसका आलिंगन कर उस पर चुम्बनो की बौछार कर दी थी, पर वह चुप कर गयी। वह हर हालत मे कुछ नही समझेगा . कौशी!

"वे जवान हैं, उनका खून ज़ोर मारता है, अगर वे ग़लती करते भी हैं, तो उन्हे माफ़ कर देना चाहिए। मैं और तुम तो, कौशी, अपनी ज़िन्दगी जी चुके हैं, अब उनका वक्त आया है। हमे किसने हक़ दिया है मामूली-सी बातो के लिए इनकी ज़िन्दगी मे जहर घोलने का? हमारा फ़र्ज़ है, सबर से काम लेना। यह बूढो का फर्ज है, पर कोई क्या करे। अगर हमारे घर मे लड़ाई-झगड़े शुरू हो गये, तो बेटा-बहू हमसे नाता ही तोड़ लेंगे।"

"तोड़ लें—उन्ही का बुरा होगा!" रुस्तम ने निर्ममता से टिप्पणी की। "दोज़ख खुदा का है, पर यह घर मेरा है, अगर मैं ग़लती नहीं कर रहा हूं। घोड़ी रास्ते मे नाल खो दे, तो चलने मे दर्द तो उसी को होगा, रास्ते को इससे क्या!"

१०

गराण की नीन्द सुबह जल्दी खुल गयी। कमरे मे धुधली रोशनी थी, कोहरे मे लिपटी मुग़ान के ऊपर पौ फटनी ही शुरू हुई थी।

उसने सिर के पीछे दोनो हाथ रखकर अंगड़ाई ली और सोचा कि आज बड़े खेत में जोताई शुरू हो जायेगी। शराफ़ोग्लू ने उसकी टोली को

पर मैं ऐसी मज़ाक बन जाऊँगी! अगर मर्द तो मुझे [illegible] भी नहीं [illegible] देखा ..."

'भाड़ में जायें सारे दूल्हे!" परेशान कह उठी। "मैं उनसे फिर भी [illegible] पर थूकूँ! और [illegible]। शादी की, तो किसी [illegible] रखूँगी, ताकि कोई ससुर मेरी जिन्दगी न उजाड़ दे!"

गाल्या हमदर्दी भरी आँखों से मुस्करा दी और मराल की तरफ देखकर बोली।

"मेरा कोई भाई होता, तो बिना किसी हिचकिचाहट के तुम्हारी उससे शादी कर देती। तुम अच्छी हो, बहुत अच्छी हो।"

"अरे, भाई नहीं है, तो क्या हुआ, किसी जान-पहचानवाले का ढूँढ दो," परेशान हँस पड़ी। "बस ससुर नहीं होना चाहिए! यह मेरी पहली शर्त है। और शादी जल्दी से जल्दी तय करवाओ!"

"जानम, ऐसी जल्दी क्या पड़ी है?" मराल ने आश्चर्य से पूछा। "अभी-अभी तो तुम कह रही थी कि बुढ़ापे तक कुँआरी बैठी रहोगी।"

"अरे, हां, तुम्हारे जैसा बुद्धू हो, तो उससे कभी शादी न करूँ!" परेशान ने मज़ाक में कहा।

"लगता है, सब ठीक हो गया है," सकीना ने राहत की सांस लेकर सोचा, पल्ले के किनारे से नम आँखें पोंछी और खाने के कमरे में चली गयी।

मेज पर रुस्तम बैठा था, भुलभुल, गुस्से में, जब कि सलमान दरवाजे के पास खड़ा था।

"यानी कल शाम को टोली-नायकों को जमा करके दुबारा वसन्त की बोवाई की तैयारी की रिपोर्ट सुनेंगे। हां, और यह ध्यान रखना कि लेखा परीक्षक सुबह ही पशुपालन फार्म के लिए रवाना हो जाये," रुस्तम कह रहा था।

"जो हुक्म। और क्या हुक्म है?"

"अभी बस इतना ही। अब जाओ।"

सलमान ने रुस्तम और सकीना को सिर नवाया—सकीना ने जवाब में बेरुखी से सिर हिलाया—और बाहर निकल गया।

रुस्तम ने पत्नी को जैसे देखा ही नहीं, वह एकाग्रचित्त हो, आराम से, बिना आँखें उठाये पाइप साफ़ करने लगा, जब कि सकीना इन्तज़ार

कर रही थी कि पति कब बोलता है पर उसे चुप देख उलाहनाभरे स्वर मे बोली -

"वाह, कौशी, तुम्हारे मुह से ऐसी चुभती बात निकली कैसे!"

"तुम्हें चाहिए था कि बहू को तहज़ीब सिखाती। तभी ठीक रहेगा। उसे सलीक़े से पेश आना चाहिए। हमारे घर मे अपने तौर-तरीक़े हैं। अगर वह उन्हें नही मानना चाहती, तो जहां मर्ज़ी हो जा सकती है!"

"ऐसी क्या बेहूदगी की है बहू ने?" सकीना ने हैरत से पूछा।

"ग़ैर लोगो के सामने, मेरे तुम्हारे सामने अपने पति को चूमना — तुम्हारे ख्याल मे यह अच्छी बात है?"

सकीना को उसे याद दिलाने की इच्छा हुई कि कोई पच्चीस बरस पहले जवान रुस्तम ने, कौशी ने नही, सिर्फ रुस्तम ने सासबाडी मे सब ईमानदार लोगो के सामने उसका आलिंगन कर उस पर चुम्बनों की बौछार कर दी थी, पर वह चुप कर गयी। वह हर हालत मे कुछ नही समझेगा कौशी!

"वे जवान हैं, उनका ख़ून ज़ोर मारता है, अगर वे गलती करते भी हैं, तो उन्हे माफ कर देना चाहिए। मैं और तुम तो, कौशी, अपनी ज़िन्दगी जी चुके हैं, अब उनका वक्त आया है। हमें किसने हक दिया है मामूली-सी बातो के लिए इनकी ज़िन्दगी मे ज़हर घोलने का? हमारा फ़र्ज़ है, सबर से काम लेना। यह बूढ़ों का फर्ज़ है, पर कोई क्या करे। अगर हमारे घर मे लड़ाई-झगड़े शुरू हो गये, तो बेटा-बहू हमसे नाता ही तोड़ लेंगे।"

"तोड़ ले — उन्ही का बुरा होगा!" रुस्तम ने निर्ममता से टिप्पणी की। "दोज़ख़ ख़ुदा का है, पर यह घर मेरा है, अगर मैं ग़लती नही कर रहा हूं। घोड़ी रास्ते मे नाल खो दे, तो चलने मे दर्द तो उसी को होगा, रास्ते को इससे क्या!"

१०

गराश की नीन्द सुबह जल्दी खुल गयी। कमरे में धुंधली रोशनी थी, कोहरे मे लिपटी मुग़ान के ऊपर पौ फटनी ही शुरू हुई थी।

उसने सिर के पीछे दोनों हाथ रखकर अंगड़ाई ली और सोचा कि आज बड़े खेत मे जोताई शुरू हो जायेगी। शराफ़ोग्लू ने उसकी टोली को

घर मे ऐसी नटखट बहू जायेगी! अक्लमंद मर्द तो तुम्हें अपने घर के पास भी नही फटकने देगा "

"भाड में जायें सारे दूल्हे!" पेरशान कह उठी। "मैं उनके बिना भी जिन्दा रह लूगी। और अगर मैंने शादी की, तो किसी अकेले से करूगी, ताकि कोई ससुर मेरी खिल्ली न उडा सके!"

माय्या डबडबाती आखो से मुस्करा दी और गराश की तरफ देखकर बोली

"मेरा कोई भाई होता, तो बिना किसी हिचकिचाहट के तुम्हारी उससे शादी कर देती। तुम अच्छी हो, बहुत अच्छी हो।"

"अरे, भाई नही है, तो क्या हुआ, किसी जान-पहचानवाले को ही खोज दो," पेरशान हस पडी। "बस ससुर नही होना चाहिए! यह मेरी पहली शर्त है। और शादी जल्दी से जल्दी तय करवाओ!"

"खानम, ऐसी जल्दी क्या पड़ी है?" गराश ने आश्चर्य से पूछा। "अभी-अभी तो तुम कसम खा रही थी कि बुढापे तक कुंआरी बैठी रहूंगी।"

"अरे, हा, तुम्हारे जैसा बुद्धू हो, तो उससे कभी शादी न करूं!" पेरशान ने मजाक मे कहा।

"लगता है, सब ठीक हो गया है," सकीना ने राहत की सास लेकर सोचा, पल्ले के किनारे से नम आखें पोंछी और खाने के कमरे मे चली गयी।

मेज पर रुस्तम बैठा था, मुलयुल, गुस्से मे, जब कि सलमान दरवाजे के पास खडा था।

"यानी कल शाम को टोली-नायकों को जमा करके दुबारा बसन्त की बोवाई की तैयारी की रिपोर्ट सुनेंगे। हा, और यह ध्यान रखना कि लेखा-परीक्षक सुबह ही पशुपालन फार्म के लिए रवाना हो जायें," रुस्तम कह रहा था।

"जो हुक्म। और क्या हुक्म है?"

"अभी बस इतना ही। अब जाओ।"

सलमान ने रुस्तम और सकीना को सिर नवाया—सकीना ने जवाब मे बेरुखी से सिर हिलाया—और बाहर निकल गया।

रुस्तम ने पत्नी को जैसे देखा ही नहीं, वह एकाग्रचित्त हो, आराम से बिना आखें उठाये पाइप साफ करने लगा, जब कि सकीना इन्तजार

कर रही थी कि पति कब बोलता है पर उसे चुप देख उलाहनाभरे स्
मे बोली

"वाह, कौशी, तुम्हारे मुह से ऐसी चुभती बात निकली कैसे
"तुम्हे चाहिए था कि बहू को तहज़ीब सिखाती। तभी ठीक रहेग
उसे सलीके से पेश आना चाहिए। हमारे घर मे अपने तौर-तरीके
अगर वह उन्हें नही मानना चाहती, तो जहा मर्जी हो जा सकती है।"

"ऐसी क्या बेहूदगी की है बहू ने?" सकीना ने हैरत से पूछा।

"ग़ैर लोगो के सामने, मेरे तुम्हारे सामने अपने पति को चूमना
तुम्हारे ख्याल मे यह अच्छी बात है?"

सकीना को उसे याद दिलाने की इच्छा हुई कि कोई पच्चीस व
पहले जवान रुस्तम ने, कौशी ने नही, सिर्फ रुस्तम ने सारवाडी में
ईमानदार लोगो के सामने उसका आलिंगन कर उस पर चुम्बनो की बौछ
कर दी थी, पर वह चुप कर गयी। वह हर हालत मे कुछ नही समझेगा
कौशी!

"वे जवान हैं, उनका खून ज़ोर मारता है, अगर वे गलती क
भी हैं, तो उन्हें माफ कर देना चाहिए। मैं और तुम तो, कौशी, अप
ज़िन्दगी जी चुके हैं, अब उनका वक़्त आया है। हमे किसने हक़ दिय
मामूली-सी बातो के लिए इनकी ज़िन्दगी मे ज़हर घोलने का? हम
फ़र्ज़ है, सबर से काम लेना। यह बूढ़ो का फर्ज़ है, पर कोई क्या क
अगर हमारे घर में लड़ाई-झगड़े शुरू हो गये, तो बेटा-बहू हमसे नाता
तोड़ लेंगे।"

"तोड़ ले—उन्ही का बुरा होगा!" रुस्तम ने निर्ममता से टिप्प
की। "दोज़ख़ खुदा का है, पर यह घर मेरा है, अगर मैं ग़लती न
कर रहा हू। घोड़ी रास्ते में नाल खो दे, तो चलने मे दर्द तो उसी
होगा, रास्ते को इसमे क्या!"

१०

गराश की नीन्द सुबह जल्दी खुल गयी। कमरे मे धुधली रोशनी थ
कोहरे मे लिपटी मुग़ान के ऊपर पौ फटनी ही शुरू हुई थी।

उसने सिर के पीछे दोनों हाथ रखकर अगड़ाई ली और सोचा
आज बड़े खेत में ओवाई शुरू हो जायेगी। शराफ़ोगलू ने उसकी टोली

घर में ऐसी नटखट बहू जायेगी। अक्लमंद मर्द तो तुम्हें अपने घर के पास भी नहीं फटकने देगा.. "

"भाड़ में जायें सारे दूल्हे!" पेरशान कह उठी। "मैं उनके बिना भी जिन्दा रह लूंगी। और अगर मैंने शादी की, तो किसी अकेले से करूंगी, ताकि कोई ससुर मेरी खिल्ली न उड़ा सके!"

माय्या डबडबाती आंखों में मुस्करा दी और गराश की तरफ देखकर बोली.

"मेरा कोई भाई होता, तो बिना किसी हिचकिचाहट के तुम्हारी उससे शादी कर देती। तुम अच्छी हो, बहुत अच्छी हो।"

"अरे, भाई नहीं है, तो क्या हुआ, किसी जान-पहचानवाले को ही खोज दो," पेरशान हंस पड़ी। "बस ससुर नहीं होना चाहिए। यह मेरी पहली शर्त है। और शादी जल्दी से जल्दी तय करवाओ!"

"खानम, ऐसी जल्दी क्या पड़ी है?" गराश ने आश्चर्य से पूछा "अभी-अभी तो तुम कसम खा रही थी कि बुढ़ापे तक कुंआरी बैठी रहूंगी।"

"अरे, हां, तुम्हारे जैसा बुड्ढा हो, तो उससे कभी शादी न करूं!" पेरशान ने मजाक में कहा।

"लगता है, सब ठीक हो गया है," सकीना ने राहत की सांस लेकर सोचा, पल्ले के किनारे से नम आंखें पोंछीं और खाने के कमरे चली गयी।

मेज पर रुस्तम बैठा था, चुलबुल, गुस्से में, जब कि सलमान दरवाजे के पास खड़ा था।

"यानी कल शाम को टोली-नायकों को जमा करके दुबारा बसन्त की बोवाई की तैयारी की रिपोर्ट सुनेंगे। हां, और यह ध्यान रखना कि लेखा परीक्षक सुबह ही पशुपालन फ़ार्म के लिए रवाना

रहा था।

"जो हुक्म। और क्या हुक्म

"अभी बस इतना ही।

सलमान ने रुस्तम और

में बेरुखी से सिर हिलाया—

रुस्तम ने पत्नी को जैसे

के बिना आंखें उठाये पाइप

कर रही थी कि पति कब बोलता है पर उसे चुप देख उलाहनाभरे स्वर में बोली·

"वाह, कौशी, तुम्हारे मुह से ऐसी चुभती बात निकली कैसे!"

"तुम्हें चाहिए था कि वहू को तहज़ीब सिखाती। तभी ठीक रहेगा। उसे सलीक़े से पेश आना चाहिए। हमारे घर में अपने तौर-तरीके हैं। अगर वह उन्हे नही मानना चाहती, तो जहा मर्ज़ी हो जा सकती है!"

"ऐसी क्या बेहूदगी की है वहू ने?" सकीना ने हैरत से पूछा।

"ग़ैर लोगो के सामने, मेरे तुम्हारे सामने अपने पति को चूमना—तुम्हारे ख्याल में यह अच्छी बात है?"

सकीना को उसे याद दिलाने की इच्छा हुई कि कोई पच्चीस बरस पहले जवान रुस्तम ने, कौशी ने नही, सिर्फ रुस्तम ने मागबाडी में सब ईमानदार लोगो के सामने उसका आलिंगन कर उस पर चुम्बनो की बौछार कर दी थी, पर वह चुप कर गयी। वह हर हालत में कुछ नहीं समझेगा... कौशी!

"वे जवान हैं, उनका ख़ून ज़ोर मारता है, अगर वे ग़लती करते भी हैं, तो उन्हे माफ़ कर देना चाहिए। मैं और तुम तो, कौशी, अपनी ज़िन्दगी जी चुके हैं, अब उनका वक़्त आया है। हमे किसने हक़ दिया है मामूली-सी बातो के लिए इनकी ज़िन्दगी में ज़हर घोलने का? हमारा फ़र्ज़ है, सबर से काम लेना। यह बूढ़ो का फ़र्ज़ है, पर कोई क्या करे। अगर हमारे घर में लड़ाई-झगड़े शुरू हो गये, तो बेटा-वहू हमसे नाता ही तोड़ लेगे।"

"तोड़ ले—उन्ही का बुरा होगा!" रुस्तम ने निर्ममता से टिप्पणी की। "दोज़ख़ ख़ुदा का है, पर यह घर मेरा है, अगर मैं ग़लती नहीं कर रहा हूं। ... रास्ते में नाल खो दे, तो चलने में दर्द तो उसी को क्या!"

... कमरे में धुंधली रोशनी थी,
ही शुरू हुई थी। .
... अंगड़ाई ली और सोचा कि
। नराफ़ोमफ़ू में उसकी टांगी को

लगभग सौ हेक्टेयर जमीन को दुबारा जोतने का काम सौंपा था। ऐसे उसमें तो जाड़े की फसल के प्रचुर फूट भी चुके हैं, फिर भी न ज क्यों उस भूखण्ड को वसन्तकालीन जोताई की योजना में शामिल कर लि गया है ... ग़ैर, शामिल कर ही लिया गया है, तो यही सही, यह ऊपरवालों का काम है। ट्रैक्टरचालकों को तो जल्दी योजना, अपना पूरा करना चाहिए, उसकी अधिपूर्ति करनी चाहिए और पेट्रोल की ब करनी चाहिए।

उसे बीती शाम, मारया का किस्सा और सकीना के शब्द याद आये, जो उसने खड़े-खड़े दरवाजे की ओट में सुने थे. "दुःखी मत होओ बेटी, मुझे हमेशा के लिए अपनी मा की जगह समझो!"

लेकिन जब नवविवाहित अकेले रह गये और रुस्तमोव खानदान घर ही नहीं, सारा गांव रात्रि की नीरवता में डूब गया, मारया ने स्वर में पति से पूछा

"आखिर इन सब बातों का नतीजा क्या निकलेगा?"

गराश ने सिर झुका लिया, कोई जवाब नहीं दिया, हालांकि उसे स्पष्ट हो चुका था कि पिता से अलग होकर अपना घर बनाने का सम आ गया है।

वह बिना आवाज किये कपड़े और जुर्राब पहन, ताकि पत्नी कहीं जाग न जाये, बरामदे में निकल गया, वहां उसने बूट पहने और अलमारी से रोटी, पनीर और मक्खन निकाल लिये। वह यह सोचता हुआ सीढ़ियों से पंजों के बल उतरा कि घर में सब सो रहे हैं, लेकिन अहाते में निकलने पर अचानक पिता को देखकर किंकर्तव्यविमूढ़ हो उठा।

उसका पिता नीचे पहनी जानेवाली कमीज और मुलायम जूते पहने सोच में डूबा धूसर आकाश को ताकता अहाते के बीचोंबीच खड़ा था, बिना बनी दाढ़ी में सफ़ेद बाल चमक रहे थे।

रुस्तम लगभग पूरी रात नहीं सो पाया। शुरू में तो उसे तकिये पर सिर रखते ही झपकी आ गयी, पर अचानक किसी ने उसका कंधा पकड़ा और झझोड़कर जगा दिया। रुस्तम करवटें बदलता रहा, उठता, पानी पीता, कमरे में चहलकदमी करता और फिर लेट जाता, लेकिन उसकी पलकें फिर न लग सकीं।

जिसने उसे जगाया, वह कठोर स्वर में बोला: "तुम्हें सोने का हक

ही है। तुम्हें अपनी ज़िन्दगी और क़िस्मत के बारे में सोचना चाहिए।"
आख़िर मुझे सोने का हक़ क्यों नहीं है?" रुस्तम को आश्चर्य हुआ।
मैं ईमानदार आदमी हूँ, मैंने कभी चुराई हुई रोटी नहीं खायी, मेरी
री ज़िन्दगी मेहनत करते और चिन्ता करते बीती है।" "हां, तुम चोर
ही हो," उसके अदृश्य सम्भाषी ने उसके साथ सहमति व्यक्त की।
लेकिन यह काफ़ी नहीं है। तुम्हें लोगों से बिलकुल प्यार नहीं है। तुम्हारा
ल पत्थर का-सा हो गया है। लोग तुमसे कतराकर निकल जाने की
शिश करते हैं।" "नहीं, मुझसे सिर्फ़ वही कतराता है, जिसके मन में
ल है।" "झूठ है। माम्या के मन में ज़रा भी मैल नहीं है। कहीं चरवाहा
रेम तुम्हारा अध्यक्ष का पद तो नहीं सभालना चाहता?" "अगर लेखा-
रीक्षण से यह सिद्ध हो गया कि वह निर्दोष है, तो मैं सबसे पहले उससे
थ मिलाऊगा। वह की बात कुछ और ही है ..." "लेकिन तुमने ख़ुद
खा था· केरेम की पत्नी बीमार है, बच्चे गदगी में और ठण्ड में बिना
माल के जी रहे हैं। आख़िर इसमें उनका क्या दोष है? अगर तुम्हारी
रशान, तुम्हारी लाडली, तम्बू में फटे गद्दे पर ऐसे ही बेहोश पड़ी होती?
ब तुम घबराये न? ..."

रुस्तम भोर होने तक अदृश्य जासूस से बहस करता रहा, जिसे उसके
विन की मामूली से मामूली बातें और मन में छिपे गुप्त से गुप्त विचार
क अत्यन्त आश्चर्यजनक रूप से मालूम थे, और जब खिड़कियों में उजाला
आ, वह रज़ाई एक ओर पटककर अहाते में निकल आया। उसे यह रात
र कौन धिक्कारता रहा है? उसका अन्तःकरण?

काठ की सीढ़ियां चरमराने लगीं, गराश नज़र आया, उसने जाने-
हचाने ढग से आदरपूर्वक पिता के साथ दुआ-सलाम की।

"मैं तुम्हारा इन्तज़ार ही कर रहा था," रुस्तम ने कहा और सफ़ेद
रोंवाले भयभीत चूज़े का पीछा कर रहे रगबिरंगे मुर्गे की ओर इशारा
रके बोला. "आज शाम को ही इस लडाके को काटकर देग में चढ़ा
ना! चूज़ों की नाक में दम कर दिया इसने, छोटे मुर्गों की कलगियों को
ोंच मार-मारकर लहू-लुहान कर दिया। पक्का बटमार है।"

बेटे ने सक्षेप में कहा: "जी, ठीक है," उसने बड़ी ख़ुशी से नुकीले
जों रूपी बरछियों और कलगी रूपी जंगी टोप से लैस योद्धा को शू करके
र भगा दिया:

"मौत आ जाये तुझे! .."

गराम ने देखा कि पिता कुछ कहना चाहता है। लेकिन कुछ
चाहता नहीं है, उसे धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करनी चाहिए।

और गमगुम गराम ने यूं ही कह दिया.

"गाड़ी लेकर जरा खेतों में चले जाओ। मेरेम की बीवी बीमार
उसे अस्पताल पहुंचा दो।"

गराम को चाहिए था कि पिता को याद दिला दे कि एक दो
जोताई शुरू होनेवाली है, लेकिन उसने चुपचाप शेड की चाबी ले ली
जिसमें मोटर खड़ी थी।

नौवाँ परिच्छेद

१

"तेल्ली चाची, कुछ गा दो, ऐसा कि दिल खुश हो जाये!"
ने अनुरोध किया।

चाची ने जवाब भी नही दिया, कुरते का किनारा उठाकर स्कर्ट
उड़स लिया और काम-काजी लहजे मे गिज़ेतार से पूछा

"कहा से शुरू करें, उपटोनीनायिका?"

वह अध्यक्ष की बेटी को यह स्पष्ट कर देना चाहती थी कि
मे वे काम करने आयी हैं, न कि दिल बहलाने।

"जहा उगते सूरज की किरणें पड रही हैं, वही से शुरू करते हैं।"
गिज़ेतार ने क्षितिज से खिसकते आ रहे और अपनी स्वर्णिम, पर अभी
तक प्रखर न हुई किरणो से मुगान के विशाल वक्ष को आलोकित कर र
आग्नेय-लोहित सूरज की तरफ देखकर कहा।

रगबिरगी छीट के कुरते पहने हुई लड़कियों ने बेलचे सभाल लिये
और नालियों के किनारे-किनारे जमीन खोदने लगी, जहां से ट्रैक्टर नही
निकल सकता था।

पेरश हूं तो

"तेर

होना चाहिए था – कधे पर साज लटकाती और गाव-गांव घूमक
से लोगो का दिल खुश करती।"

"मेरा जमाना तो गुजर गया," चाची बुदबुदायी। "मैं बुढा ग
और दुनिया मुझे चैन से नहीं जीने देती है।"

पेरशान ने बेलचा जमीन में गाड दिया और भागकर चाची के प
उस पर चुम्बनो की बौछार कर दी।

"इनकार मत करो मुझे, गा दो न!"

"छोडो भी। मेरा दिल दुख रहा है..."

तेल्ली चाची उपटोली मे सबसे बड़ी थी, लडकिया उसका आ
ती थी, अपना सुख-दुःख उसके साथ बाटती थी, वह उन्हे हमे
द्धिमत्तापूर्ण सलाहें दिया करती थी, जो सच कहा जाये, बहुत कम मा
ती थीं। जब वह प्रसन्न होती, तो लडकियों को रोचक क़िस्से-कहानि
नाकर उनका दिल बहलाती थी और साथ ही यह भी अवश्य जोड दे
ी कि वह उन्हें मनोरजन के लिए नही बल्कि नसीहत के तौर पर सुना
।

चाची की जिन्दगी आसानी से नही कटी थी, लेकिन उसे इतना उद
किसी ने इससे पहले कभी नही देखा था। लड़कियो से रहा न जा सक
वे बेलचे पटककर तेल्ली को घेरकर खड़ी हो गयी और पूछने लगी कि
क्या हुआ।

"बेहतर होगा मत पूछो।" चाची ने रंग उडे रूमाल के कोने से अ
पोंछी। "मेरे बच्चे," वह काली दाढ़ीवाले अपने बेटे केरेम को ब
कहती थी, "की हालत बहुत बुरी है: बीवी बीमार है, बच्चो की स
नही हो पा रही है। छोटी-सी गारायोज जुडवां बच्चों को
संभाले

। तुम चाहो, तो अब्बा से कह
आयेंगे... चाहो, तो खुद

रास्ता क्या पूछना!
चाहती! बच्चे पर इ
का सेवा-परीक्षण
के मास पर हात

था। अब यहा भी जाच-समिति जाच करे, तो भी कोई [illegible]
नहीं मिल पायगी।''

चाची के शब्द परेशान को चुभ गये। वह अपने पिता पर [illegible]
का मातम नहीं कर सकती थी। उसका यह ही [illegible] ज़िन्दगी
अपने अधीनस्थ की जाच क्या न करे? इसका मतलब है, [illegible]
गम्भीर बात है पर उसे चाची पर भी दया आ रही थी। [illegible]
भौंहें सिकोड़े काम में जुट गयी। अन्य लड़कियों ने भी अपना-अप[illegible]
उठा लिया।

एक घंटे बाद जब सूरज काफी ऊपर चढ़ गया, थकी हुई
ने नाली के किनारे तिरपाल बिछा लिया और उस पर आराम
गयीं। कोई रोटी चबाती हुई बोतल से दूध के घूंट पी-पीकर गले
उतार रही थी, कोई झपकी ले रही थी, कोई गीत गुनगुना र[illegible]
परेशान ने किनारे पर लेटकर अंगड़ाई ली और हाथ सिर के नी[illegible]
आखें मूद लीं। उसे बुरा लगा कि तेल्ली ने उसके पिता के बारे
द्वेषपूर्ण बातें कहीं। परेशान, निस्सन्देह, स्वय भी अकसर पिता [illegible]
रहती थी, पर उसका विचार था कि उसकी आलोचना करने क[illegible]
केवल उसे अकेली को ही है, वह भी अपने घरवालों के बीच।

दूर से आती मोटरों का शोर सुनाई दिया, खोदी हुई ज़मी[illegible]
को कदमों से नाप रही गिज़ेतार ने हथेली की ओट से स्तेपी [illegible]
देखा।

"कहीं जाच-समिति हुई तो? उठो, उठो!" तेल्ली चाची [illegible]
"नहीं तो शेरज़ाद की झिड़की पड़ जायेगी!" और उसने स[illegible]
उठकर बेलचा सभाल लिया।

हालांकि जाच-समिति के लिए निरीक्षण करने को वहां [illegible]
नहीं था, लड़कियों ने गिज़ेतार के इशारे पर एक साथ अपने-अप[illegible]
सभाल लिये।

खेत के दूसरे छोर पर, जहा से राजमार्ग निकलता था, दो [illegible]
व एक 'मस्क्विच' कारें दिखाई दीं। कुछ लोग मोटरों में से [illegible]
खोदे हुए टुकड़े के पास आये। गिज़ेतार ने आखों पर पूरा ज़ोर दे[illegible]
और उनमें सुगठित शेरज़ाद को पहचानकर ठहाका मारकर हंस [illegible]

"वहा सचमुच टोली-नायक मौजूद है! तुम, तेल्ली चाची, [illegible]
पहचान गयीं? लगता है दिल से दिल को खबर मिल जाती है!"

लड़कियां मुंह पर रूमाल दबाकर हंस पड़ीं, पर पेरशान ने नटखट अंदाज के साथ कहा.

"तुमने भी खूब कही! चाची तो बस टोली-नायक का भला करके ईनाम पा लेना चाहती हैं ."

चाची ने झल्लाकर थूक दिया—कैसी बातूनी है!—उसने पूरी ताकत से बेलचा ज़मीन में गड़ाकर मिट्टी का बहुत बड़ा ढेला उलट दिया, उसे पांवों से तोड़ दिया और केवल इसके बाद तनकर बोली:

"हां, भला करना चाहती हूँ! मैं नहीं छिपाती। लेकिन तुम्हें इससे क्या? लड़का बहुत भला है, अक्लमंद है, एक नज़र में लड़कियों के दिल जीत लेता है! अगर मैं इसेक साल छोटी होती, तो तुमसे उसे छीन लेती "

पेरशान ने तिरस्कारपूर्वक कहा

"बड़ी खुशी से! ले लो इस हीरे को, कोई आंसू नहीं बहायेगा।"

चाची ने सिर हिला दिया।

"अरी, इससे बेहतर तुम्हें कहां मिलेगा, अंधी खानम? बाप जैसा तो तुम्हारे कोई पल्ले नहीं पड़ेगा। चुनने में नखरे करती, तो कुछ हाथ नहीं आयेगा। बसन्त के फूल जैसा खूबसूरत लड़का है! और उसका स्वभाव कितना अच्छा है! उसका मन शीशे-सा साफ़ है। ऐसे आदमी को प्यार हो जाये, तो बीवी को हाथों में उठाये फिरे "

लड़कियां लगन से खोदती रहीं, पर धीरे-धीरे हंसती हुई कानाफूसी भी करती रहीं।"

"अरी, चाची, अगर तुम दिल के सारे मामलों में दखल रखती हो, तो फिर पन्द्रह बरस से विधवा क्यों बैठी हो?" पेरशान भी पीछे नहीं रही।

"इससे तुम्हें कोई मतलब नहीं, बात बदलो मत, अध्यक्ष की बेटी।" चाची ने शान्तिपूर्वक उत्तर दिया। "देखो, कहीं बाप ऐसी नखरीली बेटी को सपाट सलमान के पल्ले न बांध दे: कहेगा यही तुम्हारा दूल्हा है।"

पेरशान सकपका गयी, वह मुंह बाये खड़ी रह गयी, उधर मिजेतार ने भी अपनी सखी को नहीं बख्शा और आग में घी डाल दिया

"सलमान आखिर किस मामले में बुरा है? मर्द तो मर्द ही होता है..."

के हाथों में मेहनत करते-करते घट्ठे पड़ गये हैं, वह हर साल मुग़ान
जमीन पर कपास की खेती करती है और उसे सलमान के पद की
की लालसा भी नहीं है।

पेरशान हर मामले में पिता पर विश्वास करने की आदी हो चुकी
। वह उससे लड़ लेती थी, अक्सर रूठती रहती थी, लेकिन उस पर
श्वास वह अपनी मा से भी ज्यादा करती थी। पेरशान उन लोगों को
र करती थी, जिनका पिता आदर करता था और उनसे घृणा करती
, जिनसे वह दिल से नफरत करता था। लेकिन सकीना आखिर यूं ही
सलमान को बरदाश्त नहीं कर पाती है, फिर गराश की भौंहे भी उसे
ने पर से देखते ही सिकुड़ जाती हैं

पेरशान सोच में इस तरह डूब गयी कि उसे फौरन पता न चल सका
चाची कब बेलचे का सहारा लेकर अपना अभी-अभी रचित गीत गा
ती

> वह उतरता आता है नीचे की तरफ रेवड़,
> ज़ोर-ज़ोर मिमियाता आ रहा है परबत से।
> बेवफा से करती हो दोस्ती अगर तो फिर
> बच नहीं सकोगी तुम, जान लो, मुसीबत से!

पेरशान गुस्सा हो उठी'

"अरी, तेल्ली चाची, आखिर मेरे अब्बा तुम्हें फूटी आखो भी क्यों
हीं भाते है?"

"तुम खुद अदाज़ लगाओ। मेरे पास ओहदा कोई नहीं है,—यानी
मुझे हटाकर वह दूसरे को नही लगा सकता। मैं धोखाधड़ी नहीं करती,—
यानी मुझे ताना वह नही दे सकता। केरेम को काम से हटा सकता है?
खुदा सेहत बख्शे तुम्हें, चाचा, हम भूखों नही मरेंगे। वह सारी जिन्दगी
चरवाहा रहा है, चरवाहा ही रहेगा। रुस्तम ने कभी मेरा बुरा नहीं
किया है और कर भी नहीं सकता। और मैं उसे पसद इसलिए नहीं करती,
क्योंकि वह लोगों से दूर हो गया है, उन पर रहम नहीं करता, उनका
खयाल नहीं रखता! और सराट सलमान को उसने बेकार अपना नजदीकी
बना लिया है, यह बात गांठ बाध लेना, लड़की!" और तेल्ली ने अर्थपूर्ण
मुद्रा में होंठ भींच लिये।

पेरशान उदास हो उठी। इसका मतलब है माय्या के बारे में मनगढ़त बातें फैलायी जा रही हैं। भाई पर दया आनी है उसे मालूम पड़ गया, तो वह अंदर ही अंदर घुलने लगेगा। उसे कुम्मैत घोड़े का सरपट दौड़कर उनके अहाते में आकर रुकना और उस पर से खुशी से खिल उठी माय्या का कूदकर उतरना याद हो आया। लेकिन उसके अब्बा तो उनके साथ-साथ घोड़े पर आ रहे थे फिर माय्या को किस बात का दोषी ठहराया जा रहा है? पेरशान ने पूरे जोर से, ताकि सारी सहेलियां सुन लें, कहा

"छि, चाची, अगर पके बालोंवालियां ऐसे अफवाहें फैलाने लगें, तो फिर हम बेचारियां इस दुनिया में कैसे जी सकेंगी? आखिर सलमान और माय्या के साथ-साथ मेरे अब्बा भी तो घोड़ी पर आ रहे थे।" और उसने लड़कियों पर विजयपूर्ण दृष्टि डाली।

"बेटी, अफवाहें मैं नहीं गढ़ती हूं," तेल्ली ने ठण्डी सांस ली, "मैं तो जिस भाव खरीदती हूं, उसी भाव बेच देती हूं। यारमामेद बता रहा था . तुम्हारा कहना बिलकुल सच है कि तुम्हारे अब्बा उनके साथ-साथ पशुपालन फार्म से आ रहे थे। लेकिन फार्म पर तो वे दोनों एक ही घोड़े पर सवारी करते पहुंचे थे।"

पेरशान को इस बारे में कुछ मालूम नहीं था और वह लज्जित हो उठी, लेकिन गिजेतार ने कह दिया कि तेल्ली चाची को शर्म आनी चाहिए। चाहे माय्या पूरे महीने सलमान के साथ स्तेपी में सवारी करती रहे, इसमें ऐसी बात ही क्या है? अगर पति और पत्नी एक दूसरे पर विश्वास करते हैं, तो गैर लोगों को उनके मामलों में टांग अड़ाने की कोई जरूरत नहीं होनी चाहिए।

सब चुप हो गये। लड़कियां बिना सिर उठाये बड़े मनोयोग से जमीन खोदती और ढेले तोड़ती रहीं और बीच-बीच में कुतूहलवश यदा-कदा अभी तक जाड़े की फसल के टुकड़े पर घूमते अपरिचित लोगों की ओर भी नजर उठाकर देखती रहीं। अब उन लोगों के बीच शेरजाद और रुस्तम को आसानी से पहचाना जा सकता था।

अचानक शेरजाद दल से अलग होकर लड़कियों की ओर बढ़ा। पेरशान महसूस करने लगी कि उसका चेहरा लाल हो रहा है, जब कि तेल्ली चाची अपनी हाल की हार का बदला लेने के इरादे से कह उठी

"अध्यक्ष की बेटी के गाल तो पहाड़ी के पोस्ते के फूलों जैसे लाल हो उठे हैं। आखिर किस कारण से?"

"कौन-सी बात गाठ बाध लूं?" पेरशान ने खीजकर पूछा।
"यही कि गलमान अपने हितकारी की बहू को अपने घोडे पर सर
राता है, उसके सामने इठलाता है. यही बात गाठ बाध लो।"
पेरशान बेलचा जमीन पर पटककर द्वेषपूर्ण विनम्रता मे बोली:
"छि-छि! पके बालोवाली औरत, दादी होते हुए भी सारे गा
अफवाहे फैलाती रहती हो। तुम्हारी जैसी औरतो के कारण ही बे
शेरजाद नृत्य-मण्डली नही बना पा रहा है। लडके और लडकी के
आकर एक दूसरे का हाथ थामने की देर है कि झूठी-सच्ची बाते
शुरू हो जाती हैं। तुम्हारे खयाल से लडकी हलवा है क्या, जो
झट से गटक जायेगा? "
सहेलियो ने उत्साहपूर्वक पेरशान का समर्थन किया। अगर
चाची से सहानुभूति दिखाती थी और अध्यक्ष की बेटी का मजाक
थी, तो अब सब पेरशान का पक्ष लेने लगी
"बिलकुल ठीक कहा, पेरशान, बिलकुल ठीक!"
"तेल्ली सरीखी औरतों के कारण लडकिया अपने सगे भाई
गाव मे निकलने डरती हैं—फौरन बुराई शुरू हो जाती है!"
"हमारे हाथ-पाव डर की जजीर मे जकडे हुए हैं। "
गिजेतार भी बोल उठी
"और तुम अपनी जजीरे तोडकर फेंक दो। बनाने दो बाते
जब तक उनकी जबानें कतरनी-सी चलती हैं। हां, पर और
अनाबा अपने काम के बारे मे मत भूलो!" उसने ऊंचे स्वर
सडकिया कुछ चुप हो गयी, पर उनमे से सबसे तेज मे
और वह कटु स्वर मे बोली
"[illegible], बेशक, किसी की बात सुनने को तैयार नहीं
लेकिन ऐसे मर्द भी हैं, जो पत्नियों को घर मे बद करके
तुमने फना से बात क्यो की, फना को देखकर क्यों मुस्करा
साथ-साथ क्यो चल रही थी? और गुस्सा बढ जाये, तो
पीट ही डाले।"
"तुम भी उस मरदार जवाब दो, मुंहतोड जवाब!"
[illegible] करो। [illegible] उस्ताद [illegible], फिर [illegible]
[illegible] तेसी औरत पर दया नहीं आयेगी, जो [illegible]

पेरशान उदास हो उठी। इसका मतलब है माय्या के बारे में मनगढ़त बातें फैलायी जा रही हैं। भाई पर दया आती है उसे मालूम पड़ गया, तो वह अंदर ही अंदर घुलने लगेगा। उसे कुम्मैत घोड़े का सरपट दौड़कर उनके अहाते में आकर रुकना और उस पर से ख़ुशी से खिल उठी माय्या का कूदकर उतरना याद हो आया। लेकिन उसके अब्बा तो उनके साथ साथ घोड़े पर आ रहे थे । फिर माय्या को किस बात का दोषी ठहराया जा रहा है? पेरशान ने पूरे ज़ोर से, ताकि सारी सहेलियां सुन लें, कहा

"छि, चाची, अगर पके बालोंवालियां ऐसे अफ़वाहें फैलाने लगें, तो फिर हम बेचारियां इस दुनिया में कैसे जी सकेंगी? आख़िर सलमान और माय्या के साथ-साथ मेरे अब्बा भी तो घोड़ी पर आ रहे थे।" और उसने लड़कियों पर विजयपूर्ण दृष्टि डाली।

"बेटी, अफ़वाहें मैं नहीं गढ़ती हूं," तेल्ली ने ठण्डी सांस ली, "मैं तो जिस भाव ख़रीदती हूं, उसी भाव बेच देती हूं। यारमामेद बता रहा था, तुम्हारा कहना बिलकुल सच है कि तुम्हारे अब्बा उनके साथ-साथ पशुपालन फ़ार्म से आ रहे थे। लेकिन फ़ार्म पर तो वे दोनों एक ही घोड़े पर सवारी करते पहुंचे थे।"

पेरशान को इस बारे में कुछ मालूम नहीं था और वह लज्जित हो उठी, लेकिन गिर्जेतार ने कह दिया कि तेल्ली चाची को शर्म आनी चाहिए। चाहे माय्या पूरे महीने सलमान के साथ स्तेपी में सवारी करती रहे, इसमें ऐसी बात ही क्या है? अगर पति और पत्नी एक दूसरे पर विश्वास करते हैं, तो ग़ैर लोगों को उनके मामलों में टांग अड़ाने की कोई ज़रूरत नहीं होनी चाहिए।

सब चुप हो गये। लड़कियां बिना सिर उठाये बड़े मनोयोग से ज़मीन खोदती और ढेले तोड़ती रहीं और बीच-बीच में कुतूहलवश यदा-कदा अभी तक जाड़े की फ़सल के टुकड़े पर घूमने अपरिचित लोगों की ओर भी नज़र उठाकर देखती रहीं। अब उन लोगों के बीच शेरज़ाद और रुस्तम को आसानी से पहचाना जा सकता था।

अचानक शेरज़ाद दल से अलग होकर लड़कियों की ओर बढ़ा। पेरशान महसूस करने लगी कि उसका चेहरा लाल हो रहा है, जब कि तेल्ली चाची अपनी हार की हार का बदला लेने के इरादे से कह उठी

"अध्यक्ष की बेटी के गाल तो पहाड़ी के पोस्ते के फूलों जैसे लाल हो उठे हैं। आख़िर किस कारण से?"

पेरशान उदास हो उठी। इसका मतलब है माय्या के बारे में मनगढ़न्त बातें फैलायी जा रही हैं। भाई पर दया आती है उसे मालूम पड़ गया, तो वह अंदर ही अंदर घुलने लगेगा। उसे कुम्मैत घोड़े का सरपट दौड़कर उनके अहाते में आकर रुकना और उस पर से खुशी से खिल उठी माय्या का कूदकर उतरना याद हो आया। लेकिन उसके अब्बा तो उनके साथ साथ घोड़े पर आ रहे थे . फिर माय्या को किस बात का दोषी ठहराया जा रहा है? पेरशान ने पूरे ज़ोर से, ताकि सारी सहेलियां सुन लें, कहा

"छि, चाची, अगर पके बालोंवालियां ऐसे अफवाहें फैलाने लगें तो फिर हम बेचारियां इस दुनिया में कैसे जी सकेंगी? आखिर सलमान और माय्या के साथ-साथ मेरे अब्बा भी तो घाटी पर जा रहे थे।" और उसने लड़कियों पर विजयपूर्ण दृष्टि डाली।

"बेटी, अफवाहें मैं नहीं गढ़ती हूं," तेल्ली ने ठण्डी सांस ली "मैं तो जिस भाव खरीदती हूं, उसी भाव बेच देती हूं। यारमामद बता रहा था . तुम्हारा कहना बिलकुल सच है कि तुम्हारे अब्बा उनके साथ-साथ पशुपालन फार्म से आ रहे थे। लेकिन फार्म पर तो वे दोनों एक ही घोड़े पर सवारी करते पहुंचे थे।"

पेरशान को इस बारे में कुछ मालूम नहीं था और वह लज्जित हो उठी, लेकिन गिज़्तेतार ने कह दिया कि तेल्ली चाची को शर्म आनी चाहिए। चाहे माय्या पूरे महीने सलमान के साथ स्तेपी में सवारी करती रहे इसमें ऐसी बात ही क्या है? अगर पति और पत्नी एक दूसरे पर विश्वास करते हैं, तो ग़ैर लोगों को उनके मामलों में टांग अड़ाने की कोई ज़रूरत नहीं होनी चाहिए।

सब चुप हो गये। लड़कियां बिना सिर उठाये बड़े मनोयोग से ज़मीन खोदती और ढेले तोड़ती रहीं और बीच-बीच में कुतूहलवश यदा-कदा अभी तक जाड़े की फ़सल के टुकड़े पर घूमते अपरिचित लोगों की ओर भी नज़र उठाकर देखती रहीं। अब उन लोगों के बीच शेरबाद और रुस्तम को आसानी से पहचाना जा सकता था।

अचानक शेरबाद दल से अलग होकर लड़कियों की ओर बढ़ा। पेरशान महसूस करने लगी कि उसका चेहरा लाल हो रहा है, जब कि तेल्ली चाची अपनी हाल की हार का बदला लेने के इरादे से कह उठी

"अम्मा की बेटी के गाल तो पहाड़ी के पोस्ते के फूल जैसे लाल हो उठे हैं। आखिर किस कारण से?"

पेरशान उदास हो उठी। इसका मतलब है माय्या के बारे में मनगढ़न्त बातें फैलायी जा रही हैं। भाई पर दया आती है उसे मालूम पड़ गया, तो वह अंदर ही अंदर घुलने लगेगा। उसे कुम्मैत घोड़े का सरपट दौड़कर उनके अहाते में आकर रुकना और उस पर से खुशी से खिल उठी माय्या का कूदकर उतरना याद हो आया। लेकिन उसके अब्बा तो उनके साथ-साथ घोड़े पर आ रहे थे.. फिर माय्या को किस बात का दोषी ठहराया जा रहा है? पेरशान ने पूरे जोर से, ताकि सारी सहेलियां सुन लें, कहा

"छि, चाची, अगर पके बालोंवालियां ऐसे अफवाहें फैलाने लगें, तो फिर हम बेचारियां इस दुनिया में कैसे जी सकेंगी? आखिर सलमान और माय्या के साथ-साथ मेरे अब्बा भी तो घोड़ी पर आ रहे थे।" और उसने लड़कियों पर विजयपूर्ण दृष्टि डाली।

"बेटी, अफवाहें मैं नहीं गढ़ती हूं," तेल्ली ने ठण्डी सांस ली, "मैं तो जिस भाव खरीदती हूं, उसी भाव बेच देती हूं। यारमामेद बता रहा था . तुम्हारा कहना बिलकुल सच है कि तुम्हारे अब्बा उनके साथ-साथ पशुपालन फार्म से आ रहे थे। लेकिन फार्म पर तो वे दोनों एक ही घोड़े पर सवारी करते पहुंचे थे।"

पेरशान को इस बारे में कुछ मालूम नहीं था और वह लज्जित हो उठी, लेकिन मिझेतार ने कह दिया कि तेल्ली चाची को शर्म आनी चाहिए। चाहे माय्या पूरे महीने सलमान के साथ स्तेपी में सवारी करती रहे, इसमें ऐसी बात ही क्या है? अगर पति और पत्नी एक दूसरे पर विश्वास करते हैं, तो गैर लोगों को उनके मामलों में टांग अड़ाने की कोई जरूरत नहीं होनी चाहिए।

सब चुप हो गये। लड़कियां बिना सिर उठाये बड़े मनोयोग से जमीन खोदती और ढेले तोड़ती रहीं और बीच-बीच में कुतूहलवश यदा-कदा अभी तक जाड़े की फसल के टुकड़े पर घूमते अपरिचित लोगों की ओर भी नजर उठाकर देखती रहीं। अब उन लोगों के बीच शेरजाद और रुस्तम को आसानी से पहचाना जा सकता था।

अचानक शेरजाद दल से अलग होकर लड़कियों की ओर बढ़ा। पेरशान महसूस करने लगी कि उसका चेहरा लाल हो रहा है, जब कि तेल्ली चाची अपनी हाल की हार का बदला लेने के इरादे से वह उठी

"अध्यक्ष की बेटी के गाल तो पहाड़ी के पोस्ते के फूलों जैसे लाल हो उठे हैं। आखिर किस कारण से?"

"कौन-सी बात गांठ बांध लूं?" पेरशान ने खीजकर पूछा।
"यही कि गममान अपने हितकारी की बहू को अपने घोड़े पर ग[illegible]
कराता है, उसके सामने इठलाता है... यही बात गांठ बांध लो।"
पेरशान बेलचा जमीन पर पटककर द्वेषपूर्ण विनम्रता से बोली.
"छि-छि! पके बालोंवाली औरत, दादी होने हुए भी सारे गा[illegible]
अफवाहें फैलाती रहती हो! तुम्हारी जैसी औरतो के कारण ही [illegible]
शेरजाद नृत्य-मण्डली नही बना पा रहा है। लडके और लडकी के [illegible]
आकर एक दूसरे का हाथ थामने की देर है कि झूठी-सच्ची बातें [illegible]
शुरु हो जाती हैं। तुम्हारे खयाल से लडकी हलवा है क्या, जो [illegible]
झट से गटक जायेगा? "
सहेलियों ने उत्साहपूर्वक पेरशान का समर्थन किया। अगर वे प[illegible]
चाची से सहानुभूति दिखाती थी और अध्यक्ष की बेटी का मज़ाक उड़ा[illegible]
थी, तो अब सब पेरशान का पक्ष लेने लगी
"बिलकुल ठीक कहा, पेरशान, बिलकुल ठीक!"
"नेल्ली सरीखी औरतो के कारण लडकियां अपने सगे भाई के [illegible]
गांव मे निकलते डरती हैं—फौरन बुराई शुरू हो जाती है!"
"हमारे हाथ-पांव डर की जंजीर मे जकडे हुए हैं! "
गिज़ेतार भी बोल उठी
"और तुम अपनी जंजीरे तोडकर फेंक दो। बनाने दो बातें लोगों को,
जब तक उनकी जबानें कतरनी-सी चलती हैं! हां, पर और बातों के
अलावा अपने काम के बारे मे मत भूलो।" उसने ऊंचे स्वर मे कहा
लडकियां कुछ चुप हो गयी, पर उनमे से सबसे तेज से न रहा गया
और वह कटु स्वर में बोली·
"नजफ, बेशक, किसी की बात सुनने को तैयार नही होगा।
लेकिन ऐसे पति भी हैं, जो पत्नियों को घर में बंद करके सताने लगें
तुमने फलां से बात क्यों की, फलां को देखकर क्यों मुस्करायी, फलां
साथ-साथ क्यों चल रही थी? और गुस्सा बढ़ जाये, तो बिना किसी बा[illegible]
पीट ही डाले!"
"तुम भी उसे मुंहतोड़ जवाब दो, मुंहतोड़ जवाब!" गिज़ेतार
चिल्लाकर कहा। "दांत उखाड़ डालो, फिर काटना ही बंद कर देगा
मुझे कभी ऐसी ...पर दया नहीं [illegible] ...पीट सहती रह[illegible]
है!"

पेरशान उदास हो उठी। इसका मतलब है माय्या के बारे में मनगढ़त बातें फैलायी जा रही हैं। भाई पर दया आती है उसे मालूम पड़ गया, तो वह अंदर ही अंदर घुलने लगेगा। उसे कुम्मैत घोड़े का सरपट दौड़कर उनके अहाते में आकर रुकना और उस पर से खुशी से खिल उठी माय्या का कूदकर उतरना याद हो आया। लेकिन उसके अब्बा तो उनके साथ-साथ घोड़े पर आ रहे थे . फिर माय्या को किस बात का दोषी ठहराया जा रहा है? पेरशान ने पूरे ज़ोर से, ताकि सारी सहेलियां सुन ले, कहा

"छि, चाची, अगर पके बालोंवालियां ऐसे अफ़वाहें फैलाने लगें, तो फिर हम बेचारियां इस दुनिया में कैसे जी सकेंगी? आखिर सलमान और माय्या के साथ-साथ मेरे अब्बा भी तो घोड़ी पर आ रहे थे।" और उसने लड़कियों पर विजयपूर्ण दृष्टि डाली।

"बेटी, अफ़वाहें मैं नहीं गढ़ती हूं," तेल्ली ने ठण्डी सांस ली, "मैं तो जिस भाव खरीदती हूं, उसी भाव बेच देती हूं। यारमामेद बता रहा था.. तुम्हारा कहना बिलकुल सच है कि तुम्हारे अब्बा उनके साथ-साथ पशुपालन फ़ार्म से आ रहे थे। लेकिन फ़ार्म पर तो वे दोनों एक ही घोड़े पर सवारी करते पहुंचे थे।"

पेरशान को इस बारे में कुछ मालूम नहीं था और वह लज्जित हो उठी, लेकिन गिज़ेलार ने कह दिया कि तेल्ली चाची को शर्म आनी चाहिए। चाहे माय्या पूरे महीने सलमान के साथ स्तेपी में सवारी करती रहे, इसमें ऐसी बात ही क्या है? अगर पति और पत्नी एक दूसरे पर विश्वास करते हैं, तो गैर लोगों को उनके मामलों में टांग अड़ाने की कोई ज़रूरत नहीं होनी चाहिए।

सब चुप हो गये। लड़कियां बिना सिर उठाये बड़े मनोयोग से ज़मीन खोदती और ढेले तोड़ती रहीं और बीच-बीच में कुतूहलवश यदा-कदा अभी तक जाड़े की फ़सल के टुकड़े पर घूमते अपरिचित लोगों की ओर भी नज़र उठाकर देखती रहीं। अब उन लोगों के बीच शेरज़ाद और रुस्तम को आसानी से पहचाना जा सकता था।

अचानक शेरज़ाद दल से अलग होकर लड़कियों की ओर बढ़ा। पेरशान महसूस करने लगी कि उसका चेहरा लाल हो रहा है, जब कि तेल्ली चाची अपनी हार की हार का बदला लेने के इरादे से कह उठी :

"अब्बास की बेटी के गाल तो पहाड़ी के पोस्ते के फूलों जैसे लाल हो उठे हैं। आखिर किस कारण से?"

पेरशान उदास हो उठी। इसका मतलब है माय्या के बारे मे मनगढ़त बाते फैलायी जा रही हैं। भाई पर दया आती है उमे मालूम पड गया, तो वह अदर ही अदर घुलने लगेगा। उमे कुम्मैत घोडे का सरपट दौडकर उनके अहाते मे आकर रुकना और उस पर से खुशी से खिल उठी माय्या का कूदकर उतरना याद हो आया। लेकिन उसके अब्बा तो उनके साथ-साथ घोडे पर आ रहे थे . फिर माय्या को किस बात का दोषी ठहराया जा रहा है? पेरशान ने पूरे जोर से, ताकि सारी सहेलिया सुन ले, कहा

"छि, चाची, अगर पके बालोवालिया ऐसे अफवाहे फैलाने लगें, तो फिर हम बेचारियां इस दुनिया मे कैसे जी सकेंगी? आखिर सलमान और माय्या के साथ-साथ मेरे अब्बा भी तो घोडी पर आ रहे थे!" और उसने लडकियो पर विजयपूर्ण दृष्टि डाली।

"बेटी, अफवाहे मैं नही गढती हू," तेल्ली ने ठण्डी सास ली, "मैं तो जिस भाव खरीदती हू, उसी भाव बेच देती हू। यारमामेद बता रहा था .. तुम्हारा कहना बिलकुल सच है कि तुम्हारे अब्बा उनके साथ-साथ पशुपालन फार्म से आ रहे थे। लेकिन फार्म पर तो वे दोनो एक ही घोडे पर सवारी करते पहुचे थे।"

पेरशान को इस बारे मे कुछ मालूम नही था और वह लज्जित हो उठी, लेकिन गिजेतार ने कह दिया कि तेल्ली चाची को शर्म आनी चाहिए। चाहे माय्या पूरे महीने सलमान के साथ स्तेपी मे सवारी करती रहे, इसमें ऐसी बात ही क्या है? अगर पति और पत्नी एक दूसरे पर विश्वास करते हैं, तो ग़ैर लोगो को उनके मामलो मे टाग अडाने की कोई जरूरत नही होनी चाहिए।

सब चुप हो गये। लडकिया बिना सिर उठाये बडे मनोयोग से जमीन ...ती और ढेले तोडती रही और बीच-बीच मे कुतूहलवश यदा-कदा अभी ... फसल के टुकडे पर घूमते अपरिचित लोगो की ओर भी नजर ... सब उन लोगों के बीच शेरबाद और रुस्तम को ... था।

...ा होकर लडकियों की ओर बढा। पेरशान ... चेहरा लाल हो रहा है, जब कि तेल्ली ... का बदला लेने के इरादे से वह उठी· ... पहाडी के घोसले के पूसो जैसे लाल

"कल आपके जमीन के टुकड़े में हम नमूने की बोवाई करेंगे। आपकी ...री मुसीबतें मुझ पर पड़ें, जरा एक बार फिर से पूरी बारीकी से जाँच ...र लीजिये। हो सकता है, जाँच-समिति यहाँ भी झाँक ले।"

"नहीं, बेटा, नहीं, तुम्हारी सारी मुसीबतें बेहतर होगा इसके सिर ...र पड़ें," तेल्ली चाची ने पेरशान की ओर इशारा किया।

वह जोर से ठहाका मारकर हँस पड़ी।

"उफ़, लड़के, यह लड़की तो मनचली हुई जा रही है।" तेल्ली ...जिन्दादिली से कहा। "काबू में ही नहीं आती है, सीधी चट्टान पर ...ढ़ी चली जा रही है। क्या गाँव में कोई ऐसा नौजवान नहीं रहा, जो ...से काबू में कर ले?"

शेरबाद खेत से जाने ही वाला था, पर दुविधा में पड़कर रुक गया।

"अरे, जरा अपने दोस्तों से ही कुछ बहादुरी उधार ले लो," पेर-शान ने चुटकी ली।

युवक अचानक हिम्मत कर बैठा और उसने पेरशान को कंधों से ...कड़कर अपनी ओर खींच सभी लड़कियों का जाना-पहचाना गीत छेड़ दिया

मेरी प्यारी, सुनो, फूल मुरझा गया,
ओस इस पर पड़ी और कुम्हला गया।
हँस पड़ी वह, मेरी बुद्धि ही छीन ली,
आह, गूँजी थी कैसी हँसी वह अभी!

गीत का भावार्थ इतना स्पष्ट था कि पेरशान ने अपने दिल की धड़कने तेज होती महसूस कर आँखें झुका लीं। मंडलिया हँस पड़ी और सबसे ज्यादा जोर से—तेल्ली चाची। चाची के उस पार से सलमान की परिहासशील आवाज आयी:

"बड़ा अच्छा वक्त चुना है इश्क लड़ाने के लिए, कामरेड टोली-नायक!"

...रमान के अनुसार उसकी बात को मजाक
से ... प्रत्यन्त ग्रोपचारिक
...मेन बोवाई के लिए

और उसने जेब से नोट-बुक निकाली। वह लड़कियों को औ
भी ज्यादा परेशान को यह दिखाना चाहता था कि वह अब से
अधिक वरिष्ठ और महत्त्वपूर्ण है।

"रिपोर्ट कब पेश करने का हुक्म दे रहे हैं?" शेरज़ाद ने ।
चारिक स्वर में पूछा। "वैसे कल पार्टी ब्यूरो में हम लोग बोवाई
में अध्यक्ष की रिपोर्ट सुनेंगे। आपको भी, कामरेड उपाध्यक्ष, इसे
करनी चाहिए।"

सलमान चौंककर पीछे हट गया, जैसे किसी ने उस पर हाथ उ
हो और लड़कियों की जिन्दादिल हंसी के बीच नाखो के बिना
चला गया।

तेरली चाची ने अपनी बगलों में जोर से हाथ मारे।

"देखो! क्या होता है टेलीफोनवाली मेज पर बैठने का न
किसी ने ठीक ही कहा है खुदा गंजे को नाखून न दे, वरना
खुजाकर लहू-लुहान हो जायेगा।"

२

सूरज की प्रखर किरणों से गरमायी धरती शीतनिद्रा से जाग उठी।
दिन निर्मल व गरम थे, न हवा चल रही थी, न बारिश हो रही थी।
जाड़े की फसलों के खेत झबरे कालीन से ढक गये। रास्तों के किनारों पर,
नालियों के तटों पर, जहां-जहां पेटू भेड़ों के कदम नहीं पड़े थे, घास हरी
हो उठी थी।

कुछ सामूहिक किसानों के विचार में उस वर्ष बसन्त जल्दी आ गया
था, यानी अनाज व मक्का की बोवाई आरम्भ करने का समय आ गया
था, ताकि उसे कपास की बोवाई तक निबटा लिया जा सके। कुछ का
विचार था कि सर्दी दुबारा पड़ सकती है, इसलिए जल्दबाजी नहीं करनी
चाहिए।

हर बसन्त में ऐसी बहस छिड़ जाती थी, और कहना चाहिए कि शीघ्र
बोवाई के पक्षधर और उसके विरोधियों—दोनों के ही साथ दाग दलीलें
होती थीं।

"... गयी, तो बीजों में अंकुर नहीं फूटेंगे, वे जमीन में

गल जायेंगे और दोबारा बोवाई करनी पड़ेगी। दोबारा बोवाई करना इतना कठिन नहीं होता, पर प्रति श्रमदिन का वेतन कितना घट जायेगा।

और अगर देर कर दी गयी, तो इसमें भी बुरा होगा बीज सूखी जमीन में बहुत धीरे अंकुरित होते हैं, कपास के पौधे दुबल होते है, समय पर पुष्पित नहीं होते, तेज गरमी पड़ने लगती है, पर बोंडियां नहीं खुलतीं, वैसी ही हरी रह जाती हैं। तब टोली की मुसीबत फसल बहुत कम और आय भी।

लेकिन समय पर खाद पड़ी हुई पूर्णतया नम जमीन में बोवाई की जाये, तो अभी गेहूं और जौ के पौधे पीले पड़ने भी नहीं पाते हैं कि कपास के पौधों पर बोंडियां खुलने भी लगती हैं, श्वेत कपोतो सदृश्य हिमधवल कपास के लोमशी गाले नजर आने लगते हैं। टोली की मेहनत बहुत ज्यादा नहीं करनी पड़ती, पर फसल बहुत बढ़िया होती है।

शेरजाद ने शीघ्र बोवाई के विरोधियों और समर्थकों के विचार ध्यानपूर्वक सुन, बुजुर्गों से सलाह-मशविरा कर और मौसम की दीर्घकालिक भविष्यवाणी का अध्ययन कर जोखिम उठाने का फैसला कर लिया — गिजेतार की उपटोली के टुकड़े में बोवाई शुरू की जाए।

उसने दो दिन पहले कार्यालय में जाकर अध्यक्ष को अपना इरादा बता दिया था। रुस्तम टोली-नायक से बात करते समय प्राय मुंह बनाया लिया करता था, लम्बे-लम्बे कश खींचा करता था, इस तरह कि उसकी आंखें ही नजर नहीं आती थी। इस बार भी वही हुआ। शेरजाद जब तक बोलता रहा, वह ध्यानमग्न मुद्रा में धुआं छोड़ता रहा, लेकिन वह टोली नायक की बात सुन रहा था या नहीं, कहना मुश्किल था।

"ठीक है, शुरू कर दो," रुस्तम ने अनिच्छापूर्वक अनुमति दी और अपने कागजात में व्यस्त हो गया।

शेरजाद की इच्छा हुई कि अध्यक्ष को झकझोरकर साफ साफ कह दे "ऐ, बाबा, आंखें खोलो, मेरी बात की गहराई में जाओ और उसके बाद ही उसे मानो!." लेकिन वह चुप कर गया। उसने बगल के कमरे से शराफोगनू को टेलीफोन करके मजफ को बीज बोने की मशीन के साथ ट्रैक्टर लेकर भेजने को कहा।

दो दिन में जमीन कुछ सूख गयी थी, अस्सी हेक्टेयर का टुकड़ा तैयार था, एक-एक बीज चुना हुआ था।

शाम को सारे सामूहिक फ़ार्म में खबर फैल गयी कि सुबह लाल

और उसने जेब से नोट-बुक निकाली। वह सर्दारियों की ओर उनसे भी ज्यादा परेशान को यह दिखाना चाहता था कि वह अब शेरवद से अधिक वरिष्ठ और महत्वपूर्ण है।

"रिपोर्ट कब पेश करने का हुक्म दे रहे हैं?" शेरबाद ने भी शांत स्वर में पूछा। "वैसे कल पार्टी ब्यूरो में हम लोग बोवाई के बारे में अध्यक्ष की रिपोर्ट सुनेंगे। आपको भी, कामरेड उपाध्यक्ष, इसकी तैयारी करनी चाहिए।"

सलमान चौंककर पीछे हट गया, जैसे किसी ने उस पर हाथ उठा दिया हो और लड़कियों की जिन्दादिल हंसी के बीच नाली के किनारे-किनारे चला गया।

तेरली चाची ने अपनी बगलों में जोर से हाथ मारे।

"देखो! क्या होता है टेलीफोनवाली मेज पर बैठने का मतलब! किसी ने ठीक ही कहा है खुदा गंजे को नाखून न दे, वरना खुजा-खुजाकर लहू-लुहान हो जायेगा।"

२

सूरज की प्रखर किरणों से गरमायी धरती
दिन निर्मल व गरम थे, न हवा चल रही थी,
जाड़े की फसलों के खेत अबरे कालीन से ढक
नालियों के तटों पर, जहां-जहां पेटू भेड़ों के
हो उठी थी।

कुछ सामूहिक किसानों के विचार में उस
था, यानी अनाज व मक्का की बोवाई
था, ताकि उसे कपास की बोवाई तक
विचार था कि सर्दी दुबारा पड़ सकती है,
चाहिए।

हर वसन्त में ऐसी बहस छिड़ जाती
बोवाई के पक्षधरों और उनके विरोधियों
होती थी।

रुस्तम वास्तव में भूल चुका था कि वह दो दिन हुए बोवाई आरम्भ करने की अनुमति दे चुका है।

"आपने परसों खुद ही ने तो हां की थी," शेरजाद ने उलाहनाभरे स्वर में याद दिलाया।

रुस्तम ने गुस्से-भरी नजरों से एक ओर देखकर कहा

"दो दिन पहले हालात कुछ और थे, और अब कुछ और हैं। आसमान पर बादल घिर आये हैं।"

"बिलकुल बादल नहीं हैं!" ट्रैक्टर पर बैठा नजफ चिल्लाया।

"घटा घिर आये और बौछार पड़ने लगे, तब सब चौपट हो जायेगा," अध्यक्ष आगे बोला। "इसलिए जल्दबाजी मत करो।"

अपनी जीत से मन ही मन प्रसन्न हुए सलमान ने जरा ऊंची आवाज में कहा

"जरा देखिये तो, कैसा स्वेच्छाचार है! भला टोली-नायक की जिम्मेदारियों के मामले में इतनी लापरवाही बरती जाती है? रात को कहीं पाला पड़ गया तो?"

बीज ड्रिल के पायदान पर खड़ी परेशान दुविधा में पड़ गयी थी टोली की प्रतिष्ठा की खातिर शेरजाद का और उदास गिज़ेलार का पक्ष लेने की उसे इच्छा हो रही थी, लेकिन मेहमानों के सामने पिता से बहस करने का साहस नहीं कर पा रही थी।

सबकी मुश्किल जैनब कुलियेवा ने आसान कर दी। उसने आगे निकलकर धीरे से, पर स्पष्ट शब्दों में कहा

"मार्च खतम होने जा रहा है, बोवाई करने में कोई हर्ज नहीं है। अब मुगान में पाला कहां पड़नेवाला है! थोड़ी बहुत ठण्ड पड़ सकती है, लेकिन जमीन तो जम नहीं जायेगी न!"

"फ़सल के लिए मैं जवाबदेह हूं," शेरजाद ने दृढ़तापूर्वक कहा।

"और अगर पाला पड़ा तो?" रुस्तम ने पूछा।

"अगले दस दिनों में पाला पड़ने के कोई आसार नजर नहीं आते . मुझे कैसे पता है? मौसम-विभाग की भविष्यवाणी है!"

रुस्तम ने ठहाका लगाया।

"हम जानते हैं इन मौसम-विभागवालों को! कहते हैं 'धूप खिलेगी'— समझ लो, बारिश होगी; कहते हैं: 'बारिश होगी'— समझ लो,

दाण्डा' मे मेहमान शेरजाद के खेत की जाच करने आ रहे है कि इस की शर्तों का पालन किस तरह किया जा रहा है।

गुरज उमस थी, धूप छायी थी। नजफ सदरी व ऊंचे बूट पहन बीज बोने की मशीन के आस-पास चहलकदमी करता हुआ लड़कियो के आने का इंतजार कर रहा था। शेरजाद ने भुरभुरी नरम मिट्टी मुट्ठी में भर ली।

"लगता है जैसे छलनी मे छानी गयी हो! बढ़िया क़िस्म के दानों जैसी लगती है। हा, तो, लड़कियो, शुरू करते हैं, तुम्हारा हाथ बरकत साबित हो।"

उन्होंने बोरी लाकर बीज पहले बाल्टी मे डाले, फिर मशीन की टंकी की पेटी मे। पेरशान भारी बोरी को तिनके की तरह पकड़े हुए थी। शेरजाद मुग्ध हुआ उसकी दक्षता व फुरती और लाल हो रहे चेहरे को देखकर सोच रहा था कि इससे सुन्दर लड़की दुनिया मे और कोई नही है।

ट्रैक्टर चला ही था कि खेत मे अधिकारीगण आ पहुंचे—रुस्तम सलमान, यारमामेद—और मेहमान कारा केरेमोगलू व अभी तक सुन्दर, सुगठित जैनब कुलियेवा।

"बिलकुल परी की तरह आयी है।" पेरशान ने ठण्डी सास ली। "कोई सोच भी नही सकता कि सामूहिक किसान नारी है। बिलकुल डाक्टर-सी लगती है।"

"ऐ, बेटो, अगल-बगल मत झाक, बीज बिखर जायेंगे," तेल्ली चाची ने उसे याद दिलाया।

उसी समय सलमान ने भागते हुए खेत के बीच मे पहुचकर हाथ उठा दिया। नजफ ने, यह सोच कर कि कोई दुर्घटना हो गयी है, ब्रेक लगा दिये, लेकिन बीज ड्रिल पर खड़ी पेरशान व तेल्ली ने उसे इशारे से बताया कि सब ठीक है, उसने हेंडिल अपनी ओर खीचा, और ट्रैक्टर स्टार्ट हो गया।

"रोको, रोको, मैं क्या कह रहा हूँ!" सलमान चिल्लाया और हाथ हिलाने लगा। "किसने इजाजत दी है बीज बोने की? बीज बिगाड़ रहे हो?"

उसने सोचा कि टोली-नायक अपनी मर्जी से बोवाई शुरू कर रहा है—यह शेरजाद को मेहमानो व पेरशान के [illegible] दिखाने का और रुस्तम-कोशी को यह [illegible] [illegible]ग आदमी पर विश्वास नहीं करना चा[illegible]

रुस्तम वास्तव मे भूल चुका था कि वह दो दिन हुए बोवाई आरम्भ करने की अनुमति दे चुका है।

"आपने परसों खुद ही ने तो हां की थी," शेरजाद ने उलाहनाभरे स्वर मे याद दिलाया।

रुस्तम ने गुस्से-भरी नजरो से एक ओर देखकर कहा·

"दो दिन पहले हालात कुछ और थे, और अब कुछ और है। आसमान पर बादल घिर आये हैं।"

"बिलकुल बादल नही हैं!" ट्रैक्टर पर बैठा नजफ चिल्लाया।

"घटा घिर आये और बौछार पड़ने लगे, तब सब चौपट हो जायेगा," अध्यक्ष आगे बोला। "इसलिए जल्दबाजी मत करो।"

अपनी जीत से मन ही मन प्रसन्न हुए सलमान ने जरा ऊंची आवाज मे कहा.

"जरा देखिये तो, कैसा स्वेच्छाचार है! भला टोली-नायक की जिम्मेदारियो के मामले मे इतनी लापरवाही बरती जाती है? रात को कही पाला पड़ गया तो?"

बीज ड्रिल के पायदान पर खड़ी परेशान दुविधा मे पड़ गयी थी टोली की प्रतिष्ठा की खातिर शेरजाद का और उदास गिजेतार का पक्ष लेने की उसे इच्छा हो रही थी, लेकिन मेहमानो के सामने पिता से बहस करने का साहस नही कर पा रही थी।

सबकी मुश्किल जैनब कुलियेवा ने आसान कर दी। उसने आगे निकलकर धीरे से, पर स्पष्ट शब्दों में कहा

"मार्च खतम होने जा रहा है, बोवाई करने मे कोई हर्ज नहीं है। अब मुगान मे पाला कहा पड़नेवाला है! थोड़ी बहुत ठण्ड पड़ सकती है, लेकिन जमीन तो जम नही जायेगी न!"

"फसल के लिए मैं जवाबदेह हूं," शेरजाद ने दृढतापूर्वक कहा।

"और अगर पाला पड़ा तो?" रुस्तम ने पूछा।

"अगले दस दिनो मे पाला पड़ने के कोई आसार नजर नही आते... मुझे कैसे पता है? मौसम-विभाग की भविष्यवाणी है!"

रुस्तम ने ठहाका लगाया।

"हम जानते हैं इन मौसम-विभागवालो को! कहते हैं: 'धूप खिलेगी'—

ते हैं: 'बारिश होगी'— समझ लो,

निगाहिगाही पूए हाती। बेटे, मैं तुम्हारा मौसम-विभाग हू, हवाओं और सूर्यास्तों को देखते-देखते मेरे बाल सफेद हो ग
धुधला गयी।"

"वाह, कितने खुशकिस्मत हैं हम!" तेल्ली चाची चिल्लायी
अब रेडियो और अखबारो की कोई जरूरत नही है! हमारा अम
बात की जानकारी रखता है।"

रुस्तम ने उससे बहस मे उलझना पुरुष के लिए उचित नही म
पर उसने सोचा "जरा ठहर, मैं तुझे अपने सिर के रूमाल से मेरे द
के आगे का फर्श साफ करने को मजबूर करके रहूगा!.."

"अरे, हम तो दो सौ हेक्टेयर में बोवाई कर चुके है," बारा केल
गलू ने नम्रता से कहा। "और हम बिलकुल नही पछताते हैं। सच पूछि
तो मैं भी हिचकिचाया, पर," उसने जैनब का हाथ पकडकर कहा,
"इसने हमें आगे धकेल दिया ,,

"हा, इस साल हमें काम जल्दी करने पड़ेंगे," जैनब ने कहा, कुछ
सोचती हुई मौन रही, फिर आगे बोली "इन्तजार करने मे कोई तुक
नही है। हिम्मत करके काम मे जुट जाओ, पडोसियो, – पछताना नहीं
पड़ेगा।"

"हिम्मत के अलावा थोडी अक्ल की भी जरूरत है, मगर मैं अलग
पर नही हूँ ," सलमान ने टिप्पणी की और अपनी हाजिरजवाबी पर
खुश होकर ही-ही करने लगा।

"ऐ, चुप करो, जैनब बहन की बात मत काटो।" रुस्तम ने
आवाज मे उसे झिडक दिया।

"बिलकुल ठीक कहा आपने, कामरेड सलमान, बिलकुल
व कुलियेवा के चेहरे पर काफी थकान झलक रही थी और उसे
कठिनाई हो रही थी। "जमीन हिम्मती और समझदार किसा
त करती है। हवा, बर्फ, बारिश और सूरज कभी हमारे दुश्म
हैं, तो कभी दोस्त। मौसम का ठीक समय पर फायदा उठाया
दोस्त बन जाते है। देर कर दें, तो दुश्मन।" उसने गहरा उच्छ
। "इसलिए समझ और हिम्मत दोनों से काम लीजिये।"
रुस्तम ने पहली बार देखा कि उसका पिता किसी स्त्री के सामने
रहा है और उसकी बात काटने का साहस नहीं कर पा रहा है।
मामा इन्हें कोई सलाह देकर देखें। तमाशा खड़ा हो जाता ..

'र जैनब कितनी शान्त है, और उसके शब्द कितने बुद्धिमत्तापूर्ण और नपे-तुले हैं..."

परेशान को अपने पिता के उत्तर से और भी अधिक आश्चर्य हुआ

"खुश रहो, बेटा! हमारे मेहमान अनुभवी और अक्लमद काश्तकार हैं। इनकी दोस्ताना हिदायतों को हम कैसे अनसुनी कर सकते हैं!" उसने नजफ़ की ओर हाथ हिलाया "चलो, शुरू करो!"

और ट्रैक्टर एकसुरी घरघर के साथ अपने पीछे बीज ड्रिल खीचने लगा।

रुस्तम के झुक जाने से सब हैरत मे पड गये। पर कारण मामूली था: मेहमानों का विरोध करना अशोभनीय होता... इसके अलावा उसे स्वय भी पूरा आत्मविश्वास नही था कि बोवाई करने का समय आ गया है या अभी बोवाई करना जल्दबाज़ी होगा।

शीघ्र ही ट्रैक्टर दूर जा चुका था, और उसके इजन का शोर उनकी बातचीत मे बाधा नही डाल रहा था। पुश्तैनी किसान कारा केरेमोगलू ने, जिसका सोचना सही था कि दुनिया मे मुगान से बढकर सुन्दर और कुछ नही है, नम मिट्टी की गध का आनन्द लेते और स्तेपी को निहारते हुए कहा.

"खेत की जोताई भी अच्छी हुई है और इसमे खाद भी अच्छी तरह दी गयी है। यहाँ आप भरपूर फसल काटेंगे।"

"हाँ, शेरज़ाद की टोली से मुकाबला करना आसान नही होगा," जैनब ने स्वीकार किया।

शेरज़ाद को समस्त जनतत्र के सुप्रसिद्ध कुशल किसानो के मुख से अपनी प्रशसा सुनना सुखद लगा, उसने हार्दिक शब्दों के लिए अपनी आखो से अतिथियों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की।

"अब किधर ले चलोगे?" कारा केरेमोगलू ने रुस्तम से पूछा।

"जहा आप लोग चाहें। जिससे कि बाद में शिकायत न करें कि मैंने सिर्फ अच्छा ही अच्छा दिखाया और अपनी कमियो पर परदा डाल दिया," वह मुस्कराया।

कारा केरेमोगलू ने क्षितिज पर चमकते एक छोटे-से बिन्दु की ओर सकेत किया।

"ट्रैक्टर है क्या? वही चलते हैं।"

"बहुत अच्छा। रास्ते मे जाड़े की फसलें दिखा दूँगा।"

मेहमानों को आगे निकलने देकर रुस्तम रुक गया और शेरज़ाद से फुसफुसाकर बोला.

"तुम्हें इस से ज्यादा पसन्द हो गया है, बेटा! वह मानते हैं कि अगर बोआई दोबारा करनी पड़ी, तो बहुत शर्मिंदगी उठानी पड़ेगी और लोगों को भी बिना अनाज के छोड़ देंगे .."

और वह हाथ हिलाता जल्दी से बाग बेरेमोगद के पास जा पहुंचा।

"कितना ऊब चुके हैं अब इन बातों से!" शेरजाद ने सोचा। "हर कोई अपनी बात पर ही अड़ा हुआ है, हर आपत्ति पर उसका दिल दुखता है। कितनी मुश्किल है!" तुरन्त उसके दिमाग में विचार कौंधा "क्या किया होना चाहिए? अपनी टोली है – ढेरों काम हैं, हमें बढ़िया फसल उगानी चाहिए। मैं अलग खड़ा भी देखता रह सकता हूं, बिना किसी मामले में दखलदाजी किये। क्या उसे औरों से ज्यादा चाहिए? टोली में सभी उसकी इज्जत करते हैं – गिजेतार भी, तेल्बी भी और तेबबबान, खेत में लगन से मेहनत करनेवाली पेरशान भी, दूसरी लड़कियां भी हमेशा उसका समर्थन करेंगी, प्रतियोगिता में विजयी होने के लिए एड़ी चोटी का जोर लगा देंगी। वह अपनी बातों से नहीं, अपनी मिसाल से सारे सामूहिक फार्म को दिखा देगा कि काम कैसे करना चाहिए।

लेकिन शेरजाद अपने टुकड़े में कुछ ही कदम चला था कि उसे ये विचार अजीब और क्रूर लगने लगे। यह क्या है – समय से पहले ही थकान या संघर्ष से कतराना? नहीं, ऐसा कभी नहीं होगा।

"पीछे क्यों रह गये?" गिजेतार ने उसे आवाज दी। "तुम्हारे बिना भी काम चला लेंगे। तुम मेहमानों के साथ जाकर देखो कि दूसरी टोलियों में क्या हो रहा है। तुम्हें जब पार्टी सचिव चुना गया है, तो तुम्हें सामूहिक फार्म के सारे मामलों की जानकारी रखनी चाहिए।"

"मान ली तुम्हारी बात!" शेरजाद ने जवाब दिया और मेहमानों के पीछे भाग चला।

३

रुस्तम सलमान को मेहमानों को बातचीत में व्यस्त रखने का अवसर देकर सारे रास्ते जमीन में नजरें गड़ाये रहा। वह टेकरियों की दरारों, घाटियों में तेजी से सूख रही मिट्टी, खाइयों में व नालियों के किनारे-किनारे उगी हरी-भरी घास को भी देखता जा रहा था। इसके बावजूद पाले का भय उसकी आत्म-शक्ति को जकड़े हुए था।

"वे खड़े क्यों हैं?" कारा केरेमोगलू ने आश्चर्य व्यक्त किया।

"कौन खड़ा है?" रुस्तम चिन्तन से ध्यान हटाने के लिए चौंक उठा।

उसे मालूम पड़ा कि वे विशाल भूखण्ड के छोर पर निश्चल खड़े तीन ट्रैक्टरों के पास पहुंच भी चुके हैं। सलमान अभी-अभी मेहमानों को बता कर चुका था कि वहां, अस्सी हेक्टेयर के टुकड़े में वसन्तकालीन गेहूं की बोवाई की जायेगी।

"शायद पेट्रोल खतम हो गया है। कहीं कोई दुर्घटना तो नहीं हुई?" रुस्तम किंकर्तव्यविमूढ़ हो उठा।

"अरे, नहीं, ऐसा तो नहीं लगता। ट्रैक्टर-चालक तो नज़र नहीं आ रहे हैं," कारा केरेमोगलू ने प्रतिवाद किया।

"वाह री लोमड़ी!" रुस्तम ने सोचा। "सब एक नज़र में देख लेता है। जब सुहाग-रात की सेज जैसी मुलायम जाड़े की फ़सलों के खेत के पास से गुज़र रहे थे, तब इसे जैसे सांप सूंघ गया था, तारीफ़ ही नहीं की। और यहां चौंक उठा है.." अब उसे सन्देह नहीं रहा कि कारा केरेमोगलू का दिल बांके मर्द का नहीं, ईर्ष्यालु का है। "कुछ भी हो सकता है! आधा टुकड़ा जोतकर वे सुस्ताने लेट गये हों," रुस्तम ने अपने को तसल्ली दिलायी, लेकिन एक मिनट में उसे यह स्पष्ट मालूम पड़ गया कि वहां जोताई शुरू ही नहीं की गयी है। "लगता है यह बगुला यारमामेद फिर ट्रैक्टर-चालकों को पानी और खाना भिजवाना भूल गया है। और सलमान भी कम नहीं है! इन दोनों को ही प्रबंध समिति से निकाल बाहर करना पड़ेगा। कुदालें उठाओ, सूअर के बच्चो, और खेत रवाना हो जाओ! टेलीफ़ोनवाली मेज़ पर आराम से सामूहिक फ़ार्म की रोटी खा-खाकर बिगड़ गये हो। बिल्लियां बन गये हो, खान के दरबार की बिल्लियां, जो कोफ्ते खा-खाकर मोटी हो जाती हैं और जिन्हें अपनी नाक तले चुहिया आंखें खोलकर देखने आलस आता है.."

रुस्तम के गले में गुस्सा वैसे ही अटक के रह गया जैसे मछली का कांटा। तेज़ धूप में सुस्ताते ट्रैक्टर-चालकों के बीच गराश को देखकर वह आग-बबूला हो उठा, उसकी मुट्ठियां भिंच गयीं। "आह, मेरी ही औलाद है और मुझ पर नहीं गया है, आलसी। नाक कटवा दी, सगे बाप की ऐसे दिन नाक कटवा दी!"

वह मित्र का उत्साह बढ़ाना चाहता था? लेकिन रुस्तम ऐसा आदमी नहीं था, जो अपनी नाराज़गी और दिल का दुख छिपाकर खुश दिखाई दे। बहुत हो चुका! अब वह मेहमानों को सबसे अच्छे खेतों में ले जायेगा।

लेकिन परेशानियां ख़तम नहीं हुईं। वे राजमार्ग पर पहुंचे ही थे कि उन्हें तेज़ जीप दिखाई पड़ गयी और उसके पास खड़े गोशानख्वा, दुर्सुन और माम्या भी।

"यह छिपकली हमेशा मेरा रास्ता काटती रहती है," रुस्तम ने गोशानख्वा के बारे में सोचा। "और दुर्सुन लौट क्यों आया? मैं इसी को खाद बनाकर मिट्टी पर बिखेर दूंगा!"

४

झुटपुटा होने तक गोशानख्वा अधीरता से केरेम के तम्बू के आसपास चक्कर काटता रास्ते की तरफ देखता रहा।

शाम हुए भेंडों के रेवड़ पड़ाव में लौटने लगे, गोशानख्वा ध्यानपूर्वक देख रहा था कि उनके फूले हुए थन कैसे हिल रहे हैं, माएं बाड़ों की तरफ भागी जा रही थीं, जब कि भेड़ें पीछे-पीछे अकड़ते, अपनी गरिमा में अडिग विश्वास की अनुभूति से इठलाते चले जा रहे थे। जब सारा पड़ाव रेवड़ों से खचाखच भर गया, भेड़ों व मेमनों की मिमियाहट बेसुरी सिम्फनी में मिलकर एक हो गयी।

अन्त में सभी भेड़ें व मेढ़े बाड़ों में हांक दिये गये, और चरवाहे टहनियों व सूखी मेंगनियों को जलाकर सुलगाये अलाव पर खाना और चाय तैयार करने में जुट गये। शनैः-शनैः शोर शान्त होने लगा और मुग़ान की स्तेपी पर रात्रिकालीन नीरवता छाने लगी, केवल कहीं-कहीं मूसों के घास में चलने से होती सरसराहट पर रखवाले कुत्ते ज़ोर-ज़ोर से भौंक उठते थे।

आग की लम्बी-लम्बी लपटें अंधेरे को चाट रही थीं, और जब गोशानख्वा अलाव से उल्टी दिशा में जाता, अंधेरा अचानक अभेद्य हो उठता कि लगता उसे हाथ में छुआ जा सकता है।

लेकिन अचानक क्षितिज पर एक नन्हा तारा टिमटिमाया और तत्क्षण बुझ गया, एक सैकंड बाद वह फिर टिमटिमाया—पहले से प्रखर व उज्ज्वल—मोटर के इंजन का हल्का शोर सुनाई दिया, गोशानख्वा ने राहत की सांस ली: उसकी जीप लौट रही थी।

ा की कौंध रात के अंधेरे को चीर गयी, सरकण्डो मे उसकी प्रति-
गूज उठी, और अंधेरे मे नजर न आ रहे केरेम ने किसी से शान्त
चित् भर्रायी आवाज में कहा
गोली मत चलाओ, बेटा, कुत्ता चपेट मे आ जायेगा।"
दंनाक चीख गूज उठी, कुत्तों का झुण्ड एक साथ गुर्रा उठा और
खा समझ गया कि कुत्ते भेडिये से भिड गये हैं। उनका झुण्ड तम्बुओ
ार लौटने लगा। कुत्तो के भौंकने और चरवाहो के चिल्लाने से लगता
ते सारी स्तेपी काप रही है, शायद उन्होंने भेडिये का सरकण्डो मे
काट दिया था और वह पडाव की ओर भाग आया था।
'अलावाश, गला दबोच ले!" केरेम वहरा कर देनेवाली आवाज मे
रहा था।
न्त मे कुत्तो का भौंकना बद हो गया, थोडी देर मे चरवाहे भेडिये
सीट लाये, लालटेन लाकर रोशनी की गयी—भेडिये के पेट मे से
ा अंतडिया बाहर निकली हुई थी।
केरेम ने थूका और जवान चरवाहे से कुत्तो को इनाम मे दुम्बे की चर्बी
ो कहा—उन्होने इसके लायक काम किया था
'शाबाश, शाबाश!" वह विशाल अलाबाश की पीठ सहलाते हुए
से कह रहा था। "तूने दूर से ही भेडिये की बू सूघ ली, शाबाश!"
गोशानवा को बताया "भेडिया पहाडी से उतरकर आया था, भूखा
सारी शाम दुबकता हुआ रेवडो की तरफ बढता रहा, अन्त मे उसने
कि कुत्ते सो गये हैं और हिम्मत करके बाडे मे लपक पडा। लेकिन
गश ऊंघ नही रहा था! सुगान मे इसकी जोड का दूसरा रखवाला
नही है।"
"सुनो, केरेम, तुम बेकार मेहमान को खुली हवा मे खडा रख रहे
" अंधेरे मे से किसी वृद्ध की खनकती आवाज सुनाई दी। "इनकी चाय
सीक-कबाब से खातिरदारी करनी चाहिए।"
"यह हमारे दादा बाबा हैं, बुजुर्ग चरवाहो मे से हैं," केरेम ने धीमी
ाज मे कहा। "अगर थके नही हो, तो उनके पास चलते हैं। इन्हे
चीत मे मजा आता है, बहुत-से किस्से याद है।"

केरेम मास राई मेलेक की मुखमुद्रा को ध्यान से देख रहा था।
मेलेक ने प्याला ढंग से रखते हुए पति पर प्रश्नात्मक दृष्टि।
पर जीवन की सभी परिस्थितियों में पति से सलाह करने की उस
पड़ी थी।

दुखी बच्चे जाग गये और बड़ी मेंढी बाँग मारकर रोने लगे; मे
लेक उनकी ओर लपकी और उन्हें ज़मीन पर लिटाकर उनके पेट
थपकने लगी।

"भावी सोवियत नागरिक हैं," केरेम बच्चों की ओर इशारा करके मुस्कराया। "सरकार के लिए लाभ.. "

मेलेक को यह पसन्द आया कि केरेम निराश नहीं होता और सदा से अपना भी हौसला बढ़ा रहा है और अपनी बेटी का भी।

"आप परेशान मत होइये," उसने शान्त स्वर में कहा, "ठीक हो जायेगी, पर जल्दी नहीं। मैं अभी पेनिसिलिन का इंजेक्शन और कम्पर ग्लास लगा देती हूं, सुबह तक बुखार उतर जायेगा, तब इसे अस्पताल ले जा सकते हैं।" वह सोचने लगी। "और बच्चों को शिशुगृह में भरती करा दो या कुछ और करो।"

आधा घंटे में सब ठीक हो गया।

अचानक कुत्ते घबराकर भौंक उठे। उनका सारा झुण्ड भिन्न-भिन्न आवाजों में भौंकने लगा। करेम ने दुनाली उठा ली।

"अलावाश भेड़ियों की गंध पाकर भौंकता है।" उसने गोशातखा को समझाया और एक छलांग में तम्बू से बाहर निकल गया।

"खुदा के वास्ते, मत जाओ, मुझे डर लगता है," मेलेक पति को केरेम के पीछे जाते देख विनती करने लगी।

"तम्बू में डरने की क्या बात है?" गोशातखा हैरान हुआ।

"तुम्हें कहीं कुछ न हो जाये, इसलिए डरती हूँ," मेलेक ने जवाब दिया।

गोशातखा ने असहमति में सिर हिलाया और माथे पर टोपी खींचकर बाहर चला गया। घुप अंधेरा था। कुत्तों के भौंकने का शोर पहाड़ से दूर जाता हुआ अब स्तेपी में कहीं से आ रहा था, चरवाहों की आवाजें सुनाई दे रही थीं।

"पकड़ ले, अलावाश, दबो ऽऽ च

ने जैसे सफेद थे, गहरी झुर्रियों से भरा चेहरा खेत जैसा लग रहा था। र उसकी आखें श्वेत भौंहों व बरौनियों के तले पहाडों में बर्फ के ढेरों बीच न जमनेवाले चश्मे की तरह चमक रही थीं।

"तुम्हें हमारी जिन्दगी कैसी लगी?" वृद्ध ने गोशातखा से पूछा। र उसने जवाब का इन्तजार किये बिना सबसे छोटे चरवाहे से कहा बेटा, तुम्हारे पैर बहुत फुरतीले हैं, जाओ, खाना ले आओ! इस ाल भेड़ें जल्दी ब्याने लगी हैं," गृहस्वामी ने अपनी बात आगे जारी रखी, आज तीस भेडों ने बच्चे दिये, बारह जुड़वा हैं, खूब तंदुरुस्त।"

"वसत आपके लिए बरकती साबित हो," गोशातखा ने कामना की।

"शुक्रिया, कामरेड, नेक ख्वाहिशों के लिए। दुनिया में भेड से ज्यादा ।बसूरत और फायदेमद जानवर कोई नहीं है। सच कहूं, तो वह स्तेपी ौर पहाडों का गहना है। उसकी अच्छी सभाल की जाये, तो गोश्त और न देती है, ऊन, जो रेशम से बारीक होता है, और गोश्त चरबी से तर ोता है। भेड का दूध प्यास से तडपते आदमी के लिए चश्मे के पानी जैसा ोता है, मीठा, चिकना और खुशबूदार।" वृद्ध क्षण भर के लिए सोच डूब गया, फिर दाढ़ी पर हाथ फेरकर क्षीण, खनकती पर मधुर आवाज गा उठा

यह भेड भी कितनी अच्छी है, कितनी प्यारी,
सफेद है बर्फ की तरह से यह भेड अपनी ..
पनीर की इस की चकतियाँ बीवी काटती है,
सफेद, बीवी के चेहरे से भी मलाई इसकी!

जिज्ञासु गोशातखा ने ढिबरी अपनी तरफ खीचकर अपनी नोट-बुक निकाल ली।

"लिख सकता हू? जादूई शब्द हैं!"

"कितना भी क्यो न लिखो, मेरे मुह से ऐसे शब्द फिर नहीं निकलेंगे," बुजुर्ग ने भोले-भाले ढंग से डींग हांकी। "शहर मे कागज कम पड जायेगा, अगर मेरी सारी कही बातें एक जगह लिखी जायें, ढाकू तक मे कागज कम पड जायेगा! लोगो के सीनो में, बेटा, इन जादूई गीतों का ऐसा खजाना है!"

"फिर भी इन्हे आनेवाली पीढ़ी के लिए सभालकर रखना चाहिए बाबा, आपकी उम्र कितनी है?"

५

हवा सरकण्डो मे सरसरा रही थी, किसी तम्बू का
फड़फड़ा रही थी। अलाव बुझ गया था, शोले राख तले
चमक रहे थे। लगता था मुगान की स्तेपी मे सब नीन्द की
भेड़े व भेड़े रोयेंदार गठरिया बने सो रहे थे, कुत्ते भी सो
समय-समय पर इस बात का सकेत देते भौंक उठते थे कि वे
और अपना कर्त्तव्य जानते हैं . केरेम मेहमान का हाथ पकड़कर
तम्बू मे ले गया,—वे घुप्प अधेरे मे टटोलते हुए चल रहे थे।

"स्तेपी है। तुम हमे माफ करना—स्तेपी है," केरेम
देता बार-बार कह रहा था।

"मेरी बीवी तो शायद माफ कर दे, मेलेक का दिल नरम है,
मेरा माफ करने का इरादा नही है!" गोशातखा ने प्रतिवाद किया।
जब बीमार की तबीयत जरा सुधी गयी है, सजीदगी से बात करते
मे सफरी पलग भरे पड़े हैं, तुम्हारी आमदनी भी इतनी बुरी
क्या दो-तीन खरीद नही सकते?"

"चरवाहे भेड़ो की मेंगनियो की बू की तरफ ध्यान नही देते,
हो चुके हैं," केरेम ने दबी लम्बी हसी के साथ कहा।

"अगर एक हफ्ते बाद मैंने सारे तम्बुओ मे सफरी पलग नही
तो दुआ-सलाम करना बद कर दूगा।"

केरेम जानता था कि यह मेहमान मजाक करना पसद नही करता।

"आपका कहा कर लिया जायेगा। अच्छा, चले।"

तम्बू मे ढिबरी के धुधले प्रकाश मे भेड़ो की खालो पर युवा
थे, उनमे युवतिया भी थी। मेहमान के आने पर सब खड़े हो
कि दूसरे कोने मे तकिये पर कोहनिया टिकाये बैठे सफेद दाढ़ी
ने केवल सिर झुकाया।

"तशरीफ लाइये," उसने मेहमानो को अपने पास बैठने का इशारा

गोशातखा को कालीन पर आलथी-पालथी मारकर
की कोई मेहनत कोई और चारा नहीं
।

बामी का बुलाया गर्

"क्यों बरों से मालूम होगा?" बाबा आत्मसन्तोष से हंस पड़ा। "जब हम इस दुनिया में आये शादी के रजिस्ट्री आफिस नहीं थे, गावों में पढ़े-लिखे लोग भी नहीं मिलते थे। अन्दाजन कहूं, तो नब्बे से ऊपर होगी। लेकिन मैं इन लोगों से ज्यादा मजबूत हूं!" उसने युवा चरवाहों की ओर इशारा किया।

"हम इसकी शादी करवाना चाहते हैं, पर यह मानते नहीं हैं," केरेम ने मजाक किया।

चरवाहे हंस पड़े।

"अरे, केरेम, क्यों जाने-माने मेहमान को धोखा दे रहा है?" वृद्ध ने उलाहना देते हुए सिर हिलाया। "क्या मैंने कभी हूर तेल्ली के लिए इनकार किया? लड़कपन से ही मुझे उससे प्यार था, पर तुम्हारे बाप उसे उड़ा लिया, उठाकर ले गया।"

"मेरी मां, बेशक, फार्म की सक्रिय सदस्या है, पर मुसीबत यह कि वह है लड़ाका। मुझे डर है कि तुम्हारी दाढ़ी में एक भी बाल न बचेगा।"

बाल्टी में खीस मिलाया हुआ गरम दूध और गरम-गरम सीक-कबाब लाये गये।

"बाबा, तुम क्या काफी अरसे से स्तेपी में भेड़ें चराते हो?" गोशानखा ने गिलास से स्वादिष्ट गाढ़े पेय का घूंट लेकर पूछा।

"मेरा दादा चरवाहा था, बाप चरवाहा था," गृहस्वामी ने गर्व से कहा। "मैं आठ बरस की उम्र में मेमने चराने लगा और पन्द्रह बरस का होते होते–भेड़ें। मेरी सारी जिन्दगी यहां पहाड़ों और स्तेपी में गुजरी है। मैं एक दिन के लिए भी रेवड़ से दूर नहीं हुआ।"

वृद्ध बातों में खो गया, उसने याद किया कि कैसे वह एक बार पहाड़ों में तूफान में फंस गया था और सारी भेड़ें गवा बैठा था, कैसे उसने भेड़ियों का अपने हाथों से गला घोंटा था।

"चालीस साल पहले केलबाजार* के पहाड़ों में एक बार बाघ से अकेले भिड़ गया था। आखिरकार उसे मार ही डाला!"

---

*केलबाजार–आजरबैजान के पश्चिम में स्थित काकेशियाई पर्वत-श्रेणी की एक शाखा।

"जरा निशानी तो दिखाओ मेहमान को।" पास बैठे आदमी ने कहा और गोशातखा से पूछा "आप क्या देख नहीं रहे हैं?"

गोशातखा ने ध्यान से देखा और वृद्ध की सफेद दाढ़ी के नीचे घाव का निशान देखा, जो घनी वालिया निकले गेहूं के खेत के बीच में से निकलती पगडण्डी जैसा लग रहा था।

चरवाहे गरम-गरम सीक-कबाब के टुकडे लवश मे लपेटकर इतने मजे से खा रहे थे कि गोशातखा को भी तेज भूख लग आयी।

"बासुरी कहा है? और ढोल? ऐ, केरेम, दिल छोटा मत करो!" बाबा ने कहा। "खुशिया मनानी चाहिए कि डाक्टर आ गयी, तुम्हारी बीवी की उसने जान बचा ली डाक्टर बहन की और उनके मियां की इज्जत में गाना सुनाओ।" उसके सकेत पर युवक बासुरी और ढोल ले आये, पर केरेम ने बासुरी लेने से इनकार कर दिया और सिर झुकाकर उसे वृद्ध को दे दिया ..

"ऐ, मेरी सास फूल जाती है," उसने शिकायत की। "किसी जमाने में..."

लेकिन आखिर उसने बासुरी लेकर अपने जर्द होठो से लगा ली, और तम्बू मे दर्दभरे, उदास सुर गूज उठे, बासुरी गा उठी। वह चरवाहों का एक प्राचीन गीत था, उसमे भेडो के चलने का शोर गूज रहा था, जलती धूल के गुबार उठ रहे थे, कुत्ते भौंक रहे थे, चालाक भेडिये सरकण्डो के झुरमुटों मे रेंग रहे थे और रात के अलाव धधक रहे थे।

बाबा थक गया, उसने बासुरी केरेम को दे दी और गोशातखा को समझाया:

"चरवाहे के दो वफादार दोस्त होते हैं–कुत्ता और बासुरी।"

केरेम ने नृत्य की धुन छेड दी, जिसके स्वरो से बदन मे खून तेजी से दौरा करने लगा और पैर अपने आप ताल देने लगे, वृद्ध ने ढोलो की जोडी अपने पास सरका ली और सगत देने लगा, युवक ऐसा तेज नाच नाचने लगे कि गोशातखा को लगा जैसे उसकी उम्र के दसियो साल कम हो गये। तम्बू की दीवारो पर बडी-बडी छायाए डोलने लगीं, अथक चरवाहे झूम रहे थे, कूद रहे थे, फिसल रहे थे, ढोल से लयबद्ध ताल मे नाच की ऐसी धुन निकाल रहे थे कि देखने-सुननेवाला दग रह जाये।

अन्त में सगीत रुक गया, थके हुए नर्तक भेड की खालो पर ढेर हो

गये। मैरेम बड़ी मुश्किल से सांस ले पाया, लेकिन बाबा दाढ़ी पर फेरता हुआ बोला

"सुना है, दिन मे रुस्तम-कीशी पशुपालन फार्म आया था। कारों में नहीं आया था। तुम उससे हमारे लिए एक रेडियो खरीदने का दोगे?" उसने गोशातखा को सम्बोधित किया। "बांसुरी और ढोल की जरूरत नहीं, बहुत अच्छी चीजें हैं, लेकिन हम कुछ नहीं जानते दुनिया में क्या हो रहा है। स्तेपी में हम जंगली हो गये हैं।" थोड़ा सोचकर गृहस्वामी आगे बोला "रुस्तम-कीशी ईमानदार है, बिल्कुल ईमानदार है, लेकिन उसकी चमड़ी कछुए की खाल जैसी मोटी है।"

गोशातखा को यह जानने की इच्छा हुई कि वृद्ध अध्यक्ष के बारे में क्या सोचता है, पर उसने पूछना उचित नहीं समझा और कहा

"बाबा, अपनी लम्बी उम्र का राज़ बता दो न!"

"कोई राज़ नहीं है," वृद्ध ने कंधे उचका दिये। स्तेपी और पहाड़ों में जिया हूं, अपना मालिक खुद रहा, किसी अफसर की सूरत कभी नहीं देखी हां, और क्या? किसी से डाह नहीं की। तकिये पर सिर रखकर कभी अपने को ऐसे विचारों से कुरेदा नहीं कि फलां बहुत बड़ा आदमी बन गया है और मैं पिछड़ गया हूं, जैसा था वैसा ही चरवाहा रह गया हूं, या फलां दौलतमंद हो गया है, और मैं पहले जैसा गरीब रह गया हूं आंखें मूंदते ही मैं फौरन सो जाता था। डाही नींद का नाम नहीं जानता, उसका दिल नहीं जानता आराम किसे कहते हैं। और क्या? मैंने सीक-कबाब खा-खाकर बदन पर चरबी नहीं चढ़ाई, भूख मिटते ही मेज से उठ जाता हूं। पहाड़ी चश्मे के पानी में नहाता हूं, स्तेपी की हवा का सेवन करता हूं। और, आखिरी बात " उसने शरारती ढंग से आंखें मींचीं, "और आखिरी बात यह है कि अब सोने का वक्त हो गया है, तारे डूब रहे हैं "

ही थी मानो ठिठुर गयी हो, कुत्ते जमीन सूघने जा रहे थे और व्यवस्था बनाये रखने के लिए भौंक रहे थे।

पत्नी का उतरा और पीला पड़ा चेहरा देखकर गोशातखा को बुरा महसूस हुआ वह तो चरवाहों के साथ गम बहलाता रहा और आराम से सो लिया, जब कि बेचारी सारी रात आखों में काटती रही। मेलेक ने बताया कि केरेम की पत्नी का बुखार उतर गया है, दिल की धड़कन नियमित है, फिर भी उसे खुली जीप में लम्बे सफ़र पर ले जाना खतरनाक होगा ..

"ठीक है, उसको ले जाने के लिए एबुलेंस भिजवा दूगा," गोशातखा ने कहा।

राजमार्ग पर पशुपालन फ़ार्म से कोई दस किलोमीटर दूर उसे रुस्तम की 'पोब्येदा' कार दिखाई पड़ी, जो कीचड़ से भरे गड्ढे में बुरी तरह फस गयी थी।

चालक कभी स्टीयरिंग संभालकर इजन स्टार्ट करता, तो कभी कूदकर पहियों के नीचे अकवार भर-भरकर सूखी टहनिया और घास डालता, पर पिछले पहिये सर्र से टहनिया व घास उछटाते हुए घूमते जाते।

"गाड़ी रोको!" गोशातखा ने अपने चालक को आदेश दिया।

यह सुनकर कि रुस्तम ने केरेम की पत्नी को लिवाने के लिए अपने बेटे को भेजा है, गोशातखा ने हाथ हिला दिये। "अजीब मिजाज है! कल कुछ था और आज बिलकुल उसका उल्टा। तो यह बात है, कोशी! "

उन तीनों ने मिलकर बड़ी मुश्किल से गाड़ी को बाहर निकाला और मुड़कर फर्राटे से पशुपालन फार्म के लिए रवाना हो गये।

जब रोगिणी को तम्बू से निकालकर 'पोब्येदा' में लिटाया गया, गाराग्योज और नन्हा बेटा रो पड़े, जुड़वा बच्चे भी रो पड़े, — शायद इसलिए, क्योंकि उनके रोने का समय हो गया था .

"बच्चों को भी ले चलना चाहिए," मेलेक ने फुसफुसाकर पति से कहा। "इन्हें यहा छोड़ने की सोचने भी नहीं चाहिए।"

शुरू में तो केरेम इसके बारे में सुनने को भी तैयार नहीं हुआ, बाद में मान गया, पर बेटे को उसने फिर भी नहीं छोड़ा: उसे चरवाहे के कठिन जीवन का अभ्यस्त होना चाहिए।

एक घटे बाद केरेम की पत्नी ज़िला अस्पताल में पहुचायी गयी थी

रही थी मानो ठिठुर गयी हो, कुत्ते जमीन सूंघते जा रहे थे और व्यवस्था बनाये रखने के लिए भौंक रहे थे।

पत्नी का उतरा और पीला पड़ा चेहरा देखकर गोशातखा को बुरा महसूस हुआ वह तो चरवाहों के साथ गप्प बहलाता रहा और आराम से सो लिया, जब कि बेचारी सारी रात आंखों में काटती रही। मेलेक ने बताया कि केरेम की पत्नी का बुखार उतर गया है, दिल की धड़कन नियमित है, फिर भी उसे खुली जीप में लम्बे सफ़र पर ले जाना ख़तरनाक होगा .

"ठीक है, उसको ले जाने के लिए एबुलेंस भिजवा दूगा," गोशातखा ने कहा।

राजमार्ग पर पशुपालन फार्म से कोई दस किलोमीटर दूर उसे रुस्तम की 'पोब्येदा' कार दिखाई पड़ी, जो कीचड़ से भरे गड्ढे में बुरी तरह फंस गयी थी।

चालक कभी स्टीयरिंग सभालकर इंजन स्टार्ट करता, तो कभी कूदकर पहियों के नीचे अकवार भर-भरकर सूखी टहनियां और घास डालता, पर पिछले पहिये सर्र से टहनियां व घास उछटाते हुए घूमते जाते।

"गाड़ी रोको!" गोशातखा ने अपने चालक को आदेश दिया।

यह सुनकर कि रुस्तम ने केरेम की पत्नी को लिवाने के लिए अपने बेटे को भेजा है, गोशातखा ने हाथ हिला दिये। "अजीब मिज़ाज है! कल कुछ था और आज बिलकुल उसका उल्टा। तो यह बात है, कौशी! .." उन तीनों ने मिलकर बड़ी मुश्किल से गाड़ी को बाहर निकाला और मुड़कर फर्राटे से पशुपालन फार्म के लिए रवाना हो गये।

जब रोगिणी को तम्बू से निकालकर 'पोब्येदा' में लिटाया गया, गाराग्योज़ और नन्हा बेटा रो पड़े, जुड़वा बच्चे भी रो पड़े,—शायद इसलिए, क्योंकि उनके रोने का समय हो गया था. .

"बच्चों को भी ले चलना चाहिए," मेलेक ने फुसफुसाकर पति से कहा। "इन्हें यहां छोड़ने की सोचने भी नहीं चाहिए।"

इसके बारे में सुनने को भी तैयार नहीं हुआ, बाद

को उसने फिर भी नहीं छोड़ा : उसे चरवाहे के कठिन

चाहिए।

पत्नी जिला अस्पताल में पहुंचायी गयी थी

ग्रौर जुड़वां – शिशुगृह मे, गारान्योज ने गोशातखा के यहां रहने से
कर दिया ग्रौर उसे तेल्ली दादी के यहा भेजने का ग्राग्रह किया।
"यानी तुम्हे हमारे यहा ग्रच्छा नही लगता?" मेलेक ने पूछा।
लडकी उससे चिमटकर सिसकने लगी, पर उसने जवाब मे कुछ
कहा

ग्रौरतो की सनक के बारे मे बडबड़ाकर गोशातखा ने खिल उठी
योज को पिछली सीट पर बिठा दिया, स्वय ड्राइवर के साथ बैठ गया।
जल-प्रदाय विभाग की इमारत के बाहर उनकी मुलाकात माय्या
हो गयी।

"घर जा रही हो? ठीक है, बैठो!" गोशातखां ने कहा।
रास्ते मे लगातार पास व खनिज खाद ढोकर ले जा रही घोड़ा
व बीजो से लदे ट्रक नजर ग्रा रहे थे। हर चीज मे दिलचस्पी
माय्या गोशातखा पर सवालो की बौछार कर रही थी, – वह ग्रब
को ठेठ मुगानवासिनी महसूस कर रही थी।
"हा, एक-दो हफ्ते की बात ग्रौर है, फिर हमारी सारी स्तेपी
भरी हो उठेगी। कितना सुन्दर हो जायेगा!" गोशातखा ने ठण्डी सास ली
"ग्रापको गाव से प्यार है?"
"पूछो मत। बड़ा ग्रजीब प्यार है यह, कष्ट बहुत भोगने पडते है।"
'क्यो?"

"इसलिए, क्योकि संस्कृति के ग्रभाव मे बिना कष्ट उठाये नहीं र
जा सकता, वह भी ऐसा ग्रभाव, जिसका कोई ग्रौचित्य नही होता,'
गोशातखा ने उत्तेजित स्वर मे कहा। "ग्राप पशुपालन फार्म गयी थी?
था? तो फिर पूछने की जरूरत ही क्या रह गयी?"
माय्या को कष्टकर लगा यहा रुस्तम के सिर पर कोसा जा रहा था।
"कुछ भी हो, यहा काफ़ी ग्रच्छे लोग है। ऐसे लोगो के साथ मिलकर
ट काटे जा सकते है।
"बिलकुल ठीक है। उन्ही का ख्याल रखने की जरूरत है। उनकी
की समझ मे यही बात तो नही ग्राती है," गोशातखा ने गुस्से मे कहा।
माय्या ने ग्रचानक चालक का कंधा छूकर उससे गाड़ी रोकने का
य किया। चालक ने गाड़ी को नहर के किनारे की ग्रोर मोड़कर
ला दिया, बच्चे बीचड़ मे पड़कर मार कर उठे। माय्या
बैठे के पाट की तरह [illegible]

"ज़रा, देखिये तो सही, कितने बेशर्म लोग हैं!" उसने गोशातख़ा से शिकायत की। "खेत में पानी छोड दिया और चले गये।"

गोशातख़ा ने अनिच्छापूर्वक बाहर निकल उसके पास जाकर बोवाई के पारखी की तरह चारों ओर नज़र डाली सचमुच गदला और कीचड़वाला पानी पुरानी नाली से खेत में भर रहा था – फूली, लबलबी और खूब पानी पी चुकी मिट्टी अब सोख नहीं रही थी।

"सींचनेवाला कहां है? कहां है?" माय्या घबरायी हुई पूछ रही थी। "अरे, यहां मिट्टी दलदली हो जायेगी।"

सड़क पर एक काली टोपी लगाये गठीला आदमी नज़र आया। आदमी लिस की चाल में धीरे-धीरे पास आता जा रहा था, उसने पास आकर बिना कुछ बोले माय्या को घूरकर देखा।

"आप सेचक हैं?"

वह उसे वैसे ही घूरता रहा फिर गोशातख़ा पर नज़र डाल उसे एकटक देखने लगा, पर जवाब में कुछ नहीं बोला।

"ख़ाला, यह गूंगा हुसैन है," गाराग्योज़ फुसफुसायी।

"अहा, टोली-नायक ख़ुद है? खेत में इतना सारा पानी क्यों छोड़ा?"

"पानी से कभी नुकसान नहीं होता," टोली-नायक ने भलमायी आवाज़ से जवाब दिया। "बच्चा बिना मां के दूध के बड़ा नहीं होता और गेहूं – बिना पानी के।"

"बिलकुल ग़लत," माय्या ने प्रतिवाद किया। "दूधपीते बच्चों को अगर सिर्फ ठूस-ठूसकर दूध पिलाया जाये, तो उससे उनका पेट ख़राब हो जाता है। यही मुग़ान की ज़मीन के साथ होता है। पानी की कमी रहे, तो मुसीबत, पानी ज़्यादा रहे, तो दुगुनी मुसीबत।"

हुसैन ने होंठ हिलाये और मुह से अस्पष्ट टिटकारी भरी।

गोशातख़ा को लगा कि टोली-नायक बहरा होने का दिखावा कर रहा है और वह गुस्से में बोला:

"टिटकार क्यों रहे हो, ढोर थोड़े ही चरा रहे हो "

"बेकार औरत के साथ मुंहज़ोरी करने से कोई फ़ायदा नहीं," हुसैन ने धृष्टता से कहा। "ज़रा देखिये, तो पानी से इसे परेशानी हो रही है, बड़ी आयी है!"

"ज़रा सोचो तो सही। नीची ज़मीन दलदली हो जाती है और इस्तान पर नमक बढ़ जाता है," गोशातख़ा ने घबराहट में कंधे हिलाये। "आप

लोगों को कुछ सिखाया गया है या नहीं? मुग़ान में भूमिगत जल में नमक है और उसका तल ऊंचा है। यानी आवश्यकता से अधिक पानी देने से भूमिगत जल का स्तर ऊंचा उठ जायेगा और मिट्टी में लवण बढ़ जायेगा। समझे?"

"और उसके बाद?"

"और उसके बाद यह कि सींचनेवाले को ढूँढो," माय्या ने आदेश दिया।

"यह मेरा खेत नहीं है।" हुसैन होंठ चबाने लगा।

"लेकिन सामूहिक फार्म तो तुम्हारा है न?" गोशातखा ज़ब्त न कर पाया।

"मुझ पर आप लोगों के अलावा भी और बहुत-सी मुसीबतें पड़ी हैं। मेरे खेत में अभी जोताई नहीं हुई है," हुसैन ने जभाई लेते हुए कहा और नाली के किनारे-किनारे चला गया।

"वाह रे चाचा, तुम्हें शर्म नहीं आती!" गाड़ी में से शारायोज़ ज़ोर से चिल्लायी। "वसन्त में तो यह ज़मीन तुम्हारी टोली की ज़मीन में मिला दी गयी है।"

गूंगा हुसैन पलटकर फुफकारा

"चुप रह, चोर की बेटी! तेरे बाप ने सारे पशुपालन फार्म को लूट लिया।"

लड़की का अपमान के कारण गला रुंध गया, वह सुबकियां भरने लगी और उन्माद में चीखी

"झूठ है, झूठ है, मेरा बाप ईमानदार है! उसके हाथों और पैरों में घट्ठे पड़े हैं! हम अपनी रोटी खाते हैं!"

गोशातखा समझ गया कि बातचीत आगे जारी रखना व्यर्थ होगा और उसने माय्या को आगे चलने का सुझाव दिया।

"कामरेड शिक्षा विभागाध्यक्ष, अध्यक्ष से बात कर लीजिये, वह यहां ख़ुद मौजूद हैं!" हुसैन ने चिल्लाकर कहा और हंस पड़ा।

उसकी धृष्टता से गोशातखा क्रुद्ध नहीं हुआ, बल्कि वह सोचने के लिए बाध्य हो गया। "नाम का तो गूंगा है, पर देखो चीखता कैसे है! शायद जानता है कि मेरी और रुस्तम की नहीं बनती है और इस समय इसे उम्मीद है कि अध्यक्ष इसका पक्ष लेगा। शायद यह जान-बूझकर झगड़ा खड़ा करना चाहता है ..."

इस बीच रुस्तम उनके पास पहुँच चुका था और अपनी बहू, गोशातमा और गाड़ी में रो रही लड़की को सन्देहभरी दृष्टि से देख रहा था। यहां यह क्या हो रहा है?

"लीजिये, देख लीजिये, कामरेड अध्यक्ष, शिक्षा विभागाध्यक्ष कैसे सामूहिक फार्म के मामलों में दखलनदाज़ी कर रहे हैं, आपके आदेशों को रद्द कर रहे हैं," हुसैन ने शिकायती स्वर में कहा। "आखिर यहां हुक्म किसका चलता है? किसका?"

"यह क्या मीटिंग हो रही है?" रुस्तम ने कठोरता से पूछा। "और तुम पशुपालन फार्म क्यों नहीं गये?"

"खाद ढो रहे हैं, इस वक्त पशुपालन फार्म के लिए फुरसत नहीं है!"

"खाद के बारे में अलग से बात करूंगा," रुस्तम ने दिखावटी धमकी दी। "बताओ, क्या हुआ यहां?"

"काम नहीं करने दे रहे हैं, कामरेड अध्यक्ष.. इन अफ़सर से पूछिये कि यह अपनी नाक हमारी नालियों में क्यों ठूंस रहे हैं.. "

टोली-नायक की अशिष्टता रुस्तम को अच्छी लगी आदमी कोशिश करता है, अध्यक्ष के शत्रुओं से, जैसे हो सकता है, मोर्चा लेता है।

उसी समय आकर रुकी मोटरगाड़ी में से मेहमान निकले और उन्होंने साथ्या व गोशातमा से दुआ-सलाम की।

रुस्तम को प्रत्यक्षदर्शियों के सामने खास तौर से शराफ़ोगनू की उपस्थिति में गोशातमा से झगड़ा करने की इच्छा नहीं हो रही थी, पर उस सफ़ताज के सामने पीछे हटना भी उसके लिए असम्भव था।

"मोटर में सवारी करना और हुक्म चलाना हर किसी को आता है," गूंगा हुसैन चुप नहीं हुआ।

"वाह, हुसैन!" रुस्तम ने कुछ नरम पड़ते हुए सोचा। "जब चुप रहता है, तो सोना हो जाता है और जब बोलता है, तो हीरा! . इस शिक्षा विभागाध्यक्ष के सिर पर अपनी बातों से लट्ठ की तरह चोट कर। मेरिन ग्रेन में खाद न पहुंचाने के लिए मैं हर हालत में तेरी खबर लूंगा।"

"यह क्या मीटिंग हो रही है?" उसने और भी सख्त आवाज़ में पूछा।

साथ्या को लगा कि गोशातमा घबरा गया है और समझ नहीं पा रहा है कि कैसे पेश आये। पर गूंगे हुसैन ने बहस तो उसने खुद ही छेड़ी थी।

ा ग्राप लोगो के यहा पानी नाम को भी नही रहेगा।"
ृम मरम्मत कर लेगे, मरम्मत कर लेगे," हुसैन ने तुरत लहजा
देया। "ग्राज-कल खाद का काम निबटा लेगे और शीघ्र ही
को मरम्मत मे जुट जायेंगे "
ा वह स्पष्ट और सोच-समझकर बोल रहा था।
तम ने मेहमानो पर गर्वपूर्ण दृष्टि डाली सामूहिक फार्म सामूहिक
ा होता है, हर चीज का पहले से ध्यान नही रखा जा सकता, चाहे
ितना ही ग्रक्लमद क्यो न हो। खुदा का शुक्र है कि टोली-नायक
ातियो के अनुसार स्वतन्त्रतापूर्वक निर्णय लेकर काम चलाते रहते हैं।
किन शराफोगलू विश्वास न कर व्यग्यपूर्वक मुस्कराया।
ग्रगर दो दिन मे खाद खेत मे नही पहुचाई, तो एक भी ट्रैक्टर नही
।" उसने हुसैन को थोडी धमकी दी और बातो ही बातो मे ग्रध्यक्ष
ृ दिया "देखो, दोस्त, ग्रगर ग्रागे भी ऐसा ही हाल रहा, तो
गिना मे हार जाग्रोगे।"
ारा केरेमोगलू और ज़ैनब चुप रहे, पर रुस्तम ने मजाक मे टाल

ग्रभी से छाती ठोककर मत कहो, जल्दबाजी होगी। ग्रागे बोवाई,
और कटाई भी बाकी हैं। तीस गाडी खाद खेत मे नही पहुचाई,
हेक्टेयर मे जमीन दलदली हो गयी—इससे क्या होता है। मुकाबला
ोगा, जब फसल कोठियो मे पहुच जायेगी।"
ा
।
दे

"हम खुद भी नहीं चाहते थे," शेरदाद ने जवाब दिया।

"काम करना चाहिए, काम, बेकार बातों का क्यों मेल से मतलब है?" रुस्तम की भौंहें तन गयीं।

"उन्हें भगाने की जरूरत ही क्या है? मेल में ही बैठक कीजिये," शराशोलिनू सहृदयता से हंस पड़ा। "मेदमात्रा का भी बुलाइये, वे भी अपने विचार बतायें। बैस, काम यह जारता है"

७

रुस्तम के कानों में दिन-भर शराशोलिनू के शब्द गूंजते रहे: "हार जायेंगे, हार जायेंगे"। कारा केरेमोगलू भला व्यक्ति है, उसने किसी प्रकार के अनुमान नहीं लगाये, लेकिन इस बात की पुष्टि कर दी कि सामूहिक फार्म में बोवाई की तैयारी अच्छी नहीं हो रही है। अकेले शेरदाद को ही शाबाशी मिली।

अध्यक्ष अतिथियों को शाम देर गये विदा करके कार्यालय में पहुंचा। सलमान, यारमामेद और गूंगा हुसैन बरामदे में सिगरेट पी रहे थे। अध्यक्ष को देखकर उन्होंने सिगरेटें फेंक दीं और उसके सामने खड़े हो गये।

खिन्न रुस्तम ने अपने परिजनों के पास से निकलकर कमरे का दरवाजा खोला, ओवरकोट उतारा और टोपी सोफे पर फेंककर बुलंद आवाज में चिल्लाया

"आओ! वहां ठिठुर क्यों रहे हो "

उसके चहेते अंदर आकर सोफे पर बैठ गये। यारमामेद ने अत्यन्त सावधानीपूर्वक अध्यक्ष की टोपी एक तरफ रखी और अपने मेढक के पंजों से हाथ सीने पर आड़े रख लिये, हुसैन ने अध्यक्ष से आंखें बराबर कीं; सलमान ने असन्तुष्ट मुखमुद्रा में मुंह पर मुक्का रखकर जमाई ली।

चुप्पी काफी देर छायी रही, अन्त में रुस्तम ने कहा

"शुक्रिया!"

सबने हैरत में एक दूसरे की तरफ देखा।

"तहे दिल से शुक्रिया," अध्यक्ष ने दुबारा कहा और अपनी कुर्सी से उठे बिना सिर झुकाया।

"क्या हुआ, कौशी?" यारमामेद ने पूछा।

"हुआ यह है, चालाक लोमड़ी, कि तुम सब से, टुकड़खोरो, मैं ऊब

गया हूं। जाड़े में बारिश और गरमी में सूखे से भी ज्यादा! मैं हजा[र]
बार कह चुका हूं कि सूगा हुसैन किसी काम का टोली-नायक साबित न[हीं]
हो सकता—इसमें अक्ल की कमी है. क्या तुमने इसे नहीं थोपा था मु[झ]
पर?"

रुस्तम जब तक आगबबूला होता रहा, उन पर धमकियों और लानत[ों]
की बौछार करता रहा, यारमामेद व हुसैन बीच-बीच में याचनापूर्ण दृष्टि
से सलमान की तरफ़ देखते रहे।

जब सलमान ने जवाबी हमला बोल दिया, वे हैरान रह गये।

"अगर हम आपको खुश नहीं कर सके हैं, तो हमें निकाल बाह[र]
करना बेहतर होगा। और वह भी जल्दी से जल्दी। आपने, कामरेड रुस्त[म]
मोव, मुझे ऊंचा उठाया, बाप की तरह मेरा खयाल रखा, इसके लिए [मैं]
मरते दम तक आपका एहसानमंद रहूंगा। लेकिन अब अलग होना बेहतर
होगा। मैं कभी ओहदे या तनख्वाह के पीछे नहीं भागा! मुझे जाने दीजिये
बाकू चला जाऊंगा, किसी न किसी तरह दो जून रोटी कमाकर गुज़र-बसर
कर लूंगा!"

"यह क्या कह रहा है? यह क्या कह रहा है?" रुस्तम भौचक र[ह]
गया।

सलमान ने धीरे-धीरे रूमाल निकालकर उसमें जोर से नाक साफ क[ी]
और उससे भी ज्यादा दुःखी स्वर में आगे बोला

"शेरज़ाद हिदायतें देता है, नजफ हुक्म चलाता है, सचिव सदस्य
तेल्ली चाची कदम-कदम पर गालियां देती है। यह भी कोई जिन्दगी है?"

"ओफ, कितना अक्लमंद है, शैतान, कितना अक्लमंद है!" यारमामे[द]
ने सोचा।

"और फिर ऊपर से शिक्षा विभागाध्यक्ष आकर आलोचना औ[र]
आत्मालोचना के बहाने सस्ती लफ्फाज़ी करने लगता है। हां, हम तुम्हा[री]
तरफदारी भी करते हैं, रुस्तम चाचा, और सामूहिक फार्म की इज्जत [के]
लिए भी लड़ते हैं। लेकिन नतीजा क्या निकलता है? हमें तुम्हारी
आंखों में नफरत झलकती दिखाई देती है!"

"अरे, अरे, अरे..." रुस्तम बुदबुदाया। "तुम्हारी कथनी और कर[नी]
में अन्तर है।"

"अन्तर कैसे है?" सलमान पूरी तरह रुठ गया। "वैसे हुआ क्या?
हुसैन के खेत में घास नहीं [illegible]

[illegible]

[illegible] रुस्तम बाबा!' उसने [illegible] के पूरा होने से पहले [illegible]

शुरू कर दिया। "अगर तुम मेरे मन से पूरा [illegible] हो, तो, [illegible] करके बड़ी खुशी से पिया, बूंद-बूंद करके गिलास भर-भरके . [illegible] [illegible] हो! और पूरा करने की जरूरत ही नहीं है। हम जनता को [illegible] करने के लिए हर सम्भव कोशिश करते हैं। और जो [illegible] नजर [illegible] हैं, उन्हें दूर कर देंगे, इसका मैं वादा करता हूँ। और [illegible] का [illegible] में तुम्हारे हाथों में थमा दिया जायेगा।"

गूंगे हुसैन ने [illegible] की तरह [illegible] से आगे बराबर की ओर मुंह से टिटकारी मारी।

"दुश्मन गंदगी फैला रहे हैं, दुश्मन," [illegible] ने आगे कहा। "अनाम पत्र लगातार आये जा रहे हैं।"

यह शब्द सुनते ही रुस्तम चौक उठा। सचमुच, दिन में शराफोवर् ने उसे बताया था कि फिर कोई चिट्ठी आयी है दुश्मन, चारों तरफ दुश्मन हैं! लाफाज गोशातजा को भी शायद खबर पहुंचायी गयी है, इसीलिए वह यहां सूंघने आया था कि जलने की बू आ रही है या नहीं। बेशक, रुस्तम के पास अपने अधीनस्थों पर क्रुद्ध होने का आधार था। लेकिन उसे इतनी आसानी से कहना माननेवाले सहायक कहां मिलेंगे? वे सारी झिड़कियां डाक्टर की लिखी गयी कड़वी गोलियों की तरह निगल गये। इसकी क़ीमत समझनी चाहिए! सब बिना चूं किये सह लेते हैं। अभी रुस्तम ने उनके कान अच्छी तरह उमेठ दिये हैं, एक साल के लिए काफी होगा, कभी भूलेंगे नहीं .

उस समय उसने केवल व्यवस्था स्थापित करने के लिए दिखावटी गुस्से में कहा कि वह चालसियों और टुकड़खोरों पर रहम नहीं करेगा, कि उन्हें आस्तीनें चढ़ाकर काम में जुट जाना चाहिए और यह भी कि जरूरत पड़ने पर वह किसी भी   आदमी के साथ खौफनाक ढंग से पेश आ सकता

है। और पशुपालन फार्म की जाच का काम अभी टाला जा सकता है। सचमुच यह समय इसके लिए उपयुक्त नही है—बोवाई करनी है, वसन्त की बोवाई।

८

रुस्तम ने उसी शाम को अपने घर मे भी व्यवस्था स्थापित करने की ठान ली। पहले तो वह गुस्से से उफनता बरामदे मे चहलकदमी करता रहा, फिर पत्नी से बच्चो को बुलाने को कहा। सकीना ने व्यर्थ उसे मनाने की कोशिश की कि बहुत रात हो चुकी है और वह खुद भी थक गया है, पर वह अपनी पर अडा रहा।

गराश व माय्या अनिच्छापूर्वक अपने कमरे से निकलकर आये। पेरशान को किसी ने नही बुलाया, पर वह स्वय आ पहुची और सोफे पर पैर ऊपर रख, माय्या के कधे पर सिर टिकाकर बैठ गयी।

"अब्बा को युद्ध के बारे मे कुछ सुनाना चाहिए," उसने अनुरोध किया। "घर मे कुछ ऊब-सी लगने लगी है"

और उसने अगडाई लेते हुए जभाई ली।

पिता उसके इन शब्दो के लिए उसे बडी खुशी से डाट-डपट देता, पर उसने उसे केवल आखें दिखाने तक सीमित रखा और अपनी बायी मूछ पर कई बार बल दिये।

बेटी ने इसको कोई महत्त्व नहीं दिया..

पिता ने गराश से कठोर शब्दो मे कहा कि अच्छे बेटे बाप का बोझ कम करने के लिए अपना कंधा लगा देते हैं, जबकि उसके बेटे ने उसके सिर पर एक फालतू पत्थर डाल दिया है।

"आखिर मैंने समझा तो दिया कि मामला क्या था।" गराश भडक उठा।

"तुम्हारी बात पिता के घावो पर नमक छिड़कने जैसी है।"

बहू के साथ रुस्तम की बात लम्बी हुई। वह माय्या को कई बार आगाह कर चुका था कि वह जवान है, जिन्दगी के बारे मे कुछ नहीं जानती, इसलिए उसे बहुत सावधान रहना चाहिए। वह आखिर उस मनहूस लफगा शेशातया की गाडी मे क्यों बैठी? अच्छा, उसने उसे छोड आने को कहा था? और अगर रेस्तरां चलने को कहता, तो भी क्या तैयार हो जाती?

भ्राखिर माय्या को गोशालगा के नीच, भ्रोछे स्वभाव के बारे में इतने के विचार मालूम है। भ्राखिर वह ससुर की हिदायतें नहीं मानती है? माय्या केवल इजीनियर नहीं है, बल्कि रुस्तमोव परिवार की सदस्या भी है, इसका मतलब यह है कि उसे हर मामले में भ्रौर हमेशा रुस्तम की तरफ़ रहना चाहिए भ्रौर उसे नजर भ्राती सारी कमियों के बारे में केवल उसे ही बताना चाहिए।

"मेरा परिवार ऐसा होना चाहिए," भ्रौर रुस्तम ने मुट्ठी कसकर हवा में हिलाई, "ताकि कोई एक उंगली को दूसरी से अलग न कर सके। भ्रौर जो उंगली खुद भ्रलग होगी, उसे मैं काटकर फेंक दूगा।"

"कुछ समझ में नही भ्राता मेरी, कुछ समझ में नहीं भ्राता " माय्या जवाब मे केवल इतना ही कह पायी।

"तुम तो तैल्ली चाची के साथ मिलकर मेरे खिलाफ भ्रनाम पत्र भी लिखने लगती!" रुस्तम चिल्लाया। "तुम मेरे पास, सिर्फ मेरे पास भ्राकर कहती कि नाली खराब हो गयी है या गूगा हुसैन गेहू की फसल में ठीक से पानी नही दे रहा है। मीटिंग करने की क्या जरूरत थी?"

रुस्तम मेज़ से उठ खड़ा हुभ्रा।

"मैंने जो कहा, उस पर सोच-विचार कर लो! शब-बखैर! "

भ्रौर वह सोने के कमरे में चला गया।

सकीना व परेशान माय्या को ससुर की बात पर ध्यान न देने के लिए मनाती रही लेकिन उसे जैसे सान्त्वना की जरूरत ही नहीं थी, वह पूर्णतया शान्त रही भ्रौर सिर-दर्द का बहाना करके भ्रपने कमरे में चली गयी।

जब गराश भ्राया, वह शाल लपेटे चुप रही, मानो ठिठुर गयी हो। पति को भी कहने को कोई उपयुक्त बात नहीं सूझ पायी।

भ्रन्त मे माय्या ने कहा

"सुनते हो, चलो हम बड़ों से भ्रलग रहने लगते हैं। दूसरा रास्ता मुझे नजर नहीं भ्राता।"

गराश स्वय भी भ्रनेक बार ऐसा निर्णय लेने के बारे में सोच चुका था, लेकिन इस समय उसे बहुत बुरा लगा, भ्राश्चर्य भी हुभ्रा कि पत्नी ने ऐसे शब्द इतनी शांति से कह दिये। इसे क्या, परायी जो ठहरी! लेकिन उसे तो बाप, मां भ्रौर बहन को छोड़कर जाना पड़ जायेगा। भ्रौर लोग क्या कहेंगे? पारिवारिक जीवन शुरू से तो हमेशा ठीक से नहीं

लता, पुश्तैनी घर छोड़कर चला जाना सबसे आसान होता है। बुजुर्गो
ा कुछ लिहाज करना जरूरी होता है।
"लेकिन रात में तो हम यहां से जायेंगे नहीं। लेट जाओ," वह म्लान
वर मे बड़बड़ाया।
अपमान के कारण माम्या का दिल उचटने लगा। क्या गराश नहीं
मझता है कि वह घर मे शान्ति बनाये रखने के लिए सब सह रही है।
र सहनशीलता की भी एक सीमा होती है।
उस रात उन्हें अपना बिस्तर ठण्डा लगा।

दसवाँ परिच्छेद

१

हल अछूती धरती के भारी-भारी ढेले उलट-पुलट रहे थे, ट्रैक्टरों के पीछे गहरी हलरेखाएं खिचती जा रही थी। गराश चालक की सीट पर बैठा ध्यानपूर्वक अगल-बगल देखता जा रहा था। अनजुती जमीन पर ब्रुरुश की तरह जमी सूखी घास का हर क्षण कम होता जाते और ट्रैक्टर के पीछे-पीछे भेड़ के ऊन जैसी मुलायम, नम, गहरी काली मिट्टी को बिखरती देखकर बहुत सुखद लग था। उसे जोताई करना अच्छा लगता था,
हर रात भी गजारना अच्छा लगता था—

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

' तुम अपने अब्बा की तरह बात कर रहे हो।

' अब्बा अक्लमंद और इन्सानपसंद हैं, ' गराश ने कुछ बुरा-सा मानते हुए कहा।

"हमेशा नहीं। पारिवारिक जीवन के बारे में उनके विचार . . . माफ करो, मैं उन्हें नहीं स्वीकार कर सकती। मैं चाहूंगी कि मेरा पति स्वतंत्र हो, चिन्तन में भी और काम में भी। सच कहूं, तो तुम्हारे अब्बा कुछ बरसों से मुझ पर थोड़ा खीज रहे हैं, और उन्हें देख-देखकर तुम भी खीजने लगे हो।"

"तुम्हें तो कुछ भी कहना मना है – फौरन जवाब में पूरा भाषण दे देती हो!"

"कहां भाषण देती हूं!"

इस मन कड़वा कर देनेवाली बातचीत के बाद गराश ने फैसला किया कि वह पूरा एक सप्ताह दूरस्थ खेत में काम करेगा, इसलिए रात में भी खेत-कैंप में रहेगा।

"ठीक है!" मास्या का चेहरा उतर गया, उसने सांस रोक ली और फिर गहरी सांस छोड़ी।

गराश के लिए समय पहाड़ हो गया था, मानो वह ट्रैक्टर पर नहीं, किसी बैलजुती, चर्र-चूं करती गाड़ी पर बैठा हो। शाम को वह खेत-कैंप में ऊबता और घुटता रहता, लड़कों के गीतों व मजाकों से उसका मन नहीं

रहता था, कायापलट हो गया था, सूखी घास भरे गद्दों पर सलीके से कम्बल बिछाये हुए थे, सफेद-झक तकियों का हमवार अम्बार लगा हुआ था।

"बड़ी दिलचस्प बात है, यह किसने किया?"

"कुछ भले लोग मिल गये, कामरेड।" उसे पीछे से खनकती आवाज़ सुनाई दी।

उसने मुड़कर देखा। रेशमी कुरते पर सफेद एप्रन पहने, कमरे को इत्र की खुशबू से महकाती, मुस्कराती नज़नाज़ दरवाज़े में खड़ी थी।

"ऐसे टकटकी बांधे क्यों देख रहे हो? क्या पहचाने नहीं?"

गराश को उससे मिले अरसा हो चुका था। उसे वह बेडौल, सूखी युवती के रूप में याद थी, पर अब वह सुन्दर, गदरायी और आत्मविश्वास से परिपूर्ण स्त्री हो चुकी थी।

"पहचानता हूं, पर तुम यहां कैसे आ गयी?" गराश घबरा गया।

"भैया ने भेजा है। उन्होंने कहा कि सारे लोग खेत में हैं, उनका ख़याल रखना चाहिए, दुर्घटना होने पर उनकी प्राथमिक चिकित्सा करनी चाहिए। उन्होंने मुझे दवाइयों का बैग और दवाइयां दीं. "

"ऐसे काम की खातिर तो श्रमदिनों की भी परवाह नहीं होती," गराश खुरचकर साफ की हुई मेज़ पर बैठते हुए खुश हुआ।

"मैंने तो जहां भी काम किया, किसी ने शिकायत नहीं की," नज़नाज़ नखरीली अदा से मुस्करायी।

"पट्टी बदलोगी?" और गराश ने जल्दबाज़ी में तेल में चिकटी लीर बंधी उंगली उसे दिखायी।

। जब कि अपना स्वागत प्रेममय प्रगाढ़ आलिंगनों से किये जाने के प्रति
वस्त पति की भौंहें तन गयीं।
"इतनी देर आये कैसे?" मन में पत्नी ने पूछा।
"इधर आनेवाले ट्रक का इन्तज़ार करता रहा। पर तुम क्यों नहीं सो
हो? क्या चिन्ता है तुम्हें?"
"सब ठीक है, जैसे चलना चाहिए, चल रही है," माय्या ने उदास
में मज़ाक किया। "तुम्हारे अब्बा लड़ते हैं "
गराश ने खीजकर मुंह बनाया। फिर वही पुराना राग. .
"और सब मामूली-सी बातों के कारण। तुम तो जानते ही हो कि मैं
हूं व्यायाम करने की आदी हूं। मुझे अपने घर में छुटपन में ही यह
आ दिया गया था। खुले बरामदे में निकलना अच्छा नहीं लगता। मैंने
से सलाह की, बढ़ई को हमारे कमरे के आगे के एक कोने में झाड़
ने के लिए बुलाया गया, पर अब्बा आये और उसे डाटकर भगा
ग मुझसे तो उन्होंने कुछ नहीं कहा, जो और भी बुरा लगा। एक
एक दिन आखिर मेरे धैर्य का बांध टूट जायेगा, कलह शुरू हो जायेगी "
गराश महसूस कर रहा था कि वह माय्या की आये दिन की शिकायतें
ने-सुनते थक चुका है। *उसने बरबस नज़नाज़ के साथ उसकी तुलना की*
: तो हमेशा हर चीज़ से खुश रहती है, झीखती नहीं है, दुखी नहीं
ती है, मामूली बातों के कारण निराश नहीं होती है, पुरुषों को पसंद
ने की, उन्हें खुश करने की कोशिश करती है .
"ठीक है, ठी ऽऽ क है, पर अब्बा का स्वभाव बदलने की ताक़त
झ में नहीं है। तुम्हारे पास अपना कमरा है, उसी में नयी नखरे करनी
हो, जो मन में आये करो।"
"तुम इतने झल्लाकर क्यों बोलते हो?"
"और कैसे बोलूं? आखिर मैं कोई पत्थर तो हूं नहीं! हफ्ते भर खेत
भटकता रहा हूं, ट्रैक्टर के पास ज़मीन पर सोता रहा हूं, घर भागकर
या और मेरा झीख-झीखकर स्वागत किया जा रहा है। बड़ा अच्छा
गता है न!"
माय्या ने आंसू पोंछ लिये।
"ठीक है, गराश, आगे मेरे मुंह से एक शब्द नहीं सुनोगे।" उसकी
आवाज़ भावहीन थी। "लेटोगे?"
"नहीं, खाना दो, खेत लौटना है," गराश झूठ बोला।

माना – सोफे पर पटक दिये। अवकाश के दिन दोपहर तक बिस्तर में रहना अच्छा लगता है – लेटी रही। संगीत सुनने की इच्छा हुई, पूरे जोर से खोल दिया।

लेकिन जब स्त्री भाग्य की डोरी किसी पराये के साथ बांधती है, दूसरों की पसन्द, इच्छाओं और मन:स्थिति का ध्यान रखना पड़ता है, अगर वह चाहती है कि कोई उसकी बात माने, – खुद के आगे झुकने को तत्पर रहना होता है, धैर्य, संवेदनशीलता सहायता लेनी होती है और छिपाने में क्या फायदा – कभी-कभी भी काम लेना होता है।

यह सब कठिन होता है, पर और भी कठिन हो जाता है, नवविवाहित ऐसे परिवार में रहने लगते हैं, जहां अपना पुराना है, ऐसे परिवार में, जहां सम्बन्धी उनके जीवन में हस्तक्षेप कर्तव्य मानते हैं।

रुस्तमोव खानदान में माय्या के लिए ससुर की निरंकुशता उठी थी। उसे पति के अपने माता-पिता से अलग होकर आना के विचार से भयभीत हो उठने और इनकार करने से आश्चर्य हुआ, जैसे बदल गया था, रूखा और लापरवाह हो गया था। शायद उसे ने दूसरी तरह की पत्नी की जरूरत है, जो आंगन झाड़-बुहार दे, साफ कर दे और कलह के बाद पति का इस प्रकार आलिंगन करे, कुछ हुआ ही न हो। क्या पता, शायद गराश का उससे प्रेम हुआ हो, बस लिया हो ...

लिखने की मेज़ के पास बिछाये हुए गलीचे के ऊपर रख दिया और अंदर आये नजफ़ की ओर मुस्कराकर देखा. "आओ, आओ ."

अपनी आदत के अनुसार विनम्र, विनोदी नजफ़ ने उपनिदेशक की ओर कोई कागज़ बढ़ाया।

"यह क्या है? अरे, बैठो, बैठो।"

"कपास चुनने की मशीनों की धुरियों के लिए प्रार्थनापत्र है। उनकी मरम्मत करने का वक्त आ गया है। बोवाई का काम ठीक चल रहा है, हमारे बारे में चिन्ता मत कीजिये, हम कार्यक्रम के अनुसार सामान्य गति में काम कर रहे हैं। छोटी-मोटी टूट-फूट होती रहती है, सो तो होता ही है, हम ख़ुद ही ठीक कर लेते हैं। मशीनें अभी बेकार खड़ी नज़र नहीं आतीं," नजफ़ गूंजते और स्फूर्त स्वर में बोल रहा था, उसे शराफ़ोगलू को ख़ुश करना अच्छा लगता था।

"और तुम्हारे सामूहिक फार्म के क्या हाल हैं?"

नजफ़ की आवाज़ का जोश जाता रहा

"आप ख़ुद ख़ुद गये तो थे, देख लिया . "

शराफ़ोगलू ने हठ नहीं किया और मेज़ पर झुककर प्रार्थनापत्र पर हस्ताक्षर कर दिये।

"बहुत अच्छा काम छेड़ा है!" उसने प्रशंसा की। "हम तो हर साल अपने को यही तसल्ली दिलाते रहे कि अगस्त से पहले कपास चुनने की मशीनों की ज़रूरत नहीं पड़ेगी और मरम्मत करने की जल्दी नहीं है। लेकिन जब कपास की बोंड़िया खुलने लगती हैं, तो मालूम पड़ता है कि वे मशीनें पुराने छकड़ों से भी बुरी हैं कर नहीं पाये, ध्यान नहीं रखा, भूल गये ." शराफ़ोगलू ने दिखावा किया मानो कोम्सोमोलों को स्वय ही वसंत में उनकी मरम्मत में जुट जाने की सूझी हो, न कि उसने उन्हें मजबूर किया हो। "तुम्हें कपास चुनने की मशीन पसंद है?" उसने चलते-चलते पूछ लिया।

नजफ़ इतने जोश में उचका कि कुरसी खड़खड़ा कर उलट गयी।

"कामरेड उपनिदेशक!" उसने तीन बार छाती ठोककर कहा। "मुझे उस मशीन से प्यार है, ईमान से प्यार है! तीन साल हुए, जब गिज़ेतार अभी मेरी मंगेतर ही थी, मैंने उस बेचारी को खेत में देखा था। पसीने में तर-बतर हुई, तपती धूप में वह कपास हाथों से चुन रही थी। और भोर से शाम ढले तक कोई सोलह घंटे काम होता था .. मैंने सोचा था: हमारी

उसे आशा थी कि पत्नी रात को रहने के लिए उसको [illegible] आस्था और व काम का आदर की दृष्टि से देखने की [illegible] रही थी और उसने बदल नहीं की। [illegible] गराश ने [illegible] गुर गाना और धीरे-धीरे [illegible] कोई मोटर पकड़ने राजमार्ग पर पहुँ गया।

वह खेत-कैंप में लगभग दो घंटे पहुँचा। उसके आने से उसे ट्रैक्टर चालकों ने [illegible] मजाकों से [illegible] का स्वागत किया।

जवान बीबी का घर छोड़कर आना मुबारक है!"

' कहीं कानी किसी की नज़र तो नहीं काट गयी थी! लड़ाई हो गया?"

सुबह नजनाज उनींदे और उदास गराश के लिए चाय लेकर आयी उसकी पेशाए मद थी और मुस्कान प्यार भरी। उसने नाश्ते के बाद उसकी उंगली की पट्टी बदल दी और जब गराश के कधों व गालों पर उसके गदराये उरोजों का फिर स्पर्श हुआ, उसकी सांस फिर रुक गयी।

ट्रैक्टर-चालक जा चुके थे, वह अकेली थी और उसके गहरे रंग के होंठ गराश के चेहरे के बहुत निकट धधक रहे थे, निमंत्रण देते मुस्करा रहे थे, लुभा रहे थे

"दोपहर के खाने में पुलाव होगा," नजनाज ने कहा।

"इतनी तकलीफ उठाने की क्या जरूरत है?"

"बस इसलिए कि तुम्हें अच्छा लगे।"

३

शीशा लगे बरामदे में से होकर आती सूरज की प्रखर किरणें खिड़की के पास बैठे शराफोगलू को प्यार से दुलार रही थी, उसका बदन गरमा रही थी, वह हाथ में पढ़ा हुआ समाचारपत्र पकड़े उदास बैठा जभाइयां ले रहा था। उसकी गोदी में बैठा झबरा बिलौटा ऊंघ रहा था, दो महीने हुए वह शराफोगलू को मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन के फाटक पर भूखा और ठिठुरता

था और वह उसे उठा लाया था।

अंदर आ सकता हूं?" किसी ने बाहर से पूछा।

मना क्यों करूगा? आओ।" शराफोगलू ने बिलौटे को सावधानी से

शराफ़ोगलू फिर खिड़की के पास बैठ गया, उसने अंगड़ाई ली और म्याऊ-म्याऊ कर उठे बिलौटे को फर्श से उठा लिया। यानी मक्का का काम निबटा दिया गया है और तिपतिया की बोवाई भी पूरी की जा चुकी है। अब सबसे व्यस्त और कठिन समय आ गया था – कपास की बोवाई का समय। अभी तक क्षेत्र के सभी सामूहिक फार्मों में काम समान गति से चल रहा था, कोई पिछड़ता हुआ नज़र नहीं आ रहा था, फिर भी 'नवजीवन' सामूहिक फार्म ने शराफ़ोगलू को वास्तव में चिन्ता में डाल दिया था।

जाड़े में उसे इस बात पर ख़ुशी हुई थी कि रुस्तम उससे यदा-कदा ही सहायता मांगता रहा था। शराफ़ोगलू को ऐसे सामूहिक फार्म के कार्य-कर्त्ता अच्छे नहीं लगते थे, जो अपने हितों की पूर्ति के लिए उच्च सरकारी पदों पर आसीन अपने मित्रों का उपयोग करते थे। लेकिन अब बोवाई अभियान शुरू हो चुका था और रुस्तम पहले की तरह अपने बारे में कुछ जानकारी नहीं दे रहा था। अनाम पत्रों का एक के बाद एक पहुंचना बंद नहीं हुआ था। शराफ़ोगलू 'नवजीवन' में केवल एक दिन ही रहा था, पर उसने वहां बहुत-सी कमियां देखी थीं।

इस बारे में रुस्तम से साफ़-साफ़ बात करना ज़रूरी था और शराफ़ोगलू ने उसे सुबह से ही अपने यहां बुलवा भेजा था।

अहाते में मोटर के बुलन्द हार्न की आवाज़ गूंजी। रुस्तम 'पोब्येदा' में से उतर रहा था।

अध्यक्ष को मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन के अहाते में नजफ़ से मुलाक़ात होने की बिलकुल भी आशा नहीं थी। उसके मन में सदा की तरह सन्देह जाग उठा। "तो शराफ़ ने मुझे इसलिए बुलवाया है!" उसके दिमाग़ में विचार कौंधा।

वह विषण्ण मुखमुद्रा में शराफ़ोगलू के कक्ष में दाख़िल हुआ।

"पानी पियो, आराम कर लो, बेवफ़ा दोस्त, उसके बाद सुनाओ कि सामूहिक फार्म के क्या हाल हैं," शराफ़ ने नम्रतापूर्वक कहा।

"बेवफ़ा?" क्यों नहीं, बेशक नजफ़ रुस्तम को शराफ़ोगलू की नज़रों में गिरा चुका होगा। रुस्तम ने भौंहें सिकोड़कर तम्बाकू की थैली निकाली। उसकी उंगलियां कांप रही थीं और शराफ़ोगलू ने देख लिया कि इस वक़्त के दौरान मित्र के सिर के कितने सारे बाल पक चुके हैं। लेकिन रुस्तम की कठोर व साहसपूर्ण मुखमुद्रा बता रही थी कि वह उम्र को अपने

वैज्ञानिक क्या कर रहे हैं? आखिर हमारे यहा विज्ञान अकादमी है, प्रोफेसर हैं, सहायक प्रोफेसर है " वह कुछ नही जानता था कि प्रोफेसर क्या होता है, पर शब्द अत्यधिक प्रभावशाली था। "'ऐ, कामरेड वैज्ञानिक फौरन कोई ऐसी मशीन बनाइये, जो इन सुन्दरियों को गुलामाना मेहनत से छुटकारा दिला दे। ' मैने चिल्लाकर यही कहा। क्या गलत कहा?"

"ठीक, बिलकुल ठीक कहा," शराफोगलू ने नजफ की व्याकुलता पर मुग्ध होते हुए कहा। "लेकिन अब मशीन तो तैयार कर ली गयी है, फिर भी ऐसे लोग मौजूद हैं, जो उसे स्वीकार करने को तैयार नही हैं, उसे काम मे लेना नही चाहते हैं।"

"उन्हे डर है कि सामूहिक किसान की आय कम हो जायेगी। हम हमारे रुस्तम को दिखा देंगे कि मशीन स्वीकार न करने का क्या मतलब होता है! इसीलिए हमने वसत मे ही मरम्मत शुरू कर दी है। मुगान है ही ऐसी जगह कि अगर चिलचिलाती धूप पडने तक मशीनो की मरम्मत न की जाये, तो कुछ नही किया जा सकता है। धूप मे तेजी आते ही सब उबलने, तपने लगता है, मरम्मत करने मे देर हो जाती है।"

मूल मुगानवासी शराफोगलू यह नजफ के बताये बिना भी जानता था, पर उसकी बात वह अत्यत ध्यानपूर्वक सुन रहा था।

"लेकिन, कामरेड उपनिदेशक, मशीन तो मशीन होती है, फिर भी कुदाल तो रह ही गया है! मिट्टी ढीली करने और कपास के पौधों के इर्द-गिर्द मिट्टी के ढूहे बनाने के काम तो हाथ से ही करने पडते हैं।" नजफ ने अर्थपूर्ण मुद्रा मे अपने मोटे होंठ बाहर निकाले।

"इसे खतम करना मुश्किल नही है," शराफोगलू ने कहा। "कहने का मतलब है, मुश्किल है," उसने जल्दी मे अपनी बात ठीक की, "लेकिन सम्भव है। हम सारे सामूहिक किसानो को कायल कर देंगे कि कपास की बोवाई वर्ग-गुच्छ पद्धति मे करनी चाहिए, मशीनो को हम सुधारेंगे–फिर कुदाल की जरूरत ही खतम हो जायेगी।"

"जरा हमारे उनको कोई मजदूर करके तो देखे "

"आप लोग तो उस पर थूकना चाहते हैं!" शराफोगलू हस पडा। नजफ शरमा गया।

"अपने माननीय कार्यकर्ताओं पर थूकना केवल ठीक नही है," शराफोगलू ने गम्भीर स्वर मे कहा। "यह अनुचित है। लेकिन उनके इशारा पर नाचना चाहिए। सच कहा न? बहुत ही अच्छी बात है। जाओ..."

मे पड़ जाता हूं तुम में अपने काम के प्रति उत्साह नहीं है, तुम्हारा कुछ ठण्डा पड़ गया है। और तुम्हारे मातहतों में भी लगन नहीं ई देती।"

"क्या बहुत सारे अनाम पत्र पढ़ लिये हैं?" रुस्तम ने द्वेषभाव से कहा।

"अनाम पत्र भी पढ़ता हूं। क्या तुम्हें भी उनमें दिलचस्पी है?" ोगलू ने सेफ खोलकर मुड़े-तुड़े लिफाफों में रखे चार पत्र निकाले। रन मैं इन पर खास ध्यान नहीं देता हूं," उसने पत्र सरसरी तौर से रहे रुस्तम की तरफ कनखियों से देखा कि उसका चेहरा कैसे बदल है और आगे कहा "लेकिन मुझ पर पड़े प्रभाव को बेशक ध्यान रखना पड़ता है।" वह हंस पड़ा। "मैं सोचता था कि तुम अपने काम कमियों के कारण उदास हो गये हो, पर मालूम पड़ा, दोषी मैं हूं, कि खाना खाने नहीं रुका। और तुम मुझसे नाराज़ हो!"

"किसी ने ठीक ही कहा है: 'गुस्सा अपनों पर ही आता है'," म बड़बड़ाया। शराफोग्लू उसे अभी ठीक से नहीं जानता है। बात नाराज़ ी भी नहीं है, न ही यह कि उसे उसकी कमियां गिनाई जा रही हैं, से बुरी बात तो यह है कि शराफोग्लू रुस्तम का बुरा चाहनेवालों पर वास करता है। किस पर? जैसे नजफ, जो अभी-अभी उसके कक्ष से रना था। और अनाम पत्र भी नजफ की ही कारिस्तानी है।

शराफोग्लू के स्वर में कुछ नरमाई झलकने लगी, मानो उसे गुस्से में धे हो रहे रुस्तम पर दया आ गयी हो।

"तुम्हें गलतफ़हमी हुई है! नजफ ने तो तुम्हारा नाम तक नहीं लिया। मने सिर्फ काम के बारे में बातें की थीं। लोगों के बारे में इतना बुरा हीं सोचना चाहिए। क्योंकि यह भी अपनी तरह का एक रोग है: आदमी ं संदेह का कीड़ा पनपने लगता है और उसे सब अपने दुश्मन नज़र आने गते हैं।"

रुस्तम ने तुरत विश्वास कर लिया कि नजफ उसके समक्ष दोषी नहीं है, लेकिन उसने फिर भी शिकायत ज़रूर की है।

"काश, तुम जानते कि मुझे कितनी मुश्किल हो रही है! मेरे अन्दर सब फुंका जा रहा है! दिन-रात दौड़-धूप करता रहता हूं, जी-जान से कोशिश करता रहता हूं, लेकिन शुक्रिया के बजाय नुक्ताचीनी ही सुनने मिलती है! नहीं, बेहतर होगा, मैं यहां से छोड़कर चला जाऊं, किस दूसरा, मामूली टोली-नायक बन जाऊंगा। आशा करता हूं, तुम

पर हावी नहीं होने देना चाहता और दृढ़ इच्छाशक्ति से वृद्धावस्था पर विजय पाने की आशा करता है।

"तुम आखिर पूछते क्यों नहीं हो कि मैं तुम्हारे सामूहिक फार्म से खुश हूँ या नहीं?"

रुस्तम ने प्रसन्नता से कंधे उचकाये।

"पूछने की जरूरत ही नहीं है। फौरन जाहिर ... तुमने खाना खाने से इनकार कर दिया था।" उसने एक ... का घना बादल छत की ओर छोड़ा। "तुम सारे ... कर्म हो। पूरे व्यवहारवादी!"

"मैं तुम से एक दोस्त की तरह मोर्चे के साथी होने के नाते बात कर रहा हूँ," शराफोगलू ने उलाहना दिया।

"कैसे भी बात करो, मतलब तो एक ही है!"

"यानी तुम सामूहिक फार्म के हाल से सन्तुष्ट हो?"

तम्बाकू के धुएं का बादल छत की ओर बढ़ा। रुस्तम मौन रहा।

"तुम क्या यह मानते हो कि सारे जिला कर्मचारी प्राणहीन मशीनें हैं? क्या यही बात है? हमारे बीच में कुछ ऐसे भी हैं, पर हैं बहुत कम। हम पूरी कोशिश करते हैं कि ऐसे लोग बिलकुल ही न रहें. जिला कार्यकर्ता होना कोई आसान काम नहीं है, इतना विश्वास रखो। तुम भी तो नेतृत्वकारी कर्मचारी हो, चाहे जिला स्तर के न सही। सामूहिक किसान शायद तुम पर भी व्यवहारवादी, बेरहम होने का आरोप लगाते होंगे, क्यों?"

"मुझमें ऐसा दोष नहीं है!" रुस्तम के स्वर में ईमानदारी झलकी।

"बात जैसे ही तुम पर आयी, मालूम पड़ा कि तुम में कोई कमी नहीं," शराफोगलू ने व्यंग्यपूर्वक कहा।

"अरे, दोस्त, बाल की खाल मत निकालो। हर आदमी में कुछ न कुछ कमी होती ही है। और रुस्तम भी बेदाग नहीं है। अगर रुस्तम टेढ़े मिजाज का है, तो यह उसका अपना मामला है, इसका वसंतकालीन बोवाई से कोई वास्ता नहीं है।"

"मैं नहीं मानता!" शराफोगलू ने सिर हिलाया। "कुछ ऐसी कमियां भी हैं, जिनसे सैकड़ों लोग परेशान होते हैं। मैं तुम्हें कई बार आगाह कर चुका हूँ। सामूहिक फार्म अब विशाल और जटिल उद्यम है, उसका संचालन आँखों पर पट्टी बाँधकर और केवल अपने अनुभव और अपनी बुद्धि पर भरोसा करके नहीं किया जा सकता। जब-जब मैं तुम्हें देखता हूँ तो

"कितना सुन्दर है! कितना सुन्दर है! बच्चों के लिए जीता-जागता खिलौना है!" ग्रमलान ने प्रशंसा की।

"इसे आपके प्रति सम्मान के प्रतीक में स्वीकार कीजिये! सच्चे दिल से है!" रुस्तम ने कहा और तुरंत छौने को खोलकर ड्राइवर को आवाज़ दी, "ले, बेटा, गाड़ी में रख दे इसे!"

ज़िला समिति के ड्राइवर ने ग्रमलान की तरफ़ प्रश्नात्मक दृष्टि से देखा।

"आपको यह क्या सूझी, रुस्तम-बोबो?" ग्रमलान ने धीरे से पूछा, पर सामूहिक किसानों व रुस्तम को उसका कठोर स्वर किसी भी चीख से कम न लगा। "इस तरह तो स्तेपी के हिरनों को कोई भी सामूहिक फार्म की भेंट समझ बैठ सकता है।" और ड्राइवर की ओर मुड़कर शुष्क स्वर में बोला, "इसे वापस बांध दो।"

रुस्तम का चेहरा खीज के मारे तमतमा उठा। जैसा कि दिख रहा था ग्रमलान लोगों के मध्य केवल औपचारिक सम्बन्धों को ही मान्यता देता था, अतिथि-सत्कार की परम्पराओं की उपेक्षा करता था ..

पार्टी की ज़िला समिति नये बाग से घिरे एक दोमंज़िला इमारत में स्थित थी। एक तरफ़, घोड़े बांधने के खूंटों के पास दो ऊंची बांधी हुई पूछोंवाले घोड़े काठी कसे खड़े थे। वहीं कीचड़ में सनी जीप और एक अभी-अभी गराज से निकली, साफ़-सुथरी कार खड़ी थी।

स्वागतकक्ष में बाके कट की काली मूछोंवाला युवा सहायक टाइप कर रहा था, उसने रुस्तम को देखकर सिर हिलाया

"अंदर जाइये, अभी-अभी आप ही के बारे में पूछ रहे थे।"

ग्रमलान मेज़ पर हाथ पर गाल रखे बैठा था और एकाग्रचित्तता से अपने सम्भाषी की बात सुन रहा था। गोशातखा? बस इसी की कसर रह गयी थी! ज़रूर, हफ़्ते-भर की जमा की हुई ताज़ा चुगलियां जमा करके लाया होगा।

"क्या हाल हैं, कामरेड रुस्तमोव?" सचिव आगंतुक की ओर अपना छोटा-सा ताकतवर हाथ बढ़ाकर उठ खड़ा हुआ।

रुस्तम घबराहट के कारण हड़बड़ा गया और अटक-अटककर बोलता हुआ वसन्तकालीन बोवाई का ब्योरा बताने लगा, पर ग्रमलान ने उसे टोक दिया,

"यह हमें बोवाई की रिपोर्ट से मालूम है।" उसने अपने सामने रखे

कागज पर हथेली मारी। "हमें यह भी मालूम है कि सामूहिक फार्म पिछड़ रहा है। शायद कामरेड अगाफोनव आप से इस बारे में बात कर चुके हैं। मैं पहले ही बता दूं कि पार्टी की जिला समिति को विश्वास है कि 'नवजीवन' के सामूहिक किसान कठिनाइयों पर काबू पा लेंगे लेकिन इस समय जिला समिति को बिलकुल दूसरे ही सवाल में दिलचस्पी है।"

असलान जब तक बोलता रहा, रुस्तम उसके लहजे से यह अंदाज लगाने की कोशिश करता रहा कि गोशातया ने अपना नीच काम किया है या नहीं। लेकिन सचिव अभेद्य था।

"पार्टी, कामरेड रुस्तमोव," असलान ने आगे कहा, "स्थानीय पहलकदमी, मेहनतकशों की पहलकदमी को बहुत बड़ा महत्त्व देती है। इस पर काफी अरसे से ध्यान नहीं दिया जा रहा था, केन्द्र सामूहिक फार्मों को फसलों की अदला-बदली, बीजों की किस्मों और कृषि कार्यों की अवधियों के बारे में निर्देश देता रहा। अब यह समाप्त कर दिया गया है। अब, जैसा कि आप जानते हैं, पार्टी आशा करती है कि सामूहिक किसान स्वयं स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप समृद्धि के अधिकतम विश्वसनीय और तीव्र रास्ते खोज निकालेंगे। आप बताइये कि क्या आपने इस पर विचार किया है?"

रुस्तम को आशा थी कि बोवाई, सिंचाई के बारे में आम बातचीत शुरू होगी और उसे संदेह नहीं था कि असलान अपने पूर्वाधिकारियों की तरह ही उसे उपदेश देने लगेगा, झिड़की देने व हर प्रकार की अन्य विपत्तियों की चेतावनी देगा। पर बातचीत कुछ असाधारण ढंग से शुरू हुई और इसके लिए वह तैयारी करके नहीं आया था। समय पाने और अपने विचारों में तारतम्य बिठाने के इरादे से उसने तम्बाकू की थैली की ओर हाथ बढ़ाया।

"पाइप पी सकता हूं?"

असलान ने "कृपया धूम्रपान न करें" की तख्ती की ओर देखा और क्षमापूर्वक मुस्कराकर कहा

"अगर रहा नहीं जा रहा है, तो पीजिये।"

"रहा क्यों नहीं जा सकता? सब्र कर लूंगा।" रुस्तम ने तम्बाकू की थैली वापस जेब में रख ली और याद कर-करके सवाल और सामूहिकों के बारे में अपने विचार बताने लगा। असलान दिलचस्पी के साथ सुनता रहा, पर उसने फिर अचानक की बात बीच में ही काट दी।

"आपके विचार आकर्षक और दूरगामी महत्त्व के हैं। मैं इनका अनुमोदन करता हूँ। लेकिन ये विचार अकेले रुस्तम-कोशी के है या फिर कम से कम कार्यालय के हैं। आखिर सामूहिक किसानों के खुद के सुझाव क्या है?"

रुस्तम सकपका गया। उसके लिए यह स्वीकार करना कठिन था कि उसने लोगों से सलाह नहीं की थी, क्योंकि अगर सच कहा जाये, तो उसे इसकी जरूरत ही महसूस नहीं हुई थी और उसने आम शब्दों में जवाब दिया कि साधारण मेहनतकशों के मूल्यवान सुझावों को कार्यालय ध्यान में रखता है।

"ठोस बात बताइये।" असलान ने अनुरोध किया।

रुस्तम ने कितना ही जोर क्यों न लगाया, पर वह सलमान के साथ रात में हुई बातचीत के अलावा और कोई ठोस बात याद नहीं कर सका।

"देख लिया," सचिव ने कष्टकारी चुप्पी तोड़ते हुए कहा, "बुरी बात हुई न? आखिर क्यों? इसलिए कि आपकी योजनाओं में जनता की इच्छाओं की अभिव्यक्ति नहीं होती। जब कि पार्टी हमसे कहती है सर्वप्रथम जनता की पहलकदमी का समर्थन कीजिये। हमारी सारी जनता प्रतिभाशाली है और हम, नेता लोग, केवल उसकी बुद्धि और प्रतिभा के कारण शक्तिशाली हैं। एक जमाना था, जब एक ही नेता का मत कानून का रूप ले लेता था, जिले के लिए भी और जनतंत्र के लिए भी। इसके परिणाम बुरे निकले, तुम खुद ही जानते हो। कहावत है 'एक और एक ग्यारह होते हैं'। कुछ नेतागण बुजुर्गों की यह सीख भूल गये, अपने को जनता से ऊपर समझने लगे, जनता को तुच्छ मान बैठे। उन्होंने जमीन जोतनेवालों को, मशीनें बनानेवालों को, पेट्रोल निकालनेवालों को और स्कूली बच्चों को लिखना-पढ़ना सिखानेवालों को भी सिखाया। उसके अलावा वे यह भी माग करते रहते थे कि उनके प्रति आभार व्यक्त किया जाये, 'हुर्रा' चिल्लाया जाये, तालियां बजाई जायें इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं कि ऐसे नेताओं के दिमाग चढ़ गये थे, वे मूर्खतापूर्ण और कानून-विरोधी काम करते थे, उन्होंने लोगों को दुख पहुंचाया और अंत में खुद ही अपनी बदनामी करवायी।"

रुस्तम सुन रहा था पर किसी तरह समझ नहीं पा रहा था कि असलान क्यों उसे इतने उत्साह के साथ जनता से अलग हुए नेताओं के बारे में बता रहा है। इस तरह के भाषण उच्च पदों पर आसीन व्यक्तियों को

करता हू कि मेरे सामने जिला जन-शिक्षा विभागाध्यक्ष से पूछिये वह मुझसे क्या चाहते हैं? हा, एक बार हम दोनों मे कहा-सुनी हो गयी थी, मैं इनकार नही करता इन्होंने दो फालतू बातें कही, मैंने—चार यही दोष है मेरा।" रुस्तम ने हाथ पूरे फैला दिये। "लेकिन अब, अब यह क्यों मेरे पीछे पड़े हुए हैं? कभी पशुपालन फार्म भागे आते हैं, असन्तुष्ट लोगों को जमा कर लेते हैं, तो कभी खेतों की खाक छानते हैं, मीटिंगें करते हैं! ऊब चुका हू मैं इस सब से, इतना कि बस पूछिये मत!"

गोशातखा की गरदन तमतमा उठी, नुकीली नाक हिलने लगी, लेकिन असलान ने हाथ उठाकर एक तरह से उसे रोक दिया।

"मैं देख रहा हू कि हम एक दूसरे को समझ नही पा रहे हैं, रुस्तम-बीयी," सचिव ने नम्रतापूर्वक कहा। "मैंने तुम्हें यहा भेडें पालने और कपास बोने के तरीके सिखाने के लिए नही बुलाया है। यह तो तुम्हें हममें से किसी से भी ज्यादा अच्छी तरह आता है। लेकिन कुछ ऐसे सवाल हैं, जिन्हें मैं ज्यादा अच्छी तरह समझता हू, इसलिए मुझे तुमसे साफ-साफ बात करने का अधिकार है। पार्टी हमें यही शिक्षा देती है। और पार्टी कम्यूनिस्ट के लिए सर्वोपरि है। यही बात है न?"

"पार्टी मुझे अपना सीना ठोक-ठोककर दावा करनेवालों से सौ गुना ज्यादा प्यारी है!"

"यह तो बहुत अच्छी बात है, कामरेड रुस्तम! मानो तुम मानते हो कि भेड़पालन और फसल काटने से भी कुछ ज्यादा महत्वपूर्ण प्रश्न हैं। दुनियादारी के सब से मुश्किल कामों से भी मुश्किल . मैं, जैसा कि तुम शायद अदाज लगा चुके होगे, लोगों के प्रति व्यवहार की बात कर रहा हू। जरा सोचो तो सही—क्या सामूहिक फार्म का अध्यक्ष, कारखाने का प्रबधक, पार्टी कार्यकर्ता पार्टी के निर्णयों को कार्यान्वित कर सकता, अगर वह लोगों को एकजुट नही कर सकता, उन्हें प्रेरणा नही दे सकता? मैंने तुम्हारे साथ आम पहलकदमी और साधारण सामूहिक किसानों की रचनात्मक पहलकदमियों के समर्थन की बात यू ही नही छेड़ी थी।"

"और मैं, आपके खयाल से, क्या करता हूं?" रुस्तम ने हथियार नही डाले। "दिन में भी और रात में भी खेत में मौजूद रहता हूं। आराम की जगह में बैठकर वक्त नही काटता हूं, कुछ लोगों की तरह आठ से पांच बजे तक काम नही करता हूं। मुझे चिन्ता रहती है—केवल सामूहिक फार्म की।"

"और मैं भी यही कोशिश करता हूं कि सारे लोग खुशहाली की दगी बसर करें, कामरेड असलान," सामूहिक फार्म के अध्यक्ष ने कहा र सारी बातचीत के दौरान पहली बार मुस्कराया।

असलान का सहायक कई बार दरवाजा थोड़ा-थोड़ा खोलकर खास भुका —वह स्मरण करा रहा था कि स्वागतकक्ष में मुलाकाती प्रतीक्षा कर ्हैं. .

शायद यह मुलाकात वैसे ही शांतिपूर्वक समाप्त हो गयी होती, पर जेला गोशातखा रुस्तम के साथ मुठभेड़ से बाज नहीं आया।

"बातचीत अपनी जगह होती है, पर सामूहिक फार्म की हालत के रे में जिला समिति के ब्यूरो में विचार करना जरूरी है," कहकर ोशातखा ने कुछ सोचा और आगे बोला "सामूहिक फार्म के सक्रिय दस्यों की पूर्ण सभा में।"

"धमकी मत दो!" रुस्तम तत्क्षण कह पड़ा। "मैं डरनेवालों में से हीं हूं। चाहे सौ बार जांच करो—मुझे कोई डर नहीं।"

असलान ने मेज पर पेंसिल से खटखटाया और कहा कि गोशातखा का ञाव पूर्णतया उचित है और आदरणीय रुस्तम-कीशी को धमकाने का रादा किसी का नहीं है। साथ ही रुस्तम को चाहिए कि वह फौरन जिला ार्यकारिणी समिति आकर पशुपालन फार्म के लिए दवाइयों का बक्सा, लग, रेडियो सेट और चल-पुस्तकालय ले लें। असलान को संदेह नहीं है क रुस्तम-कीशी अपनी स्वाभाविक सक्रियता दिखायेगा और पशुपालन फार्म ो सलीके से रखेगा। और आज की बातचीत के बारे में वह गम्भीरता े सोचेगा और समझ लेगा कि हर काल की अपनी विशिष्ट आवश्यकताएं होती हैं और बुद्धिमान व्यक्ति उन्हें ध्यान में रखते हैं। अंत में यह कि सामूहिक फार्म के अध्यक्ष को यह याद रखना चाहिए: पार्टी उसे मेहनतकशों के प्रति निष्ठुरता के लिए कभी क्षमा नहीं करेगी।

"काम हम पूरा कर लेंगे, मैं वादा करता हूं!" रुस्तम उठ खड़ा हुआ। "बस बुरा चाहनेवालों के मुंह बंद रखे जायें! मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन और शायद समाचारपत्र में लगातार अनाम पत्र भेजते रहते हैं।"

असलान सोच में पड़ गया।

"मैं अनाम पत्रों को महत्त्व नहीं देता, लेकिन तुम्हें अगर वे परेशान करते हैं... ठीक है, देखूंगा, पता लगा लेंगे कि उन्हें किसने लिखा है।"

इन शब्दों से, बड़ी अजीब बात थी, रुस्तम तुरंत शांत हो गया और

गराश ने भी पिया, उस दिन [illegible] की सुन्दर [illegible] हुई, [illegible] से शराबी महसूस हो रहा नहीं और जब उसके सामने फिर जाम [illegible], वह इनकार करने की हिम्मत न कर सका था। उसे [illegible] शामिल करना नहीं चाहा गया था, वह [illegible] 'सर्वोत्तम' [illegible] में प्रथम स्थान ग्रहण करेगा और [illegible] की तरह जगमगा उठेगा।

नवनाज़ पूरे दिन से गराश के जाम भर रही थी, शीघ्र ही वह भूल गया कि उसकी बीवी भी है और उसे अपनी आंखें भारी महसूस होने लगीं।

वह सौगंध खाकर कहने को तैयार था कि नवनाज़ कमरा छोड़कर नहीं गयी, लेकिन न जाने कैसे उसके बदन पर ब्लाउज़ व स्कर्ट के बजाय हर हरकत पर सरसरानेवाला रेशमी गाउन आ गया।

"तुम्हारी सेहत के नाम पर!" गराश ने अत्यधिक साहस करके बोतल छलकाते हुए जाम भी थामा। नवनाज़ ने नैपकिन से उसकी ठोड़ी पोंछ दी। "तुम यह मत सोचना कि मैं नशे में हूं, मैं पूरे होश में हूं! यह कहता हूं ..." गराश बुदबुदाया, पर सलमान कमरे से नदारद था और नवनाज़ ने सोफे पर तकिया रखकर फूंक मारकर लैम्प बुझा दिया।

जब गराश की आंख खुली, आधी रात हो चुकी थी, कमरे में घुप अंधेरा छाया था। वह शुरू में नहीं समझ पाया कि वह कहां है, लेकिन जब उसने लम्बा गाया पहने नवनाज़ को और उसकी नंगी बांहें देखीं, तो वह सब समझ गया और बोला

"बत्ती जला दो।"

"क्या हुआ तुम्हें? सिर चकरा गया?"

गराश अंधे की तरह हाथ आगे किये टटोलता-टटोलता दरवाजे तक पहुंचा, उसने किवाड़ खोल दिया, ताज़ा हवा में सांस ली और उसके दिमाग़ में ताज़गी आ गयी; उसने घृणापूर्वक आज रात की यादों को अपने दिल से दूर भगा दिया।

"जब कभी ऊब होने लगे, आ जाया करना," कमरे से नवनाज़ की शान्त, अत्यधिक शान्त आवाज़ आयी।

गराश गली में निकल गया।

पूर्व में आकाश उजला होने लगा था, पर भोर में अभी काफ़ी देर ... ? .. लेकिन माम्या पूछेगी "कहां थे?" गराश झूठ नहीं

ा, सब सच-सच बता देगा। परिवार मे वैसे ही नही बन रही

गराश खेत चल पडा। सारे रास्ते वह अपने को तसल्ली दिलाता
समे ऐसा हुआ ही क्या है? पी ली, डटकर पी ली, मर्दों मे
है जो नहीं पीता? अरे, कुछ नही हुआ!" लेकिन उसके दिल
यी हुई थी।

६

जल्दी जाग गयी। उसकी सास ने शाम को ही उसके लिए
अण्डो, सेडविचों व रोटी की पोटली बाध रखी थी।
कोई भारी थोडे ही है," सकीना उसे रवाना करते समय सदा
ी थी। आज भी उसने बहू को प्यार से गले लगाया और उसे सब
मंगल कामनाए की।

र तक माय्या को एक मिनट की भी फुरसत नही मिल पायी
रे खेतो का चक्कर लगाया, नालियो की मरम्मत की जाच की,
वालो को सलाह दी और जब वे कुदाले पटककर खाना खाने के
ना हो गये, तो उसे महसूस हुआ कि वह कितनी थक गयी है
कितनी तेज भूख लगी है।

टेकरी पर मुख्य नहर के मुहाने के पास बैठ गयी, जहा नरम
रियाली फैली हुई थी। वहां इतनी शान्ति थी कि उसे सूख के सरें
न जाने से सूखी मिट्टी का ढेला नाली मे उछटकर गिरने की
भी सुनाई दे गयी। खामोश स्तेपी धूप मे तप रही थी।
या थैले का तकिया बनाकर घास पर पैर पसारकर लेट गयी और
द ली। स्तेपी मे व्याप्त निस्तब्धता गीत की तरह गूज रही थी।
खी चमक माय्या को लोरी-सी सुनाती सुना रही थी। उसका मन
था कि वह इस धूपहली नीरवता मे सारे कष्टो को भूलकर,
रण उसे रात-रात भर नीन्द नही आती थी, वैसे ही अनन्त काल
ी रहे। और शान्ति उसे निरन्तर प्रगाढ निद्रा के सागर मे डुबोने
लगी।

ी के पास से गुजर रहे घुड़सवार की नजर निद्रामग्न माय्या पर
, और उसने मानो मोहित होकर अपने थके घोड़े की

उस पार किया। उसने फिर घोड़े से कूदकर, उसकी लगाम जीन पर फेंक डाल दिया और दबे पाँव चलता, मानो धरती की नींद भंग करने से डर रहा हो, माय्या के पास जाकर बैठ गया।

वह उसके मुखड़े, बाहों से उसके शरीर को एकटक देखता बैठा रहा।

माय्या ने अचानक चौंककर आँखें खोलीं और सलमान को देखकर झट से अपनी टाँगें ढक लीं, उठ बैठी हो गयी और शर्माती हुई हँस पड़ी।

"मुझ पर नींद ऐसी हावी हुई कि कुछ सुनाई नहीं दिया "

"मैं वसन्त की बोवाईवाले खेत से लौट रहा था," सलमान मधुर मुस्कान के साथ बोला, "अचानक दिव्य प्रकाश देखा, मानो इन्द्रधनुष हो, मेरी आँखें चौंधिया गयीं और घास पर लेटी खानम दिखाई दे गयी सच मानिये, मैं तो डर गया था, कहीं बेहोश तो नहीं हो गयीं, या लू तो नहीं लग गयी, पर फिर नियमित, धारोष्ण दूध जैसी मधुर साँस सुनकर चैन आ गया। मैंने तुम्हारी रखवाली करने की सोची, खानम।"

माय्या ने झट-से उठकर अपने कपड़ों से धूल और सूखे तिनके झाड़े और थैला उठा लिया।

"तुमसे खेत में दूसरी बार मुलाकात हुई है और हर बार मुझे अचरज होता है कि तुम मेरा कितना ध्यान रखते हो।"

"हुक्म करो–जब चाहो, तुम्हारे लिए जान देने को तैयार हूँ!" सलमान जोश में कह उठा, पर जब माय्या ने असन्तोष से भौंहें सिकोड़ीं, तो भोले-भाले अन्दाज में कहने लगा "लेकिन सुनसान खेत में अकेले सोना फिर भी लापरवाही है "

"कहाँ सुनसान है?" माय्या ने स्तेपी की तरफ इशारा किया: सिंचाई करनेवाले खाना खाकर लौट रहे थे, रास्ते पर माल ढोती घोड़ागाड़ियाँ अपने पीछे धूल के गुबार उड़ाती चली जा रही थीं, पास के खेत में सामूहिक किसान खर-पतवार जला रहे थे। "वैसे भी यहाँ के लोग सीधे-सादे और खुशमिजाज हैं, उनके बारे में बुरा सोचना पाप है।"

"तुम्हारी पाकीजगी के आगे सिर झुकाता हूँ, खानम। मैं अक्सर खुद से पूछा करता हूँ दुनिया में कोई और एक भी ऐसी दिलकश औरत है? और अब इस नतीजे पर पहुँचा हूँ–नहीं, नहीं है गफ़ार कितना खुशनसीब है!" और सलमान ने चुप होकर एक गहरी साँस ली।

ने खीज के बावजूद महसूस किया कि सलमान के शब्द उसे
ो।
ह बोलता रहा
अजीब बात है, खानम! कुछ ऐसे लोग हैं, जिनकी तुलना,
इताये, जानवरो से कर सकता हू काम करते हैं, सोते हैं,
ते हैं, फिर सो जाते हैं, फिर उठकर खाने बैठ जाते हैं। और
', जीवन सारी सुविधाए उन पर लुटाता है। जिसे कहते हैं न
रा साफ चश्मे का पानी पीकर प्यास बुझाता है। लेकिन ऐसे
—यह सच है कि वे बहुत कम हैं,—जिनको शकाए कचोटती
भले काम करने की कोशिशो मे जुटे रहते हैं, लेकिन कभी सुख
ससार को हताश होकर छोड जाते हैं। लेकिन अगर उनका
आये और जिन्दगी के जगल मे वे चश्मे पर पहुच जायें, तो वे
होठ उससे छुआने से पहले जीवनदायी जल के सामने श्रद्धा के
के बल बैठ जायेंगे "
ऐसा क्यो कह रहे हो?" माय्या को आश्चर्य हुआ। "क्या
यत्न करने की जरूरत है? क्या तुम अपनी इच्छाए पूरी न होने
तडप रहे हो?"
हा, खानम, मेरा दिल तडपता है, उसमे टीस उठती है।"
पेरशान के लिए तो नही?"
न चुप हो गया, उसकी आखें चलने लगी और माय्या ने सोच
उसने बिलकुल सही अदाज लगाया।
तुमने उससे बात की? उससे प्यार का इजहार किया?"
बारे मे क्या बात करनी है?" सलमान ने दुखी स्वर मे पूछा।
मे अगूठी को भेज दूगा—या 'हा' या 'नही'। उसने अगूठी
र ली, तो इसका मतलब है, उसे कबूल है। इसके लिए भी
हसान मानूगा। इनकार कर देगी, तब भी। आह, खानम!"
ाशापूर्ण मुद्रा मे सिर को झटका। "मेरी मुसीबत यह है कि मैं
औरत को प्यार करता हू, जिसके सामने मुझे उससे प्यार का
करने की हिम्मत कभी नही हो सकती।"
ो तो नहीं लगता कि तुम ऐसे बेबस हो।" माय्या ने सन्देहभरी
सलमान की तरफ देखा। "सघर्ष करो! प्रियतमा के लिए सघर्ष
वन मे बिना सघर्ष के कुछ हासिल नही होता!"

लेकिन सलमान चेहरा ऐसे विकृत कर, मानो उसे असह्य पीड़ा हो रही हो, हताशापूर्ण स्वर में रट लगाने लगा

"नहीं, खानम, मैं तो अब जिन्दा मुरदा बन चुका हूं, मेरे लिए आशाओं के सारे दरवाज़े बन्द हैं।"

माय्या ने कंधे उचका दिये और पगडण्डी से नाली की ओर चल पड़ी। सलमान घोड़े की लगाम थामे उसके पीछे-पीछे चल दिया।

"क्या तुम अपने ट्रैक्टर-चालक से खुश हो?" वह अचानक पूछ बैठा।

हां, माय्या खुश है। यह बात सलमान हमेशा याद रखे और दूसरों को भी बताये माय्या सुखी है। गराश और वह एक दूसरे को प्यार करते हैं।

"क्यों नहीं!" सलमान ने दांत निपोड़ दिये। "उसकी जगह कोई और होता, तो तुम्हारे हाथ और पैर चूमता। तुम्हें कभी अकेली नहीं छोड़ देता "

उसने यह बात किस इरादे से छेड़ी है? गराश रात को घर पर नहीं सोता, तो इस कारण से कि सबको जल्दी से जल्दी काम निबटाना है। रुस्तम-कोशी सारे टोली-नायकों और ट्रैक्टर-चालकों को दम नहीं लेने दे रहा है। खुद भी कमरतोड़ मेहनत करता है और दूसरों से भी यही अपेक्षा करता है। क्या माय्या पति से यह हठ करे कि वह अपना काम छोड़कर उसके पास भागा आये? लेकिन उसे बस गराश को एक पल के लिए, चाहे दूर से ही देखने की इच्छा हो उठी

"तुम कहां जा रहे हो?" उसने सलमान से पूछा।

"जहां का हुक्म दो। सुबह से दौड़-धूप कर रहा हूं, पर अभी थका नहीं हूं। सिर्फ़ काम ही है, जो मुझे गम से बचाये रखता है। पर तुम कहां जा रही हो?"

माय्या को यह कहने में शर्म महसूस हुई कि वह पति को देखना चाहती है और उसने सलमान से उसे सूखे हुर्मन के खेत में से चलने का अनुरोध किया।

"जो हुक्म, खानम।"

सलमान ने कुर्मन के पुट्ठे पर चढ़कर काठी के पीछे बैठने में उसकी मदद की। सलमान के कंधे पकड़े और उसकी पीठ का स्पर्श न करने की कोशिश करती हुई माय्या मन-ही-मन अपने को सान्त्वना देती रही कि उसके प्रति के व्यवहार में कुछ भी सन्देहजनक नहीं है, केवल सामान्य

शिष्टता है। वह तो बस पेरशान की भाभी को खुश करना चाहता है, ताकि वह उसके बारे में कुछ कहे और घमण्डी सुन्दरी पर थोड़ा प्रभाव डाल सके।

माय्या अपने को तसल्ली दिलाकर खेत में नजर दौड़ाने बड़ी अधीरता से गराश को खोजने लगी। उसे ट्रैक्टर-चालक का पेशा रोमानी लगता था। यह अनुभव कर कितने सुख की अनुभूति होती है कि सूरज की प्रखर किरणों में जमकर पत्थर-सी हुई स्तेपी की मिट्टी को हल्के-फुल्के रोयें में बदल डालनेवाली भीमकाय मशीन तुम्हारे इशारों पर चलती है शीघ्र ही उसके गराश द्वारा डाले गये बीज उग आयेंगे और खेत को हरे-भरे, लोमशी कालीन से ढक देंगे। मुसाफवासी ट्रैक्टर-चालक की मुसीबत है वह झुलसती गरमी में, ठण्ड में, बारिश में और बर्फीली हवा में भी अपने फौलादी घोड़े को छोड़कर नहीं जाता। लेकिन कितनी प्रसन्नता होती है अपनी उगायी हुई घनी फसल देखकर उस क्षण वह अपने घर में, अपनी प्रियतमा से दूर आखो में काटी रातों की थकान भूल जाता है।

सूरज अस्ताचलगामी हो चला था। कुम्मैत घोड़ा सिर झुकाये, पगडण्डी के सहारे उगी घास को मुंह में दबाने की कोशिश करता धीरे-धीरे चला जा रहा था। माय्या व सलमान मौन सवारी कर रहे थे। अन्त में उन्हें आगे खेत के बीच रेंगता ट्रैक्टर नजर आ गया, उसके एक तरफ अस्त होते जा रहे सूरज की किरणों में फीका पड़ा अलाव जल रहा था, उसके इर्द-गिर्द लड़के बैठे थे।

स्तेपी में तो पथिक भी दूर से नजर आ जाता है। जैसे ही थका, पसीने में तर, दो सवारों को ढो रहा घोड़ा खेत में पहुंचा, सब जल्दी से उठकर उनकी तरफ लपके। ट्रैक्टर-चालक ने ट्रैक्टर का इंजन बंद कर दिया और वहां छाये सन्नाटे में माय्या का स्वर स्तेपी में पक्षी की तरह उड़ चला

"गराश!"

गराश खुशी से फूला न समाता कूदकर भागा। "खुद आ गयी, खुद आ गयी, समझ गयी, बिछोह सहा न जा सका, कितनी समझदार है, मैं कितना कसूरवार हूं इसके सामने! .."

भागते-भागते उसे किसी का व्यंग्यपूर्ण स्वर सुनाई दे गया

"सलमान कभी पीछे नहीं रहता ."

माय्या ने फिसलकर घोड़े से उतर, पंजों के बल खड़े हो पति के गले में अपनी गरम-गरम बाहें डाल दीं, आंखें तक बंद कर लीं—उसके मन में

था, जैसा कि केरेम की बीमार पत्नी के बारे में बात करते समय रुस्तम-बीशी के चेहरे पर था।

"मैं शराफोगनू को टेलीफोन कर देता हूं, वह पुर्जे भेज देंगे," सलमान ने अचानक हतोत्साह हुए युवक के पक्ष में कहा। उसका निशाना ठीक लगा था सचमुच उसकी सहृदयता माय्या को अच्छी लगी।

गराश ने कोई जवाब नहीं दिया, घास पर आलू का छिलका फेंक दिया, चिक्कट पतलून से हाथ पोंछे और उठकर बतख की भी चाल से ट्रैक्टर की तरफ चल दिया, न उसने मुड़कर देखा और न ही पत्नी को आवाज़ दी

माय्या को यह इतना बुरा लगा कि उसका दिल बैठ गया, लेकिन वह किसी तरह साहस करके पति के पीछे गयी।

अलाव तक गराश का क्रुद्ध स्वर सुनाई दिया

"काम निबटा ले, फिर मैं आ जाऊंगा। कहीं भागा नहीं जा रहा, डरो मत।"

"किसका घोड़ा है?" माय्या ने नाली के किनारे बूढ़े चिनार से बंधे मुश्की घोड़े की तरफ इशारा करके ट्रैक्टर-चालकों से पूछा।

दो ट्रैक्टर-चालक अलाव के पास से उठकर घोड़ा लाने भागे। सलमान ने बिना झिझके काठी पर बिठाने में माय्या की मदद की और खुद उछलकर अपने घोड़े पर सवार हो गया। उसका कुम्मैत राजमार्ग पर पहुंचते ही दुलकी चाल से घर की ओर दौड़ पड़ा। कुछ ही क्षणों में अलाव, ट्रैक्टर, हसमुख युवक और चिड़चिड़ा गवार गराश सभी रात के अंधकार में विलीन हो गये। सलमान ने माय्या के बराबर आकर अपने घोड़े को कदमचाल से चलाते हुए सावधानीपूर्वक कहा·

"खानम, हीरे की परख जौहरी को ही होनी है, न कि सूअर चरानेवाले को।"

"नहीं, आप उसे नहीं जानते, वह दिल का भला है।" और माय्या अपना ही प्रतिवाद करती सुबकियां भरने लगी।

"मैं उसे नहीं जानता हूं?" सलमान हंस पड़ा। "उसके दिल में तो मैंने घुसकर नहीं देखा, पर वह अनपढ़, बदतमीज़ और वैर रखनेवाला है, यह मैं स्कूल से ही जानता हूं। न वह सुसंस्कृत है, न ही बुद्धिमान। जिसे कहते हैं न, देखने में तो भोला-भाला है, पर अंदर से .. तुम खुद ही समझती हो, उसके मन में क्या है! जब तक उसका खून जोश मारता

है, वह अपने को कुछ काबू में रखता है, तुम से चिमटता है, पर जैसे ही ठण्डा पड़ा – पैरों तले रौंद डाले, चाहे तुम फ़रिश्ता ही क्यों न हो। सोच सोचकर बुरा लगता है – शादी के दो-तीन महीने बाद ही... और तब क्या होगा, जब बच्चे हो जायेंगे "

"खबरदार, जो मेरे पति के बारे में बुरा कहा!" माय्या चिल्लायी। "यह नीचता है!"

"ओह, खानम जबान की बड़ी तेज है!" सलमान ने सोचा और क्षमायाचना करने लगा।

"मुझे नफरत है उन लोगों से, जो मुझ पर दया दिखाते हैं। मैं खुद जानती हू कि कैसे जीना चाहिए! "

"मैं समझता हू, लेकिन मैं तो खुद पर दया कर रहा हू, न कि तुम पर," सलमान हर मिनट बाद ठण्डी सास लेता बराबर बोलता रहा। "यह परेशान-वेरशान मेरे लिए क्या कीमत रखती है, मैं तो बस प्यार करता हू! और पवित्र प्रेम का निवेदन करने मे शर्म नही होनी चाहिए, तुम खुद ही कह चुकी हो। तुम्हे देखते ही मेरा दिल की तरह धधक उठा! यह गवार तुम्हारी कदर नही करता, बिलकुल नही करता। बस तुम्हारे 'हा' कहने की देर है, हम दुनिया के दूसरे पर चले जायेंगे। अपने आखिरी दम तक तुम्हारा गुलाम बनकर रहूगा

"शर्म आनी चाहिए!" माय्या ने उसे टोक दिया। "अगर आप नही होते, तो मैं फौरन वापस चली जाऊगी!"

"चुप करना मुश्किल थोडे ही होता है!" सलमान ने कृत्रिम दुख के साथ कहा और वास्तव मे वह गाव के छोर तक चुप रहा। जब घर के फाटक के सामने माय्या घोडे से उतर गयी, सलमान ने पकड लिया और खोखले, नि:शब्द रोदन से रुधे कठ से बोला, "अ सारी दुनिया तुम से मुह फेर ले, तो याद रखना, एक ऐसा मर्द है, माय्या को हमेशा अपने घर मे शरण दे सकता है .."

वह तो भली-भाति जानता था कि रुस्तमोव परिवार मे क्या हो रहा है

७

रुस्तम-बीबी की हसी से मदीना की नीन्द खुल गयी; उसके खर्राटे वह वर्षों से शादी हो चुकी थी, उसे पति के तालबद्ध एकसार खर्राटे

से कोई चिन्ता नहीं होती थी, जैसे कि वर्षा के एकरस शोर से, शरत्कालीन हवाओं की चीख से, बाग़ में पत्तियों की सरसराहट से। लेकिन इस समय उसके हँसने से उसका सारा बदन हिल रहा था।

"जिन परेशान कर रहे हैं," सकीना ने अटकल लगायी। "बेड़ा गरक हो इन्हें रात में परेशान करनेवालों का!"

"ऐ, कौशी, दायीं करवट लेट जाओ!"

"क्या हुआ?" रुस्तम ने सफ़ेद सिर थोड़ा उठाया।

"हुआ यह है कि तुम्हें दिन कम पड़ता है, रातों में हसते हो और किसी से बातें करते हो.. मैं हज़ार बार कह चुकी हूं: अपने काम-काज और चिन्ताएं घर की देहलीज़ के बाहर छोड़कर आया करो।"

"कितने बजे हैं?"

"क्या पता। अभी रात है..."

"शराश नहीं आया था? अजीब लड़का है! जब तक गश खाकर नहीं गिर पड़ेगा, काम से दूर रखना मुश्किल है उसे.. और बहू? देर से आयी थी? उसे ज़िला मुख्यालय क्यों बुलाया गया था?" रुस्तम की नीन्द पूरी तरह खुल गयी और उसने पत्नी पर प्रश्नों की बौछार कर दी।

"देर से लौटी थी शाम को। कह रही थी कि जल व्यवस्था के बारे में मीटिंग थी। उसने भी भाषण दिया था। बहुत तारीफ़ की गयी उसकी। ख़ुदा का शुक्र है, अक्लमंद है।"

"हुसैन के खेत में हुए दलदल के बारे में भी नहीं भूली होगी, क्यों?" रुस्तम ने हुंकार भरी। "सारे किये-कराये पर पानी फेर दिया! .. उसे ज़िले से कौन लेकर आया?"

"कहती थी, कुछ ज़िला कर्मचारी सामूहिक फ़ार्म आ रहे थे, वे ही उसे अपनी गाड़ी में ले आये।"

"कौन?"

"याद नहीं... कोई प्रशिक्षक था, न जाने ज़िला पार्टी समिति का या ज़िला कार्यकारिणी समिति का और शिक्षा विभागाध्यक्ष .."

पति जल्दी से बिस्तर से उठकर कमरे में चहलक़दमी करने लगा।

"गाड़ी में? गोमानयों के साथ? .. उसके क्या मां-बाप हमारे क़ब्रिस्तान में दफ़नाये हुए हैं? भाग दिन आने लगा! तनैया कहीं का! .."

"अरे, तसल्ली रखो; वह यहां से होकर 'लाल झण्डा' जा रहा था! अगर वह ज़िले का चक्कर काटता है, तो इसका मतलब है, उसे इसकी

जरूरत है। और लोग तो अधिकारी को किसी तरह अपने यहां बुलाने के लिए एडी चोटी का जोर लगाते हैं। तुम क्यो घबराते हो?"

"इसलिए कि वह दूसरो के मामले मे टाग अडाने लगी है और दूसरो की गाडियो मे बैठने लगी है!" रुस्तम ने गुस्से मे बक दिया।

उसने टटोलकर मेज पर ठण्डी चाय का गिलास उठा लिया और फिर कानो तक रजाई ओढ फिर लेट गया। लेकिन नीन्द नही आ रही थी। दिमाग मे फिर बिनबुलाये विचार कौंध रहे थे कभी गूगा हसैन याद आता, जो कुछ अरसे से बडी बेहयाई के साथ कामचोरी कर रहा था, कभी ढीठ लरकाज गोशानगा, तो कभी शेरजाद। और उनमे से हरेक से रुस्तम मन-ही-मन मे बहस कर रहा था या झगड रहा था। धीरे धीरे उसे झपकी आने लगी, जो नीन्द जैसी नही, बल्कि कल के कष्टप्रद, श्रम व व्याकुलता से परिपूर्ण दिन की पुनरावृत्ति थी।

रुस्तम को फिर सामूहिक किसानो से खचाखच भरा हॉल दिखाई दिया। लोग कतारो के बीच मे खडे थे, खुली खिडकियो के पास जमा थे। सब था सामूहिक फार्म की स्थापना से अब तक इतनी विशाल जन-सभा [illegible] नही हुई थी।

रुस्तम प्रारम्भ से ही इस बात पर बावला हो रहा था कि सभा [illegible] अध्यक्ष [illegible] भाभी को चुना गया था। इतनी उत्तरदायित्वपूर्ण [illegible] [illegible] सौंपा गया है — यह विश्वासघात नहीं तो और [illegible] है? उसे बस चुना ही नहीं गया है, बल्कि उसका [illegible] [illegible] भी दिया गया है, मानो वह [illegible] [illegible] नामी लिखाड हो!

"बस करो, बस करो, यह मीटिंग नहीं है बल्कि [illegible] सभा है!" रुस्तम से [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible]।

"अच्छा, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible]

. .सकीना रुस्तम की सास नियमित चलते सुन शान्त हो गयी और भी सो गयी, जब कि रुस्तम अपना बहुत सोच-समझकर तैयार किया भाषण ऐसे देता रहा जैसे जाग रहा हो

'पाचवीं टोली ने नहर से पानी निकालने का बीस मीटर लम्बा नाला के लिए मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन से बुलडोज़र मगवाया, मशीन ने कुल टे काम किया, जब कि इस मामूली-से काम के लिए किराया देना -आधे टन दूध के बराबर "

उसे फिर किसी के स्नेहपूर्ण हाथ का स्पर्श अनुभव हुआ और उसने फिर उसे र कधे से हटा दिया। आखिर कौन है, जो अपने वास्तव मे मा-स्पर्श से उसे कष्टो से मुक्त करना चाहता है? तेल्ली चाची तो नहीं क्तो! . .

"इस आधे टन दूध की कीमत आपकी जेब से निकाली गयी है, ड सामूहिक किसानो!" रुस्तम-कोशी ने जोश मे कहा। "अगर सहकारी का पैसा इस तरह फिजूल खर्च किया जाता रहा, तो दिवाला निकलने यादा देर नही लगेगी· श्रम-दिनो के भुगतान के लिए एक कोपेक भी बचेगा।"

"ठीक कहा, बिलकुल ठीक कहा!" भीड़ मे से अनुमोदनकारी आवाजें , लेकिन अचानक रुस्तम-कोशी के कानो को सुखद लग रही आवाजें

,
अ
े

लेकिन क्लब मे शान्ति छायी रही, लोग निराशा से एक दूसरे की तरफ देख रहे थे, कधे उचका रहे थे, व्यंग्यपूर्वक दात निपोड़ रहे थे।

अध्यक्ष का उत्साह ठण्डा पड गया, उसके बदन पर तेज, कटीली-सी चीटिया रेगने लगी, हड्डिया चरमराने लगी।

"तुमने रजाई गिरा दी," सकीना नीन्द मे बड़बडायी। "तुम्हें यह क्या हो गया है? क्यो छटपटा रहे हो? ठीक से ओढ लो..."

रुस्तम-कौशी ने जैसे ही रजाई कानो तक ओढी, वैसे ही पत्नी का मधुर स्वर अलाव के धुए की तरह कही दूर होकर विलीन हो गया और पास ही कोई अपरिचित, कटु व आग्रहपूर्ण स्वर सुनाई दिया...

यह तेल्ली चाची तीसरी बार सभा को सम्बोधित करके वह ... कि कौन भाषण देना चाहता है, पर सब चुप लगाये बैठे थे।

"कृपा करके, साथियो," चाची आग्रह कर रही थी, "केवल ... के बारे मे ही नही, उन लोगो के बारे मे भी बोलिये, जो इन ... के लिए दोषी हैं! और समाजवादी प्रतियोगिता मे अपनी ... ज्ञाओ का उल्लेख करना भी मत भूलिये। समझ गये?"

समझने को तो शायद सब ही समझ गये थे, पर बोलने को इच्छुक फिर भी कोई नही मिला। चाची ने आखिर नजफ को मच पर बुलाया।

और निस्सदेह वह घबराया नही, फौरन बेधडक आ पहुचा—यह तुरन्त स्पष्ट हो गया कि एक दिन पहले शेरजाद ने उसके खूब अच्छी तरह कान भर दिये थे और उसे सस्ती लफ्फाजी के लिए उकसा दिया था।

रुस्तम-कौशी की पहले तो इच्छा हुई कि रिपोर्ट पेश किये जाने के बाद सलमान बुद्धिमत्तापूर्ण भाषण दे, लेकिन फिर सोचा कि अपने विश्वस्त सहायक को वाद-विवाद के जोरो पर होने पर मैदान मे उतारना समझदारी का काम होगा, ताकि वह तथ्यों और केवल तथ्यों के द्वारा आलोचकों और विद्रोहियो को मुह की खिला दे।

रुस्तम-कौशी वह बात पकडने की पूरी कोशिश कर रहा था, जिस पर जोर देने के लिए नजफ मच पर अपना एडी-चोटी का जोर लगा रहा था। नजफ ने कहा था "मैं हमारे अध्यक्ष को समझ नही पा रहा हूँ, मुद्दा गलत है, बिलकुल समझ नही पा रहा हू! " और वह पुरी से, गेंद की तरह मच से नीचे लुढक-सा आया।

उसका स्थान टोली-नायक महमूद ने लिया, जो अनुभवी, ईमानदार मेहनतकश था, कई वर्षो से रुस्तम-कौशी से दूर रहा था और कभी-कभी

'। उसने स्पष्ट व सयत
भाषण में अपनी टोली की स्थिति के बारे में बताया और रुस्तम के मित-
व्ययिता के हर सम्भव प्रयत्नो के आह्वान का समर्थन किया।

"साथियो, बेशक, अध्यक्ष में अपनी कुछ कमिया हैं, मैं इससे इनकार नही करता," टोली-नायक ने कहा, "और उसने गलतिया भी की हैं। लेकिन वह सहकारी सघ के हितो का सदा ध्यान रखता है और सामूहिक किसानो की आय के बारे मे भी नही भूलता है। और इन सब बातो के लिए हमे हमारे रुस्तम की कदर करनी चाहिए! "

महमूद अपना मुह बद भी न कर पाया था कि गिज़ेतार मच पर चिड़िया की तरह फुर्र से आ पहुची और उसने माननीय अधेड पुरुष पर उलाहनो की बौछार कर दी

"पिछले वर्ष लगभग सारी आय श्रम-दिनो के भुगतान पर खर्च कर दी गयी थी, और सारा अविभाजित कोष खाली कर दिया गया था! और अब नये संस्कृति-भवन के निर्माण के लिए हमने अपने सिर कर्ज चढ़ा लिया है। *क्या यह सामूहिक किसानो के हित में है? नही, हरगिज, नही! ..*"

गिज़ेतार ने आत्मविश्वासपूर्ण स्वर मे एकत्र लोगो को बताया कि वह बचपन से ही रुस्तम चाचा का आदर करती आयी है, पर आदर अपने स्थान पर है और काम – अपने।

"एक मिनट के लिए कल्पना कीजिये, कामरेडों, कि रुस्तम-बीबी हम सबको नाव मे सवार कराके पतवार सभाले बैठे हैं और इतने जोर-शोर से खे रहे हैं कि नाव बस किसी भी क्षण उलट सकती है। ऐसी हालत मे क्या हमे उनसे नही कहना चाहिए: चाचा, जरा धीरे, सभल के, हम मे से कोई भी कूरा नदी मे डूबना नही चाहता! . " समवेत हसी के बीच गिज़ेतार ने कहा।

"वाह, क्या कहने, खूब सूझी! यह है औरत की अकल – मुर्गी की अकल से भी गयी-गुजरी सामूहिक फार्म की तुलना किसी टूटी-फूटी नाव से कर रही है, और अध्यक्ष की – माझी से। मुझे इसमें कोई अक्लमदी की बात नजर नही आती।"

इसके बावजूद नजफ व शेरज़ाद द्वारा उत्साहित युवक हर्षित हो उठे, तालिया बजाने लगे, चिल्लाने लगे, उत्तेजित हो उठे:

"ठि ऽऽ क कु ऽऽ ल ठीक! .. शाबाश, खानम!"

सलमान ने कधे पर श्राड़ा डाला फील्ट-बैग खोलकर बीजक व रसीदो की गड्डी निकाली।

"जरा तीस हजार के ड्राफ्ट पर दस्तखत कीजिये। वैगन मुझे मिल गये हैं, दो-एक दिन मे सस्कृति-भवन की नीव के लिए पत्थर ले आयेंगे काश, आपको मालूम होता, चाचा, कि वैगनो की खातिर मैं लोगो के आगे-पीछे घूमता कितना थक गया हू! न जाने कितने दरवाजों के कब्जे मे तेल डालना पड़ा है मुझे!"

"कौन-सा तेल?" रुस्तम समझ नही पाया।

"ऐसा तेल," सलमान ने ही-ही करके अगूठे व तर्जनी को आपस मे रगड़ते हुए इशारा किया।

अध्यक्ष की भौंहें सिकुड़ गयी।

"अपनी जबान बद रखो, वरना वही तेल खौलाकर तुम्हारे गले मे उडेल दिया जायेगा।"

सलमान लापरवाही से मुस्कराया।

"चिन्ता मत कीजिये, मैं अपना काम अच्छी तरह जानता हूं किसी को महगी सिगरेट पिला देता हू, किसी को पहले झुककर सलाम बजा देता हू, उसके बीवी-बच्चो की सेहत का हाल पूछ लेता हू, किसी को अपने यहा चाय पर बुला लेता हू। और कोई चारा नही है," उसने कधे उचकाये, "हर आदमी के साथ अलग-अलग ढग से पेश आना पड़ता है।"

किसी ने हौले से दरवाजा खटखटाया, कमरे मे यारमामेद तिरछा होकर घुसा।

"मैं पशुपालन फार्म की याद दिलाने आया हूं," उसने कहा।

"हू, पशुपालन फार्म हमारे लिए कम मुसीबतें नहीं खड़ा करेगा," सलमान ने समर्थन किया। "मुझे डर है कि यह तेल्ली चाची की औला ... को पूरे जोर से हड़पे जा रही है। जरा सोचि ... बहुत भी काम करते हैं, पर हम उतना ख ... वे लोग करते हैं। बेशक, उनका सारा मु ... को घट किये जा रहा है। इसके अलावा वे नय ... रहे हैं। ... काला है, कसम से! हमने त ... जाव

"हां, बेशक रखना ही," रुस्तम धीरे-धीरे, प्रत्येक शब्द तोलता बोल रहा था, "अब तो हमें शेरजाद से भी पूछना पड़ेगा।"

इस अप्रत्याशित बात से यारमामेद और सलमान दोनों भौचक्के रह गये।

"कुछ भी हो, आखिर वह पार्टी संगठन का सचिव है," रुस्तम ने कहा, "वही जांच समिति का अध्यक्ष बने।"

"शेरजाद नीचे है," यारमामेद ने गर्दन तानकर बताया। "बुलाऊं?"

शेरजाद यहां किसलिए आया था, यह यारमामेद नहीं जानता था, उसने केवल अहाते से होकर आते समय शेरजाद को माम्या, पेरशान व गिजेतार के साथ खड़ा और उनको जमीन पर कोई नक्शा-सा बनाता देखा था, जैसे वे कोई घर या शेड बनाने जा रहे हों।

"चलो, देखते हैं, उनका वहां क्या करने का इरादा है," रुस्तम ने सुझाया और बरामदे में निकल गया।

सचमुच शेरजाद, माम्या व गिजेतार जमीन में खूंटियां गाड़कर रस्सियां तान रहे थे और उनके बीच की दूरी कदमों से नाप रहे थे।

"ऐ, पार्टी सचिव!" रुस्तम ने रेलिंग पर झुककर आवाज दी। "हमारे पशुपालन फार्म से फिर धुएं की बू आ रही है, और धुआं बिना आग के नहीं उठता। हम जांच करवाना चाहते हैं। तुम्हारी क्या राय है इस बारे में?"

शेरजाद ने हाथ से माथे का पसीना पोंछा और कुछ सोचकर दृढ़ स्वर में बोला

"केरेम बहुत भला आदमी है, मैं उसकी जमानत देता हूं। जांच बेशक, ईमानदार कर्मचारियों की भी करनी चाहिए। लेकिन जांच के पहले से ही लोगों पर छींटाकशी नहीं करनी चाहिए, कुछ ठीक नहीं लगता।"

रुस्तम ने जवाब दिया कि अगर तेल्ली खाची हर वक्त लफ्फाजी करती रहती है, शिकायतें लिखती रहती है, तो इसकी पूरी सम्भावना है कि उसका बेटा भी उसके चरण-चिह्नों पर चल रहा है और पूरा का पूरा खानदान ही दोषी है। शेरजाद को चरवाहों का प्रार्थना-पत्र देख लेना चाहिए।

उसे मालूम पड़ा कि शेरजाद प्रार्थना-पत्र पढ़ चुका है – लिखावट बदली हुई है, जानबूझकर अनपढ़ों की तरह टेढ़ा-मेढ़ा लिखा गया है, नाम कल्पित

हैं, उन नामों के चरवाहे सामूहिक फ़ार्म मे हैं ही नही। जाहिर था यह एक असली अनाम पत्र है।

"हमे शक करने का रोग नही है यह सभी जानते हैं," सलमान ने शान्त स्वर मे टिप्पणी की, "लेकिन किसी को पहले से ही अपने संरक्षण मे ले लेना भी ठीक नही होता। बडी अजीब बात है—तेल्ली और उसका बेटा चाहे जो भी न कहे, लेकिन तुम जरूर उनकी रक्षा करने लगते हो।"

इन शब्दों ने, जैसा कि सलमान का अनुमान था, रुस्तम की सारी शकाएं दूर कर दीं।

"मुझे पूरा यक़ीन है कि केरेम बेईमान है। फौरन जाच समिति भेजो किसे भेजा जाये? गूगे हुसैन को, यारमामेद को या और साधारण सामूहिक किसानों में से किसी को . फौरन काम शुरू करो!" उसने तत्क्षण सलमान को आदेश दिया, बरामदे से नीचे उतरा और माय्या से सख्ती से पूछा कि वे वहा क्यो खोद रहे हैं।

माय्या का चेहरा लाल हो उठा और उसने घबराहट के कारण कापती आवाज में बताया कि युवाओं ने गरमियो मे हर घर में बावरचीखाना हम्माम और शौचालय बनाने का निर्णय किया है। यह युवाओं का जीवन स्तर ऊंचा उठाने का अभियान होगा, इसीलिए वे इस समय अदाज लगा रहे हैं कि उन्हे किस तरह जल्दी से जल्दी और सस्ते मे बन पायेंगे।

"क्या शिष्टता तुम लोगों के खयाल से जीवन-स्तर के सुधार में शामिल नहीं है?" रुस्तम ने पूछा। "मुझे यहा श्रम-दान करवाने की जरूरत नही है। मैं खुद जानता हू कि मुझे अपने घर मे क्या बनाना है।"

माय्या का चेहरा उतर गया, वह बेलचा जमीन पर पटककर झटके से मुडी और बागीचे मे चली गयी।

पर पेरशान ने न जाने क्यों हर बात के लिए शेरजाद को दोषी ठहराया:

"तुम घमण्ड के मारे फूले जा रहे हो, इसीलिए तुम हमे अपने अब्बा के खिलाफ भडका रहे हो।"

केवल सलमान के सपाट चेहरे पर विजयी मुस्कान खिली हुई थी।

माश्या [illegible] पर [illegible] की ओर [illegible] नजर [illegible] को [illegible] की कोशिश [illegible] पर [illegible] की [illegible] नजरों में उसकी [illegible] [illegible] [illegible] न रह गयी।

माश्या काम पर जल्दी जाने की कोशिश करती, शाम देर से लौटती। [illegible] [illegible] [illegible] में [illegible] करती, [illegible] के लिए [illegible] काम ढूंढ निकालती, पर दुख था कि बराबर [illegible] पीछा कर रहा था, एक क्षण के लिए भी उसे अकेला नहीं छोड़ रहा। जब तक माश्या लोगों के बीच में, बागों में, बगान के हरे-भरे खेतों में, गाड़ियों पर रहती, वह अपना दुख भूल जाती, पर कमरे में अकेले रहते ही उसके दिल में मर्मभेदी टीस उठने लगती।

बुजुर्गों का कहना है कि वक्त सबसे बड़ा हकीम होता है। लेकिन वह भी हर किसी को शान्ति नहीं दिला सकता।

"आखिर मेरा कसूर क्या है?" वह पलंग पर लेटकर गराश के तकिये को बाहों में भरते हुए अपने से पूछती।

एक मिनट बाद ही यह समझकर कि उसे नींद नहीं आयेगी, वह उठकर कमरे में चहलकदमी करने लगती, खिड़की के पास खड़ी रहती, फिर लेट जाती। कमरे में हर चीज शीशा, फूलदान में रखे फूल, तांबे के मोमबत्तीदान में लगी अधजली मोमबत्तियां – उसे अपनी सुहाग-रात की याद दिलाती, जब उसने दिल में अस्पष्ट आशाएं संजोये अपने से कहा था "यहां तुम अपने पति के साथ सुखी रहोगी!"

माश्या अकसर अपने को तसल्ली दिलाती कि सारे कष्ट और पीड़ाएं उसका वहम हैं, सामान्य स्त्री-सुलभ उत्तेजना की उपज हैं, पति दिन-रात खेत में काम करता है, सारे ट्रैक्टर-चालक बिलकुल वैसे ही जीते हैं, जैसे कि उसका गराश। जिन्दगी में क्या नहीं होता, – आदमी थक जाता है, जरूरत से ज्यादा चिड़चिड़ा हो जाता है, हो सकता है, मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन में कुछ कहा-सुनी हो गयी हो – इसीलिए पत्नी के साथ बदतमीजी से पेश आया, बुरा-भला बोला। हर बात का इस तरह बुरा नहीं मानना चाहिए। अगले बसन्त में भी गराश अन्य ट्रैक्टर-चालकों के साथ फिर स्तेपी में खाता-बदोशों की तरह रहेगा, अपनी गुदगुदी सेज पर सोने के बजाय सख्त तख्तों पर सोयेगा और हो सकता है खेत में हलरेखा पर ही।

माय्या गाउन पहने नगे पैर खिडकी के पास गयी, गाव मे छायी निस्तब्धता को कान लगाकर सुनने लगी, उसका दिल धक-धक कर रहा था, वह हर मामूली-सी सरसराहट पर चौंक रही थी, आशा लगाये थी कि अभी दरवाजे पर खटखटाहट होगी और देहलीज पर गराश नजर आ जायेगा। उसे कितना अरसा हो चुका है रात को घर मे रहे। कभी-कभी तो वह सुबह केवल खाना लेने भागे-भागे आता, हडबडाकर पत्नी से बात करता और चला जाता: "गली मे ट्रक मेरे इतजार मे खडा है! ."

गाव मे बहुत से लोग गराश के लबे अरसे से घर पर न रहने की तरफ ध्यान दे रहे थे। वे फुसफुसाते, कानाफूसी करते, सिर हिलाते। माय्या भी समझती थी कि यह अजीब-सी स्थिति देर तक नही चल सकती, इसका कुछ न कुछ अन्त अवश्य ही होना है!

आखिर उनमे कभी तो प्रेम था, अवश्य था! . माय्या की कल्पना मे प्रेम मनुष्य के हृदय मे जन्मा दीप्तिमान तारा था, जो पर्वतीय निर्झर सदृश पवित्र होता है और उसकी दीप्ति कभी लुप्त न होनेवाली थी।

माय्या जानती थी कि कभी-कभी युवक और युवती प्रथम भेंट मे ही एक दूसरे के प्रति प्रेम मे पागल हो उठते हैं, पर दो-तीन महीने के वैवाहिक जीवन के बाद उनका उत्साह ठण्डा पड जाता है, वे झगडने लगते हैं। लेकिन वे अशिष्ट और मोटी चमडीवाले लोग होते हैं। उनसे क्या आशा की जा सकती है? ऐसे परिवारो मे पति व पत्नी एक दूसरे के आगे किसी मामले मे नही झुकते हैं, दया नही करते हैं, मामूली से मामूली बातो पर बहस करते हैं, झगडते हैं और इस तरह अपने प्यार को दफन देते हैं। और प्रेम के अभाव मे परिवार भी बिखर जाता है।

उसने गराश को क्यो चुना? माय्या ने इस बारे मे कभी सोचा भी नही था, लेकिन मन-ही-मन वह अनुभव करती थी कि गराश साहसी बुद्धिमान और अपने वचन का पक्का है. क्या माय्या ने धोखा खाया है? नही, गराश को अवश्य लौट आना चाहिए, वह अपनी पत्नी को धोखा नही दे सकता।

अचानक उसे बाहर एक छाया की झलक दिखाई दी, कोई बिना आवाज किये उसकी खिडकियो तले से गुजर गया। अलसेशियन बहुत धीमी आवाज मे भौंका, मानो वह उसका जाना-पहचाना आदमी हो... माय्या कधो पर गाउन डालकर नगे पैर बरामदे मे निकल आयी। रुस्तम तूफानी, रह-रहकर लिये जा रहे खर्राटे घर के कोने-कोने मे गूज रहे थे

ग्रनजाना बाग नजर ग्रा रहा था, जिसमें वादशाह के ताज जैसा एक बडा लाला खिला हुग्रा था। उसने फूल तोडने के लिए हाथ बढाया, पर वह उस तक पहुचा नहीं, लाला उससे धीरे-धीरे दूर सरकता घास मे गायब हो गया। माय्या ने दोनों हाथ बढाये, ग्रागे को झुकी ग्रौर

किसी ने उसे पकड लिया ग्रौर माय्या ने विना ग्राखें खोले ही गराश के हाथों का स्पर्श महसूस किया, उसकी तरफ बढी ग्रौर फुसफुसायी

"तुम? तुम हो?"

उसे तुरन्त ग्रांखो मे काटी रातें, इतजार की घडियां ग्रौर ग्रासू याद हो ग्राये उसने पति के ग्रालिगन मे मुक्त होकर पूछा

"तुम सारे हफ्ते कहा गायव रहे?"

गराश पीछे हट गया ग्रौर ग्राखें चुराता हुग्रा कृत्रिम शान्ति के साथ वोला:

"जैसे नहीं जानती हो! खेत मे था।"

"चाय पियोगे?"

"शुक्रिया। मा सोयी नही थीं, उन्होंने खाना भी खिला दिया ग्रौर चाय भी पिला दी। सो जाग्रो, बहुत रात हो चुकी है।"

हालाकि उस रात वे साथ सोये, पर माय्या को ग्रपनी एक ग्रभागी सहेली के शब्द याद हो ग्राये:

"कब्र पर फूलों की ठण्डी सेज से ज्यादा गरम होती है . "

उसकी नीन्द काफी भोर में खुल गयी। मासल, धूप मे कानी पडी रोयेंदार । पीठ के बल लेटा था, रजाई के ऊपर रखा ने जैसा लग रहा था.. उसकी मुट्ठी कभी के गला दबोच रखा हो।

ने के लिए मजबूर होना ग्रायी। सूरज निकल को लगा कि ग्राकाश की है। वह कोहनियां रेलिंग पर ख़ानी के वृक्षों ने जमीन को पत्तियों के बीच नन्हे-नन्हे, । शाखाग्रों पर पक्षी चहचहाने

सिंचाई व निराई पर ध्यान देना जरूरी था, क्योंकि इन्ही कुछ दिनों में फसल के भाग्य का निर्णय होनेवाला था। रुस्तम न खु़द चैन से बैठ रहा था और न ही दूसरो को चैन से बैठने दे रहा था।

वह सुबह थोडी देर के लिए कार्यालय मे जाकर यारमामेद द्वारा जिले की संस्थाओ के लिए तैयार की हुई रिपोर्टों पर बिना उन्हें दुबारा पढ़े हस्ताक्षर करता, फिर खेत रवाना हो जाता और अंधेरा होने तक वहीं रुका रहता। जब वह गांव लौटता, उसकी घोडी धूल पर घने, लम्बे झाग गिराती लडखडाती हुई चलती।

आज भी वैसा ही हुआ – उसने जल्दी-जल्दी मे लेखा विभाग की दस्तावेजों पर हस्ताक्षर किये, टोली-नायक हूमन को राजमार्ग के चौराहे पर स्थित कपास के खेत को अतिरिक्त पोषण देने को कहा, सलमान की संस्कृति-भवन के निर्माण की रिपोर्ट सुनी और बरामदे मे उसकी प्रतीक्षा कर रही दो बूढियो से जल्दी मे "फुरसत नहीं है, बिलकुल फुरसत नहीं है!" कहकर अहाते में निकल घोडी की लगाम संभाल ली। उसी समय बाड की उस ओर से गिजेलार की आवाज सुनाई दी

"चाची, तुम्हारी बालो की सफेदी मे कभी दाग न लगे, जाओ, जरा खु़द ही उसे बता दो।"

"नहीं, बेटी, तुम भी चलो, एक और एक ग्यारह होते हैं।" तेल्ली चाची ने जवाब दिया।

रुस्तम ने खीज के मारे थूक दिया और खु़द ही हमला बोलने का फैसला कर चिल्लाया

"क्या तकलीफ है आप लोगो को? आप लोगो को काम करना चाहिए, पर आप बाड की छाया मे छिपी खड़ी हैं।"

"अरे, अरे, मेरे सफेद बालों का बिलकुल भी लिहाज नहीं! दर्द के चार कान हैं, यह घास का बढ़ते हुए भी सुन लेता है।"

चाची आने मे आनाकानी कर रही गिजेलार को खींचती हुई अहाते में आ गयी। "खाने का समय है और हमारा खेत पास ही मे है," उसने रुस्तम को समझाया और आगे बोली "काम थोडी है और हमारा रास्ता खु़द तुम्हीं ही है।"

रुस्तम ने स्त्रियों को अपने कमरे में बुलाया। तेल्ली चाचा के बीच में ... पर हाथ बांध कर खड़ी। उसके चेहरे पर वैसा ही भाव व्याप्त हो गया जैसा कि कुर्रे का दबाव मेलजाती किसी के चेहरे पर होता है। अब

गिज़ेतार घबराहट मे नज़रें झुकाये, गालो को एप्रिन मे छुपाती दहलीज़ जडवत् खडी रह गयी।

"जल्दी कहो, नही तो मुझे कही जाना है," रुस्तम ने अनुरोध किया।

"तुम्हें जाना है, तो एक बात कहे देती हू अपने बेटे पर नजर रखो, ।" चाची बिना झिझके कह उठी।

ये शब्द सुनकर गिज़ेतार के मुह मे दबी हुई चीख निकल गयी और का चेहरा इतना लाल हो उठा कि उसकी आखो मे आसू आ गये। म को भी अपना चेहरा तमतमाता महसूस हुआ और उसके लिए सास मुश्किल हो उठा।

उसे हर बात की अपेक्षा थी–केरेम की हिमायत किये जाने की भी, श द्वारा कपास की बोवाई गलत ढग से करने की जाने की शिकायत भी,–लेकिन तेल्ली चाची का स्वर और गिज़ेतार की घबराहट से आभास हो गया कि क़िस्सा कुछ और ही है और कही ज्यादा भयानक ।

रुस्तम ने, इस भय से कि कही उसकी बात बगल के कमरे मे कोई न ले, दबी आवाज़ मे कहा

"चीखो मत! जरा ढग से बताओ। मेरी कुछ समझ मे नही आ है..."

"इसमे समझना क्या है?" तेल्ली ने कधे उचकाये। "तुम्हारे बेटे सारे गाव की बदनामी करवा दी। अगर लडकी बाहर की हो, अनाथ , अनाथालय मे पली हो, तो इसका मतलब क्या यह है कि उसे पैरो ने रौंदा जाये? जरा सोचो तो, चचा, क्या इन सब बातो के बाद कोई हरी लडकी हमारे गाव के लडके से शादी करने को तैयार होगी? तुमने मे फूल-सी सुन्दर लडकी की जिन्दगी बरबाद क्यो करने दी?"

रुस्तम ने ऐसे हाथ झटकारे जैसे किसी मुर्गी को भगा रहा हो।

"लगता है आज तुम्हे लू लग गयी है, बुरी तरह गरम हो रही है! . टी, कम-से-कम तुम्ही बताओ," वह गिज़ेतार की ओर मुडा, "इसे मुझ आखिर क्या चाहिए? इसने *कितनी* बार अनाम पत्र लिखकर मेरी नाक कर रखा है!"

...चा," गिज़ेतार ने विरोध किया। ...दिल मे है, वही ज़बान पर!

अगर जरूरत पड जाये, तो वह खु़द अपना नाम लिखकर शिकायत कर सकती है। हम आये इसलिए हैं, क्योंकि हमारा दिल माय्या के लिए दुखता है। तुम्हारे लाडले ने अपनी कानूनी पत्नी को छोडकर किससे रिश्ता कायम किया है? किससे? सलमान ने जान-बूझकर तो अपनी बहन उसके मत्थे नही मढी है?"

"श-श ऽऽ! निकलो यहा से! ." रुस्तम मुक्के दिखाता हुआ फुसफुसाया। "मेरे खानदान पर कीचड उछालने की सोच ली? यह कभी नही होने दूगा!"

तेल्ली चाची अचानक शान्त हो उठी और गिर्जेतार का हाथ पकडकर बोली.

"चलो, चलो यह सुनना ही नही चाहता – फिर खु़द ही पछता येगा "

बरामदे मे स्त्रियो की मुलाकात सलमान, यूपें हुसैन और यारमामेद से हो गयी, जो अध्यक्ष के पास जा रहे थे। तेल्ली का तमतमाया चेहरा देखकर वे समझ गये कि अध्यक्ष और उसमे ज़ोरदार झडप हुई है, और उन्होंने आशकित हो एक दूसरे की तरफ देखा "बडे अच्छे मौके पर पहुचे हैं! उस पर अगर भूत सवार हो जाये, तो अपने सगे बेटे को भी नही बख्शे, मार डाले!"

कक्ष मे अकेला रह गया रुस्तम अपनी मूछो पर बल देता चहलकदमी कर रहा था। उसका पिता का हृदय उसे बता रहा था कि तेल्ली ने सच्ची बात कही है।

उसके स्वाभिमान को ठेस पहुँची थी। वह यह बर्दाश्त नही कर सकता था कि यह बुरी खबर तेल्ली चाची लायी है, जिससे उसे नफरत हो चुकी थी।

"झूठ है, सरासर झूठ! घटिया किस्म का झूठ!" रुस्तम अपने को तसल्ली दिला रहा था। "उसने जान-बूझकर अपने बेटे को बदनामी से बचाने के इरादे से सलाम पर कीचड उछाली है।"

"अन्दर आ सकते हैं, चचा?" सलमान का शान्त स्वर सुनाई दिया।

"आओ, आओ! सहकारी फार्म मे क्या हो रहा है? चाची अभी हमसे आकर कह रही थी कि उसका बेटा कसूरवार नही, सलीमा है,' रुस्तम ने कहा।

सलमान ने हाथ के इशारे से दोनों को सोफे पर बैठने को कहा और

यूद ने मेज़ के पास खड़े-खड़े फ़ील्ड-बैग में से कागज़ों की गड्डी निकाल ली और उसकी रिपोर्ट में नज़रें गड़ा लीं।

"अगर उसके बेटे की मानी जाये, तो इस बात पर विश्वास करना होगा कि पशुपालन फ़ार्म में भेड़िये और भेड़ें एक घाट पानी पीते हैं। यह और वह भी क्या सकती है? क्या यह मान लें कि उसका लाडला पक्का चोर है?"

"परेशान मत करो!" अध्यक्ष ने चिरौरी की। "कहां चोरी की गयी है?"

"चोरी!" सलमान ने घृणापूर्वक हुंकार भरी। "लूट हुई है, दिन-दहाड़े लूट तुम लोग चुप क्यों हो?" उसने एकाएक हुसैन व यारमामेद की ओर पलटकर कहा· "बताओ, जो तुम्हें मालूम हुआ है।"

गूंगे हुसैन ने सकुचाते हुए अध्यक्ष की ओर घूरकर देखा और ज़बान से "टच्च" करके चुप रह गया।

उसके बजाय यारमामेद बोला। वह छाती ठोक-ठोककर, थूक के छींटे उड़ाता कभी चीख रहा था, तो कभी थकावट के मारे बुदबुदा रहा था। उसका सारा सूखा बदन गुस्से के मारे कांप रहा था। वह अपने आदरणीय रुस्तम-कीशी की क़सम खा-खाकर कह रहा था कि सारे चरवाहों को आश्चर्य हो रहा था कि केरेम को इतना लालच कैसे हो गया—ठूस-ठूसकर खाता रहता है, पर उसका पेट ही नहीं भरता यारमामेद ने रुस्तम के सामने रिपोर्ट हिलाई· ये मेमने ठिठुर कर मर गये, ये तीन भेड़े खड़ा किनारा ढहने से नदी में गिर गये, यह रेवड़ में प्लेग फैल गयी। सिर्फ़ जनवरी में अस्सी मेमने मर गये। ये सारी रिपोर्टें केरेम के ज़बानी कहे पर लिखी गयी हैं, चरवाहों ने एक भी खाल अपनी आंखों नहीं देखी . पचास मेमने मोया ठण्ड से मर गये और केरेम को लम्बी उम्र जीने को कह गये। यारमामेद के पतले, टेढ़े-मेढ़े होठों पर कुटिल मुस्कान फैल गयी।

उसे देखकर रुस्तम भड़क उठा:

"अरे, बेशर्म, यह कोई मज़ाक़ करने का वक्त है? रोना चाहिए .."

यारमामेद ने चेहरे पर उदासी लाकर एक ठण्डी सांस ली।

"आपकी बात हमेशा की तरह सही है। सचमुच ऐसी सरे आम लूट देखकर दिल रोने को चाहता है... इस हद तक पहुंच गये हैं कि उन्होंने तीस किलोग्राम का एक भेड़ा काटकर शिक्षाविभागाध्यक्ष को दावत भी दी।"

"गोशालगर्दा थी?" रुस्तम ने पूछा।

"और क्या," सलमान बोल उठा। "और दीटी ने रिपोर्ट में लिख दिया कि भेड़िया बाड़े में घुसकर उस दुम्बे की दुम उखाड़कर ले गया है न मजेदार बात? और अब चरवाहे सफाई पेश कर रहे हैं: हमने केरेम पर विश्वास करके दस्तखत कर दिये थे. ."

गूंगे हुसैन ने ये शब्द सुनकर फिर जबान से "टच्च" की और भी इतनी जोर से कि सब चौंक उठे।

"मैंने केरेम से कहा 'तू किसके भरोसे था, करमफूटे? गोशालगर्दा तो टूसकर चलता बना, पर अब तुझे सीक पर चढ़ाकर कबाब की तरह पकाया जायेगा,'" सलमान बोलता रहा। "अगर हमारी राय मानना चाहो चाचा, तो हम एक ही बात कहेंगे – यह आगे नहीं चलता रह सकता है केरेम को फौरन काम से हटाकर पशुपालन फार्म पर किसी भरोसेमंद आदमी को भेजना चाहिए, जिस पर हम वैसा ही विश्वास कर सकें, जैसे खुद पर।"

"किसे?" रुस्तम ने यारमामेद की थमायी रिपोर्ट देखते हुए पूछा।

"बेशक, हुसैन को," सलमान ने कुछ हिचकिचाकर सुझाव दिया और कनखियों से अध्यक्ष की तरफ देखा।

रुस्तम ने भेड़ों के रेवड़ पर भेड़िये के हमले की मुड़ी-तुड़ी, सकुचायी हुई-सी रिपोर्ट पर किसी के हस्ताक्षर पर उंगली रखकर कहा.

"ठहरो, ठहरो यह किसने दस्तखत किये हैं? बूढ़े बाबा ने? मैं उसे अच्छी तरह जानता हूं, वह कभी झूठ बोलकर अपनी सफेदी पर दाग नहीं लगने देगा।"

"हमने जांच जो की थी।" सलमान बुरा मान गया। "उस भेड़िये का क्या दिमाग खराब हुआ था, जो शाम को बाड़े में घुसता? कुत्ते बहुत हैं।"

"अक्लमंद मत बनो। भूखा भेड़िया आदमी पर भी हमला कर सकता है," रुस्तम ने ऊंची आवाज में कहा और रिपोर्ट को दोबारा पढ़ा। उसके चेहरे पर अविश्वास का भाव झलकने लगा।

अध्यक्ष को दुविधा में पड़ा देखकर सलमान ने हुसैन को आंख मारी और हुसैन "टच्च" करके याचनापूर्ण स्वर में बोला.

"चचा, अगर तुम हुक्म दो: 'मर जाओ!' तो मर जाऊंगा, पर बुढ़ापे में मैं पशुपालन फ़ार्म का काम नहीं संभाल पाऊंगा। मुझे तो इस

समय भी बस एक ही चिन्ता रहती है – शाम को किसी तरह घर पहुचू और चैन से सो जाऊ।"

"तुम अपने बारे मे नही, सामूहिक फार्म के बारे मे सोचा करो," सलमान ने उलाहनाभरे स्वर मे कहा। "अजीब लोग हैं!" उसने रुस्तम से शिकायती अदाज मे कहा। "सवाल हजारो जानवरो का है, पर इस आलसी को यह कहते शर्म नही महसूस होती कि यह चैन से सोना चाहता है। जरा ठहरो, चचा, अभी तुम्हे पशुपालन फार्म रवाना कर देंगे, ताकि चरागाहो मे तुम्हारी चर्बी उतर जाये "

"सच्ची बात है, हुसैन, तुम्हे शर्म नही आती!" रुस्तम ने कहा और टोली-नायक को बुझा हुआ पाइप दिखाकर धमकी दी। "सब के सब बस अपने आराम की सोचते हो, बस खुद किसी तरह चैन से सो ले। कल ही पशुपालन फार्म का चार्ज सभाल लो!" उसने अचानक आदेश दिया।

रुस्तम ने ध्यान नही दिया कि सलमान ने कितने आत्मसतोष के साथ अपने मित्रो की तरफ देखा।

"गिरेतार की तरक्की कर टोली-नायक बना देंगे और उसकी उपटोली नेल्ली को सभला देंगे," सलमान ने सुझाव दिया। "इस तरह हम इन आलोचको के मुह बद कर देंगे। अगर नही सभाल पाये, तो खुद ही दोषी रहेंगे। जिला समिति मे भी स्त्रियो को उत्तरदायित्वपूर्ण पद दिये जाने पर सतोष प्रकट किया जायेगा," उसने चलते-चलते कह दिया।

यह सुझाव रुस्तम को पसद आ गया।

गूगा हुसैन दयनीय ढग से आखें मिचमिचाता हुआ बोला

"तुम्हारे लिए, चचा, मैं जान देने को तैयार हू, लेकिन जब मुझे पशुपालन फार्म सभालना ही पड रहा है, तो करेम को वहा से हटा लो। वह चोर का बच्चा मेरी जडे खोदने लगेगा। चोरी खुद करेगा और जवाब मुझे देना पडेगा। नही, मैं इसके लिए तैयार नही हू।"

"तुमसे कोई नही पूछ रहा है कि तुम तैयार हो या नही!" रुस्तम चिल्लाया, पर उसे तुरन्त रहम आ गया। "ठीक है, करेम को कपास की खेती पर भेज देंगे, जरा कुदाल चलाकर पसीना बहाये। वहा उसे पता चल जायेगा कि सामूहिक फार्म का माल हडपने का क्या नतीजा होता है," और वह जाच रिपोर्ट लोक अभियोजक को भेजने का आदेश देकर, बिना उनसे विदा लिये कार्यालय से चला गया।

माय्या मन-ही-मन में सिकुड़ गयी, मुरझा गयी, अपने को तिरस्कृत और कुरूप अनुभव करने लगी। वह गराश से कुछ नहीं पूछती, उसस बातचीत करना उसने लगभग बंद कर दिया, पति जब घर आता, वह अपनी रिपोर्टें तैयार करने बैठ जाती, हालांकि उसके लिए कोई दूसरा समय चुन सकती थी।

गराश भी चुप रहता। केवल एक बार जाते समय वह पत्नी का हाथ थामकर फुसफुसाया "माय्या! " लेकिन तुरन्त ही चुप हो गया और निराशा से हाथ झटकार कर भाग चला।

गराश अपने आप को तसल्ली दिलाता रहता "न मैं ऐसा करनेवाला पहला मर्द हूं, न ही आखिरी।" उसके परिचित युवकों में ऐसे भी थे, जो पत्नी के पास से प्रेमिका के पास जाते और उन्हें ज़रा भी खेद नहीं होता। लेकिन गराश का दिल दुखता, वह समझता जो था कि उसे माय्या के समान सच्चा और निष्ठावान मित्र कभी नहीं मिल सकेगा। उसकी तुलना नज़नाज़ के साथ करना पाप होता। तुलना गराश करता भी नहीं था, वह नज़नाज़ के साथ अपने को सहज व स्वतंत्र अनुभव करता था, वह उसका स्वामी, अधिपति था, वह उससे कुछ नहीं पूछती थी, न कुछ मांगती थी और न ही अपनी आरज़ुओं से उबाती थी।

उस वसन्त में रुस्तम के घर में जीवन माय्या के लिए ही नहीं, सकीना के लिए भी दूभर रहा। जब उसके कानों में गांव की औरतों की खुसुर-फुसुर पड़ी, तो उसे विश्वास नहीं हुआ। लेकिन ज्यों-ज्यों दिन बीतते गये, बेटे को घर से दूर रहते, अपनी पत्नी से कतराते और बहू को मुरझाते व घुलते देख सकीना समझ गयी कि दोषी वास्तव में गराश है।

क्या उसे रुस्तम से बात करनी चाहिए, उससे मदद मांगनी चाहिए? ऐसा तूफान मचेगा, आसमान टूट पड़ेगा, वह फ़ौरन कोड़ा उठाकर बेटे के पीछे भागेगा। पिछले कुछ दिनों से रुस्तम वैसे ही गुस्से में घूम रहा है, मुंह से शब्द निकालना ही नहीं है, मूछों, चमड़ी और कमीज़ से भी तम्बाकू की बू आने लगी है।

वास्तव में पूरे एक हफ्ते से रुस्तम चैन से नहीं बैठ पा रहा था। वह खेतों में गेहूं, कपास, [illegible] पौधों को निहारता, टोली-नायकों से [illegible] ना, केवल फसल के बारे में सोचता [illegible] र में या घोड़े पर अकेला रह जाता, [illegible] के साथ हुई बात कौंधने लगती।

दुख भी होता है और गुस्सा भी आता है। बहू को आवाज़ दो, हम्माम बनायेंगे। उसी ने छेड़ा है यह काम, उसे मदद भी करनी चाहिए।"

रुस्तम खाना खाकर बग़ीचे में चला गया, जहाँ हम्माम की पत्थर की दीवारें ज़मीन से कोई दो मीटर ऊँची की जा चुकी थीं। शीघ्र ही माय्या सलवार व गहरे रंग का कुरता पहने आ पहुँची,—उसे इस बात की बहुत खुशी हुई कि आखिरकार ससुर ने स्वयं उसे बुलाया। अहाते में खेत से लौटकर आयी परेशान की हँसी गूँज उठी, मिनट भर में वह भी हम्माम बनाने में मदद करने आ पहुँची।

माय्या पिछले कुछ दिनों में कमज़ोर हो गयी थी, उसकी आँखों के नीचे नीली झाइयाँ पड़ी हुई थीं। रुस्तम अपने दया-भाव से उसे ठेस न पहुँचाने के इरादे से आवश्यकता से अधिक ज़िन्दादिली से बात करने लगा

"चलो, मेरी बेटियो, काम शुरू करें! जब हमने रहन-सहन का स्तर ऊँचा उठाने की ठानी ही है, तो पूरी कोशिश करें ताकि रुस्तम का घर गाँव में सबसे अच्छा बन जाये। यह हम्माम बहू की तरफ से हम बूढ़ों के लिए एक तोहफ़ा होगा।"

काम ज़ोर-शोर से शुरू हो गया। माय्या रुस्तम को पत्थर पकड़ा रही थी, और परेशान बाल्टी में चूने का घोल तैयार कर रही थी। रुस्तम मसाला फैलाकर पत्थर जमाता हुआ लगातार बोले जा रहा था। मदीना उसके पास आयी तो आश्चर्यचकित रह गयी, कौशी इतना बातूनी कैसे हो गया?

"दीवारें एक मीटर और ऊँची करके पाइप डाल देंगे और इतवार को, अगर ज़िन्दा रहे, तो छत का काम शुरू कर देंगे"

माय्या की उदासी ससुर की असाधारण शिष्टता के कारण और अधिक बढ़ गयी। उसे चाहिए था कि वह मुसकराये, रुस्तम-कौशी की ही तरह मज़ाकिया लहजे में जवाब दे, पर उसने कितनी ही कोशिश क्यों न की उसके मुँह से एक शब्द भी नहीं निकल सका।

अँधेरा हो जाने पर जब काम मजबूरन बंद करना पड़ा, माय्या सिर-दर्द का बहाना करके अपने कमरे में चली गयी, और बिना बत्ती जलाये सोफ़े पर लेटकर ऊँघने लगी या न जाने उसे झपकी आ गयी।

उसकी आँख सीढ़ियों की चरमराहट से खुल गयी। पति बरामदे में चढ़ रहा था, इसमें माय्या को कोई सन्देह नहीं हो सकता था। गराश ने क़मीज़ व बूट उतारकर हाथ-मुँह धोयें—उसके लिए बरतन में पानी व

उसकी कृत्रिम हंसी से मा के सन्देह की पुष्टि हो गयी उसका अन्त करण शुद्ध नही है। सकीना बेटे को सब माफ कर सकती थी, शायद तुरन्त नही, पर उसके सारे पाप क्षमा कर सकती थी, केवल उसके झूठ को छोडकर। और जब गराश ने अनजाने ही पिता की नकल करते हुए उठकर चले जाने के इरादे से बात एकदम बद कर दी, तो उसने उसे रोक लिया

"मैं तुमसे इसीलिए कह रही हू – हमारे पवित्र घर मे गदगी मत लाओ! परायी औरत की मुस्कान तुम्हे क्या अपनी बीवी की मुस्कान से ज्यादा मीठी लगती है? इसलिए यह जान लो कि इस शहद मे ज़हर मिला है,– इसीलिए तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है। लेकिन तुम्हे इस मीठे की बहुत भयानक कीमत चुकानी पडेगी . तुम्हारे अब्बा और मैं दोनों बुढा गये हैं। अगर तुमने रात को खुलनेवाले मनहूस दरवाजे से मुह नही फेरा, तो हम तुम्हे बददुआ देंगे! तुम्हारे अब्बा और तुम्हारी मा हरगिज़ तुम्हें बुढापे मे अपनी बेइज्जती नही करने देंगे!"

गराश इस बार भी चुप लगा गया, माय्या समझ गयी कि मा ने गलती नही की है, गराश दोषी है, पर उसमे अपना दोष स्वीकार करने का साहस नही है। उसे बरामदे में लपककर निकल "मुझे तुम्हारी कोई जरूरत नही, ढोगी!" कहकर चिल्लाने और हमेशा के लिए घर छोडकर चले जाने की इच्छा हुई, पर उसे कोई चीज रोक रही थी, और उसने मुह मे शाल की किनारी दबा ली, ताकि उसके मुह से आह न निकल पाये और लेटी रही. .

लेकिन मा के दिल से और न रहा गया, वह पिघल गया, और सकीना आसू पीती हुई बोली.

"लेकिन जरा तो सोचो आखिर वह अनाथ है... उसे तुमसे उम्मीद थी, वह तुम्हारे साथ परदेस आयी, और तुमने उसे सता डाला। लोग क्या कहेगे?"

"मुझे भीख नही चाहिए," माय्या ने दुख के साथ सोचा।

बरामदे मे निस्तब्धता छा गयी। सकीना मुलायम जूतियों से सपड-सपड करती चली गयी। गराश रेलिंग पर सिर टिकाकर शान्त बैठा रहा। वह पछता रहा था कि उसने मा को बिना यह कहे जाने दिया कि वह गु:द तडप रहा है, पर अब रोने-पीटने से क्या फायदा. . "आखिर मैं इस चक्कर मे फसा कैसे?" – वह अपने से पूछने लगता, पर उसका जवाब

नही मिला था। वह पगडण्डी पर मुडा ही था कि अधेरे मे अचानक उत्तेजित व तेज़ आवाजें सुनाई दी। गराश नही चाहता था कि कोई उसे खुले मैदान मे देखे, इसलिए वह झुककर खर-पतवार मे छिप गया।

दो मर्द लडखडाते हुए किनारे-किनारे जा रहे थे।

"अगर माय्या खानम इसी तरह उस गदे ट्रैक्टर-चालक की बनी रही, तो मैं चमत्कारो मे विश्वास करने लगूगा," किसी का अपरिचित स्वर सुनाई दिया।

"कलतर भैया, तुम्हारे *सिर की क़सम*," अधेरे मे नज़र न आ रहे सलमान ने कहा, "मुगान ने ऐसी सुन्दरी कभी नहीं देखी है। वह तो इसान की शक्ल मे फरिश्ता भी है और दानिशमद भी।"

"देख चुका हू, खुद देख चुका हू, दोस्त। अहा, कितना अच्छा नाची थी वह – देखते ही रह जाओ! शायद "

कलतर के अतिम शब्द गराश सुन नही पाया। उसने झाडी मे से झाककर देखा, जिला कार्यकारिणी समिति का अध्यक्ष और सलमान एक दूसरे के गले मे बाहे डाले गली मे मुड गये।

एक मिनट बाद फिर सन्नाटा छा गया। रास्ते पर पहुचने पर बूटो के तले रेत की चर्र-मर्र ही उसके कान पडने लगी। यानी आज क्लब मे *गैरपेशेवर कलाकारो का रगारग कार्यक्रम हुआ था*, और *माय्या पति की* अनुमति लिये बिना पराये मर्दों को, इस शराबी कलतर को घुटनो से ऊपर अपनी नगी टागें दिखाती हुई नाचती रही पूछिये मत, बडा सुन्दर दृश्य रहा होगा! चलिये, यह माना कि उसे धोखा माय्या ने नहीं दिया होगा, लेकिन किसी और पर उसका दिल आ तो सकता है न? "तुम भी तो नज़नाज के साथ फसे हुए हो, वह क्या चीज़ है?" गराश ने अपने आप से पूछा, लेकिन इससे उसे बिलकुल भी शान्ति नही मिली। माय्या कभी किसी परायी मोटर मे फर्राटे से घूमती है, तो कभी किसी और की काठी पर बैठकर घोडे पर खेतो मे घूमती है। वह यह ज़रूर जान-बूझकर करती है .. ज़ाहिर है, उसे ढोग रचना खूब आता है: हमेशा पति को ताने देती रहती है, जब कि खुद कई बार तलाक़ का सकेत दे चुकी है। हा, अब्बा ने ठीक ही कहा था, वह हमेशा ठीक ही कहते हैं, गराश को शुरू से ही लगाम ज़रा कसकर रखनी चाहिए थी।

इस प्रकार गराश अपने को उचित ठहराकर और पत्नी पर बुरी तरह गुस्सा होकर अपने घर के नज़दीक पहुच गया। सारे कमरो मे अधेरा था,

था। [illegible] बगीचे में [illegible] के [illegible] का [illegible]
भी [illegible] था [illegible] था। दिखलाई [illegible] गराश ने [illegible] कि
[illegible] नहीं है और [illegible] है, —यानी [illegible]
[illegible] है। वह [illegible] के बाद [illegible] हो गया।

बिल्कुल ही बिगड़ गयी है!"

बगीचे में घुटन थी। गराश ने गोबी के पौधे का सहारा लेकर [illegible]
हुआ [illegible] न बजा। पर वह [illegible] बूटों से [illegible]
बगीचे में चला गया। न जाने क्यों नहीं आती, उसकी नींद [illegible]
की [illegible] में चल आती है।

अंधकार में पेड़ों के पत्तों पर मच्छरों के झुण्ड उड़ रहे थे, कहीं दूर
उल्लू कर्णभेदी स्वर से चीखा, उसकी चीख इतनी भयावह थी कि गराश
के रोंगटे खड़े हो गये। अचानक एक गुबरैला उड़ता हुआ उसके माथे से
टकरा गया। गराश ने कोसा,

"मरदूद!"

"गराश, बगीचे में तुम हो? किस से बात कर रहे हो?" पत्नी ने
खिड़की के उस ओर से पूछा, उसका स्वर इतना शान्त, स्पष्ट व मृदु था
कि गराश किंकर्तव्यविमूढ़ हो गया, उसने बड़ी मुश्किल से सांस ली। "तुम
क्यों नहीं आये? क्या गिजेतार ने तुम्हें नहीं बताया कि आज कंसर्ट है?"
पत्नी ने और निकट आकर पूछा। "कितना सफल रहा! ढेरों आदमी
आये थे। वे तालियां बजा रहे थे, दिल से बधाई दे रहे थे। यानी सिर्फ
तालियों से आते-जाते ही बैठे नहीं गायी जा सकती हैं.. कार्यकारिणी
समिति के अध्यक्ष ने भाषण दिया, सब कलाकारों से हाथ मिलाकर
उनको धन्यवाद दिया।"

"और उसने तुमसे भी हाथ मिलाया?"

"क्यों नहीं!"

"अभी तक सिर्फ कलतर भैया ने मेरी पत्नी से हाथ नहीं मिलाया
था, अब उसे भी यह इज्जत मिल ही गयी! तो अब तुम उसकी मोटर
में भी सैर किया करोगी?"

और गराश हंस पड़ा। पत्नी ने शान्तचित्त से उत्तर देकर उसे आश्चर्य-
चकित कर दिया:

"आओ हो, हमें हमेशा के लिए समझौता कर लेना चाहिए . तुम
बात से नाराज़ हो, मैं भी बहुत-सी बातों से नाराज़ हूं। इतना ही

रही, गुस्सा भी है। अगर मेरा कोई दोष हो, तो बताओ। लेकिन मैं भी कह दूंगी कि तुम्हारा क्या दोष है। कमरे में चलो।"

"वहां गरमी और घुटन है," गराश ने अपनी घबराहट छिपाने के इरादे से कहा।

"नहीं, वहां अच्छा रहेगा। कुछ ऐसी बातें हैं, जिनके बारे में तुम्हारी मां को भी मालूम नहीं होना चाहिए। गांव में लोग वैसे ही हमारे बारे में तरह-तरह की बातें करते हैं।"

माय्या को खेत में काम करनेवाली स्त्रियों की सहानुभूतिपूर्ण और कुछ की द्वेषपूर्ण नजरें, उनके सवाल याद आ गये। "कैसा है गराश? रात को घर में रहता है? और ससुर के क्या हाल हैं? ससुर को तो दया आती है न? पति से झगड़ा होता है?"

गराश ने माय्या का हाथ कसकर पकड़ उसे जबरदस्ती खूबानी के नीचे रखे तख्त पर बिठा दिया।

"मैंने कह तो दिया, घुटन के मारे मेरा सांस लेना मुश्किल हो रहा है। हां, तो बताओ तुम्हारे मन में क्या घुट रहा है। वैसे ही मतली आती है!"

उसकी अशिष्टता माय्या के दिल में चुभ गयी।

"नहीं, तुम पहले बताओ कि तुम घर से अलग क्यों हो गये हो?"

गराश ने दांत निकाल दिये।

"लो सुनो! . मेरा एक हैदर-कुली नाम का परिचित है। कुछ दिन पहले उसका पत्नी से तलाक हो गया है, उनके तीन बच्चे हैं। क्यों? क्योंकि जब भी हैदर-कुली घर लौटता, पत्नी का कुछ अता-पता नहीं होता। 'मैं क्लब गयी थी जिले में गयी थी . मीटिंग में देर हो गयी मुझे एक और सार्वजनिक काम सौंप दिया गया!' ऐसे ही और बहाने। हैदर-कुली ने देखा कि उसकी पत्नी पत्नी नहीं है, खुदा ही जाने क्या है, उसने उस पर थूक दिया और तलाक ले लिया।"

"कैसा ओछापन है!" माय्या के मुंह से निकल गया और वह घृणा के मारे पति से दूर हट गयी।

"कोई क्या करे, मैंने और हैदर-कुली ने उच्च शिक्षा नहीं पायी, मामूली ट्रैक्टर-चालक हैं। अब तुम्हारे लिए यह समझ लेने का वक्त आ गया है कि मर्द शादी इसलिए करता है, ताकि उसे घरवाली मिले, खयाल

"खुदा के वास्ते उपदेश देना बंद करो!" गराश भड़क उठा। "मुझे पत्नी की जरूरत है न कि अध्यापिका की!"

माय्या ने उसकी बात अनसुनी करने का बहाना किया और हठपूर्ण आत्मविश्वास के साथ बोलती रही

"तुम्हारी पत्नी बनने को तैयार होते समय मैंने सोचा था कि मैं तुम्हारे रूप में मित्र, साथी पा लूंगी। मुझे विश्वास था कि तुम कम-से-कम किसी सीमा तक मेरे लिए पिता और माता का स्थान ले लोगे।"

"मित्र, साथी!" गराश ने अशिष्टता से उसकी नकल उतारी। "सबसे पहले पति की इज्जत बनाये रखने का खयाल रखना चाहिए था, न कि "

उसने बात पूरी नहीं की, अपने विचार से स्वयं ही भयभीत हो उठा।

माय्या के काटो तो खून नहीं – उसका चेहरा बिलकुल फक हो गया। उसे यह स्पष्ट हो गया कि गराश उससे कहीं दूर, बहुत दूर चला गया है और अब कभी वापस लौटकर नहीं आयेगा।

उसकी आंखों में आंसू आ गये और वह घर के अंदर चली गयी।

गराश अनचाहे उसके पीछे कुछ कदम बढ़ा, पर बरामदे में रुक गया। उलाहने, आंसू, पश्चाताप – क्या उसे इन पर ध्यान देना चाहिए? क्या इस समय निःस्वार्थ भली स्त्री दूसरे घर के दरवाज़े की ओट में खड़ी गली में आते क़दमों की आहट सुनती अपने प्रियतम की बाट जोह रही है? वह गराश का आलिंगन कर हृदय से लगा लेगी। उसे लोगों की नुकताचीनी और बददुआओं की क्या परवाह! वह हर कष्ट सहने को तैयार है, बस उसका गराश उसके साथ रहे

उस घर की औरत झिड़कियां, तिरस्कार, गुस्से से फूले मुंह के बारे में कुछ नहीं जानती थी – वह सदा स्नेहपूर्ण, प्रिय और आतिथ्यशील रहती थी।

गराश को लगा जैसे किसी ने उसे धकेल दिया हो वह दबे पांव दरवाजे की ओर बढ़ा, पर बरामदे में मां की सर्द आवाज़ आयी

"कहां जा रहे हो?"

"दोस्तों में काम है।"

"लौट आओ! वक्त रहते संभल जाओ। ऐसा कोई गिला नहीं रहेगा जिसका तुमसे बदला न लिया जाये, यह याद रखना। घर में बीवी के पास जाओ।"

"पीछे ही पड़ गयी हैं!" युवक ने आंसू रोक रखने से कांप रही मा

से नज़रें मिलाने से डरता हुआ खिन्न मन से सोचा। "यह क्या ज़िन्दगी है जरा भी आज़ादी नहीं।"

"मा, ख़ुदा के वास्ते, आप तो मुझे परेशान मत कीजिये। मेरा वैसा ही दम घुटता है।"

मा का दिल कांप उठा बेटे ने इतनी अशिष्टता से उससे कभी बा नहीं की थी। ऐसे अवसर आये थे, जब मा बेटे पर नाराज़ होती, ह जाती, पर यह थोडी ही देर रह पाता मा स्वयं किसी तरह गराश के उचित ठहराने की कोशिश करती, इसीलिए क्षमा भी कर देती। इ समय उसका पहला बच्चा उसके सामने केवल अशिष्ट ही नहीं, बल्कि बिलकुल पराये की तरह, अत्यन्त दूर का जैसा खडा था

गराश सिटकनी खोलने लगा था, पर अचानक उसके सामने पिता आ खडा हुआ – वह सोने के कपडो मे था, पैर नगे थे। उसकी मूछें बिखर रही थी, सफेद बाल हिल रहे थे, क्योंकि क्रोध के मारे रुस्तम का बल शाली शरीर काप रहा था।

"क्या अपने और हमारे खानदान का नाम नीचा करके तुम्हे सब्र नही हुआ?" क्रुद्ध पिता का स्वर रुँध गया। "क्या अनाथ की खिल्ली उडाकर सबर नहीं हुआ, जो अब मा से बदतमीज़ी कर रहे हो?!"

और उसने बेटे के इतने ज़ोर से थप्पड जडा कि गराश लडखडा गया।

सकीना डर के मारे चीख पडी।

गराश भागकर फाटक से निकला, स्तेपी की ओर मुडा और धुध मे नज़रो से ओझल हो गया।

नज़ताज उस रात अपने प्रियतम की बाट जोहती रह गयी

४

जब माय्या पीला चेहरा लिये, जैसे लम्बी बीमारी के बाद उठी हो, हाथ मे सूटकेस पकडे नीचे आयी, सकीना व परेशान बरामदे मे नाश्ते की तैयारी कर रही थी, जबकि रुस्तम शेड से 'पोबेदा' कार निकालकर उसकी जाच कर रहा था।

उसने अप्रत्याशित सहृदयता से बहू के साथ दुआ-सलाम की, हालांकि श्वसुर अगर माय्या की तरफ वैसे ही तिरछी नज़रों से देखता, जैसा कि पहले अनेक बार हो चुका था, तो उसे ज़रा राहत मिलती।

"मा," माय्या ने सकीना से कहा, "मुझे लगभग एक सप्ताह 'लाल झण्डा' में रहना होगा। वहाँ के लोगों ने अछूती धरती के एक टुकड़े में बोवाई की, लेकिन मिट्टी की बिलकुल जाँच नहीं की, गलत सिंचाई के कारण कई हेक्टेयर ज़मीन में नमक बढ़ गया है। मुझे दिन-रात उसकी देखभाल करनी होगी।"

वह सच्ची बात नहीं कह सकी। हालाँकि वह सारी रात इस बातचीत की तैयारी करती रही थी, लेकिन सास की सहानुभूतिपूर्ण दृष्टि देखकर और रुस्तम-कौशी का स्नेहपूर्ण अभिवादन सुनकर वह किंकर्तव्यविमूढ़ हो गयी और झूठ बोल गयी। लेकिन अब इरादा बदलने का अवसर निकल चुका था। पति के साथ सुलह का रास्ता बंद हो चुका था।

सकीना ने केवल तब छोटा-सा नीला पर्स, सफेद खोल चढ़ा सूटकेस और माय्या के हाथ पर आड़ा पड़ा चौड़ा भूरा कोट देखा और उसे याद हो आया कि यही चीज़ें लेकर माय्या उनके घर में बहू बनकर आयी थी और वह सब समझ गयी।

"तुमसे विनती करती हूँ, बेटी, मत जाओ," उसने बड़ी मुश्किल से कहा। "हालात चाहे जैसे हों, तुम्हारे ससुर तुम्हें मोटर में 'लाल झण्डा' पहुँचाने रहेंगे और लेते आयेंगे। आखिर हमने 'पोब्येदा' खरीदी किसलिए है?" उसने समर्थन की इच्छा से पेरशान की तरफ देखा, पर वह पूर्णतया अपने पर क़ाबू नहीं रख पा रही थी कभी वह मेज से प्लेटें उठा लेती, कभी फिर वहीं रख देती, कभी अपनी उंगलियों से सीने पर पड़ी रूमाली को मसलने लगती।

माय्या ने आमू पीते हुए जवाब दिया:

"नहीं, माँ, यही बेहतर रहेगा, मेरे लिए भी और आपके लिए भी।"

सब समझ चुके, पर चेहरे से ज़ाहिर नहीं होने दे रहे रुस्तम ने बरामदे में आकर सूटकेस ले लिया।

"काम, घरवाली, दुनिया में सबसे ज़रूरी होता है," उसने प्रभावोत्पादक तरीके से सकीना से कहा। "तुम इसे मनाने की कोशिश मत ... , जाने दो। मैं कारा केरेमोग्लू को इसका ध्यान रखने की ज़िम्मेदारी दूँगा। अगर नमक की तह जमी ज़मीन को साफ़ करना है, सही सिंचाई का ...तज़ाम करना है, तो इसका मतलब है, ज़रूर हो ... "

... हुए होंठों से जल्दबाज़ी घड़ी सकीना को चूमा, रो...
... और इस भय से कि यदि वह एक मिनट

ग्रौर खड़ी रही, तो ख़ुद फूट-फूटकर रो पड़ेगी, कार की तरफ लपकी।

"कम-से-कम नाश्ता तो कर लेते!" सकीना ने पुकारा, पर मा[illegible] ने सिर हिला दिया, रुस्तम ने ग्रप्रत्याशित चिन्ताशीलता के कारण कि उसे ढेरों काम करने हैं पहले वह बहू को 'लाल झण्डा' [illegible] जायेगा फिर फौरी काम से जिला मुख्यालय जायेगा, वहीं नाश्ता लेगा। परेशान ने यह कहकर कि उसके गले से गस्सा नहीं उतरेगा, तौ[illegible] कुरसी पर फेंक दिया, गीली तश्तरियां मेज़ पर पटक दीं ग्रौर खेत [illegible] हो गयी।

ग्रकेली रह जाने पर सकीना दिल खोल कर रोयी। उसके बाद [illegible] ग्राने पर उसने सारा नाश्ता कुत्ते को डाल दिया, साफ बरतन उठ[illegible] ग्रलमारी में रख दिये, दरवाज़े पर ताला लगाया, चाबी बरामदे में ग[illegible] के नीचे छिपा दी (सारा गांव इस गुप्त स्थान के बारे में जानता [illegible] ग्रौर कपास के खेत रवाना हो गयी काम में लगे रहने पर सारे दुख[illegible] ग्रप्रिय बातें भूल जाती हैं।

शाम को वह बिना ग्रपने घर में झांके शेरज़ाद के यहां गयी। उस[illegible] बहन कुछ दिनों से बीमार थी ग्रौर उसकी मां उसे ज़िले के चिकित्सा[illegible] ले गयी थी। जाने से पहले उसने सकीना को ग्रपने पास बुलाकर ग्रनु[illegible] किया था

"तुम पर कुरबान जाऊं, बहन, शेरज़ाद का खयाल रखना। घर[illegible] काम-काज की उसे बिलकुल समझ नहीं है, उसे याद नहीं रहता कि तश्त[illegible] कहां पड़ी है, गिलास कहां रखा है "

शेरज़ाद के ग्रलावा उसे दो वर्ष पूर्व यारोस्लाव्ल प्रान्त से लायी गय[illegible] बढ़िया नस्ल की गाय जैरान की भी संभाल करनी थी। निस्सन्देह सकीन[illegible] इस काम को भी नहीं टाल सकती थी।

रुस्तम इस बात पर झल्ला उठा था कि उसकी पत्नी शेरज़ाद का पक्ष[illegible] रख रही है, जिससे उसे घृणा थी, लेकिन ग्राज़रबैजानी गांव की परम्पराग्रों - पड़ोसी को मुसीबत में ग्रकेले नहीं छोड़ना चाहिए, - का पालन करते हुए उसने कुछ नहीं कहा।

ग्रब सकीना कभी शाम को, तो कभी दिन में एकाध घंटे का समय निकालकर शेरज़ाद के यहां जाती, ग्रांगन झाड़ती-बुहारती, गाय के लि[illegible] चारा तैयार करती, दूध दुहती।

"सूना घर, भिडों का राज,!" वह वहां सफाई करते समय सोच रही थी।

शेरजाद के आने का इन्तज़ार किये बिना सकीना ने बुझते चूल्हे मे सूखी टहनियां डाल दी और मागवाडियो से होती हुई घर रवाना हो गयी।

अहाते के बीचो-बीच धूल मे सराबोर 'पोबेदा' खडी थी। रुस्तम कुल्ला करता और हाफता हाथ-मुह धो रहा था, उसने वहा पहुची सकीना से साफ तौलिया लेते हुए कहा कि वह सुबह बाकू जा रहा है। सलमान को भेजना चाहता था, पर इरादा बदल गया।

"बिजलीघर के निर्माण के अनुबधों का काम तो लडका निबटा लेगा, इसमे कोई शक नही," रुस्तम ने कहा, "पर मुझे आज़रइत्तिफाक* मे इमारती लकडी और छत के लिए स्लेट के चौको के लिए पैसा मजूर करवाने जाना है, पार्टी की जिला समिति ने इजाजत दे दी है।"

"अगर जिला समिति ने इजाजत दे दी है, तो मेरी सारी दुआए तुम्हारे साथ हैं," सकीना ने ठण्डी सास लेकर कहा और पति के सफर की तैयारी करने लगी।

उसे पहली बार इस बात की खुशी हुई कि पति कम-से-कम एक सप्ताह के लिए घर में नही रहेगा,—यह भावना उसके लिए अप्रत्याशित थी, इसलिए कष्टप्रद भी थी।

५

धूल के ललछौहा पीले, दमघोटू गुबार मे पशुओ का झुण्ड धीरे-धीरे रेंगता-सा गाव की ओर बढ रहा था, चरवाहा अनिच्छापूर्वक चल रही गायो को हाकता बीच-बीच मे कोडा फटकार रहा था, पर गायो को जल्दी नही थी, वे गढ्ढो मे उगी ऊची, रसदार घास को चरती जा रही थी।

सकीना ने फाटक खोला और नजरो से खूबसूरत गाय जैरान को ढूढने लगी।

"सलाम, सकीना चाची!" चरवाहे ने पुकारा, उसके हवा व धूप से सावले पड़े चेहरे पर केवल आखें चौंधिया देनेवाले सफेद दात ही चमकते

* आज़रबैजानी उपभोक्ता सघ।

नज़र आ रहे थे। "इस मेहमाननवाज़ पर भी मालकिन की क्या नज़र है!"

"शाबाश, बेटा! अभी तक हालत सुधरने के कोई लक्षण नज़र नहीं आते। आज तुम क्यों इतनी देर से लौटे?"

"स्तेपी में घास बहुत घनी उगी है, गायों को घास से हटाना मुश्किल हो जाता है," चरवाहे ने बताया।

भीमकाय, चौड़ी, सुनहरे रंग की गाय भारी क़दम रखती हुई झुंड से अलग हो गयी और फाटक की ओर जाने लगी।

"बेटा, तुम्हारा क्या ख़याल है, इसके ब्याने में अभी काफ़ी देर है?"

"इस हफ़्ते में ब्या जायेगी, मेरे अंदाज़ से बछिया ही होगी। सारे लक्षण उसी के दिखाई देते हैं।"

"ख़ुशख़बरी के लिए शुक्रिया।"

जैरान ने अलसाये ढंग से सकीना के कंधे पर अपना माथा रखा, सकीना ने उसकी गरदन में हाथ डाल दिये और उसे सफ़ाई से सँवरी हुई कच्ची गोशाला में ले गयी। जैरान की मख़मल-सी मुलायम खाल सहलाती हुई कहने लगी.

"ओफ़, कितने भारी लगते हैं ये आख़िरी दिन! लेट जा जल्दी से, सुस्ता ले ."

गाय ने मानो सकीना की बात समझ ली, उसने अपनी गरम, खुरदुरी जीभ से उसका हाथ चाट लिया।

गाय को अकवारभर ख़ुशबूदार सूखी घास डालकर सकीना शाखी शहतूत के तले लट्ठे पर बैठ गयी। शाम का झुटपुटा तरह-तरह के कष्टदायक विचार पैदा कर रहा था। दिन में खेत में लोगों के बीच समय न जाने कब बीत जाता था, शाम को घर पर कोई न कोई काम निकल ही आता था, पर अकेले शेरज़ाद के घर का सारा काम सकीना ने बहुत जल्दी निबटा लिया। खाना पक चुका था, समोवार में पानी खदक रहा था, बस गाय के लिए पानी लाना बाक़ी रह गया था, पूरी बाल्टी पानी उठाने की ताक़त सकीना में अब नहीं रह गयी थी—दम फूल जाता था .. बेहतर होगा शेरज़ाद के आने का इंतज़ार करे, उसे याद दिलाये।

पराये घर में बेकार बैठे रहने पर मन में बरबस विषादपूर्ण विचार आने लगते हैं। अपने को और धोखा देना और आशा रखना अब व्यर्थ है कि माय्या लौट आयेगी। पहली नज़र में ही स्पष्ट हो गया था कि वह के लिए रुस्तम ख़ानदान का घर छोड़ गयी है। अब निराश का क्या

होगा? क्या उस लुच्ची ने उस पर जादू कर दिया है? पहले पड़ोसिनें कुछ तो झिझकती थी, मुह पर कुछ नही कहती थी, लेकिन अब माय्या के जाने के बाद से तेल्ली चाची हर चौराहे पर चिल्ला-चिल्लाकर कहती है कि रुस्तम के घरवालो ने अभागी अनाथ की बेइज्जती कर दी

सकीना ने शेरजाद से अक्सर मिलते समय देखा था कि उसे और नजफ को रुस्तम-कौशी से कोई लगाव नही रह गया है, वे उससे दूर-दूर रहने लगे हैं। अध्यक्ष के सलाहकार अब चालबाज़ यारमामेद और ढीठ सपाट सलमान रह गये हैं। उफ़, उसके सामने वे कितने खुशामदी ढग से मुस्कराते हैं, जब कि पीठ पीछे जरूर अपनी काली करतूतें करते रहते हैं। कही पति को किसी मुसीबत मे न फसा दें...

सामूहिक फार्म मे वसन्तकालीन बोवाई का काम पूरा कर लिया गया था, निराई शुरू हो गयी थी, जिले में रुस्तम-कौशी से अधिकारी बहुत खुश थे, कुछ भी हो, हाल ही में कलतर भैया रुस्तम के घर आया था, उसने चिखिर्त्मा खाया, वोदका पी और गृहस्वामी की तारीफ के पुल बाधे। रुस्तम फिर घमण्ड से फूल उठा, सिर ऊंचा उठाकर चलने लगा और केवल उन्ही लोगों पर ध्यान देने लगा, जो उसके सामने सिर झुकाते, जब कि अवज्ञाकारियो को वह मरखने बैल की तरह सीगो से टक्कर मारने को तैयार रहता   इसका अन्त अच्छा नही होनेवाला . .

सकीना को होनेवाला अनर्थ अवश्यभावी लगने लगा।

वह क्या करे? पति से बात करने पर हमेशा की तरह झगडा होगा। जिला समिति में शिकायत करे? नही, उसमे ऐसा करने का साहस नही है! न जाने कौन मामले की जाच करे। अगर वह रुस्तम का दुश्मन निकला तो? वह मौक़े का फायदा उठाकर उसकी मदद करने के बजाय सकीना और उसके पति की बदनामी करवा दे, बूढ़े के हाथ-पैर मोडकर गिरा उसके सीने पर घुटना दबाकर बैठ जाये। नहीं, इस तरह के विचारों से आदमी पागल हो जाये। बेहतर होगा, जल्दी से जल्दी घर चली जाये

"शेरजाद आखिर कहा गायब हो गया? गाय को पानी पिलाने का वक्त हो गया है!" सकीना ने प्रकट मे कहते हुए सोचा।

"मा, तुम्हे पानी चाहिए क्या? अभी लायी!"

सकीना ने आखें उठायी और पेरशान को सामने खड़े देखा।

"तुम दबे पाव कैसे आ पहुची? क्या कुछ हो गया है? अन्वा का तार आया है?"

25*

"कितना अच्छा हुआ, जो तुम आ गयीं!" उसके मुह से निकल गया। "घर मे चलो "

लेकिन पेरशान ने रूखे लहजे मे कहा कि वह केवल एक किताब लेने आयी है, उसका नाम क्या है, उसे याद नही रहा शायद आजरबैजान के सामूहिक फार्मों के अग्रणी किसानो के बारे मे है। पुस्तक रुस्तमकोशी को चाहिए।

"'नयी समस्याए – नयी आकाक्षाए'– यही नाम है न?" शेरजाद ने यह याद करके कहा कि अध्यक्ष कई बार इस पुस्तक को पढने की डीग हाक चुका है, पर जाहिर है उसने उसके पन्ने भी नही उलटे है। खैर, देर आये दुरुस्त आये . "बस यह मत बताना कि तुमने यह किताब मुझसे ली है, नही तो वह इसे देखने को भी तैयार नही होगे।"

"तुम्हे यह मालूम होना चाहिए कि मैं अपने प्यारे अब्बा से कुछ नही छिपाती हू। तुम क्या मुझे अपने मा-बाप को धोखा देना सिखा रहे हो? मा, सुना तुमने?!"

"चुप कर, लडकी!" सकीना चिल्लायी।

"किताब के लिए शुक्रिया, घर जाने का वक्त हो गया," पेरशान ने औपचारिकता से कहा और फाटक पर पहुचकर आगे बोली "उम्मीद है, मा, तुम इस नौजवान से बाते करते समय यह नहीं भूलोगी कि तुम्हारा अपना परिवार भी है?"

और वह ठहाका लगाकर अधेरी गली से घर भाग ली।

सकीना ने केवल हाथ झटकारे और ठण्डी सास ली, जब कि शेरजाद उल्लसित किन्तु किंचित् उदास मुस्कान के साथ जहा खडा था, वही बरामदे की सीढी पर कैनवस के धूल से सराबोर बूट पहने हुए ही थकान के मारे अपना रहे पैर फैलाकर बैठ गया।

देर कैसे हुई? काम हमेशा की तरह ढेरों हैं, जिले से जाच समिति ने आकर कपास की और निराई की जाच की। क्या वे सन्तुष्ट थे? युवक सकुचा गया और इधर-उधर देखने लगा . वह जानता था कि सकीना का दिल पति की भारी असफलताओं के कारण बहुत दुखी रहा है, लेकिन वह उससे झूठ बोलने का साहस न कर सका।

"नहीं, चाची, लोग खुश नही हैं। बहुत से खेतों मे पौधे काफी छोटे हैं, उनकी ऊचाई कम है .." शेरजाद ने जान-बूझकर "बहुत से खेतो मे" कहा, न कि "कुछेक टोलियो में" ताकि सकीना कही यह न

म विश्वास रखो। तुम कोशिश करो कि उन्हें गुस्सा न आये, ढग से पेश आओ, इस तरह कि उन्हें शक न हो, तब सब ठीक हो जायेगा।"

शेरज़ाद ने सोचा कि उनकी भी अपनी प्रतिष्ठा है अगर सामूहिक फ़ार्म के कम्युनिस्टो ने उसे सचिव चुना है, तो रुस्तम को भी इस तथ्य को स्वीकार करना चाहिए। लेकिन चाची के दिल को ठेस न पहुचाने की इच्छा मे उसने कृत्रिम उत्साह के साथ कहा

"तुम्हारी बात सही है, हमारे बाद बस हमारा नेकनाम और नेक काम ही रह जायेंगे। तुम जानती हो, चाची, मेरी जिन्दगी फूलो की सेज नही रही है। शायद मैं किसी और ही ढग मे जीता "

"तुम्हें ज़री के कपडे पहनकर भी कभी घमण्ड नही होगा," सकीना ने उसे टोक दिया।

"कह नही सकता, कह नही सकता " शेरज़ाद ने आखें झुका ली। "*बुज़ुर्ग कहते हैं कि किसी आदमी को दौलत अधा कर देती है, किसी* को यश और किसी को सत्ता। तुम्हें साफ-साफ बता दू, चाची, कि पिछले कुछ दिनो से रुस्तम-कोशी को बहुत घमण्ड हो गया है। वह सोचते हैं कि उनसे ज्यादा अक्लमद ज़िले मे और कोई है ही नही।"

"मैं मानती हू, बेटा, मानती हूं, लेकिन अब क्या किया जाये? क्या सब उनसे मुह फेर ले? या तो क्या उनकी आखें खोलना और भूल से बचाना बेहतर नही होगा? क्या उन्हे बुढापे मे सही रास्ते से न भटकने देना बेहतर नहीं होगा?"

शेरज़ाद सोच मे डूब गया। उसे देखते हुए सकीना को अफसोस होने लगा कि उसने अपने सारे कष्ट युवक के कधो पर लाद दिये हैं, जब कि उसके ये सुख से जीने के दिन हैं। बचपन मे उसे बहुत कम खुशिया नसीब हो पायी थीं...

"जाकर तुम्हारे लिए चाय ले आती हू . "

६

सकीना चूल्हे के पास रुक गयी, जब कि शेरज़ाद उसकी कही बात के बारे मे सोचता रहा। बात कितनी सही है–जीवन-पथ केवल सूर्यास्त, क्षीणता और वृद्धावस्था की ओर ले जाता है। उस पर रुकना असम्भव

सोचे कि वह शेखी बघार रहा है। उसकी टोली के टुकड़े में, आम सम्मति के मतानुसार, कपास बहुत अच्छी हालत में थी।

"तुम लोग आखिर क्या करते रहते हो?" सकीना ने उलाहनाभरे स्वर में कहा।

"बुरा मत मानो, चाची, पर यह सवाल किसी और आदमी से करना बेहतर होगा।"

"मैं उसी आदमी से तो पूछ रही हूं। तुम और रुस्तम एक ही तवे की रोटी जो हो, क्या छोटी, क्या मोटी, इसलिए उसकी तरफ से तुम्हीं जवाब दो," सकीना ने प्रतिवाद किया।

शेरज़ाद ने कंधे उचका दिये। क्या वह ज़िम्मेदारी से कतराता है? क्या वह अध्यक्ष की मदद नहीं करना चाहता था? लेकिन जब शेरज़ाद का हर शब्द रुस्तम को जामे से बाहर कर देता हो, तो कोई क्या कर सकता है

सकीना ने बरामदे में गद्दा लाकर उसे तख्त पर बिछा दिया, तकिया और रज़ाई रख दिये। फिर वह लौटकर शेरज़ाद के पास आ बैठी और ठण्डी सांस लेकर सोच में डूबी बोली:

"मैं तुम्हारे लिए खाना बना रही थी और डूबते सूरज की तरफ देखती जा रही थी वह झुलसा रहा था, आंखें चौंधिया रहा था, फिर डूबने की जल्दी में नहीं था। लेकिन वक्त आ गया और वह क्षितिज के पीछे ओझल हो गया। वह चाहे आज डूब गया है, पर हम तो जानते हैं कि सूरज कल फिर निकलेगा और अपना सुखद प्रकाश हमें सौगात में देगा। और हम, इनसान क्या करेंगे? क्या हम अपना सूर्यास्त सह सकेंगे, जवान और बलशाली होकर पुनर्जन्म ले सकेंगे? नहीं ऐसा अभी इस दुनिया में नहीं हुआ है। हममें से हरेक की सुबह हुई थी, दोपहर हुई थी और सूर्यास्त भी होगा। वे लोग खुशकिस्मत हैं, जिन्हें उनके सूर्यास्त की घड़ी में कृतज्ञतापूर्वक याद किया जाता है। उनकी बदकिस्मती है, जिन्हें उनकी आखिरी घड़ी में लोग बद्दुआएं देते हैं तुम जवान हो, बेटे, बहुत जवान, जिन्दगी में तुम बहुत सी बातों को युवा दुनिया से अपनी नजरों से देखते हो। रुस्तम मेरे पति हैं, मुझसे बेहतर उन्हें कौन जानता है? हम इकट्ठे बरसों से एक ही तकिए पर सिर रखते रहे हैं। वह सीधे हैं, इसमें कोई शक नहीं, पर ईमानदार हैं। मेरी इस बात का

अंधेरा था, सकीना युवक को ठेस पहुंचाने के डर के बिना दयापूर्वक मुस्करा दी।

"हां, बेटा, तुम हो सनकी," उसने कहा। "ऐसी मामूली बातें तुम्हें परेशान करती हैं, तुम्हारी मां का दूध तुम्हारे लिए हमेशा बरक्ती हो! लेकिन तुम जब जन्म से ही रहमदिल हो, तो लोगों को बेकार ठेस मत पहुंचाओ। लोगों का खुले दिल से भला करो — लोग यूं ही तो नहीं कहते हैं न — नेकी ही रह जाती है। लेकिन बुरे लोगों से होशियार रहो, हर राह चलते पर विश्वास मत करो। लोगों पर जल्दी विश्वास करना भी अच्छा नहीं होता, यह मैं रुस्तम-कौशी को भुगतते देख चुकी हूं।"

शेरजाद समझ नहीं पाया कि इस बातचीत से रुस्तम का क्या सम्बन्ध है। *सकीना एक मिनट के लिए हिचकिचायी, पर फिर उसने यह सोचकर* कि जब बात कहनी ही है, तो दो टूक कहनी चाहिए, हाथ झटका और कहा कि यारमामेद शेरजाद से दोस्ती गाठना चाहता है, उसका विश्वासपात्र बनना चाहता है।

"खुदा न करे, उसे पास मत फटकने देना! सारे लोग यारमामेद के खिलाफ हैं, और लोगों के मुंह से कभी झूठी बात नहीं निकलती।"

पहले शेरजाद अपने को मनाता रहता था कि उसे यारमामेद और सलमान का तिरस्कार नहीं करना चाहिए, पर वह अब अपने भोलेपन पर खुद पछता रहा था। ये चापलूस रुस्तम-कौशी के साये में जबरदस्ती आने की कोशिश यूं ही नहीं कर रहे हैं — शेरजाद की आंखों के आगे कपास के पौधे के पास उगे मोटे-मोटे और मजबूत परजीवी पौधे घूम गये, जो उसका सारा रस चूस लेते हैं। उस खर-पतवार को जड़ से उखाड़ना आसान नहीं है! थककर चूर हो जाने तक कुदाल चलाकर उसके चारों ओर की जमीन खोद डालनी पड़ती है। कभी-कभी आस-पास के पौधों को छूत से बचाने के लिए उस पौधे को जला डालना पड़ता है। लेकिन खर-पतवार की जड़ों को जमीन के नीचे आपस में गुथने का मौका दिया, तो सब बरबाद हो जायेगा, सारा खेत बेकार हो जायेगा।

- "चाची," शेरजाद ने भोलेपन से पूछा, "क्या तुमने इस बारे में रुस्तम-कौशी से बात करने की कोशिश की?"

"तुम क्या सोचते हो, बेटा, कि मैं अंधी भी हूं और गूंगी भी हूं?" सकीना रूठती हुई मुस्करायी। "मैं रोज यही कहती हूं: लोगों का सहारा लो, ठोकर भी खाओगे, तो गिरोगे नहीं।"

की पैनी नजर व्यवस्था का ध्यान रखेगी, तो बुरी नीयतवालों को चू करने की भी हिम्मत नहीं हो सकेगी। अध्यक्ष और सचिव को परेशान नहीं होना पड़ेगा: स्तेपी में मेमनों का क्या हो रहा है? कहीं अनाज चुरा तो नहीं लिया गया है? लोगों की नजरों से भूसे में पड़ी सूई भी छिपी नहीं रह सकेगी।

"अच्छा, अब घर जाने का वक्त हो गया है, अपने बच्चों को खिला-पिलाकर सुलाना है।" सकीना ने मज़ाक़ किया। "मेरी तुमसे एक विनती है, शेरज़ाद..."

उसका चेहरा अचानक लाल हो उठा।

"कहो, कहो, चाची, तुम तो आखिर मेरे लिए दूसरी मा की तरह हो।"

"अगर तुम्हारा कभी 'लाल झण्डा' जाना हो, तो वह से कहना कि परेशान और मेरा दिल दुख के मारे टूटा जा रहा है। कम-से-कम एक घंटे के लिए ही मिल जाये," सकीना ने अनुरोध किया।

शेरज़ाद उसे बता सकता था कि हाल ही में नजफ, गिज़ेतार और उसने वैसे लापरवाही के लिए गराश को आड़े हाथों लिया था, लेकिन वह शर्मा गया और उसने केवल वादा किया.

"कल उधर जाऊंगा और जरूर कह दूंगा।"

सकीना चली गयी, पर उस बातचीत व अपने विचारों से व्याकुल युवक बिना लैम्प जलाये काफ़ी देर तक बरामदे की सीढ़ियों पर बैठा रहा। उसके दिल को अच्छा लग रहा था, वह खुश था।

पौ फटे जैसे ही सूरज की पहली किरण हीरे सदृश निर्मल क्षितिज पर रक्ताभ रेखा-सी खिच गयी, शेरज़ाद ने कुम्मैत घोड़े पर काठी कसी और ताज़गी से पुष्पित, सुगंधित खेतों की ओर उसे सरपट दौड़ा ले चला. युवक के हृदय में उमड़ रही उदात्त भावनाएं अब कुछ कर दिखाने, संघर्ष करने की उत्कट इच्छा में परिवर्तित हो चुकी थीं।

रंगबिरंगे फूलों व गेहूं की थोड़ी बालियों से सुसज्जित मुग़ान भव्य, स्नेहमयी मां के समान शेरज़ाद को अपने पास बुला रही थी।

उसने रकाबों में खड़े होकर पैनी नजर निस्सीम समतल प्रदेश पर दौड़ायी, काम पर निकले सामूहिक किसानों को देखा और युवक का हृदय सन्तोष से परिपूर्ण हो उठा कि वह भी उनके साथ है... और जब उसने धूप से काली स्याह हुई विनोदी व ज़िन्दादिल स्त्रियों व युवतियों के बीच

...का सहारा न मिले तो हर कोई गिर सकता है," शेरज़ाद ने स्वीकार किया।

"एक हाथ से तो ताली भी नहीं बज सकती," सकीना ने कहा। "यह सच भी है, दूसरा हाथ मदद के कारण बार उठता है, उन... -व्यवहार का नतीजा है या यह कोई मामूली पौधा है? ऐसी स्थिति में हजारों हाथोंवाली, बुद्धिमत्तापूर्ण, जीवन के अनुभव के आधार पर ... में विश्वास से परिपूर्ण शक्ति की आवश्यकता होती है। यह हर कोई जानता है कि जो अकेली आंख नहीं देख पाती, उसे हजारों आंखें तुरन्त देख लेती हैं। यह सत्य साधारण सामूहिक किसान के लिए स्पष्ट होता है जबकि काफी समय तक कई सत्ताधारियों की समझ में नहीं आता।

"काकी," शेरज़ाद इतनी ईमानदार सम्भाषिणी मिलने की खुशी से चुप न रह सका, "दुनिया में आदमी से बढ़कर पेचीदा प्राणी कोई नहीं है। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि किसी आदमी को बिलकुल बदगुजरा, पक्का बदमाश समझ लिया जाता है, पर मालूम पड़ता है कि वह नेक है। जब कि दूसरा, जो देखने में अक्लमंद और हरफ़न-मौला लगता है, नज़दीक से देखने पर पता चलता है, वह बिलकुल नीच है।"

"जाहिर है, इसीलिए तो सिर्फ अपने ख़यालों पर ही भरोसा नहीं करना चाहिए, अलग-थलग नहीं रहना चाहिए," सकीना ने सोचकर कहा। "अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता।"

शेरज़ाद को उसकी बातों में मेहनत की ज़िन्दगी जी चुकी आज़रबैजानी किसान नारी की बुद्धिमत्ता दिखाई दी, जिसने कभी झूठ नहीं बोला, छल-कपट नहीं किया, पराये माल पर दांत नहीं गड़ाये, अपने कुछ परिचितों की आज़ाद ज़िन्दगी से कभी ईर्ष्या नहीं की और केवल अपनी मेहनत के फल पर ही भरोसा रखा। हां, उसे सकीना के शब्दों में पति, परिवार व अपनी सन्तान के सुख में अपना सुख देखनेवाली अभिजात नारी-हृदय का स्पंदन सुनाई दे गया।

सकीना ने उदास स्वर में कहा कि रुस्तम बूढ़ा हो चुका है, पांच साल और काम करेगा और फिर अलग हटकर नौजवानों के लिए रास्ता छोड़ देगा। शेरज़ाद के जैसों को खेती-बारी संभालनी होगी, लोगों का नेतृत्व करना होगा। अब शेरज़ाद पर भारी ज़िम्मेदारी आ चुकी है, अगर वह और रुस्तम एक दूसरे की मदद करें, तब सारे सामूहिक किसान उनके पीछे चल पड़ेंगे, तब पहाड़ काटना भी आसान हो जायेगा। अगर जनता

– "कुछ खराबी हो गयी है। आपरेटर नदी की तरफ उतरा है, कह
ना है कि अभी आता हूं।"

"कैसे लोग हैं!" शेरजाद क्रुद्ध हो उठा और तेज कदमों से नदी की
ार चल दिया। "काम ज़ोरों पर है और मशीन छोड़ गया! मशीन से
र दो-तीन दिन में काम निबटा लेते!"

ऊंची कटीली झाड़ियां घुटनों में चुभी जा रही थीं, जैसे उसे रोक
ही हों. जल्दबाज़ी मत कर, भाई घासस्थली और नदी के बीच एक
ोटे-से घास के टुकड़े पर भेड़ें चर रही थीं, शेरजाद ने आज़ादी से इधर-
उधर चर रही भेड़ों व उनकी लटकी हुई मोटी-मोटी दुमों पर स्वामी
ी तरह नज़र डाली। दाढ़ीवाले चरवाहे ने पार्टी संगठन के सचिव का
अभिवादन किया।

"तुम्हारी दौलत दिन दूनी रात चौगुनी बढ़े!" शेरजाद ने कामना
की। "नया इनचार्ज कैसा है? पसंद आया?"

चरवाहे ने टोपी उतारकर गुद्दी खुजलायी और अपनी बिखरी दाढ़ी
हिलायी।

"यह तो अफ़सर ही जाने "

शेरजाद को चरवाहे के शब्दों में उलाहने का पुट महसूस हुआ, उसने
अपने को इस बात का दोषी अनुभव किया कि उसने समय रहते केरेम
का पक्ष नहीं लिया।

"तुम ने यहां आपरेटर को तो नहीं देखा?"

"नजफ़ को? वह रहा बाल्टी लिये," चरवाहे ने लम्बा कोड़ा फटकारा
और एक तरफ़ हट गया।

नजफ़ बाल्टी लिये ढालवां किनारे पर बनी टेढ़ी-मेढ़ी पगडण्डी से ऊपर
चढ़ रहा था। वह धीरे-धीरे चल रहा था, बीच-बीच में बाल्टी ज़मीन
पर रख देता था, सांस लेता था और पसीने से तर चेहरा पोंछ लेता था।

"ऐ, ज़रा रफ़्तार बढ़ाओ!" शेरज़ाद चिल्लाया। "अगर तुम्हें हांफना
पड़ गया, तो काम बिलकुल ही रुक जायेगा।"

नजफ़ ने फिर बाल्टी रखकर ठण्डी सांस ली, उसके भरे-भरे गाल
सुर्ख हो उठे थे।

"क्या तुम लोग, शैतानो, इतना भी नहीं कर सकते कि मशीन ख़राब
होने की नौबत ही नहीं आये?" शेरज़ाद उस पर बरस पड़ा। "हर मिनट

मशीनों को नमस्कार किया जो उसे बता रहे [illegible] हुई [illegible] का धन्यवादी। उसने मन ही मन उस जनता [illegible] और [illegible] जिस हृदय से धन्यवाद किया और [illegible] बातों के बारे में उत्पन्न हुए विचार [illegible] से [illegible] विचारों के साथ घुल मिल गये।

'हे मेरी जनता, तुम ही मेरा भाग्य हो, [illegible] हो!' ये [illegible] शब्द युवक के हृदय में गीत के समान गूंज उठे। "तुम मेरा [illegible] हो, मेरा गुण हो! जीवन के दुर्गम मोड़ों पर तुम मेरा हाथ पकड़कर [illegible] देती हो, फिसलकर गिरने से बचाती हो। मेरे हृदय में उत्साह तुम्हीं ने [illegible] है! तुम्हारे आदेश पर ही मैंने आजरबैजान का [illegible] के आबाद खड़े किये हैं! तुम्हारी इच्छा से ही मैं ये नहरें और सड़कें बना रहा हूं, नगरों का निर्माण कर रहा हूं, मातृभूमि में वनरोपण कर रहा हूं। पृथ्वी के गर्भ में छिपी अथाह सम्पदाओं तक पहुंचने का मार्ग बना रहा हूं! तुम्हीं ने, मेरी जनता, मुझे समृद्धि के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा दी है! जीवन के कटु क्षणों में तुमने मेरा साथ नहीं छोड़ा। उन क्षणों में उन कायरों, भीरुओं ने मुझसे मुह फेर लिया, तुम ने मेरा साथ नहीं छोड़ा। मैं सदा तुम्हारे प्रति निष्ठावान रहूंगा, तुम्हारी आकांक्षाओं को सर्वोपरि रखूंगा, तुम्हारे आगे सदा नतमस्तक रहूंगा, अहंकार को कभी ओछे ढंग से अपने हृदय में नहीं आने दूंगा—यही मेरा धर्म है! "

७

घास बहुत अच्छी हुई, कमर से ऊंची उग आयी, तिस पर रसदार और खुशबूदार थी। घसियारे घासस्थली में लम्बी-लम्बी हसियाएं चलाते, अपने पीछे घास के ढेर छोड़ते एक कतार में आगे बढ़ते जा रहे थे। हवा घास की तीव्र गंध से संपृक्त थी। शेरजाद ने जब स्तेपी में पहुंचकर देखा कि सुबह के समय में कितनी घास काट ली गयी है, उसे सुखद लगा, लेकिन एक मिनट बाद ही एक ओर बेकार खड़ी घास काटने की मशीन पर नज़र पड़ते ही वह उदास हो गया।

"मशीन काम क्यों नहीं कर रही है?" उसने एक घसियारे से पूछा।

[illegible]ने आस्तीन से चेहरे का पसीना पोंछकर कंधे उचका दिये।

कच्चे रास्ते पर पहुंच गये। वहां धूल, काले मैल, भेड़ों की मेंगनियों की बू आ रही थी.. दूर एक ट्रक दिखाई दिया, जिसमें पीछे एक स्त्री चौड़ा स्ट्रा-हैट लगाये खड़ी थी। ट्रक के पहियों से लगकर धूल के गुब्बार उड़ रहे थे, धूल गड्ढों व रास्ते के किनारे की झाड़ियों पर जम रही थी। शेरजाद और माय्या एक तरफ लपके, पर ट्रक अचानक रुक गया। गिजेतार स्ट्रा-हैट गुद्दी पर खिसकाकर खनकती आवाज में चिल्लायी

"आओ, बैठो, बैठो! . "

उसने माय्या की तरफ हाथ बढ़ाया, जब कि शेरजाद इस बीच बड़ी फुर्ती से उछलकर ट्रक के पीछे रसायनों के सिलिंडरों पर बैठ गया।

"ओह, माय्या बहन," गिजेतार बड़ी बेतकल्लुफी से जल्दी-जल्दी बोली, जैसे वे एक घंटे पहले ही एक दूसरे से अलग हुई हों, "कितनी मुश्किल हो रही है मुझे! मैंने कितना ही मना क्यों न किया मुझे गूंगे हुसैन के स्थान पर टोली-नायक बना दिया गया है। और इस जोंक ने भी मुझे नियुक्त करवाने में उनका साथ दिया," उसने मुस्करा रहे शेरजाद की ओर इशारा किया। "हुसैन के खेतों की जोताई देर से हुई, बोवाई लापरवाही से की गयी, अंकुर बहुत कम निकले हैं। मैं तो तंग आ गयी. कभी अतिरिक्त खाद दो, कभी निराई करो, कभी कीटनाशकों का छिड़काव, तो कभी पानी दो..."

"लेकिन जीने में मजा भी तो आ रहा है," शेरजाद ने उसे तसल्ली दिलायी।

"सच्ची बात है, बहन, सब ठीक हो जायेगा," माय्या ने अपने हृदय में उमड़ती सहानुभूति की भावना के साथ उसे गले लगा लिया। "ऐसा कोई काम नहीं, जो तुम्हारे फुरतीले नन्हे हाथ चट-पट न कर सकें।"

"नन्हे हाथ!" प्रशंसा से पुलकित गिजेतार कह उठी। "कितने चौड़े हाथ हैं! पंजे!" उसने अपने खुरदरे घट्टे व खरोंचे पड़े, धूप में भूरे पड़े ताक़तवर हाथ दिखाये। शेरजाद ने सोचा कि परेशान के भी हाथ ऐसे ही हैं और सचमुच वे उसे शहरी कामचोर लड़कियों के गदराये, पालिश में लाल नाखूनों से ज्यादा प्यारे लगते हैं।

ऊबड़-खाबड़ रास्ते पर ट्रक बुरी तरह धचके खा रहा था, गिजेतार माय्या को अपने गरम बगल से सटाये सहारा दे रही थी। अचानक उसने माय्या

बेशकीमती है। तुम तो कोम्सोमोलों के नेता हो, सारे युवा तुम्हारा [illegible]
सरण करते हैं।"

एक गिर्जेतार ही थीं, जो नजफ़ को गुस्सा दिला सकती थी, [illegible]
भी हमेशा नहीं। टोली-नायक की बात का उस पर कोई असर नहीं हु[आ]
"जहां मैं रहता हू, सब ठीक रहता है," नजफ़ निश्चिन्त[ता से]
मुस्करा दिया। "माय्या को देखा? वह रही वहां साइलो के पास।"

मित्र की बात पूरी सुने बिना ही शेरजाद टेकरी पर बने साइलो [की]
ओर मुड़ गया, नजफ बाल्टी उठाकर धीरे-धीरे ऊपर चढ़ने लगा। "[...]
गुस्सा करने की बात ही क्या है?" उसने सोचा। "दिन लम्बा है, [...]
अभी सिर के ऊपर है, ट्रैक्टर घड़ी की तरह ठीक काम कर रहा [है,]
कोटे से ज्यादा काम कर लेंगे, गिर्जेतार ने शाम को चिखिर्त्मा पकाने [का]
वादा किया है,– कहने का मतलब है, जिन्दगी मजे में कट रही है [...]

इस बीच शेरजाद हाल ही में निर्मित साइलो के निकट पहुंचा [...]
रहा था, जहां औरतें डलियों व टोकरियों में रूखी दलदली घास, न[...]
खर-पतवार आदि रखकर ला रही थीं। उसने दूर से माय्या को देख[कर]
उसकी ओर हाथ हिलाया।

पीली पड़ी, मुरझायी माय्या मुस्कराकर सकुचाती हुई पास आ[यी।]
"आपने कारा केरैमोगलू चाचा को टेलीफोन किया था? क्या हुआ[?"]
"यही कि आपको नहीं भूलना चाहिए, आप का नाम अभी तक [...]
कोम्सोमोल संगठन में दर्ज है," शेरजाद ने कृत्रिम उत्साह के साथ क[हा,]
"हालांकि नजफ़ गुस्से है, पर देर-सवेर वह आप तक पहुंच ही जायेगा[।"]

स्पष्ट था कि माय्या मज़ाक के मूड में नहीं थी, वह बरबस मुस्करा[यी।]
शेरजाद ने बिना घुमा-फिराकर बात किये उसे उसकी सास का अनुरो[ध]
बता दिया।

माय्या सोच में पड़ गयी, उसने उदासी से नज़रें कहीं हथेली में [...]
लीं, फिर दृढ़तापूर्वक घुंघराले बालों को झटका दिया.

"मैं उनसे खेत में मिलने जाऊंगी, वहीं बात कर लेंगे। आपका उध[र]
जाने का इरादा है?"

"हां, मैं भी उधर ही जा रहा हू," शेरजाद ने, यह सोचकर [कि]
उसकी उपस्थिति में माय्या के लिए सास से मिलना आसान होगा, [...]
होगा।

"यानी तुम सहमत हो न?" नजफ हर्षित हो उठा।

"सहमत क्यों न होऊंगा!"

"गोशानखा तुमसे मिलना चाहता था, वह रात को हमारे गाव मे टा था। क्या उसका अक्सर आना भलाई की निशानी है?"

शेरज़ाद मित्र के सन्देहो से सहमत नहीं था।

"परीक्षाएं सिर पर आ पहुंची हैं, सत्र समाप्त होने जा रहा है। झे उसके आने मे कुछ अजीब नजर नहीं आता।"

नाश्ते के बाद नजफ़ खेत रवाना हो गया, जब कि शेरज़ाद यह सोचकर कि गोशातखा रात को मुख्याध्यापक के यहां ठहरा है, स्कूल चला गया।

स्कूल की चौडी खिडकियो और नीला पेंट किये हुए दरवाजोंवाली एकमंजिला सफेद रग की इमारत सजी-धजी लग रही थी। शेरज़ाद मुग्ध हुआ उसे देख सोचने लगा कि रुस्तम अगर किसी काम को सभाल ले, तो बहुत ही अच्छी तरह करेगा। ऐसे सुनियोजित स्कूल पर तो किसी भी शहर को गर्व हो सकता है। थोडी दूरी पर, जहा समतल निर्माण-स्थल पर तराशे हुए पत्थरो का ढेर लगा हुआ था, सामूहिक फार्म के सस्कृति-भवन का निर्माण-कार्य चल रहा था। रुस्तम ने कारा केरेमोगल और साथ ही मुगान के सारे सामूहिक फ़ार्मों के अध्यक्षो को मात देने के इरादे से भव्य भवन खड़ा कर डालने की ठानी थी। बाकू मे उसने किसी तरह मत्रियो तक पहुचकर उनके सामने भावी सस्कृति भवन के सौन्दर्य का इतना भावविभोर होकर बखान किया कि उसे बिना किसी कठिनाई के सारा इमारती सामान मिल गया—सामूहिक फार्म को सीमेंट, स्लेट के चौकों, केन्द्रीय तापन व पानी के पाइपों के वैगन पर वैगन भेजे जा रहे थे।

सोच में डूबे शेरज़ाद को पता भी न चला कि कब गोशातखां उसके पास आ पहुंचा। उसने सचिव से हाथ मिलाया। शेरज़ाद ने आश्चर्य व्यक्त किया:

"आप क्या रात को स्कूल में ही सोये थे?"

"गाव मे भी मेरे बहुत से दोस्त हैं। जैसे तेल्ली चाची ..." गोशातखां मुस्कराया।

शेरज़ाद सतर्क हो गया: "यानी, यह हमारे अध्यक्ष के बारे में काफ़ी क़िस्से सुन चुका है। चाची बेलाग कहने की आदी थी। विनकुम ठीक ही करती है! अगर सड़े-गले को सभालकर रखा जाये, तो सड़ायध सारे मे

करो... और यह याद रखो," सलमान ने धमकी भरे स्वर में कह
"मैं, जिसे कहते हैं, तुम्हारी खुशामद किसी हालत में नहीं करूंगा।"

शेरज़ाद का चेहरा फक हो उठा, उसने उछलकर [illegible] धक्का मार दिया।

"पर तुम भी याद रखना, उपाध्यक्ष, कि अब तुम्हारे लिए अपने ज़हन को काबू में रखने और अपने ईमान का ख़याल रखने का वक्त आ गया है!"

इसके बाद उन्होंने एक भी शब्द नहीं कहा, पर दोनों को ही इतना स्पष्ट हो गया था कि चुप रहने का समय निकल गया है और खुल्लम-खुल्ला मुठभेड़ शुरू हो गयी है।

८

अगली सुबह नजफ ने शेरज़ाद के यहां पहुंचकर उसे निद्रा से जगा दिया। बड़े भोर का समय था, निचले इलाकों में धुंध छायी थी। शेरज़ाद ने कुतूहलवश मित्र की तरफ देखा यह कैसे आ धमका है, न पौ फटी है, न दिन निकला है? उसे मालूम पड़ा कि कल युवाओं ने गांव की सड़कों पर पटरियां बनाने का निर्णय किया है, यानी रोज़ाना खेत से लौटकर एक-दो घंटे काम करने का।

"मेहनत करिये, आपकी मेहनत सफल हो! यह खबर जरा देर से भी दी जा सकती थी," शेरज़ाद ने सोचा। "अभी समझ में नहीं आ रहा है कि साव्या और गराश की गुत्थी कैसे सुलझाऊं, नज़नाज को सामूहिक फ़ार्म से कैसे निकालूं... "

लेकिन नजफ पटरियों के बारे में इतने उत्साह से बोल रहा था कि शेरज़ाद को शर्म महसूस हुई और उसने हृदय से अपने साथी का उत्साह बढ़ाया:

"हम अपने कानों तक गंदगी में रहने के आदी हो चुके हैं। शहर में क्या दूसरी तरह के लोग रहते हैं? उनके लिए अस्फाल्ट जरूरी है, और हमें क्या उसकी ज़रूरत नहीं है? जब पेड़ लगाये जा रहे थे, बहुतों ने भविष्यवाणी की थी, 'सूख जायेंगे ..' पर कुछ नहीं हुआ, नहीं सूखे, इतने हरे-भरे हैं, तीन साल में आसमान नजर नहीं आयेगा, खूब छाया रहेगी, ठण्डक और साफ हवा..."

"फूलों के पौधे लगा रहा हू," मुख्याध्यापक ने छिपे व्यग्य के साथ उत्तर दिया।

लडको ने एक दूसरे की तरफ देखा।

गोशातखा ने कधे उचका दिये और एकाएक बेतकल्लुफ़ी से हैडमास्टर कोट के कॉलर को मोड दिया और नाखून से धूल झाड दी।

"ऐसी कडाके की ठण्ड तो पड नही रही है! तुमने क्या मुझे बुद्धू बनाने की सोची है? सोचते हो मैं टमाटर के पौधो को गुलदाउदी के पौधे समझ लूगा? शर्म आनी चाहिए! कक्षा मे चलिये!"

बाहर से सजा-धजा स्कूल अदर से उपेक्षित और गदा निकला। गलियारो के कोनो पर कूडे के ढेर लगे हुए थे, दीवारो पर धूल जमे चित्र और पोस्टर टगे हुए थे। मुख्याध्यापक जमाइया ले रहा था, सिकुड रहा था, मानो उसे आर-पार बहती ठण्डी हवा के झोके लग रहे हो, और गोशातखा को बहुत अनिच्छापूर्वक उत्तर दे रहा था। और दीवारी समाचारपत्र? क्यो नही, वह नियमित रूप से प्रकाशित होता है, लेकिन पुराना अक कल ही हटाया गया है और ताजा अभी तैयार नही है' उस पर एक भी नोट नहीं था.. मुख्याध्यापक के कक्ष मे फटे हुए सोफे से कतरनें निकली हुई थी, खिडकियो के दासे समाचारपत्रो की फाइलो, रजिस्टरो व कापियो के ढेर से अटे पडे थे। छत पर टेढा-मेढा धब्बा गुमटे की तरह उभरा हुआ था।

"छत चूने लगी है," मुख्याध्यापक ने शान्ति से कहा। "दो हफ्ते हुए मैंने सामूहिक फार्म के अध्यक्ष को औपचारिक प्रार्थनापत्र भेजा था। छत की मरम्मत करनेवालो को अभी तक नही भेजा गया है।"

"आप बडी कक्षाओं के कोम्सोमोल छात्रो को बुलाते और उनके साथ मिलकर मरम्मत कर लेते," गोशातखा ने लयात्मक आवाज में शिष्टतापूर्ण व्यग्य के साथ सलाह दी।

"आपके निर्देशो को ध्यान मे रखकर उनका पालन करूगा," मुख्याध्यापक ने आदरपूर्वक सिर नवाया।

"क्या कामरेड शेरज़ाद छत के लिए स्लेट के चौके दिलवा सकते है?" गोशातखा ने वैसे ही व्यग्यपूर्ण स्वर में पूछा।

शेरज़ाद घबरा गया।

जब छात्रो के अकों तथा उपस्थिति की बात छिडी तो हैडमास्टर सक्रिय हो उठा, फटी बोरी मे से गिरते चनो की तरह एक के बाद एक आकडे बताये जाने लगे, लेकिन गोशातखा अन्यमनस्कता से सुन रहा था।

भी न जायेगा। नगदार गुलाबिन पत्तों से गड्ढ में बढ़ रहे पौधों प
टकटकाकर धूप दिखाती है, हवा देती है, इन्हीं से पोटाश-पीटकर धूप दिख
देती है, ताकि उनपर कीड़े न लगें।"

"इतनी जल्दी कैसे उठ गये?" उसने पूछा।

"मैं हमेशा भोर में उठता हूं," गोशातखा ने बताया। "मैं हमे
जिन्दगी ग्राम-शिकार रहा हूं और किसानों से मशक्कती का नियम सं
चुरा हूं सांझ ढले सो जाना, पौ फटे उठ जाना। यहां और कई तरह
विचार परेशान कर रहे हैं।"

शेरजाद ने सतर्कतापूर्वक पूछा:

"क्या आप हमारे सामूहिक फार्म के हालात से परेशान हैं?"

"तुम क्या सारी बातों से सन्तुष्ट हो? ऐसा कुछ दिखता तो नहीं है,"
गोशातखा के पतले होंठों पर नटखट मुस्कान फैल गयी। "मैं तुम से ए
मामले के बारे में बात करना चाहता था," उसने आगे गम्भीरतापूर्व
कहा। "क्या शिक्षक तुम्हारी मदद कर रहे हैं?"

शेरजाद को हर तरह की बात कहे जाने की आशा थी, यूं तो हमें
के खेत में कपास के पौधे कम होने के लिए झिड़कियों की, निराई आ
को जल्दी निबटाये जाने के तकाज़े की, – केवल स्कूल के ज़िक्र को छोड़कर

"हमारे यहां शिक्षक बुरे नहीं हैं," उसने धीरे-धीरे बोलना शु
किया। "लेकिन कुछ अलग-अलग रहते हैं। युवा कोम्सोमोल अध्यापिका
नियम से मीटिंगों में आती है, सदस्य-शुल्क देती हैं, लेकिन इसके अलाव
शायद और कुछ नहीं करती हैं। मुख्याध्यापक सभी बातों के बारे में कोई
उत्साह नहीं दिखाता। वह पार्टी का सदस्य नहीं है, मैं उस पर दबाव कैसे
डाल सकता हूं?"

"यह तो बड़ा आसान काम है... चलो, स्कूल चलते हैं," गोशातखा
ने सुझाव दिया।

पाठ आरम्भ होने में अभी पूरा आधा घंटा बाकी था, स्कूल खाली पड़ा
था, केवल सागवाड़ी में मिट्टी में सने दो लड़के टमाटर के पौधों के पास
कुछ कर रहे थे। उदास व चिन्तित मुख्याध्यापक मुसे हुए कोट का कॉलर
उठाये अहाते में मौन चहलकदमी कर रहा था। उसने सर्दमिजाजी से
गोशातखा व शेरज़ाद का अभिवादन किया: यह साफ़ नज़र आ रहा था
कि उसे इस मुलाकात से किसी अच्छे परिणाम की आशा नहीं थी।

"क्या कर रहे हैं?" गोशातखा ने पूछा।

तरह होता है, जिसके बारे में किसी शायर ने बिलकुल ठीक कहा है "भीख मिल जाये, तो भी खुश, गाली नहीं मिली, तो भी खुश।"

बूढ़ा अध्यापक काफी पहले बातचीत में भाग लेना चाहता था, पर प्राचीन शिष्टाचार के नियमों में पालन-पोषण होने के कारण गोशालग्रां को टोक न सका।

"कामरेड गोशालग्रां, आप ठीक कहते हैं," उसने अन्त में कह दिया, "मछली का खून ठण्डा होता है, पर उदासीन व्यक्ति की नसों में— पानी... लेकिन यह ध्यान में रखिये कि सामूहिक फार्म की सरगर्म जिन्दगी से अलग रहने के लिए केवल हम ही दोषी नहीं हैं, बल्कि यह नौजवान, मेरा शिष्य भी कुछ हद तक दोषी है," और वृद्ध ने शेरजाद की ओर इशारा किया। "यह एक बार भी हमारे पास नहीं आया, और अगर मैं गलती पर नहीं हूं, तो आज भी आप इसे जबरदस्ती यहां खींच लाये हैं। यही तो कारण है कि हम स्कूल की इमारत की चहारदीवारी में बंद पड़े हैं और हमारे ऊपर मकड़ी का जाला-सा बुन दिया गया है।"

मौन चेहरों व कपोलों पर लाली और भोली-भाली आंखोंवाली युवा अध्यापिकाएं वृद्ध के हर शब्द पर स्वीकृति में सिर हिला रही थीं।

"पर आप मुख्याध्यापक को बेकार डांट रहे हैं," वृद्ध अध्यापक बोलता रहा। "शहरी हैं, हाल ही में संस्थान की शिक्षा समाप्त की है, ग्राम-जीवन की जानकारी इन्हें नहीं है, अपने को पराया महसूस करते हैं। मुझे यह बात खुले आम कहने का अधिकार है, क्योंकि मेरी इनके साथ रोजाना नहीं, तो हर दूसरे दिन तो जरूर ही कहा-सुनी होती है। रूसी और जर्मन भाषाओं का अध्यापक हमारे यहां से भाग चुका है. वह सह न सका, साल भर परदेस में भटकता रहा, घर की याद उसे सताती रही और दोस्त वह बना न सका... लेकिन दोषी कौन है? मैं रुस्तम को जिम्मेदारी से मुक्त नहीं करता, लेकिन यह नौजवान भी," वृद्ध ने फिर शेरजाद की तरफ उंगली उठायी, "तो यह सब समझ सकता था, अपने दोस्तों में युवा अध्यापक को शामिल कर सकता था।"

शेरजाद की समझ में नहीं आ रहा था कि शर्म के मारे कहां मुंह छिपाये।

किसी ने दरवाजे को हौले से खटखटाया, और कक्ष में तेल्ली चाची अपने पीछे रुमामी गाराग्योज को खींचती दाखिल हुई। चाची ने मुख्याध्यापक के सामने मुंह पर कपड़ा बंधी हुई सुराही रखकर युयुत्सु मुद्रा में कहा :

यानी स्कूल आने की खुशी के मारे [illegible] हैं ?"

[illegible] है ! [illegible] के अनुसार !" मुख्याध्यापक [illegible] के साथ कह उठा।

और अध्यापकों के बच्चे ?

मुख्याध्यापक चुप हो गया, उसे स्वीकार करना पड़ा कि स्कूल के अध्यापकों के बच्चों ने [illegible] जाना [illegible] में बंद कर दिया।

वे आठ में भी नहीं [illegible] शोशातखां ने उन्हीं [illegible] लेकर [illegible]

इस तरह बड़े अफसराना लिहाज से [illegible] गये [illegible] दो [illegible] और शरीर में [illegible] की हुई मानसिक [illegible] दुआ [illegible] हुए और उन्होंने एक दूसरे का अभिवादन किया।

आप ने हसनबेक जरदाबी* के बारे में जरूर सुना होगा !" [illegible] ने पूछा।

"कहीं उस 'किसान' नामक सामयिक पत्र से है ?" मुख्याध्यापक ने माथे पर बल डाल अपनी याददाश्त पर ज़ोर दिया।

"हां, वही ! आज से सत्तर साल पहले हसनबेक जरदाबी ने कहा था कि ग्राम-शिक्षक को मशाल की तरह जलते हुए किसानों को नये जीवन का मार्ग दिखाना चाहिए... लेकिन यह तो पिछली शताब्दी में कहा गया था। सोवियत शिक्षक से तो इससे भी अधिक की अपेक्षा की जानी चाहिए। उसे आदर्श, अनुकरणीय और जनता का नेता होना चाहिए !" शोशातखां बिना आवाज ऊंची किये बोल रहा था, केवल शेरज़ाद ही देख पा रहा था कि उसे अपना क्रोध रोकने में कितनी कठिनाई हो रही है। "आप बिना उत्साह के काम कर रहे हैं, कामरेडो, सुस्ती से, उदासीनता से..."

"मेहरबानी करके सबको एक-सा मत समझिये !" मुख्याध्यापक एकाएक क्रुद्ध हो उठा, उसका चेहरा तमतमा उठा। "इक्के-दुक्के तथ्यों के कारण आपको सारे अध्यापकों पर छींटाकशी करने का अधिकार नहीं है।"

"माफी चाहता हूं, खुदा के वास्ते, माफ कीजिये !" शोशातखां ने हाथ पूरे फैलाये। "मैं तो बस यह याद दिलाना चाहता था कि उदासीनता भयानक रोग है। उदासीन, आलसी शिक्षक उस बदकिस्मत फकीर की

---

*हसनबेक जरदाबी – १० वीं शताब्दी के महान लोक-कवि।

"खेत में जा रही हूं। तुम्हारी बीमारियां मुझे लगें, क्या हुक्म है?"

"तुम क्या खुद नहीं जानती हो? निराई पूरी रफ्तार में करो।"

अधर कक्ष में गोशातखा मुख्याध्यापक से कह रहा था कि शाम को शेरज़ाद, नजफ और सभी अध्यापकों को बुलाकर सलाह करनी चाहिए। क्योंकि इस तरह की जड़ता से आदमी पागल हो सकता है मुख्याध्यापक का चेहरा लाल हो उठा, उसने आश्वासन पर आश्वासन दिये कि वह सारे निर्देशों को ध्यान में रखेगा, जबकि गोशातखा स्पष्ट देख रहा था कि शेरज़ाद की नियमित मदद के बिना यहां कुछ नहीं हो सकता।

बाहर निकलकर उसने शेरज़ाद से पूछा कि क्या कुछ दिनों में पार्टी मीटिंग बुलवाना सम्भव है। सचिव ने कहा कि वे कल शाम एकत्रित होना चाहते थे, पर रुस्तम ने बैठक शनिवार को करने का अनुरोध किया।

"रुस्तम को मैं जानता हू।" गोशातखा शरारती ढंग से मुस्कराया। "बेशक, दो-तीन दिन में टोलियों की स्थिति जल्दी-से-जल्दी अच्छी हो जायेगी, तब वह कम्युनिस्टों के सामने अपना श्रेष्ठ पक्ष प्रस्तुत करेगा खैर, शनिवार को ही सही, काम कहीं भागा नहीं जा रहा है," उसने सोचकर सहमति प्रकट की। "शाम को तुम्हारे साथ अध्यापकों के पास चलेंगे। उनमें उत्साह फूंकना चाहिए, वे तुम्हारे ही मददगार बन जायेंगे। नजफ को भी बुलाना।"

संस्कृति-भवन की नींव रख रहे राजगीरों में रुस्तम की भीमकाय आकृति नजर आयी। दूसरे ही क्षण उसका मंद्र स्वर गूंज उठा – किसी की शामत आ गयी थी गोशातखा व सचिव को देखकर रुस्तम ने अपनी जगह खड़े-खड़े चिल्लाकर कहा

"शिक्षाविभागाध्यक्ष को तो सचमुच हमारे सामूहिक फार्म से प्यार हो गया है! शैतान तुम्हें यहां ले कैसे आता है? कपास ठीक-ठाक है, अनाज की फ़सल में भी बालियां आने लगी हैं, तरबूजों और खरबूजों में फूल आ रहे हैं... कौन-सा ठप्पा लगाने का इरादा है?"

"तीखे मज़ाक मत करो, कहीं तुम्हें ही न चुभ जायें," गोशातखा ने अध्यक्ष के पास आते हुए शान्त स्वर में कहा।

"मैं तुमसे पूछ रहा हू," अपने पूरे कद से नाटे गोशातखा को ताकते हुए रुस्तम ने स्पष्ट स्वर में पूछा, "कौन-सा ठप्पा बना रखा है हमारे लिए?"

"खेत में जा रही हू। तुम्हारी बीमारियां मुझे लगें, क्या हुक्म है?"

"तुम क्या खुद नहीं जानती हो? निराई पूरी रफ्तार से करो।"

अधर कक्ष मे गोशातखा मुख्याध्यापक से कह रहा था कि शाम को शेरजाद, नजफ और सभी अध्यापकों को बुलाकर सलाह करनी चाहिए। क्योंकि इस तरह की जड़ता से आदमी पागल हो सकता है मुख्याध्यापक का चेहरा लाल हो उठा, उसने आश्वासन पर आश्वासन दिये कि वह सारे निर्देशों को ध्यान मे रखेगा, जबकि गोशालखा स्पष्ट देख रहा था कि शेरजाद की नियमित मदद के बिना यहा कुछ नहीं हो सकता।

बाहर निकलकर उसने शेरजाद से पूछा कि क्या कुछ दिनो में पार्टी मीटिंग बुलवाना सम्भव है। सचिव ने कहा कि वे कल शाम एकत्रित होना चाहते थे, पर रुस्तम ने बैठक शनिवार को करने का अनुरोध किया।

"रुस्तम को मैं जानता हू।" गोशातखा शरारती ढंग से मुस्कराया। "बेशक, दो-तीन दिन मे टोलियो की स्थिति जल्दी-से-जल्दी अच्छी हो जायेगी, तब वह कम्युनिस्टो के सामने अपना श्रेष्ठ पक्ष प्रस्तुत करेगा और, शनिवार को ही सही, काम कहीं भागा नहीं जा रहा है," उसने सोचकर सहमति प्रकट की। "शाम को तुम्हारे साथ अध्यापको के पास चलेंगे। उनमें उत्साह फूकना चाहिए, वे तुम्हारे ही मददगार बन जायेंगे। नजफ को भी बुलाना।"

संस्कृति-भवन की नींव रख रहे राजगीरो मे रुस्तम की भीमकाय आकृति नजर आयी। दूसरे ही क्षण उसका मद्र स्वर गूंज उठा—किसी की शामत आ गयी थी . गोशातखा व सचिव को देखकर रुस्तम ने अपनी जगह खड़े-खड़े चिल्लाकर कहा

"शिक्षाविभागाध्यक्ष को तो सचमुच हमारे सामूहिक फार्म से प्यार हो गया है! शैतान तुम्हें यहा ले कैसे आता है? कपास ठीक-ठाक है, अनाज की फ़सल में भी बालियां आने लगी हैं, तरबूजों और खरबूजो मे फूल आ रहे हैं कौन-सा ठप्पा लगाने का इरादा है?"

"तीखे मजाक मत करो, कहीं तुम्हे ही न चुभ जायें," गोशातखा ने अध्यक्ष के पास आते हुए शान्त स्वर मे कहा।

"मैं तुमसे पूछ रहा हू," अपने पूरे कद से नाटे गोशातखा को ताकते हुए रुस्तम ने स्पष्ट स्वर मे पूछा, "कौन-सा ठप्पा बचा रखा है हमारे लिए?"

भाई शेरजाद, आप लोग यह बेइमाफी होते कैसे देख रहे हैं? तुम्हारे खयाल से मैं इनसान हूं या जानवर?"

रुस्तम ने अपेक्षा करते हुए आवाज दी "ऐ ऽऽ!" और यारमामेद को घूरकर देखा। यारमामेद समझ गया, पैर घिसटता घोड़ों के खूंटों की तरफ गया, जहां भूरी घोड़ी खड़ी ऊब रही थी।

शेरजाद को अन्तिम क्षण तक आशा थी कि रुस्तम चरवाहे की प्रार्थना स्वीकार कर लेगा, —क्योंकि मामला बिल्कुल साफ था, वहम करना निरर्थक था, लेकिन रुस्तम को उछलकर काठी पर बैठते देखा, तो वह एक कदम आगे लपका।

"आखिर सामूहिक फार्म की प्रबन्ध समिति है, उसी में केरेम की शिकायत पर विचार करना चाहिए। काम में सामूहिक नेतृत्व को अभी तक किसी ने समाप्त नहीं किया है। आप इस प्रकार के प्रश्नों का निर्णय ऐसे चलते-चलते क्यों करते हैं?" युवक ने अपने स्वभाव के प्रतिकूल सख्ती से पूछा।

अध्यक्ष पल भर के लिए घबरा गया, पर तत्क्षण कह उठा

"मुझे ऐसे वक्त में, जब काम ज़ोरों पर है, बैठक करने की फुरसत नहीं है! अगर हर शिकायत पर बैठक बुलाई जाये, तो बेहतर होगा कि फ़ौरन किसी मुल्ला को बुला लो, ताकि वह फसल पर फातिहा पढ़ दे।"

उसने घोड़े को चाबुक मारा, पर शेरजाद ने लगाम पकड़ ली।

"यह आपका आखिरी जवाब है?"

"वह पशुपालन फार्म वैसे ही कभी नहीं देखेगा, जैसे अपने कान बिना शीशे के। लगाम छोड़ दो!" रुस्तम ने हुक्म दिया।

"देखिये, कहीं बाद में पछताना न पड़े," शेरजाद ने धीरे से कहा।

रुस्तम लोगों के सामने सचिव से बहस नहीं करना चाहता था, लेकिन इस समय वह गुस्से में अपने पर क़ाबू न रख सका और यारमामेद को आंख मारकर बोला:

"हद हो गयी .. कल के दुधमुहे मुझे धमकी दे रहे हैं," और वह पास्तीन की टोपी माथे पर खींचकर स्तेपी की तरफ घोड़ा दौड़ाता चला गया।

स्तेपी में, हरे-भरे खेतों पर नज़र डालते हुए और यह हिसाब लगाते हुए कि शरद् में वह कितनी कपास चुन लेगा और कितना अनाज उठायेगा, वह शान्त हो गया।

वही फफोलों जैसे काकरेज़ी दाग हो गये हैं, पत्ते हल्के-से स्पर्श से पौधों को नगा कर झड जाते थे।

सकीना का दिल दुख के मारे टूटने लगा, वह पौधों को ध्यानपूर्वक देखती हुई हलरेखा पर चलने लगी। उस क्षण वह अपने को अनुभवी डाक्टर जैसा महसूस कर रही थी, जो रोगी के प्रफुल्ल चेहरे पर विश्वास न करने का आदी हो जाता है। किलनियाँ शुरू के दिनों में अंधेरे में पत्तियों के निचले, छायादार हिस्से में छिपी रहती हैं, और उन्हे अगर समय रहते नष्ट न किया जाये, तो सारी फसल बरबाद हो जाती है।

आधे घंटे में सकीना और तेल्ली चाची ने यह पता लगा लिया कि बीमारी कोई पाच हेक्टेयर ज़मीन में फैल गयी है। देर नहीं की जा सकती थी, उन्होंने एक फुर्तीली लडकी को खेत-कैंप भेज दिया, ताकि वह टेली-फ़ोन पर शेरज़ाद को इस खतरे के बारे में सूचित कर दे। टोली-नायक तुरन्त ट्रक में चूने और गंधक के घुमोल के सिलिंडर ले आया और उसने सकीना को हार्दिक धन्यवाद दिया।

"पांचेक दिन की देर हो जाती, तो सारी फसल बरबाद हो जाती।"

पौधों की जडों और सबसे नीचे की पत्तियों पर छिडकाव करना ज़रूरी था। ऊंचे क़द के शेरज़ाद को कितनी ही मुश्किल क्यों न हुई, घुटनों के बल ही क्यों न रेंगना पडा, पर उसने पीठ पर सिलिंडर बाध लिया और तब तक खेत छोडकर नही गया, जब तक उसने सारे खेत में दवाई न छिडक ली।

जब शेरज़ाद ने खाली सिलिंडर हलरेखा पर डालकर कमर सीधी की, तो अंधेरा हो चुका था। उसने अपना सारा बदन दुख रहा महसूस किया। लेकिन लडकियां और औरतें, खास तौर से सकीना व तेल्ली चाची थकान के मारे लडखड़ा रही थीं, इसके बावजूद वे काम छोड़कर नही गयीं, किसी ने शिकायत नहीं की, जबकि उनमें से हरेक को घर पर अभी ढेरों काम करने बाक़ी थे।

चूंकि शेरज़ाद ने ड्राइवर को पहले से आगाह कर दिया था, ट्रक सडक पर उनके इंतज़ार में था। स्त्रियों को ट्रक में गाव तक पहुंचाकर उसने सबको हार्दिक धन्यवाद दिया।

पेरशान अभी खेत से नहीं लौटी थी। सकीना घर में क़दम रखते ही रुस्तम का मूड खराब देखकर फ़ौरन समझ गयी कि वह भूखा है और बस फट ही पड़नेवाला है। लेकिन पत्नी का उदास चेहरा, अंदर को धसी

ढाडे-मेडे पर घास ऊची और रसदार थी, रुस्तम ने लगाम छोड़, रकाबों मे खडा होकर अपने सामने फैले कपास के विशाल खेत पर ध्यान पूर्वक नजर दौडायी। वहा जमीन की ढग से गोड़ाई की गयी थी, खर पतवार पूरी तरह उखाड दिये गये थे। थोडी दूरी पर कुदाले पकड़े सामूहिक किसान नारिया किसी बात पर बहस कर रही थी। रुस्तम की भौंहे सिकुड गयी "औरते इधर-उधर की लगा रही हैं, अब सारे गांव का कच्चा चिट्ठा बखान डालेगी।" लेकिन स्त्रियो मे सबीना को देखकर उसे शर्म महसूस हुई।

"जहा मेरी बीवी हो, वहा सब ठीक रहता है," रुस्तम ने अपने आप से कहा और घोडे को सडक की ओर मोड दिया।

अगर वह उस क्षण पलटकर नजर डालता, तो देख लेता कि स्त्रियां हाथ और रूमाल हिला-हिलाकर उसे बुला रही हैं और सबीना की पुकार सुन लेता

"रुस्तम, जल्दी से यहा आओ! मुसीबत आ गयी है!"

लेकिन रुस्तम तब तक दूर पहुच चुका था। तेल्ली चाची ने सबीना का मजाक उड़ाया

"तुम्हारा मर्द तो घोडे पर सवार सूरमा लगता है। जिला भर का मारा कर दिया है। कहीं गर्मी चढ़ने से पागल न हो जायें! सभलकर रहना, कहीं किसी जवान औरत के पास न चला जाये!"

स्त्रियां हस पड़ीं, पर सबीना चुप रही। उसे ऐसी बातें कभी पसद नहीं आती थीं, फिर मानसिक परेशानी की इस हालत में तो और भी ज्यादा। वह उबड़-खाबड़ कपास की मोटी-मोटी कलियोंवाले घने पौधे का ध्यान से देख रही थी।

"कितना सुन्दर है, लेकिन इसकी हालत देखकर दिल दुखता है!" वह पत्तों से [illegible] टहनियों पर [illegible] मुरझाती हुई [illegible] रही थी। सबीना ने पत्तों को [illegible] टहनी [illegible] दिया। "[illegible] दिन की [illegible] हुई और [illegible] सारे पौधे [illegible]।"

"[illegible]!" [illegible] में [illegible]

थी। [illegible] के पौधों का [illegible] कर दिया है [illegible]"

[illegible]

में बताने समय इतना घबरा गया कि सचिव ने मुस्कराते हुए उसे पानी का गिलास दिया।

"मेहरबानी करके तसल्ली रखें।"

"आप यह मत सोचिये कि मैं शिकायत कर रहा हू," शेरजाद ने, गिलास कसकर पकड़े और हैरान होते कि उसे खनिज जल क्यों पीना चाहिए, अटकते-अटकते कहा: "कहने का मतलब है, शिकायत तो कर रहा हू, लेकिन धैर्य का बांध आखिर कभी न कभी तो टूट ही जाता है, मेरी बात समझिये. ."

"मैं तुम्हारी बात समझता हू," असलान ने स्वीकृति में सिर हिलाया।

"रुस्तम-कीशी लगता है अंधे हो गये हैं। अगर आपको मुझ पर विश्वास न हो तो कामरेड गोशातखा से पूछ लीजिये, उन्होंने सब अपनी आंखों से देखा है..."

"नहीं क्यों नहीं होगा? मैं हर मामले में तुम पर विश्वास करता हू।"

जिला केंद्र जाते समय शेरजाद रास्ते में सोच रहा था कि उसकी बात सुनकर असलान सामूहिक फार्म में जांच समिति भेज देगा, फिर रुस्तम को और उसे भी जिला समिति के ब्यूरो की बैठक में बुलाकर उन्हें एक दूसरे से नाराजी के कारण साफ-साफ बताने, जांच समिति के निष्कर्षों से अवगत होने के लिए मजबूर करेगा, प्रस्ताव पढ़कर सुनायेगा। हमेशा ऐसा ही किया जाता रहा था, लेकिन जैसा कि दिखता था, असलान की अपनी ही आदतें थी।

"शर्म आनी चाहिये!" उसने झल्लाकर कहा। "शिकायत नहीं करना चाहता था, पर सारी बातचीत निराशाजनक शिकायतों तक ही सीमित रही। आखिर तुम हो कौन? सामूहिक फार्म के पार्टी संगठन का सचिव, जब कि रुस्तम इस संगठन का सदस्य है, और तुम चाहते हो कि पार्टी की जिला समिति सामूहिक फार्म के कम्युनिस्टों की उपेक्षा करके, उन्हें अलग रखकर तुम्हारे यहां की अव्यवस्थाओं की जांच करे? रुस्तम समुदाय की परवाह नहीं करता है! लेकिन तुम खुद भी तो यही करते हो। तुमने रुस्तम को काबू में करने की ठानी थी, जब सफलता नहीं मिली, तो जिला समिति में लपके। आखिर यह क्या हुआ? समुदाय पर भरोसा करने का अर्थ है—उसकी शक्ति, उसके प्रभाव का कुशलतापूर्वक उपयोग करना। अगर अध्यक्ष की आलोचना पार्टी संगठन करता, तो आज जिला समिति में रुस्तम आया होता, न कि तुम। कहता कि कम्युनिस्टों ने उसके व्यवहार

आंखें और हाथों की उभरी हुई नसों को देखकर रुस्तम घबरा गया।

"मक्तीना खानम, तुम आखिर कहां गयी थी?" उसने रुंधे स्वर में पूछा।

किलनियों के हमले के बारे में सुनकर रुस्तम ने भागकर कार्यालय में जा सारे लोगों को सतर्क करना चाहा। पत्नी ने उसे तसल्ली दिलायी शेरजाद ने टोली-नायकों को कह दिया है, सारे खेतों में छिड़काव किया जा रहा है, कल भोर में फिर दवाई छिड़कनी शुरू कर दी जायेगी।

"शुक्रिया, घरवाली," अध्यक्ष ने कहा। "शेरजाद को भी शाबाशी देनी चाहिए, वह घबराया नहीं।"

"तुम्हें बड़ी जोर की भूख लगी है न, क्यों?"

"कोई बात नहीं, कोई बात नहीं, अभी सब मिलकर बैठ कोले खायेंगे। याद है, बुर्जुग कहते थे, खरबूजा ताजा अच्छा होता है और कोते-उबले।"

६

अपनी नम्र व स्वप्निल प्रकृति के कारण शेरजाद को किसी भी कीमत पर अपनी बात पर अड़े रहने और बात-बात पर अध्यक्ष से उलझने के लिए अपने को बड़ी मुश्किल से तैयार करना पड़ा।

उसने काफी देर तक रुस्तम के व्यवहार पर विचार किया और इस निर्णय पर पहुंचा कि अब और देर नहीं की जा सकती है। घमण्डी अध्यक्ष किसी भी पहलकदमी करनेवाले व्यक्ति को उसके कार्य के प्रति पूर्णत. उदासीनता की स्थिति तक पहुंचा सकता है। मगर लोग मनोयोग से काम नहीं करें, तो कोई भी काम जरा भी आगे नहीं बढ़ सकेगा। और अन्त में 'नवजीवन' सामूहिक फार्म मुगान के सबसे पिछड़े सामूहिक फार्मों में से एक हो जायेगा।

शेरजाद को जनता के हितार्थ अपने हृदय पर पत्थर रखकर अनम्य बनना ही होगा। कम्युनिस्ट और पार्टी ब्यूरो के सचिव के लिए, और कोई विकल्प नहीं रहा है।

शेरजाद ने पार्टी की जिला समिति में जाकर सहायता व सलाह मांगने का मन किया। "साफ-साफ कह दूंगा," उसने सोचा, "मैं अध्यक्ष को काबू में रखने में असमर्थ हूं।"

जिला समिति के सचिव नौजवान असलान को हठधर्मी रुस्तम के बारे

हमने तुममे बदला लेने के लिए बुलाया है। कम्युनिस्ट कम्युनिस्ट के साथ हमेशा मिलकर सब तय कर सकते हैं। कर सकते हैं न? तुम क्या चाहते हो कि हम यह सवाल ग्राम सभा मे उठायें, ताकि हमारे विवादो के बारे मे सामूहिक फार्म को ही नहीं, सारे जिले को भी मालूम हो जाये?"

"यही चाहता हू!" रुस्तम बिना सोचे समझे बोल उठा। "आप लोग ग्राम सभा का नाम लेकर मुझे मत डराइये! अगर मेरी बात सही है, तो सही ही है। चाहे कल ही कम्युनिस्टो को जमा कर लीजिये। बूढ़ा रुस्तम जानता है कि उसे लोगो को क्या बताना है।"

"तो ठीक है, कल पार्टी-ब्यूरो की बैठक बुलवा लेगे। आप जा सकते है, कामरेड रुस्तम," शेरजाद ने कहा।

"काम बना नही! सभा मे भी कम्युनिस्ट मेरा ही साथ देंगे, न कि *शेरजाद का," रुस्तम ने सोचा और विजयी मुद्रा मे घर चला गया।*

उसकी आशाए पूरी नही हुई पार्टी-ब्यूरो की बैठक तीन घंटे चली, बहुत तूफानी रही और किसी ने रुस्तम का पक्ष नहीं लिया।

जब शेरजाद ने पार्टी-सदस्य रुस्तमोव को घमण्ड, आत्मालोचना के दमन और सामूहिक किसानो से अलगाव के लिए झिड़की देने का प्रस्ताव किया, सभी ने उससे सहमति व्यक्त की।

लेकिन रुस्तम को इससे भी अक्ल नहीं आयी।

"जिला समिति आपका निर्णय बदल देगी," उसने धमकी दी। "देख लीजिये! मैने ऐसा कई बार होते देखा है: ग़लतफ़हमी केवल नेताओ को ही नही होती है, कभी-कभी पूरी की पूरी संस्थाए लफ़्फ़ाज़ो के इशारो पर चलती हैं। मुझे कोई धोखा नही दे सकता।"

१०

शाम देर गये सकीना बरामदे मे बैठी कपडे रफ़ू कर रही थी। उसका दिन कुम्हला रहा था: घर में अव्यवस्था व्याप्त थी—रुस्तम को झिड़की दी गयी, सराश का पत्नी के साथ मेल-मिलाप नहीं हुआ... रुस्तम पिछले कुछ दिनो से परेशान रहता था, रेगिस्तान मे रास्ता भटके कारवा के हुक्वा की तरह दौड़-धूप करता रहता था। कभी-कभी सकीना को अपनी नजरो में पति को सही ठहराने की इच्छा होती थी, पर वह इसमें असमर्थ रहती

थी और खिन्न मन से सोचती रहती थी कि रुस्तम को तोड़ा जा सकता है, पर बदला नहीं जा सकता। उसका स्वभाव ही कुछ ऐसा है।

सकीना को मन-ही-मन रुस्तम की निर्भीकता पर गर्व होता था, अच्छा लगता था कि वह कभी निरुत्साहित नहीं होता है, हर खतरे बहादुरी से सामना करता है।

वैसे इस बात की प्रशंसा केवल सकीना ही नहीं करती थी, -बहुत गाववाले रुस्तम के दृढ़ स्वभाव की डींग हाकते थे।

लेकिन इन सब बातों से रुस्तम के परिवार में सुख-शान्ति स्थापित हो सकी।

अकेली परशान ही थी, जिससे मा को कुछ खुशी होती थी। बुद्धिमान थी, कठिन परिस्थितियों में किंकर्तव्यविमूढ़ नहीं होती थी उसे लोगों की पहचान थी। हा, कभी-कभी चचल हो उठती थी, ले चचल किशोरीपन में न होती, तो आखिर कब होती?

सकीना ने मेज़ पर हिसाब-किताब की सूचिया तैयार कर रही बेटी तरफ़ मुस्कराते हुए नज़र डालकर धीरे से कहा:

"ज़रा अब्बा को आवाज़ देना। बहुत देर हो गयी उन्हे थोड़ी समाप्त करते हुए। उनसे बात करनी है। और तुम भी शायद मत हो जा मुझे तुम्हारी भी ज़रूरत है।"

परशान अपने स्थान से हटे बिना ड्योढ़ी की तरफ़ मुड़कर ज़ोर से आवाज़ देने लगी:

"अ ऽऽ ब्बा ऽऽ! "

सकीना की भौंहे सिकुड़ गयीं।

"चिल्लाना तो मुझे भी आता है। क्या उतरकर नीचे जाने आलस आता है? जाकर आवाज़ दो!"

बेटी और ज़्यादा दुःखी स्वर में पुकारने लगी:

"अ ऽऽ ब्बा ऽऽ, आ ऽऽ आ ऽऽ! "

अस्तबल के दरवाज़े से बिखरे बाल रुस्तम हाथ में छुरी लिये नज़र आया, उसकी आस्तीनें चढ़ी हुई थीं, मूछों में भूसे के कण अटके हुए थे।

"प्रधान संग[illegible] आदेश है: मां कहती है कि आप फ़ौरन ऊपर आ जायें!"

शब्द पर ज़ोर देते हुए कहा।

[illegible] हारी, पर उतना ही अधिक आत्मवि-

श्याम दिखाता था। इस समय भी वह हाथ-मुंह धोकर अपने को पूरी तरह ठीक-ठाक कर चुका था और मूंछों पर हाथ फेरता बरामदे में आ पहुंचा।

"क्या हुक्म है, बीवी ? मैं सुन रहा हूं।"

सकीना चुप रही, उसने आंखें सिकोड़कर सुई के छेद में सफेद धागा पिरोया, गांठ लगाकर बाकी बचा धागा दांत से काट दिया, पर सुईवाला हाथ अचानक कांप उठा ..

"तुम्हें झिड़की कैसे मिली ?" सकीना ने आंसू रोकते हुए पूछा। "यह सब हुआ कैसे ? सुनो, ज़िला समिति में जाकर उनसे प्रार्थना करो कि वे तुम्हें मुक्त कर दें। तुम्हें वे कोई हल्का काम दे दें, तुम बूढ़ा गये हो, मैं भी जवान नहीं हो रही हूं। कम-से-कम बचे-खुचे दिन तो चैन से जी लें!"

पेरशान सूचियां समेटकर जाने लगी, लेकिन मां ने उसे सख्ती से रोक दिया· "बैठो! तुम सयानी हो चुकी हो.. "

रुस्तम देर तक शाम के धुंधलके में लिपटे बाग की तरफ देखता रहा।

"तुम्हें यह क्या सूझी है।" उसने हांफते हुए कहा। "मैं क्या आधे रास्ते में रुक जाऊं, जब इतने बड़े काम अपने हाथ में ले चुका हूं ? मेरा तो दिल टूट जायेगा!"

"तुमने काम शुरू किया—खतम नौजवान करेंगे," सकीना ने शान्त स्वर में बोलने की कोशिश करते हुए उत्तर दिया। "सदियों से यही होता आया है: एक किसान ज़मीन में बीज बोता है, दूसरा फसल काटता है।"

रुस्तम ने कड़वाहट भरा ठहाका लगाया।

"तुम डरो मत, बीवी, मत डरो। मैं जैसा इस दुनिया में आया हूं, वैसा ही मरूंगा। मैं निडर होकर जिया हूं और मरूंगा भी निडर होकर। मैं अपना पके बालोंवाला सिर किसी के आगे नहीं झुकाऊंगा। मैं एक हफ्ते के अंदर लफ्फाज़ों और बलवाइयों को खुद ही झिड़की वापस लेने को मजबूर कर दूंगा। मौत आ जाये इन्हें। मैं कल ही ज़िला समिति में जाऊंगा।"

"पर तुम्हें क्या पक्का भरोसा है कि ज़िला समिति में वे तुम्हारा पक्ष लेंगे?" पेरशान दुःसाहस करके बीच में बोल पड़ी।

"तुम्हें चुप रहना चाहिए," रुस्तम ने खिन्न स्वर में उससे कहा। "तुम वही पेड़ काटो, जो तुम्हारे बस का हो।"

"तुम्हारी कसम, अब्बा, कुल्हाड़ा पकड़ना मैं तुम्हीं से तो सीखी हूं! लेकिन एक शर्त है: उस पर विश्वास नहीं किया जायेगा, जो दलदल में ले जाकर फंसा दे।"

डाल दिया गया है। अब याद रखेगा कि कलतर-लेलेश की मनाही को न मानने का क्या नतीजा होता है।"

कैसा मनहूस बातून है! अगर कोई यह बात सुन ले तो? कलतर झल्लाकर फुफकारा :

"शुक्रिया, दोस्त, तसल्ली रखो, – मुझे तुम्हारी याद है, याद है सारी बातें ध्यान में रखूंगा। कभी भी फोन करते रहना, शर्माना नहीं।"

रुस्तम अभी अपने घर में हाथ-मुह ही धो रहा था, जबकि कलतर भागा-भागा असलान के कक्ष में पहुंच चुका था।

"सुना आपने? 'नवजीवन' में कैसी धुक्काधमीटी हुई है, लोग एक दूसरे का गला दबोच रहे हैं।"

असलान किसी कारण से उदास था और गहन चिन्तन में डूबा बैठा था। उसे कलतर का दूसरों का बुरा होने पर खुश होना अच्छा नहीं लगा।

"वहां क्या हुआ?" उसने अनिच्छापूर्वक पूछा।

"रुस्तम ने अपने इर्द-गिर्द कुछ सामूहिक किसानों को जमा कर लिया था, और शेरजाद, उस आत्मविश्वासी दुधमुहे ने अपने यार-दोस्तों को एक कर लिया, – बस झगडा-फ़साद मच गया। वे एक दूसरे को जिन्दा चबा रहे हैं! मुझे तो अब विश्वास नहीं रहा कि हमें उनसे कपास मिल सकेगी, सच कहता हू। जिले का सर्वश्रेष्ठ सामूहिक फार्म बरबाद हुआ जा रहा है।"

असलान ने भौंहें सिकोड़कर हथेली से कनपटी सहलाई।

"पर तुम क्या सुझाव देते हो?"

"इसका निष्कर्ष स्वतःस्पष्ट है दोनों को जिला समिति ने ब्यूरो की बैठक में बुलाकर कडी चेतावनी दे दी जाये और जाहिर है, दोनों को ही पदच्युत कर दिया जाये। दोनों को!" कलतर मेज पर कोहनियां टिका और असलान के निकट अपना पसीने से तर चेहरा लाकर फुसफुसाया। "मुझे उनमें से एक पर भी रत्ती-भर विश्वास नहीं रहा है।"

उसकी बात सुनते हुए जिला समिति का सचिव सोच रहा था कि कलतर अपने यार को 'नवजीवन' के पशुपालन फार्म में जमाने की कोशिश बेकार यूं ही नहीं कर रहा था। उस घटना में रुस्तम-बोबो ने उससे सहमत न होकर बहुत सराहनीय काम किया था।

असलान चुप रहा और उसने एक बार फिर दर्द करती कनपटी मलकर रुखाई से कहा :

"'नवजीवन' की स्थिति के बारे में मुझे मालूम है। यह मानना

[illegible]

[illegible]

"और क्या है तुम्हारे बारे [illegible]?" रुस्तम ने कहा।

[illegible] पास आई और हंसती हुई [illegible] में [illegible] देखने लगी। रुस्तम को उसकी आंखों में इतना प्यार और निष्ठा नज़र आयी कि उसका दिल भर आया।

'घबराओ नहीं, मेरी प्यारी। सब ठीक हो जायगा। जल्दी ही वापस आकर मां के लिए और इस बच्चे के लिए भी गरम कपड़े कमाकर लेकर आऊंगा..."

अगले दिन सुबह रुस्तम जिला समिति के लिए रवाना हो गया। वह [illegible] की शिकायत के बारे में सबसे पहले बता देना चाहता था। सच्ची से सच्ची बात दूसरों के मुंह से सुनने पर अपना प्रारम्भिक अर्थ खो बैठती है, घाटी में गिरकर रेतील तल पर बहनेवाले पहाड़ी चश्मे के पानी की तरह गदली हो जाती है... ज़रा-सी देर हुई नहीं कि खुदा ही जाने, लोग कैसी-कैसी झूठी बातें गढ़ डालते हैं।

लेकिन चालबाज सलमान वृद्ध से काफ़ी पहले यह काम कर चुका था। पार्टी मीटिंग के बाद उसने कलतर को टेलीफोन किया।

"मुबारक हो, गाफा! रुस्तम को फर्श साफ करने के पोछे की तरह रगड़ दिया गया। सारी मुगान में बदनाम कर दिया गया! किस्मत अच्छी थी, जो सिर्फ़ झिड़की पाकर छूट गया, नहीं तो उसे पार्टी से भी निकाला जा सकता था। बहुत आसान..."

कलतर-लेलेश अत्यधिक निर्ममता के लिए कुख्यात था, पर इस तरह की मक्कारी की बात सुनकर वह भी सिहर उठा।

"लेकिन तुम तो किस बात पर खुश हो रहे हो? क्या अध्यक्ष बनने की ठान ली है?"

"कसम खाकर कहता हूं, मेरे लिए तो इतना ही काफी है कि आप मुझ पर मेहरबान हैं। इससे ज्यादा की मैं सपने में भी नहीं सोचता," सलमान बात टाल गया। "कह तो रहा हूं, अभागे बुड्ढे पर खौलता पानी

डाल दिया गया है। अब याद रखेगा कि कलतर-लेलेश की सलाहों को न मानने का क्या नतीजा होता है।"

कैसा मनहूस बातून है! अगर कोई यह बात सुन ले तो? कलतर दन्नाकर फुफकारा

"शुक्रिया, दोस्त, तसल्ली रखो,—मुझे तुम्हारी याद है, याद है सारी बातें ध्यान मे रखूगा। कभी भी फोन करते रहना, शर्माना नही।"

रुस्तम अभी अपने घर में हाथ-मुह ही धो रहा था, जबकि कलतर भागा-भागा असलान के कक्ष मे पहुच चुका था।

"सुना आपने? 'नवजीवन' मे कैसी कुत्ताघसीटी हुई है, लोग एक दूसरे का गला दबोच रहे हैं।"

असलान किसी कारण से उदास था और गहन चिन्तन मे डूबा बैठा था। उसे कलतर का दूसरों का बुरा होने पर खुश होना अच्छा नही लगा।

"यहा क्या हुआ?" उसने अनिच्छापूर्वक पूछा।

"रुस्तम ने अपने इर्द-गिर्द कुछ सामूहिक किसानों को जमा कर लिया था, और शेरज़ाद, उस आत्मविश्वासी दुधमुहे ने अपने यार-दोस्तों को एक कर लिया,—बस अगर [illegible] ।वे एक दूसरे को ज़िन्दा चबा रहे हैं! [illegible] रहा कि हमें उनसे कपास मिल सकेगी,

। ध्यानपूर्वक सुनता और प्रीतिकर ढंग से मुस्कराने की भी कोशिश

तलाल इससे असन्तुष्ट था।
तुम लोगों की आदत बिगाड़ रहे हो, कामरेड शराफ। यह तो सचमुच
ाराब बात है, हर मामूली-से काम के लिए लोग तुम्हारे पास भागे
है।"
फिक्र मत करो," शराफोगलू अपनी सफाई देता, "मैं दूसरों का
अपने कधों पर नही लादूंगा। वक्त ही ऐसा है। जरा सोचो
ागर टेलीफोन देर तक नही घनघनाता है, तो मैं घबरा उठता हू।
हू कहीं कोई दुर्घटना हो गयी है और लोग मुझसे छिपा रहे हैं।
ाब रात को टेलीफोन की घंटियों के मारे चैन नही मिलता, तो दिल
ख़ुश हो उठता है। बेशक कुछ ऐसे लोग भी है, जो बेकार मेरे मत्थे
डते हैं, पर उनकी वजह से आम लोगों के लिए दरवाजा बद तो नहीं
रकता।"
शराफोगलू मुगान की स्तेपी के बिना अपने जीवन की कल्पना भी नही
कता था। मुगान का भविष्य फसल पर निर्भर करता था, और शराफ
फसल उठाने की चिन्ताओं में ही डूबा रहता था।
उसका जन्म और पालन-पोषण पचास से भी अधिक वर्षों तक ग्राम-
ाला मे पढानेवाले शिक्षक के परिवार मे हुआ था। क्रान्तिपूर्व के वर्षों
शराफ के पिता गाव-गांव जाकर प्रतिभाशाली लड़कों को बड़े ध्यान
नने लगे थे और उनके माता-पिताओं की सहमति से उन्हें शिक्षा प्राप्ति
लए बाकू और गजा भेजने लगे थे।
वृद्ध अध्यापक के शिष्यों में से अनेक सोवियत आज़रबैजान के महत्वपूर्ण
बने और उन्होंने सदा के लिए अपने भाग्य की डोर कम्युनिस्ट पार्टी
साथ बाध ली। अध्यापक ने अपने एकमात्र पुत्र को अपनी जनता,
ायन मत्ता से प्रेम करना सिखाया, उसमे धीरज, दृढ़निश्चयता व
नेष्ठा जैसे गुणों का पोषण किया।
जब शराफ कोम्सोमोल का सदस्य बना, उसने पिता से कहा:
'मैं गाव जा रहा हू। आपका काम आगे जारी रखना चाहता हू।"
वृद्ध बहुत खुश हुआ।
"तुम अध्यापक बनना चाहते हो, बेटा? अज्ञान और पिछड़ेपन—
ारी जनता के चिर शत्रुओं से सघर्ष करना चाहते हो?"

फिर भी एक बार जब रुस्तम और टोली-नायक सिर खपा रहे थे कि सेना में दस और रीपर कहां से लाये जायें, सलमान से रहा न जा सका

"चाचा, आप इतने क्यों अड़े हुए हैं? हम परेशान हो गये हैं, अपने पसीने में नहा रहे हैं। टेलीफोन का चोंगा उठाकर शराफोगलू से दो कम्बाइनें भिजवाने को कहने में आपका क्या जाता है?"

रुस्तम उपेक्षापूर्वक हंस पड़ा

"वाह रे, सपाट माथेवाले!" उसने कहा, और सारे टोली-नायक एक साथ हंस पड़े। "तुम यह समझ लो कि सरकार ने हमें जरूरत से ज्यादा मशीनें दी हैं। हमें उन्हें ढंग से काम में लेना नहीं आता—यही हमारी मुसीबत है। मेरी और शराफोगलू की मोर्चे पर दातकाटी रोटी रही, लेकिन अब, तुम सोचते हो कि मैं उसके पास भागा जाऊं और कहूं मदद करो! ऐसा काम तुम और गफ्रू हुसैन जैसे ही कर सकते हैं, मुझ, बुड्ढे ने अभी अपना ईमान नहीं गवाया है। मैं इतना बता दूं कि मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन में काम करना हमारे सामूहिक फार्म के मुकाबले कहीं ज्यादा मुश्किल है। हर तरफ से हाथ बढ़ाये जाते हैं. यह दे दो, वह दे दो। कुछ ऐसे सामूहिक फार्म हैं, जिनकी अगर समय रहते मदद न की जाये, तो फसल का नाम-निशान भी न बचे। आखिर मैं, कम्युनिस्ट, पिछड़नेवाले सामूहिक फार्मों को नहीं भूल सकता। मैं 'बस अपना काम बन जाये, दूसरों की क्या परवाह' जैसे नियम का पालन करके नहीं जी सकता—यह नीचता है। यह व्यक्तिवाद है! स्वार्थ है! समझे?"

सलमान ने कुछ नहीं समझा और सोचा: "कंगाल हुए जमींदार की तरह झूठी शान दिखाने को ठाठदार कपड़े पहन रहा है! जब कि हमन के खेत में अनाज बिखर रहा है।" लेकिन अपने स्वाभाविक पाखण्ड से बोले:

"तुम्हारी शराफत के आगे सिर झुकाता हूं। मेरी छोटी खोपड़ी में इतनी बारीक बातें कहां समा सकती हैं। बस पेंसिल उठाकर तुम्हारे मुंह से निकली बातें लिखकर दानिशमंदी की किताब लिख डालनी चाहिए।"

"हर कुत्ते की अपनी याद होती है। बाकू में लेखक संघ है, उसी के सदस्य किताबें लिखा करें, पर तुम अब रात की पाली में काम करने खेत में पहुंचो," रुस्तम ने जवाब दिया।

बात यहीं खतम हो गयी।

"नहीं, मम्मा, आप मेरी बात नहीं समझे। मैं गरीबी से संघर्ष करना चाहता हूं। यह बुराई अंधविश्वास से भी अधिक भयानक है। मैं यहां पानी की नहरें खुदूंगा, प्यास के मारे तड़प रही मुगान की स्तेपी को साफ पानी पिलाऊंगा।"

वृद्ध ने बेटे को आशीर्वाद दिया और शराफ नयी मुगान का निर्माता बन गया।

उसने स्तेपी में नहरें व सड़कें बनाईं, बस्तियां बसाईं, बाग व वन लगाये और कृषि संस्थान के पत्राचार-पाठ्यक्रम में शिक्षा प्राप्त करता रहा। पिता ने, यह जानते हुए कि उसका पुत्र सच्चे मार्ग पर चल रहा है, सदा के लिए आंखें मूंद लीं। उसी समय शराफ कम्युनिस्ट बन गया।

शराफोगलू ने युवा अध्यापिका से विवाह किया, उसकी पत्नी सुन्दर, सुशील और स्नेहमयी थी। तीन वर्ष बाद उनके यहां उजली आंखों व खनकदार आवाज़वाली बेटी प्यारी गेयारचिक का जन्म हुआ। शराफोगलू अपनी पत्नी और पुत्री को बहुत प्यार करता था, पर अचानक उन पर घोर विपदा टूट पड़ी उसकी पत्नी बीमार पड़ी और उसकी मृत्यु हो गयी। उसे बेटी को पालन-पोषण के लिए अपनी सास के पास छोड़ना पड़ा।

शराफोगलू जब मजाक करता या हंसता, तो कोई अंदाज़ नहीं लगा पाता कि उसे यह खुशी ज़ाहिर करने में कितनी मुश्किल होती है, उसका एकाकी विधुर जीवन कितना कष्टमय है।

कटाई के दिनों में शराफ सुबह से पहले तारे निकलने तक लोगों के

ा जा रहा है। मुझे तो उसमें जिन्दगी भर के लिए प्यार हो गया है। ा इतनी इच्छा होती है कि कोई बड़ा और महत्वपूर्ण काम करू ''

"क्या करना चाहती हो?" शराफ़ोगल् ने, इस बात से प्रसन्न होकर दु:ख देखने में कोमल इस नारी को तोड़ने में असमर्थ रहा है, सतर्कता-क पूछा।

"यह व्यक्त कर पाना कठिन है..." माय्या सोचने लगी। "आप मुझसे बेहतर जानते हैं कि हर गाव, हर सामूहिक फार्म की अपनी ोजनाएं, अपनी चिन्ताएं और अपने दु:ख होते हैं। इसीलिए लोगों का ना करने को दिल करता है—पानी की व्यवस्था करने को, बिजली लाने ', सुनियोजित घर बनाने को, पुस्तकालय और क्लब खोलने, बाग़बद ापित करने को, ओह, कोई अपने सपनों के बारे में सिलसिलेवार ढग बता सकता है!"

"पर मैं सब समझ गया," शराफ़ोगलू ने सिर हिलाया।

माय्या उसे पहले परिचय से ही पसद आ गयी थी, लेकिन इस समय ब उसने देखा कि वह सृजन, निर्माण के लिए उत्कंठित है, तो वह फिर न्पना का ख्याल आने पर खीज उठा, जो इस स्त्री की प्रतिभा की तरफ ध्यान भी नहीं देना चाहता था। दु:ख की सबसे अच्छी दवा होती है नुप्राणित श्रम। शराफ़ोगलू यह अपने अनुभव से जानता था माय्या : शब्दों से विह्वल होकर उसने उसे अपनी युवावस्था और सुहाग की ैरों में अपने जीवन के बारे में बताया।

"अब जब मैं दूर-दूर क्षितिज पर जगमगाती बिजली की बत्तिया देखता :, नहर में पानी का कलकल स्वर और छपाके सुनता हू, मुझे इतनी ख़ुशी होती है, मानो दुनिया की सारी दौलत मेरे पास तने है। क्योंकि इस सब ो मेरी अपनी आत्मा का और मेरे योगदान का अश भी है," शराफ़ े कहा। "ऐसे क्षणों में दिल पच्चीस बरस पहले जवानी के अल्हड़ दिनों की तरह धड़कने लगता है और विश्वास होने लगता है कि बुढ़ापा तुम्हारे पास कभी नहीं फटकेगा .."

माय्या सोच में डूबकर चुप रही।

"बताओ, बेटी," शराफ़ोगलू ने मिनट-भर बाद पूछा, "तुम क्या मेरे पास किसी काम से आयी हो?"

उसने तुरन्त उत्तर नहीं दिया, कहीं दूर नजर डाली, रूमाल से होंठ पोंछे और सास ली।

"तुम किसी भी दिन, किसी भी समय मेरे पास आ सकती हो, बेटी! अपना दुख और सुख लेकर आ सकती हो।"

२

असलान अकसर सामूहिक फार्मों को देखने जाया करता था। लोगों के साथ बातचीत करने और उनके साथ मिलकर लवणकच्छों और सूखे के विरुद्ध संघर्ष करने से उसने अपने मन में उदात्त आत्मिक उत्थान अनुभव किया, जिसको कवि प्रेरणा का नाम देते हैं। इस मामले में उसे भ्रम नहीं हुआ था।

अपनी यात्राओं में उसे सृजन के सुख की तीव्र अनुभूति हुई, उसने स्वयं अपने श्रम और निर्माता जनता की शक्ति को भी देखा।

अनेक सामूहिक किसानों से उसकी घनिष्ठ मित्रता हो गयी। असलान को उद्धत और देखने में हठीले लगनेवाले लोग पसंद थे, जो अपनी धारणाओं के लिए डटकर संघर्ष कर सकते थे। वह चापलूस लोगों को बर्दाश्त नहीं कर पाता था, जो जिला समिति के सचिव के हर शब्द पर कहा करते थे

"वाह, वाह! बिलकुल बजा फरमाया!"

भेड़ों की तरह मिमियानेवाले तुच्छ लोग उसके सारे निर्देशों को बिना चू किये स्वीकार कर लेते थे, पर बिना उत्साह के उबाऊ ढंग से काम करते थे, हमेशा तरह-तरह की दस्तावेज़ों और स्मरणपत्रों से अपने को सुरक्षित रखकर जिम्मेदारी से बचने की कोशिश करते रहते थे।

असलान जानता था कि वे लोग, जिनके साथ बहस करते-करते उसका गला बैठ जाता था, जिनके आगे उसे कुछ मामलों में झुकना पड़ जाता था, जो न खुदा से खौफ खाते थे, न शैतान से, जो जिला पार्टी समिति और जिला कार्यकारिणी समिति की ग़लतियों की बेधड़क आलोचना किया करते थे, केवल वे ही उसकी सहायता करते थे, स्वेच्छा से उसके साथ कंधे से कंधा भिड़ाकर काम करते थे।

अगर असलान किसी की प्रशंसा करना चाहता, तो प्रायः कहता:

"वह सच्चा कम्युनिस्ट है।"

असलान के विचार में ऐसे सच्चे कम्युनिस्ट—मन से, दृढ़ विश्वास और शुद्ध हृदय से—शराफ़ोग्लू, गोशानखां, मेरज़ाद और सारा कैरेमोग्लू थे।

शराफोगलू और गोशातखा ने हैरत-भरी नजरो से एक दूसरे की तरफ —प्रश्न अत्यधिक अप्रत्याशित था, जब कि कलतर-लेलेश ने व्यग्यमिश्रित मे दात भीचकर कहा :

"ऐसी जिम्मेदारी के मौके पर हमे बेकार के कामो मे पडने की क्या जरूरत पडी है?"

असलान ने कुछ नही कहा और सहायक से यारमामेद को कक्ष मे लाने को कहा।

यारमामेद अपने को जहन्नुम मे पडा महसूस कर रहा था और उसने निराश होकर खुदा से दुआ करनी भी बद कर दी थी।

असलान के कक्ष मे यारमामेद चलकर नही, रेगकर आया,—उसके पैर जैसे मन-मन-भर के हो गये थे, कमर झुक गयी थी, होठ फडक रहे थे।

"बैठिये," जिला समिति के सचिव ने रुखाई से कहा।

"इतने बडे लोगो के सामने बैठना मुझे बेअदबी लगती है," यारमामेद हकलाते हुए बोला।

कलतर ने उसका कोट पकडकर खीचा।

"बैठो, बैठो, सुनो, कामरेड असलान क्या कहते हैं।"

"जिला समिति के आदरणीय सचिव ने कुछ भी क्यो न कहा हो, मैं उनसे सहमत हू," यारमामेद ने कहा।

असलान ने मेज की दराज से कुछ कागजातो की फाइल निकाली, पर उसे खोला नही और अपने सामने रखकर पूछा

"आप रुस्तम को अच्छी तरह जानते हैं?"

"क्यो नही, आखिर वह अध्यक्ष हैं! . "

"उसके बारे मे आपकी क्या राय है?"

यारमामेद भयभीत हो उठा। उसे सुबह सलमान के साथ हुई बाते याद हो आयी। "डरो मत, तुम्हें कोई काल-कोठरी मे बद करने नही जा रहा है, ऐसे पेटू को मुफ्त में खिलाना सरकार के बस का काम नही है। यह तो आम काम-काजी बुलावा है," उसके यार ने उसे तसल्ली दिलायी थी। सलमान के लिए अपने घर बैठे इस तरह सोचना आसान है, पर यारमामेद के लिए जिला समिति मे घिघियाना कितना मुश्किल है! अगर ये रुस्तम को हटाना चाहते हैं, तो इसका मतलब है, उसे बडी बेरहमी

[illegible] का [illegible] कैसे लिखा जाये, [illegible] यहीं तक [illegible] था।

इस [illegible] ज़्यादा [illegible] लिखवानेवाले [illegible] और [illegible] थे, [illegible] के [illegible] का [illegible] और [illegible] के [illegible] के लिए रहता।

कोई भी यह कह सकता है कि किसी कमेटी के सदस्य को [illegible] के बारे में [illegible] को क्या अधिकार था? [illegible] बड़ा [illegible] मामूली, [illegible] की कमी है, [illegible] बैठे रहते हैं। महीने में दो बार [illegible] जाते हैं, किसी प्रकार की [illegible] नहीं रखते हैं। किसी चीज़ में रुचि नहीं लेते हैं, कुछ नहीं करते हैं...

इसके बावजूद असलान को बार-बार यारमामेद का ख़याल आ रहा था। सब [illegible] पर नज़र रखते हुए उसकी मांद का पता लगाना [illegible] सकता था, यहां उससे भी कहीं ज़्यादा ख़ूंख़ार जानवर छिपे हुए थे।

असलान [illegible] में [illegible] रहता था, उसे [illegible] से बाहर [illegible] मुश्किल था, लेकिन ख़ूंख़ार जानवरों की मांद की ओर जानेवाली पगडंडी पर एक बार जानवर की परछाईं देखकर वह भी चौंक उठा।

नहीं, यह असम्भव है। [illegible] बहुत ऊंचे पद पर आसीन है, उस पर बहुत ज़्यादा उत्तरदायित्व है, यारमामेद से सम्बन्ध रखनेवाला व्यक्ति या तो मूर्ख होना चाहिए या बिल्कुल नीच।

विशेषज्ञ इस निर्णय पर पहुंचे कि 'नवजीवन' में जिले की समस्याओं को भेजे गये सभी बारह गुमनाम पत्र यारमामेद के द्वारा लिखे गये थे। उसकी जांच का परिणाम मिलने पर असलान ने यारमामेद को जिला समिति में बुलवाया।

जब तक मौका पड़ा, काना यारमामेद अपनी पतली गरदन निकाले याचना-भरी नज़रों से जिला समिति के सचिव के स्वागतकक्ष में हर आने-जानेवाले का अभिवादन और उसे विदा करता रहा, असलान कनार, पशुचिकित्सक और गोशतखा के साथ अनाज की फसलें अलग-अलग बांटने के बारे में बातचीत करता रहा।

कक्ष में सचिव का सहायक आया, दरवाजा खुला रह गया। असलान ने देख लिया कि यारमामेद स्वागतकक्ष में बैठा है।

"जानते हैं 'नवजीवन' में हम पर गुमनाम पत्रों की बौछार किसने की थी?" असलान ने पूछा।

"मैं कोई पागल हूं, जो अपने उपकारी रुस्तम-कीशी पर छींटा-कशी करूं। क्या मुझे मालूम नहीं है कि पार्टी की ज़िला समिति रुस्तम पर विश्वास करती है? फिर क्या ज़रूरत पड़ी है मुझे लिखने की? ."

कलतर निश्चिन्त मुद्रा में पेंसिल छीलने के चाकू से अपने नाखून साफ कर रहा था।

"अरे, आप इस बेचारे को चैन से जीने दीजिये," उसने अलसायी आवाज़ में सलाह दी। "जब यह अपने कहे पर इतना अड़ा हुआ है, तो इसका मतलब है, इसका अनाम पत्रों से कोई सम्बन्ध नहीं है।"

यारमामेद का हौसला तुरन्त बढ़ गया

"वल्लाह, नेक लोगो, मेरा इसमें कोई हाथ नहीं है, बिलकुल हाथ नहीं है, मेरे दुश्मन बहुत हैं, उन्होंने ही मुझे डुबोने की ठान रखी है।"

"बारह अनाम पत्र हैं। और सब तुम्हारे हाथ के लिखे हुए हैं। मैं मामला अभियोजक को सौंप रहा हूं!" असलान ने मेज़ से फाइल उठा ली।

यारमामेद घुटनों के बल गिर पड़ा और हाथ ऊपर उठाकर दया की भीख मांगने लगा।

"कामरेड असलान, आप मेरे नेता और गुरु हैं! मैं कसूरवार हूं, मैंने, मैंने लिखे थे, और बारह नहीं सत्तरह। बाकी शायद डाक में खो गये। खुद मुझे सज़ा दें, जान से मार डालें, पर अभियोजक को न सौंपें। मुझे लाइलाज बीमारी है, कामरेड असलान, शिकायतें गढ़ने की। किसी अभागे को नशे में बकवास करने की हालत में पहुंचने तक पीने की लत होती है, किसी को लापरवाही से जूए में हारने जाने की, किसी को . आप तो खुद समझते हैं,—औरतों के साथ तफरीह करने की। पर मुझ ग़रीब के हाथ खुजलाते हैं—बड़े-बड़े कार्यालयों में पत्र भेजने को। मैं अपने लिए नहीं, सार्वजनिक कार्य के भले के लिए पचता हूं। मैं सोचता हूं, उस आदमी की एक बार और जांच कर लें, उसकी ईमानदारी के बारे में पूरा यकीन कर लें," यारमामेद ने ऐसे हिलते और रोते हुए कहा, मानो वह किसी के यहां गमी में आया हो। "और अगर पुष्टि हो जाये? तो इसका मतलब है मैंने अपराधी को निहत्था कर दिया, यह भी मैंने जनता की भलाई के लिए ही किया।"

शराफ़ोगलू और गोशातखां दोनों ही मौन उसको देखते रहे, उन्हें लगा

ना बरदाश्त करना होगा। लेकिन अगर रुस्तम का किसी स्तर के किसी ऊँचे पद पर नियुक्त करना तय कर लिया गया हो तो?

"अच्छा। इस बारे में ज्यादा जानकारी है," यारमामेद [illegible] में [illegible] म [illegible] की कोशिश करता हुआ बड़बड़ाया। "मेरा बूढ़ा दिमाग इस तरह के सवाल हल नहीं कर सकता। नाक के पास बैठे आदमी को [illegible] चौंधिया जाती है। दूर से कहीं ज्यादा नजर आता है।"

[illegible] की ओर [illegible] की असलान की शालीनता और आत्मसंयम से आश्चर्यचकित रह गये। उन्होंने अपनी जिन्दगी में बहुत कुछ देखा था, पर यारमामेद जैसा आदमी शायद वे पहली बार देख रहे थे।

"कामरेड यारमामेद, हम पुराने कम्युनिस्ट रुस्तम-बीजी को काफी अच्छा और ईमानदार व्यक्ति मानते हैं," असलान ने शान्त स्वर में कहा। ऐसा आदमी सार्वजनिक सम्पत्ति पर दांत नहीं गड़ा सकता। लेकिन क्या हम गलती पर हैं? हमारी मदद कीजिये।"

"सचमुच ऐसा ही है," यारमामेद ने स्वीकृति में सिर हिलाया, "हमारे जिले में रुस्तम-बीजी की जोड़ का आदमी नहीं मिलेगा—निहायत ईमानदार आदमी है, उसका दिल शीशे-सा साफ है।"

"देखा! लेकिन हमें अनाम पत्र मिला है, जिसमें लिखा है कि रुस्तम सामूहिक फार्म के तीन भेड़ें ले गया और उन्हें बाजार में बेचकर अपनी पत्नी और बेटी के लिए नयी चीजें खरीद लाया। जरा पढ़िये तो! ." असलान ने फाइल खोलकर यारमामेद को पत्र दिया।

वक्त निकालने और साहस जुटाने के इरादे से यारमामेद ने नाक पर धागों से बंधा चश्मा चढ़ाया, कागज आंखों के पास लाकर दुःख से सिर हिलाया।

"कितनी घसीट लिखावट है। लानत है उसकी मां पर, जिसने ऐसे बद-लिखे को पैदा किया!"

"क्या इसमें सच लिखा है?" असलान ने ऊंची आवाज में उसे टोका।

"इसका हर अक्षर झूठी निन्दा से भरा है!" यारमामेद कह उठा। "हाथ सूख जाये ऐसी भद्दी बातें गढ़नेवाले का! "

"यारमामेद, हमें पक्का पता है कि यह पत्र तुमने गढ़ा है। तुमने!" असलान ने घृणापूर्वक कहा।

"मैंने नहीं लिखा!" यारमामेद ने दोनों हाथ फैलाये।

साथ-साथ उसे हटाने, बदनाम करने और उसका स्थान लेने की भी चेष्टा करता है। उसे अपने लक्ष्य तक पहुंचानेवाला हर साधन जायज़ होता है: सच और झूठ, ईमानदारी और ठगी, सज्जनता और नीचता। रेशम का कीड़ा ख़ुद अपना कफ़न बुनता रहता है, जब कि स्वार्थजीवी अत्यधिक हठपूर्वक अपनी क़ब्र ख़ुद खोदता रहता है।

सामूहिक फ़ार्म का उपाध्यक्ष बन जाने के बाद सलमान ने महसूस किया कि उसके मन में ऐसी लालसा जाग उठी है, जो जुआरी के जोश और स्त्रियों व सुरापान के व्यसनों से भी अधिक प्रचण्ड है, सत्ता व ख्याति की भूख ने उसकी बुद्धि कुंद कर दी, उसके मन में अत्यन्त असाध्य और दुःसाहसपूर्ण सपने जगा दिये। वह अपना रुस्तम का सहायक चुना जाना केवल स्वाभाविक ही नहीं मानता था, बल्कि बुरा भी मानता था कि उसकी पदोन्नति करने में देर कर दी गयी है, उसकी प्रतिभाओं का समय पर मूल्यांकन नहीं किया गया है। अब उसे शीघ्रातिशीघ्र अध्यक्ष बनकर अपने विलम्ब की क्षतिपूर्ति करनी है। इसके लिए अपने इर्द-गिर्द ऐसे विश्वसनीय लोगों को जमा करना ज़रूरी था, जो किसी भी तरह के कारनामे और अपराध के लिए तैयार हों। आरम्भ में उसे कभी चालाकी से, कभी ख़ुशामद से, कभी धमकियों से अपने नेतृत्व में पिछलग्गुओं की एक टुकड़ी तैयार करने में सफलता मिली। ढुल-मुल और भीरुओं के साथ वह हठधर्मी और कठोरता से पेश आता, गर्वीले और दुर्दांत लोगों को ख़ुद कुछ दिखाने देता, उनकी ठकुरसुहाती करता। लालची लोगों को वह चुपड़ी रोटी का लालच देकर ऐसे खेतों में भेजता, जहां वे आसानी से ज़रा ज़्यादा श्रम-दिन का काम दिखा सकते। धूर्तों को यह साफ़ बता देता कि वह उनकी सारी काली करतूतें जानता है, लेकिन अगर वे उसका कहना मानेंगे, तो वह चुप रहने को तैयार है।

पिछलग्गू उसकी तारीफ़ के पुल बांधने लगे, घर-घर जाकर कहने लगे कि ख़ुद अल्लाह ने सलमान को ऊंचे पद पर आसीन होने का आशीर्वाद दिया है।

सलमान यह देखने लगा कि कुछ सामूहिक किसान उसका आदर करते हैं, उस पर विश्वास करते हैं। इसका मतलब है कुछ ही दिनों में वह पूरा सामूहिक फ़ार्म ही अपने हाथों में ले सकता है। इसके लिए यह ज़रूरी था कि ज़िला केन्द्र में उसके अपने मित्र और गुरु हों जब कि वहां अभी तक कलन्दर भैया को छोड़कर सलमान का और कोई सहारा नहीं था।

जैसे फर्श पर कोई चिपकू पदार्थ फैला रहा है, जो खुद चलते ही बहाने से मर रहा हो।

"दफा हो जाओ," अमलान ने आदेश दिया।

पारमामेद उठ खड़ा हुआ और अपनी मुक्ति पर विश्वास न कर पाकर डग-मग कदम रखने लगा।

"जा रहा हूँ, जा रहा हूँ, रहमदिल कामरेड," पारमामेद तुतलाया। "मुझे बीमारी है, बहुत बुरी बीमारी ... क्या मुझे सामूहिक फ़ार्म में रहने दिया जायेगा?"

"इसका फ़ैसला खुद सामूहिक किसान ही करें," अमलान ने जवाब दिया, और जब घुसखोर के पीछे दरवाज़ा बंद हो गया, उसने गहरी सांस ली। उसे लगा मानो वह अंधेरी गली में भटककर घूरे पर पहुँच गया हो और घिनौनी बदबू में सांस ली हो। "कौन इसे कमीने को घूरे में उठा लाया है और किसने उसे अपनी बदबूदार सांसों से दुनिया में ज़हर फैलाना सिखाया है?" अमलान ने सोचा।

"मेरी समझ में किसी तरह नहीं आया कि तुमने उसे माफ़ कैसे कर दिया," शराफ़ोगलू ने खुले झरोखे के पास आकर ताज़ा हवा में गहरी सांस लेते हुए कहा।

"जानते हो, कामरेड शराफ़, यह आदमी उस चाण्डाल-चौकड़ी में सबसे मामूली है। हमें इस सरगना तक पहुँचना है," अमलान ने समझाया। "आइये अब फसल अलग-अलग उठाने के बारे में सलाह-मशविरा करें।"

"इनका सरदार तो सलमान है," गोशातखा अचानक कह उठा। "वही है, जिसमें अभियोजक को और दूसरे कुछ लोगों को दिलचस्पी लेनी चाहिए।"

अचानक कलतर-लेतेश चीख पड़ा और पेंसिल छीलने का चाकू, जिससे वह नाखून साफ कर रहा था, फिसलकर उसकी खाल में धंस गया। सबने मुड़कर देखा। कलतर मुंह में उंगली डालकर खुशामदाना ढंग से मुस्करा पड़ा।

३

महत्त्वाकांक्षी, चालबाज़ और कमीने आदमी के किसी तरह बस किसी उच्च सरकारी पद तक पहुँचने की देर है कि वह तत्क्षण पुरजोशी दिखाने लगता है, अपने उच्चाधिकारी की खुशामद करने लगता है और इसके

गूंगे हुसैन ने हथेली कान से लगाकर बड़ी भोली नज़रों से सलमान पर नज़र डाली और ज़बान से "टच्च" की आवाज़ की।

"ठीक है, ठीक है, तुम्हारी ये चालें मैं जानता हूं जब तुम्हें फायदा होता हो, तो तुम बहरे बन जाते हो, अमल में घास के बढ़ने की आवाज़ तक सुन लेते हो!" क्रुद्ध सलमान ने आगे कहा।

यारमामेद उसके लहजे से समझ गया कि बातचीत बिना किसी लाग-लपेट के होनेवाली है और उसने फौरन अपनी स्थिति निश्चित कर ली

"हां, हां, तुम ठीक कहते हो, सलमान, पशुपालन फार्म में गड़बड़ चल रही है, फौरी कदम उठाने चाहिए.."

हुसैन एकाएक हंस पड़ा।

"अरे, तुम कितने डरपोक हो, जितना मैं देखता हूं," उसने सलमान से कहा। "ज़रा-सी बात हुई नहीं कि तुम बुत हो जाओगे।"

उसकी बेतकल्लुफी से सलमान का सबर का बांध आखिर टूट गया। चालबाज़ का भला किया, और अब वह जिस दरख्त की छाया में बैठा है, उसी की जड़ काट रहा है। रुस्तम के सामने तो वे उसके कदमों की धूल चाटने को तैयार रहते हैं, पर उसके आगे ढीठ हो गये हैं। लेकिन तुम्हारा पाला किसी ऐसे-वैसे से नहीं पड़ा है

सलमान पूरे ज़ोर से मेज़ पर हाथ मारकर हंस पड़ा और बेदर्दी से बोला:

"तो सुनो, दोस्तो! हमारे बीच में पहले जो कुछ हुआ था सब खतम हो चुका। हमने अपने-अपने घरों के इर्द-गिर्द दीवारें खड़ी कर ली हैं।" उसने मेज़पोश पर उंगली से तीन वृत्त खींचे' यानी अब हरेक का अपना घर है। "आपस का सारा हिसाब-किताब चुकता हो चुका है। दोस्ती की कीमत नहीं समझनेवाले लोगों की मुझे ज़रूरत नहीं है। मुझे ज़िन्दगी एक ही बार मिली है, मैं उसकी कीमत समझता हूं, वह मुझे सड़क पर तो मिली नहीं है। अपने यार सलमान को भूल जाओ। पर मेहरबानी करके डरो मत, डरने की कोई बात नहीं, तुम्हारी करतूतें राज़ ही रहेंगी। लेकिन आगे जो होगा, वह अभियोजक जाने, मैं कुछ नहीं जानता।"

यारमामेद ने महसूस किया कि उसके दांत बजने लगे हैं और हड्डियां तक कांप उठी हैं। अभी वह बनाम पत्रों से तो बरी भी नहीं हो पाया और फिर "अभियोजक" आ गया।

गूंगा हुसैन व्यर्थ अपने को यकीन दिला रहा था कि सलमान बन रहा है,

पिछले कुछ दिनों से सलमान आशंकित था, क्योंकि कुछ खेतों में गेहूं की फसल उठाने का काम ढंग से नहीं चल रहा था, शराफोगल् सामूहिक फार्म से भौंहें सिकोड़े असन्तुष्ट चला गया था। पशुपालन फार्म में स्थिति खराब थी। "इस गूंगे कामचोर और चालाक लोमड़ी यारमामेद को थोड़ी ढील देने की देर है, कि ये खुद भी कुंए में जा गिरेंगे और मुझे भी साथ घसीट ले जायेंगे," सलमान सोचता। उसने उन्हें अपने पास बुलाकर इतनी बुरी तरह झाड़ लगायी कि उसके वफादार मददगार केवल आश्चर्य से आंखें मलते रह गये।

कुछ दिनों तक हुसैन और यारमामेद ने ईमानदारी से काम किया, फिर उनका जोश ठण्डा पड़ गया, और फिर पहले की तरह ढील पड़ गयी। जब पशुपालन फार्म में दुहे गये दूध की मात्रा घट गयी, तो सलमान घबरा गया। वह अपने सहायकों पर विश्वास नहीं करता था, वैसे ही जैसे वह दुनिया में किसी आदमी पर विश्वास नहीं करता था, सबको बेईमान मानने के कारण। यारमामेद गूंगे हुसैन को बचा रहा था, फाइल में रिपोर्ट पर रिपोर्ट लगाये जा रहा था कभी दूध फट गया, कभी अनाड़ी चरवाहे भेड़ों को धूप में झुलसी घासवाले मैदान में चराने गये। "अगर उनमें साठ-गांठ हो चुकी है, तो मैं मारा गया!" सलमान ने अपने आप से कहा। पशुपालन फार्म के लिए हुसैन की सिफारिश करते समय उसकी योजना सामूहिक फार्म के मास व दूध का अपनी बपौती की तरह उपयोग करने की थी। पशुपालन फार्म के इनचार्ज और लेखाकार की साठ-गांठ खतरनाक थी। अगर वे रंगे हाथों पकड़े गये और उन्हें अभियुक्तों के कटघरे में खड़ा कर दिया गया, तो सलमान को भी खैर नहीं होगी। सब जानते हैं कि हुसैन की सिफारिश उसी ने की थी।

नहीं, उसे शीघ्रातिशीघ्र कारगर कदम उठाने चाहिए।

रस्तम के शाम को जिला केन्द्र जाने का फायदा उठाकर सलमान यारमामेद के साथ हुसैन के पास गया।

बिनबुलाये मेहमानों को देखकर गृहस्वामी का मुंह उतर गया।

शान्तचित्त सलमान ने गृहणी से शिष्टतापूर्वक अलाने में चूल्हे के पास बैठने का अनुरोध कर किवाड़ अन्दर से बन्द कर लिये और हुसैन के सामने सीने पर आड़े हाथ रख उसे खा जानेवाली नजरों से देखता खड़ा हो गया।

"तुमने क्या ठान ली है, जोक?"

पाना बडा मुश्किल था। उसने नखरीली अदा के साथ अपना स्कर्ट एक तरफ से थोडा ऊपर उठाया और मथर गति से कधे और कूल्हे मटकाती सडक पर चल पडी।

"ऐसी होनी चाहिए चाल असली खानम की!" उसने हसी के मारे दोहरी हुई जा रही युवतियों को समझाया। "जब कि तुम हमेशा ऐसे सिर पर पैर रखकर भागती हो, जैसे आग बुझाने भाग रही हो।" चाची ने पेरशान के झाड़ू जैसे रोयेंदार गुलाबी कपोलो पर चिकोटी भर ली। "जब तुम्हारी चाल ऐसी हो जायेगी, गाव के सारे लडके तुम्हारे मजनू हो जायेंगे। मेरे अगर कुआरा बेटा होता, तो मैं उसे सिखा देती कि तुम्हें कैसे उडाकर ले जाये।"

"और मैं तुम्हारे बेटे का सिर मूँडकर गले मे रस्सी बाध वापस उसकी मा के घर भेज देती," पेरशान ने भी मजाक किया।

"बहादुरी तो तुम अभी दिखा रही हो और अगर किसी अडियल लडके के पजे मे फस गयी, तो दूसरे ही सुर मे गाने लगोगी।"

"अरी, चाची, क्या जरूरत है ऐसी मनहूस भविष्यवाणिया करने की?" गिझेतार ने सहेली का पक्ष लिया। "तुम खुद ही न जाने कितनी बार कह चुकी हो कि प्यार शरबत-सा मीठा होता है।"

"शरबत-सा! " तेल्ली चाची वितृष्णा से फुफकारी। "मेरी जिन्दगी जी कर देखो, इस शरबत का स्वाद जान जाओगी।" कुछ सोचकर वह आगे बोली, "बेशक, अगर अध्यक्ष की बेटी की मुलाकात ऐसे लडके से हो गयी है, जो लडकियों से भी ज्यादा शर्मीला है, तो शुरू मे यह जरूर शरबत लगेगा! "

"किसी से नही हुई मेरी मुलाकात," पेरशान ने मुह फेर लिया।

वे थोडी देर तक मौन चलती रही, पर तेल्ली चाची से अब चुप रहना मुश्किल हो गया। उसने पेरशान पर विजयी दृष्टि डालकर कहा

"इनकार मत करो, वरना बहुत बुरी बददुआ दूगी।"

"कौन-सी बददुआ?" गिझेतार ने दिलचस्पी दिखाई।

"जिन्दगी भर कुआरी बैठी रहने की!"

"लडाका सास मिलने की!"

सब अपनी-अपनी अटकले और अनुमान लगाने लगी।

"क्या कभी अच्छी सासे मिलती हैं?" सबसे छोटी उम्र की लडकी ने जो लगभग किशोरी ही थी, आश्चर्य से पूछा।

'आया, सोने आयी ... लेकिन अगर...'' और उसने अपने गंदे ... थोड़ा हाथ फेंककर उबासी भरी।

इस बार में भी प्रणाम-पत्र लिखना पड़ेगा, लेकिन अब लिखा कैसे नहीं, बाद लिखा पड़ता,' पारमामेद ने अंधेरे में घर की तरफ जाते हुए फैसला किया।

उसने दफ्तर में ज़िला सोवियत में जो हुआ, सब छिपा लिया। कितने मामलों के बारे में बताया गया था, इसमें घबराने की कोई बात नहीं। लगता है उसने विश्वास कर लिया है। और अगर विश्वास नहीं किया हो, तब क्या हो तो?

"मुझे टाइपराइटर खरीदकर उस पर प्रार्थनापत्र टाइप करने चाहिए" पारमामेद के मस्तिष्क में ओजस्वी विचार कौंधा।

४

काम के थका डालनेवाले लम्बे दिन के बाद, जब सूरज का लाल गोला धुंधला पड़कर धूसर कोहरे से ढंक गया, गिज़ेतार की टोली की स्त्रियां व युवतियां अपने-अपने घर लौटने लगीं। वे अपने कुदाल हिलाती मौन चल रही थीं, चलते-चलते उनके चेहरे लाल हो रहे थे। युवतियां सहर्ष अपनी रफ्तार धीमी कर देतीं, पर स्त्रियां जल्दी मचा रही थीं घर पर ढेरों काम करने थे—नाली से पानी लाना था, चूल्हा सुलगाना था, खाना पकाना था और बच्चों को नहला-धुलाकर सुलाना था।

अन्त में पेरशान चुप्पी से ऊब उठी।

"अरी, तेल्ली चाची, तुम कलहंसिनी की तरह क्यों कूद रही हो? यह कौन-सी चाल है?" पेरशान ने बड़े भोलेपन से पूछा।

चाची ने अपने अनगिनत झालरोंवाले स्कर्ट को झटकाकर रुक गयी।

"मुझे तो जितना कूदना था, कूद चुकी हूं, अब तुम कूदो, अध्यक्ष की बेटी!" पेरशान को उसने बेदिल रुखाई के साथ सलाह दी।

लड़कियां मुंह दबाकर हंस पड़ीं।

"सचमुच, चाची," गिज़ेतार ने गम्भीर स्वर में कहा, "तुम ऐसे चल कैसे लेती हो? गरदन भी कलहंसिनी की तरह निकाले रहती हो और कूल्हे मटकाती चलती हो, जैसे नदी में कोई बतख तैर रही हो।"

... खिलखिलाकर हंस पड़ीं, लेकिन तेल्ली चाची को शर्मिंदा कर

पेरशात ने इस बात से खुश होकर कि कोई उस पर ध्यान नहीं दे रहा है सोचा कि उसकी मा ने तो खुशी-खुशी बहू का आने पर स्वागत किया था।

लेकिन नन्हा चाची पेरशात की बात से नहीं भूली और मुड़के से उसके पास आकर फुसफुसायी

तुझे ऐसी सास नसीब होगी कि हर कुरसी में कील निकली होगी, पलग पर—कावा, तेरी लकड़ी बतायगी और बुहारी से समेटकर कोने में पटक देगी और तेरे पति को तब तक भड़कायगी, जब तक कि तुझ से झगड़ा न करा देगी। तभी लगेगा तुझे प्यार शरबत-सा।" और चाची कमर पर हाथ रख, अपने लम्बे स्कर्ट से धूल बुहारती, नाचती हुई सड़क पर चलती गाने लगी

> घर में हो फुर्तीली तुम ही, मेरी सास,
> मालकिन हो तेज घर की, मेरी सास।
> बेटा आ जाता है तब हर काम को
> फिरती हो तुम दौड़ी-दौड़ी, मेरी सास।

पेरशात ताली बजाने लगी।

"वाह, चाची, वाह शाबाश! क्या तुम सचमुच मेरी होनेवाली सास को बहुत अच्छी तरह जानती हो? देख लेना, तुम दातो तले उगली दबा लोगी, ऐसे लड़के से शादी करूगी, जिसकी मा टेढ़े मिजाज की होगी, और एक महीने में वह मेरे हाथों मक्खन में बदल जायेगी।"

चाची का तांबे के थाल जैसा गोल चेहरा गम्भीर हो उठा।

"और तुम्हारा क्या खयाल है, लड़कियो? यही होगा। अध्यक्ष की बेटी से हर सास दूर भागेगी। इसे तो फौज में भरती होकर तोप चलानी चाहिए। यह खानम नहीं, तोपची है।"

उन्हे इसी तरह बतियाते चलते पता भी नहीं चला कि वे कब गाव गयी,—धूलभरा, तपता रास्ता बहुत छोटा लगा। गाव के छोर पर , हो गयी और अपने-अपने घर चली गयी, जब कि गिज्बेतार ... की तरफ चल दी, जिसके पास शहतूत का अकेला लम्बा । यहा विधवा बादाम रहती थी। उसका पति युद्ध से अपग , बीमार रहता था और कुछ वर्ष पहले उसकी मृत्यु हो

शिशुशाला में छोड़ने शर्म आती है ! क्यों न आये ! पड़ोसी कहेंगे 'सगी दादी और सगे बाप ने बच्चों को पराये लोगों को सौंप दिया, खुद उनकी सभाल नहीं कर सकते।'"

तेल्ली चाची भाप छोडती देगची लेकर कमरे में आयी और उलाहनेभरे स्वर में शेरजाद से बोली

"तुम बैठ क्यों नहीं रहे हो? कुछ नहीं किया जा सकता, बेटा, हमारी यही जायदाद है घर में कुर्सियां नहीं हैं। काश, ट्रक मिल जाता, दो दिन में पत्थर ढो लाते और देखते-देखते पतझड तक नया घर तैयार हो जाता ."

"चिन्ता मत कीजिये, चाची," शेरजाद ने कहा और दरी पर केरेम के पास बैठ गया।

फाटक के सामने ट्रक आकर रुका और केबिन में से सलमान उतरा– रुस्तम की अनुपस्थिति में उसने ट्रक का इस्तेमाल अपनी सैर के लिए करने की ठानी। पशुपालन फार्म में ही शेरजाद के अनुशासन सुधारने में जुट जाने की खबर पाकर उपाध्यक्ष फौरन गाव आ पहुचा, ताकि ऐसा मौका कहीं उसके हाथ से न निकल जाये।

सलमान को आशा नहीं थी कि पार्टी सचिव तेल्ली के यहां मिलने आया हुआ है, वह दरवाज़े के बाहर से ही रूखी आवाज में चिल्लाया

"ऐ, चाची काम पर जाने का वक्त हो चुका है। आराम में बैठे रहने की फुरसत नहीं है! कपास बरबाद हुई जा रही है। और अपने आलसी बेटे को भी जल्दी से खेत रवाना करो. "

केरेम की आखो में खून उतर आया, लेकिन उसने अपने पर नियत्रण रखा और केवल ठण्डी सास ली।

दरवाज़े को ज़ोर से धक्का मारकर सलमान घर में घुस आया। शेरजाद को देखकर वह चुप हो गया और घबराहट में हसकर समझाने लगा

"देख लो, क्या-क्या काम करने पडते हैं, दोस्त–लोगों को काम पर हांकना पडता है।"

"तुम गलत जगह तो नहीं आ गये हो?" शेरजाद ने पूछा। "लगता है तेल्ली चाची ही तुम्हारे हमवतन दोस्त दुर्मन की कपास को बरबाद होने से बचा रही हैं।"

चाची हाथ गाल पर रखकर कर्णभेदी स्वर में चिल्लाने लगी :

"वाह, भई, वाह, क्या कहने, हमारा सलमान कपास की कितनी

को कोई नहीं बह रहा था काफी कामचोर खेत छोड़कर शीतल चायख़ाने में पहुंच गये, बाज़ारों में मटरगश्ती करने लगे।

यह देखकर शेरज़ाद समझ गया कि अब विलम्ब नहीं किया जा सकता। हर दिन, हर क्षण कीमती था। उसने कम्युनिस्टों व कोम्सोमोलों को इकट्ठा करके उन्हें याद दिलाया कि वे केवल अपने काम के लिए ही नहीं, बल्कि सारी फसल के लिए उत्तरदायी हैं। उन्होंने तय किया कि हर टोली में रोज़ाना ताज़ा दीवार-पत्र निकाले जायेंगे, कोटे से अधिक काम करनेवालों को बोनस दिया जायेगा, अवकाश केवल गृहणियों को दिया जायेगा जबकि पुरुष, लड़के और युवतियां बिना विश्राम के लगातार काम करेंगे, रात को खेत-कैम्पों में सोयेंगे।

लगता था काम ठीक से चलने लगा है, पर शेरज़ाद असन्तुष्ट था। यह क्या हो रहा है? रुस्तम चला गया और अनुशासन बिगड़ गया। तो क्या सब चिल्लाने, डांटने-फटकारने और अध्यक्ष के डर के कारण होता है? नहीं, यह ठीक नहीं है। विशाल, बहुउद्योगी सामूहिक फार्म में हर सामूहिक किसान को अपना कर्त्तव्य जानना चाहिए, उसे डर के कारण नहीं, आत्मसन्तोष की खातिर मेहनत करनी चाहिए।

एक बार भोर में तेल्ली चाची के ज़मीन में धसे हुए-से घर के सामने से गुज़रते समय शेरज़ाद ने उसका हाल-चाल पूछ चलने की सोची। चाची अहाते में चूल्हे के आगे कुछ खटर-पटर कर रही थी। पार्टी-संगठनकर्ता को देखकर उसने शिष्टतापूर्वक कहा

"तुम्हारी बीमारियां मुझे लगें, आग़ो, मैं अभी बच्चों के लिए दलिया पका देती हूं, फिर साथ चलेंगे।"

शेरज़ाद दोहरा होकर कच्चे घर में घुसा। कमरे में धुंधली रोशनी थी, छोटी-छोटी खिड़कियों में से प्रकाश बड़ी मुश्किल से आ रहा था, कच्चे फर्श पर दरी बिछी थी और गद्दों व दीवारों पर जाजमें ढकी थीं, – चाची चिथड़ों से ही अपने घर की बदहाली छिपाना चाहती थी। पालने में छोटा बच्चा सो रहे थे, फर्श पर, आगो तक बड़ आयी पत्नी दादाबाबा बेगम और उसका बेटा आलथी-पालथी मारे बैठे नाश्ते का इन्तज़ार कर रहे थे, सास-बहू दरी पर बरतन रख रही थी।

शेरज़ाद ने दुआ-सलाम करके सब तरह की शुभकामनाएं प्रकट कीं और मन-ही-मन कुढ़ने और लाचारी से सोचने लगा "कैसा बीता दिया है। घरवाली अस्पताल में पड़ी है, पर तेल्ली और बेगम की सेवा कर...

है। आप चिन्ता मत कीजिये, मैं रोज़ाना खेतो का चक्कर लगा रहा हू।"

"बहुत ही अच्छी बात है। इधर हमारे यहा रविवार को सामूहिक फार्मों के पार्टी सगठनो के सचिवो की एकदिवसीय सेमीनार आयोजित की गयी है। वक्ता बाकू से आयेगा। तुम्हारा पक्का इतज़ार करेंगे, कोई दस बजे के करीब।"

"निमत्रण और याद रखने के लिए धन्यवाद। जरूर आऊगा।"

रिसीवर रखकर शेरज़ाद अपने मे शक्ति व दृढ़सकल्पता अनुभव करता हुआ कार्यालय से बाहर निकला। आधे घटे बाद वह तेज़ कदमबाज पर सवार हो 'लाल झण्डे' के खेतो मे लगनेवाले दूरस्थ खेत देखने जा रहा था। हर जगह रगबिरगी पोशाके पहने स्त्रिया व युवतिया लगन से, बिना हड़बडी के काम कर रही थीं· दूर तक फैले और पुष्पित कपास की पृष्ठ-भूमि मे वे हरी-भरी घासस्थली पर खिले पहाडी पोस्ते के फूलो की याद दिला रही थी।

६

रुस्तम बाकू से उत्साहित और प्रसन्नचित्त लौटा, उसने बताया कि वह ओपेरा थियेटर मे गया था, ओपेरा 'केर-ओगली' सुना और सब के लिए उपहार लेकर आया है दो जोड़ी पेटेन्ट चमड़े के जूते, दो रगीन पोशाके और दो रेशमी रूमाली।

"बहू के साथ आधा-आधा बाट लेना," उसने बेटी से कहा, और पेरशान ख़ुशी के मारे उछलती अपने कमरे मे उन्हें पहनकर देखने भाग गयी।

पत्नी को रुस्तम ने केलागाई* दी, लेकिन सकीना बहू की याद आने से इतनी उदास हो गयी थी कि उसने धन्यवाद देकर उपहार को सन्दूक मे रख दिया, उसे खोलकर भी नही देखा।

पेरशान खाने के कमरे मे लौटकर पिता के पास आयी और उसके कधे पर सिर रखकर बोली·

"राजधानी से और क्या लाये?"

"मेरा सबसे अच्छा उपहार सामूहिक फ़ार्म के लिए है: रूसी व अर्मन

---

* केलागाई—बड़ा रेशमी रूमाल।

के अन्यायपूर्ण आदेश का जिक्र किया, तो गृहस्वामिनी ने बेझिझक उसे टोक दिया

"अब बस करो। आदमी सफर से लौटा है, थका हुआ है, अभी होश भी नहीं सभाल पाया है... कल कार्यालय में आयेगा, वहीं सारा कच्चा चिट्ठा सुना देना।"

"ठीक है, सलमान, अब तुम घर जाओ," रुस्तम ने हाथ हिलाया। "मेरे पसीने से तर चेहरे को ज़रा सूख जाने दो, उसके बाद उस पर ठण्डे पानी के छींटे मारना।"

सलमान ने कधे उचकाये और अपने चेहरे पर आया असन्तोष का भाव छिपाकर अहाते से चला गया।

डटकर भोजन करने और देर तक चाय की चुस्कियां लेने के बाद रुस्तम सोने के लिए लेट गया और मिनट-भर बाद ही उसके प्रचण्ड खर्राटों से सारे घर में झाड़फ़ानूस काप उठे।

सकीना मेज साफ करके अहाते में चली गयी। केवल पेरशान के कमरे मे जल रहे लैम्प का प्रकाश ज़मीन पर रगबिरगे धब्बे की तरह पड रहा था। अचानक वह शहतूत के वृक्ष के तले सफेद क़मीज़ और कैन्वस की पतलून पहने आदमी को देखकर चौंक उठी। मा अंधेरे मे गराश को पहली नज़र मे नहीं पहचान पायी।

"किस का इतज़ार कर रहे हो?"

"मैं एक मिनट के लिए आया हू, मुझे टोली में और काम करना है," गराश ने आखें चुराते हुए कहा।

"और मुझे तुमसे काम है, बैठो!" सकीना ने गराश के लिए अप्रत्याशित सख्ती से कहा और बरामदे की ओर मुडकर आवाज़ दी· "पेरशान, जरा लैम्प यहा लाना!"

पेरशान मिट्टी के तेल का लैम्प टुटियल मेज़ पर रखकर चुपचाप जाने लगी, जैसा कि शिष्ट कन्या को करना चाहिए, पर मा ने उसे रोक दिया

"और तुम भी बैठो, बच्ची तो हो नहीं, अपने घर का दुख भी बाटना सीखो, शायद अपनी सलाह से मा की ही मदद कर दो।"

पेरशान एड़ियों तक की सोने की सफेद पोशाक पहने थी और कधो पर शाल डाले थी। उसने सिर पीछे झटककर धृष्टतापूर्वक कहा:

"मैं ऐसे बेशर्म के साथ बैठना भी नहीं चाहती।"

ज़िन्दगियां मिलतीं, तो भी उन पर क़ुरबान करते कभी दिल नहीं दुखता।"
यारमामेद ने ऐन गराश की नाक के आगे भनभना रहे कीड़े को फूंक मारकर उड़ा दिया· "मरदूद, पीछे ही पड़ गया . "

"किसके लिए तुम सौ ज़िन्दगियां क़ुरबान करने को तैयार हो?" कलतर ने अंधेरे से निकलकर हंसते हुए पूछा। उसकी कोहनियों तक चढ़ायी हुई आस्तीनों से मांसल गोरे हाथ दिख रहे थे और खुले कालर से – बेबाल थुलथुल सीना। उसका उभरी आंखों और नाक के बांसे पर जुड़ी घनी भौंहोंवाला चेहरा सुन्दर था, पर कलतर छोटे-छोटे पैरों और लटके हुए पेट के कारण बदसूरत लगता था। वह रंगबिरंगे गाउन में सजी-धजी सुन्दरी नज़नाज़ की कोहनी थामे हुए था।

यारमामेद ने बड़ी सावधानी से कलतर के कंधे से गीला तौलिया उतार लिया।

"अगर तुम कहते कि निनानवे ज़िन्दगियां क़ुरबान करते तुम्हारा दिल नहीं दुखता, तो मैं विश्वास कर लेता," कलतर बोलता रहा। "बेशक, परायी[1] पर सौवीं यानी अपनी खुद की ज़िन्दगी के बारे में मुझे शक होता है," और उसने अपनी हाज़िरजवाबी पर खुश होकर ज़ोरदार कहकहा लगाया। उसने एक बार भी यारमामेद को अमलान के कक्ष में हुई बातचीत का इशारा नहीं किया उसका मत था कि आड़े वक़्त के लिए ऐसे खिदमत-गुज़ार और किसी भी प्रकार की नीचता के लिए तत्पर ओछे आदमी के साथ अच्छे सम्बन्ध बनाये रखना लाभदायक होगा।

कलतर के धृष्टतापूर्ण मज़ाक गराश को अच्छे नहीं लगे और जब उसने उससे पूछा "क्या हाल हैं, रुस्तम-सौशी के वंशज?" युवक की भौंहें तन गयीं, पर वह चुप लगा गया।

लेकिन कलतर उससे जवाब की उम्मीद भी नहीं करता था· वह बेतक़ल्लुफ़ी के सवाल करना, बात करते-करते प्रति क्षण विषय बदलना, अपने ही मज़ाकों पर ज़ोरदार ठहाके लगाना उच्चपदाधिकारियों की विशिष्टता मानता था, जो साधारण लोगों की पहुंच से बाहर होती है।

"मैंने सुना है, रुस्तम के घरवाले नर्द* खेलने में बहुत माहिर हैं," कलतर ने कहा। "ज़रा खेलकर देखें "

---

*नर्द – आज़रबैजान व ईरान में लोकप्रिय एक प्रकार का पासों व गोटियों से खेला जानेवाला खेल।

की कोशिश करता था, केवल अनिश्चित टिप्पणियां किया करता था "हां, हां, बेशक! सन्देह करने का सवाल ही नहीं उठता!" वह हर बैठक में पक्ष में मत देता था, अगर अल्पमत में रह जाता, तो गला फाड़कर चिल्लाता कि उसे ग़लतफ़हमी में डाल दिया गया था। कलतर के पास शिक्षा-शास्त्री की उपाधि भी थी, पर वह न आज़रबैजानी भाषा में ढंग से लिख सकता था और न ही रूसी में, वह किसी काग़ज़ पर तब तक हस्ताक्षर नहीं करता था, जब तक कि उसका सहायक उस पर अपने हस्ताक्षर नहीं कर देता था।

बुरी तरह हारे यारममेद की घबराहट और नज़नाज़ की ख़ुशामदाना तारीफ़ों का आनन्द लेकर कलतर ने सलमान के साथ मुकाबला करना चाहा, जो कहीं ग़ायब हो चुका था। गराश उसकी यह आदत कई बार देख चुका था मेहमानों के आने पर सारी ज़िम्मेदारी बहन के कंधों पर डाल देना और ख़ुद कहीं ग़ायब हो जाना।

आख़िर सलमान को ढूंढ लिया गया, वह खेलने लगा, और बेशक कुछ ही मिनट में उसने अपने को हारा मान लिया, खीजकर पासे फेंक दिये और ख़ुद को कोसा भी।

"अब तुम्हारे साथ खेलते हैं, सुन्दरी?"

नज़नाज़ ने नखरे नहीं किये, उसने पासों की तरफ़ हाथ बढ़ाया, यह गराश सहन न कर सका और वह अंधेरे से बाहर निकल आया।

"अहा, ट्रैक्टर-चालक ने हिम्मत जुटा ही ली!" कलतर हंस पड़ा। "सावधान, सावधान, मैं चाल चलता हूं पांच!"

"ज़रा बताना तो, कामरेड, तुम्हें मशीन-आपरेटरों से क्या काम है, फिर मैं जाऊं!" गराश झल्लाहट से कांपती आवाज़ में बोला।

"ज़रा देखिये तो, यह मज़ाक तक नहीं समझता!" नज़नाज़ कह उठी।

"तुम्हें क्या हुआ है, लड़के, ज़रा चैन से बैठो!" सलमान ऐसे उछला, जैसे उसे किसी स्प्रिंग ने उछाला हो, और उसने गराश का आलिंगन करने की कोशिश की।

इस पर कलतर नाराज़ हो गया।

"यह गरम क्यों हो रहा है? खेलना नहीं चाहता, तो न खेले, अपने खोपड़े में जाये। ज्यादा डींग मत हांको। एक ही आदेश से तुम्हारे सम्मानजान को पदच्युत कर सकता हूं। उसके उत्तराधिकारी बहुत मिल जायेंगे।"

[illegible]

"[illegible]!" [illegible]

लेकिन [illegible] कुछ नहीं सुन रहा था। जिस आदमी के [illegible] की लपटों में गिर गये हों वह अपने आप से दूर भागता है, [illegible] अंधेरी, सुनसान [illegible] में भागा जा रहा था, ताकि अपने [illegible] अपनी कचोटती आत्मा से, शर्म से बच कर दूर भाग सके।

तेरहवाँ परिच्छेद

१

धनी घास से ढकी नाली कपास के खेतों में चारों ओर हरी झालर [illegible] तरह लग रही थी। कलकल करता पानी लोगों को याद दिला रहा [illegible] कि नाली अभी जिन्दा है। शेरजाद किनारे पर रुककर झरने के कलकल [illegible] आनन्द लेने लगा।

कपास के पौधे दो बालिश्त ऊंचे हो चुके थे और उनमें घने पत्ते [illegible] चुके थे। थोड़ी दूरी पर ट्रैक्टर काम कर रहा था, उसके पीछे-पीछे रंगबिरंगी पोशाकें पहने औरतें चल रही थीं और कुदालों से बचे हुए खर[illegible] पतवार उखाड़ रही थीं। नाली के पास हरे फीतेवाला स्ट्रा-हैट लगाये एक युवती खनिज खाद घास में मिलाकर खेत में बह रहे पानी में डाल रही थी।

वह पेरशान थी।

"तुम्हें कभी थकान न हो," शेरजाद ने उसके पास आकर कामना की।

पेरशान ने [illegible] रे कोहनियों तक

लगे हाथ पांस मे सने होने के कारण शर्मा गयी थी या फिर काम में तल्लीन थी।

"तुमने क्या कहा?"

"मैंने कहा 'खुश रहो'।"

"इससे ज्यादा अक्लमदी की बात नही सूझी?" युवती बडबडायी।

युवक ने नाली फादकर जमीन पर पडा वेलचा उठा लिया और पास पानी में फेंकने लगा। जिद्दी पेरशान से यह बर्दाश्त न किया जा सका, उसने आखें चमकायी और शेरजाद से वेलचा छीनकर उसे जोर से पटक दिया।

"कामरेड टोली-नायक, जाकर अपना काम कीजिये। मैं आपके साथ अपने श्रम-दिन नहीं बाटना चाहती।"

"मैं तो तुम्हें बस पांस के छोटे-छोटे टुकडे करना सिखाना चाहता था।"

"मैं बहुत पहले सीख चुकी हू। आप फिक्र मत कीजिये। और अगर करने को कुछ नही रहा है, तो कुदाल उठाकर औरतो की मदद कीजिये, थकान के मारे शायद उनकी कमर टूटी जा रही है," लडकी ने गुस्से मे कह दिया।

शेरजाद ने आख दबाकर देखा कि टेढ़ी-मेढी क्यारो में उगे कपास के छोटे पौधो के बीच गिजेतार जोर-जोर से कुदाल चला रही है।

"अपनी सहेली पर रहम आ गया क्या? उसका पति मशीन-आपरेटर है, वही मुक्ति दिलाये अपनी पत्नी को कुदाल से।"

"और तुम खडे देखते रहना चाहते हो?" पेरशान उपेक्षापूर्वक हँस पड़ी। "ठूठ की तरह क्यों खडे हो? अगर खाली हो, तो कोई गाना या गज़ल सुनाओ,–दिल खुश हो जायेगा।"

वह नाली से नीचे की ओर फैले खेत में बह रहे पानी मे बराबर पांस मिला रही थी, पर इस एकरस काम से उसे ज़रा भी तसल्ली नही मिल रही थी। शेरज़ाद नाली के किनारे एक तरफ खडा, युवती को निहारता सोचने लगा कि पेरशान के सीने मे मा का नेक दिल धडकता है, पर उसका स्वभाव पिता की तरह हठीला, कठोर और दृढ है। अगर ऐसी लडकी प्यार करने लगे, तो जीवन भर के लिए करेगी। हमेशा वफादार रहेगी–जुदाई मे भी और मुसीबतों मे भी...

"मैं ने तो अपनी याददाश्त रूमाल में लपेटकर एक ऐसे आदमी को भेंट देने के लिए रख दी है, जो परिवार के प्रति अपने कर्त्तव्य भूल गया है," तेल्नी ने मीठी मुस्कान के साथ जवाब दिया।

सब तत्क्षण चुप हो गयीं गगाश बराबर के कमरे में नाश्ता कर रहा था और दरवाजा पूरा खुला हुआ था

पेरशान ने रोटी की तरफ बढ़ाया हाथ खींच लिया। वह अपने भाई से नाराज जरूर थी, पर लोगों के सामने उसका पक्ष लेना उसने उचित समझा

"अरी, चाची, बैंत सुनाते वक्त तुम्हारी जबान कितनी मीठी थी, लेकिन अब तुम्हारे मुह से मिर्च जैसे तीखे शब्द निकल रहे हैं।"

"अपनी मीठी जबान मैं तुम्हें सौगात में दे रही हू, बेटी, तुम इस्तेमाल करो उसे तुम सभी को ठीक ठहराती हो, किसी के मुह पर कड़वी बात, चाहे वह सच्ची क्यो न हो, नहीं कहती हो "

सरकस के पहलवान जैसे भुजदण्डोवाली मोटी औरत बीच में बोल उठी

"कल खेत में पानी देते वक्त मैंने तुम्हारे घर की बहू को देखा था। बेचारी पतझड़ के पत्ते जैसी पीली पड़ गयी है। कहीं बीमार तो नहीं है?"

"वह तो ईद के चाद की तरह दिखाई ही नहीं देती है," पड़ोसन ने हा में हा मिलाई। "कहीं हमेशा के लिए 'लाल झण्डा' में तो नहीं बस गयी है?"

"वहा अध्यक्ष ज्यादा भला है!" एक लड़की ने अपनी पड़ोसन के पीछे छिपकर द्वेषभाव से कहा।

पेरशान के गालो पर लाली आने और गायब होने लगी। गिझेतार ने सहेली पर दया करके सख्ती से कहा :

"बड़ी जबान चलाती हो! शर्म नहीं आती! अगर साथ्या का काम ही ऐसा हो तो? क्या सुना नहीं कि कारा केरेममोगलू के यहाँ जमीन में नमक बढ़ गया है? कई हेक्टेयर में। कैसी मुसीबत है यह! ज्यादा अच्छा होता, उपाध्यक्ष को अपनी जरूरतों के बारे में बताती," और उसने कुम्मैत घोड़े पर सवार होकर आये सलमान की तरफ इशारा किया।

उसने घोड़े से उतरकर लगाम चौकीदार को पकड़ा दी और बाकी चाल से बरामदे में आकर सबको स्वाद से भरपेट भोजन करने की कामना की।

"शुक्रिया!" गिझेतार ने सब की तरफ से जवाब दिया। "आओ,

हमारे साथ दस्तरख्वान पर बैठो, पर मुश्किल यह है कि हमारे पास कुछ नहीं है। हम तो सब्जियां न लेने ही वाली रहेंगी, पर मुझे न होने से कौर गले से नीचे नहीं उतरता।

"कैसी मज़ेदार औरत है! नन्हीं चाची से भी बुरी," [illegible] सलमान ने मुंह बनाया, पर इस बार गुस्सा नहीं। उसने शेरजाद को इशारा किया, जो सलमान के पास बैठा था और उसके मेजपोश पर मक्खन और रोटी उठाकर खा रहा था। [illegible] थीं, वे करीब एक दूसरे से सटे हुए बैठे थे। सलमान को बहुत गुस्सा, पर जाहिर नहीं होने दिया और मुस्कराकर [illegible] बोला

"आप लोग पार्टी सगठनकर्त्ता से पूछिये। इसका सर्वप्रथम कर्तव्य लोगों का ध्यान रखना। मुझे तो संस्कृति-भवन के निर्माण और बिजली के काम निबटाने है।"

नाराज सलमान की आवाज सुन कर कमरे से निकला और अपने ड्राइवर के पास चला गया।

"हा, खेत-कैम्पो मे अब दोपहर का गरम खाना तैयार करने का मौका आ गया है," शेरजाद ने स्वीकार किया। "बेशक, इसमे दोष मेरा मैं इनकार नही करता। हम लोगो ने हमारी औरतों और लड़कियो के कंधों पर इतना भारी बोझ डाल दिया है कि आश्चर्य होता है कि वे अभी तक खड़ी कैसे रह पा रही है "

पेरशान को यह अनुभव कर आश्चर्य हुआ कि सलमान से घृणा के कारण उसे सास लेने मे भी मुश्किल हो रही है। उसे उसकी हर आदत से वितृष्णा होती थी उस की विनीत मुस्कान से, सुराही से निकलती शराब की धार जैसी चापलूसी भरी आवाज से, कधे पर आड़े डाले गये फौजी अफसर के फील्ड बैग से और उसके असीमित आत्मविश्वास से भी। उसने जान-बूझकर उसे चिढाने के लिए हक्के-बक्के हुए शेरजाद के हाथो मे छिला और नमक बुरका हुआ अण्डा और मक्खन लगाया हुआ रोटी का टुकड़ा रख दिये।

"खाओ, खाओ, बिना मा के बिलकुल सूखे जा रहे हो," पेरशान ने उसी तरह अशिष्टता से कहा, जिस तरह ग्रामीण बालाए अपरिचितों के सामने अपने प्रेमियो से बात करती हैं। "सलमान से उम्मीद रखनेवाले तो उम्मीद करता-करता मर ही जाये हमारे सामूहिक फार्म मे क्या नहीं है. गोश्त भी है, हरी सब्जिया, तरकारिया और तेल सभी कुछ ... एक रकाबी सूप की लागत ज्यादा से ज्यादा साठ कोपेक या

आधा स्तवल पड सकती है। पैसा महीने के अन्त मे श्रम-दिनो के लिए मिलनेवाली एडवास की रकम से काटा जा सकता है। कितना आसान है!"

चारों ओर से इसके समर्थन की आवाजें आने लगी

"बिलकुल ठीक है!"

"बहुत अच्छा सुझाव है!"

"वादा करो, सलमान, कि इसका इन्तजाम कर दोगे!"

सलमान ने शान्त मुद्रा मे सिर नवाया।

"तुम्हारी बातों से तो, सालम, लगता है कि तुम्हे लेखा-परीक्षण समिति का सदस्य बना देना चाहिए। सर्दियों मे, चुनावों के समय मैं तुम्हारे नाम की सिफारिश जिला सोवियत मे प्रतिनिधि बनाये जाने के लिए करूगा दोपहर का गरम खाने का इन्तजाम होगा, जरूर होगा," उसने अचानक बात खत्म कर दी. "कल तक तो नही हो सकेगा, पर परसों जरूर हो जाएगा।"

ऊबड-खाबड कच्ची सडक पर हल्के-हल्के हचकोले खाती, झाडियो पर धूल के गुबार उडाती कार जा रही थी। सलमान ने रुस्तम की 'पोब्येदा' कार को पहचानकर फौरन तेल्ली चाची के खेत रवाना होने का निर्णय किया।

वहा वह कतारों के बीचे घूम-घूमकर आदेश पर आदेश देने लगा, कहने का मतलब है, वह पूरी तरह काम मे जुटा हुआ था।

कमजोर पौधो के इर्द-गिर्द की जमीन कुदालो

[illegible]-पतवार उखाड रही थीं। वे फुरती से, सुव्यव-

[illegible]ाम कर रही थी: पौधे इतने कमजोर थे कि सबके

[illegible]े चल रहा है, बहुत धीरे," रुस्तम ने दूर से ही कहा। "जरा रफ्तार बढ़ाओ। पौधे कमजोर हैं, इन्हे

[illegible] नहीं मिला -

[illegible] मे कुछ [illegible] थी, थकान महसूस हो

[illegible], और तेल्ली चाची बर्दाश्त

[illegible]

[illegible] काम कर रहे हैं, इसके बावजूद

[illegible] शुक्रिया चाचा... क्या यह तुम्हारे

[illegible] क्या मैंने तुम्हें टोका और समझाया

शाम हो चली थी, आकाश अब इतना नीला नहीं रहा, हल्का हो चुका था, मानो उसमें खेत और बाग प्रतिबिम्बित हो रहे हों। खेत में सूर्यास्त की सफेदी पट्टियां गहरी हरियाली की तरह खिंच रही है।

मोरजाद गेहूं के ऊंचे पौधों के बीच से निकल रही कच्ची सड़क पर लम्बे-लम्बे डग भरता चला जा रहा था। उसने सारा दिन खरबूजों व तरबूजों के खेतों, साग-बाड़ियों और मक्का के खेतों में बिताया था। उगे बड़े होते और रस से भरते फलों तथा अनाज के पौधों को देख खुशी तो हो रही थी, पर न जाने क्यों उसका दिल पूरी तरह खुश नहीं था। हर खेत में लापरवाही से काम करने के निशान नजर आते थे। लगता है लोग यही आस लगाये रहे कि मुगान की जमीन और मुगान का सूरज उनकी मदद करेंगे। ये वास्तव में कुछ समय तक मदद करते हैं, मगर सामूहिक फार्म में श्रमशक्ति फालतू जा रही है, मशीन ट्रैक्टर-स्टेशन की पूरी क्षमता का उपयोग नहीं हो पा रहा है, टोली नायक अक्सर कृषि तकनीक के नियमों का पालन नहीं करते हैं। सच कहा जाये, तो खुशी मनाने का कोई कारण ही नहीं था।

पगडण्डी वमन्त के खेत से निकलकर झुरमुटो मे घुस गयी, थोडी दूरी मे गुजरते कच्ची मडक मे धूल की बू ग्राने लगी, शेरज़ाद की रफ्तार बराबर धीमी होती जा रही थी .

केवल ग्रब जब उसकी मा फिर से लौट ग्रायी, तब शेरज़ाद की समझ मे ग्राया कि उन दिनो उसे मा के प्यार की कितनी कमी महसूस हुई। सकीना चाची उसका बहुत ख्याल रखती थी, पर फिर भी वह गैर थी, उसके हाथ भी   ग्रचानक न जाने क्यों उसका दिल तेज़ी से धड़कने लगा, मानो नाली के किनारे उगे हुए पुदीने के कारण। बहुत हो गया, क्या उसे केवल मा ही याद की सता रही थी, क्या वह ग्रब उसी के पास जा रहा है? उसने दबी ग्रावाज़ मे, बहुत धीरे-धीरे, मानो कोई उसकी ग्रावाज सुन लेगा, बैत गाना शुरू कर दिया, पर एक मिनट बाद ही ग्रनचाहे उसमे खो गया, निरन्तर ऊची ग्रावाज में गाने लगा, एकसार लहलहाते गेहू के खेत केस्मा-शिकस्ते* राग के मधुर गान मे मन्त्रमुग्ध हुए शान्त हो गये·

ऐ दोस्त, खूब भर के प्याला शराब दो,
यारो, उँडेलो, ग्रपने प्यालों को तुम भरो।
चाहो जो दोस्त बनना, बनो मेरे ग्रच्छे दोस्त,
होगी नही तो तुम से लडाई, यह जान लो!

एकाएक किसी ने झाडी से बाहर लपककर शेरज़ाद के कधे पकड लिये ज़ोर से पीछे खींचकर चिल्लाया "होप!" जगली फूलो की भीनी-सुगन्ध, ग्रपनी गरदन पर महसूस हुई गरम-गरम सासो ग्रौर खनकदार ने उसे बता दिया कि दुबकनेवाला कौन था। शेरज़ाद ने विरोध नही ' ग्रौर जैसे गिर रहा हो, झुका ग्रौर पेरशान का ग्रालिगन कर उसे लिया।

उसके गले मे पोस्ते के फूलो से गूथी माला पडी हुई थी, स्ट्रा-हैट की री पर लाल फूल चमक रहे थे।

वह ग्रशक्त ग्रौर थककर निढाल हुई-सी उसके हाथो पर लेटी हुई थी। दूर से मोटर के भोपू की ग्रावाज़ ग्रायी, पेरशान चौंक पडी। शेरज़ाद [?]वती को हौले मे जमीन पर रख दिया। पेरशान ने ग्रपना कुरता ग्रौर ठीक करके सास ली ग्रौर ग्राख दबायी:

---

* केस्मा-शिकस्ता – एक ग्राज़रबैजानी राग।

गठनकर्ता बनने के बाद तो वह बौरा ही गया है। ऐसे जिद्दी से रिश्ता कायम करना सगी बेटी को आग में झोंकने के बराबर होगा.. सत्यमान नम्र, आज्ञाकारी है, जीवन में अपना स्थान जानता है, बड़ों का आदर करना भी उसे आता है और अधीनस्थों से काम लेना भी। वह ऐश्माल और रुस्तम का सेवक हो जायेगा। लेकिन क्या द्वेषी लोग यह नहीं कहेंगे कि रुस्तम-कोशी ने अपने दामाद को उपाध्यक्ष बनाकर सामूहिक फार्म को अपने बाप की जायदाद बना लिया है? कोई बात नहीं, उसे किसी दूसरे काम पर लगाया जा सकता है। वैसे इसमें मनने की बात ही क्या है, अगर दामाद अपने पुराने पद पर ही रहे? शोर मचानेवालों और लफ्फाजों को तो किसी भी हालत में खुश नहीं किया जा सकता है ..

"खैर, तुम्हें क्या उसकी 'हां' कहने की उम्मीद है?" रुस्तम ने अप्रत्याशित नरमाई से पूछा।

"अल्लाह कसम, मुझे तो सिर्फ आपकी 'हां' की जरूरत है," सत्यमान ने जवाब दिया और उसे स्वयं भी अपनी दृढ़निश्चयता पर आश्चर्य हुआ।

रुस्तम फिर सोच में डूब गया।

"तुमने सब सोच-समझ लिया है या यह सनक तुम्हारे दिमाग में अभी ही आयी है? खबरदार रहना, अगर एक महीने बाद ही तुमने उसे आंसू बहाने को मजबूर ... अपने को मरा समझ लेना। मैं यह सहन नहीं ...

... ? क्या आप मुझे पहली बार देख ... बुरी बात सुनी? तुम बाप हो, ... गुलाम बनकर रहूंगा।"

... बनेगा," परिवर्तनशील रुस्तम ने अचानक ... "ओ ... बनने को तैयार ... , उसका ...

... पर दबाकर वह ... घबराहट में वह गया ... आता है, वह देखा ...

... हाथ फेरने लगा, ...

ा बनने के बाद तो वह बौरा ही गया है। ऐसे जिद्दी से रिश्ता
रना सगी बेटी को आग में झोंकने के बराबर होगा सलमान नम्र,
...ी है, जीवन में अपना स्थान जानता है, बडो का आदर करना
आता है और अधीनस्थों से काम लेना भी। वह परेशान और
...का सेवक हो जायेगा। लेकिन क्या द्वेषी लोग यह नहीं कहेंगे कि
...तीशी ने अपने दामाद को उपाध्यक्ष बनाकर सामूहिक फार्म को अपने
...ी जायदाद बना लिया है? कोई बात नहीं, उसे किसी दूसरे काम
...गाया जा सकता है। वैसे इसमें खतरे की बात ही क्या है, अगर
...अपने पुराने पद पर ही रहे? शोर मचानेवालों और लफ्फाज़ों को
...िसी भी हालत में खुश नहीं किया जा सकता है .

"खैर, तुम्हें क्या उसकी 'हां' कहने की उम्मीद है?" रुस्तम ने
...ाशित नरमाई से पूछा।

"अल्लाह कसम, मुझे तो सिर्फ आपकी 'हां' की जरूरत है," सलमान
...वाब दिया और उसे स्वयं भी अपनी दृढनिश्चयता पर आश्चर्य हुआ।

रुस्तम फिर सोच में डूब गया।

"तुमने सब सोच-समझ लिया है या यह सनक तुम्हारे दिमाग में
...ी ही आयी है? खबरदार रहना, अगर एक महीने बाद ही तुमने उसे
...रोने को मजबूर कर दिया, तो अपने को मरा समझ लेना। मैं
सहन नहीं करूंगा।"

"आप भी क्या कह रहे हैं, चाचा? क्या आप मुझे पहली बार देख
हैं? आपने कभी मेरे बारे में कोई बुरी बात सुनी? तुम बाप हो,
रुस्त हो, मैं तुम्हारी बेटी का गुलाम बनकर रहूंगा।"

"नहीं, बेटा, ऐसा नहीं चलेगा," परिवर्तनशील रुस्तम ने अचानक
स... मर्द बीवी का गुलाम बनने को तैयार
... की क़ीमत समझो, उसका
बने रहो।"

...न पर दबाकर वह
... में कह गया
...वक देता

... लगा, जब

लड़के ने हालांकि आवाज़ का जवाब दे दिया, पर आया नहीं। वह दिन-भर सूखी टहनियों को गूथकर बनाई गयी और सरकण्डे की छाजन-वाली गोशाला में हाल ही में ब्याई गाय के पास मंडराता भूरे रंग और गरदन पर सफ़ेद हार-से निशानवाले बछड़े को निहारता रहा था।

जैनब और माय्या को गोशाला में जाना पड़ा। वे चुपचाप खड़ी गाय को अपने बच्चे को चाटते देखती रहीं, जब कि बछड़ा, लगता था, जैसे उनके देखते-देखते बड़ा हो रहा है, वह अपने खपच्चियों जैसे पावों पर खड़े होने की चेष्टा कर रहा था।

"बढ़िया है," जैनब ने गर्व से कहा। "बढ़िया नसल की है! अगर मां पर गयी, तो दुधारू गाय बनेगी।" उसे अचानक याद आया और वह चिल्ला उठी: "चलो, खाना खाओ, अभी कारा चाचा माय्या को लेने आयेंगे। तुम्हें आज सिंचाई करनेवालों के साथ काम करना है।"

"अभी काफ़ी समय है," माय्या ने कहा।

"मेरे अब्बा हमेशा कहा करते थे, काम जल्दी-जल्दी करना चाहिए और खाना धीरे-धीरे खाना चाहिए। अगर मैं जल्दी करती हूँ, तो कौर गले से नीचे नहीं उतरता।"

बेटा गोशाला से निकलकर भागा, उसने जल्दी से नाली में हाथ-मुंह धोये और एक मिनट बाद ही वह शान्ति से बरामदे में बैठा था।

उन्होंने खाना शुरू ही किया था कि कारा केरेमोगलू की प्रीतिकर आवाज़ सुनाई दी.

"जैनब, माय्या, कहां हो तुम लोग? लोग इकट्ठे हो गये हैं।"

जैनब ने मेहमान से सोंधा पड़ा पुलाव खाने का अनुरोध किया: बहुत स्वादिष्ट बना है!

कारा केरेमोगलू ने इनकार कर दिया: उसने अभी-अभी खाना खाया है, हां, अगर पीने को कुछ खट्टी और ठण्डी चीज़ हो, तो दूसरी बात है। पर जैनब और माय्या को जल्दी करने की कोई ज़रूरत नहीं, श्रोता इन्तज़ार कर लेंगे, सिगरेट पियेंगे, गपशप करेंगे, और वह भी शहतूत के नीचे बेंच पर बैठकर सुस्ता लेगा।

माय्या अध्यक्ष के लिए ओवदुग* की एक प्याली लायी। कारा केरेमोगलू ने उसे पीकर आस्तीन से होंठ पोंछे और कह उठा:

---

*ओवदुग—खट्टी छाछ जैसा पेय।

३

मास्या किसी के सामने अपना दुखड़ा नहीं रोती, न उसने ...
होगा और न ही किसी से शिकायत की। वह मुस्कराने ...
शान्त व मदद करने का पर्याप्त साहस जुटा लेती थी। लेकिन ...
की देर होती कि उसके आंसू झरने लगते। उसे रात भर ...
दिखाई देते थे, गगास के साथ हुई पहली मुलाकातें, अपना ...
गमन – उसे सब ऐसा लगता, जैसे वह यह जागते में देख रही हो ...
मास्या नींद खुलने पर मुंह रजाई में डाले लगभग निश्शब्द ...
जैनब न सुन ले...

... कि मास्या को अपने घर में शरण देनेवाली जैनब को सब ...
पर वह कुछ नहीं कहती थी। वह स्वयं भी निराशापूर्ण दुख ...
थी और समझती थी कि मुसीबत में अकेला रह जाना ...
... होता है। लेकिन वह एक और बात जानती थी, यह उसे ...
...नू ने सिखाया था: केवल श्रम से शान्ति प्राप्त हो सकती है।
... शब्दों से किसी और का दुख दूर नहीं होता।

...क बार खेत से लौटने पर जैनब ने मास्या को तख्त पर मुंह के बल ...
...ती पाया।

"अरे, यह क्या, न दिन है, न रात और सोने लेट गयी?" उसने ...
...दिली से पूछा, हालांकि खुद उसका दिल दुख रहा था। "चलो ...
...डी में चलते हैं, क्यारियों में पानी देने में मेरी मदद करना।"

...य्या उचककर उठ खड़ी हुई और शर्माती हुई हंस पड़ी।

...गबाड़ी में वे झुटपुटा होने तक सब्जियों की निराई और ...
...रही, उसके बाद जैनब ने मास्या से प्याज, जलकुंभी, धनिया, ...
...ली तोड़ने को और खाना पकाने को कहा।

...बड़ी फुर्ती से काम करती हो!" ...ने प्रशंसा की। "कोई भी ...
... है कि तुम पुश्तैनी किसान ... लेना और तोड़ना चाहिए ...
... खाने में बहुत अच्छी ... , खाना खाने आओ!"

, उसका दम घुटने लगा। "अगर उसके पास न घर होता, न पैसा, खाने को रोटी, तब भी मैं अपने को सौभाग्यशाली समझ लेती। पर मैं कौन हूं? बिना घरवालों के, बिना रिश्तेदारों के परदेस में पड़ी मेरा दिल दूसरी औरत के पैरों तले रौंदा जा रहा है। ऐसे जीने का मतलब हो सकता है?"

"माय्या, सुनो, तुम जवान हो, पढ़ी-लिखी हो, दुनिया देख चुकी हो और तुममें अक्ल भी मुझ गवाई औरत से ज्यादा है," जैनब ने कहा। "लेकिन मैं कष्टों की राह से गुजर चुकी हूं। विश्वास करो, यह रास्ता उसी फाटक की तरफ जाता है और अगर वह तुम्हारे पीछे बंद हो गया, तो तुम फिर कभी न सूरज को देख सकोगी, न चांद को और न ही किसी आदमी को। तुम खुद कई बार कह चुकी हो कि प्रेम ही जीवन होता है। लेकिन क्या केवल पुरुष का प्रेम ही होता है? क्या श्रम के प्रति प्रेम से लोग सुखी नहीं होते? जरा ध्यान से सुनो, नाली कलकल करती क्या कहती है भूलो मत, तुम्हारी हमें जरूरत है! और जन्मभूमि के प्रति प्रेम? तुम्हें और मुझे चांद से भी प्यार है, आकाश से भी, बाग में फूल खिले पेड़ों से भी और खेतों से भी,—हमें उनसे भी सुख मिलता है।"

जैनब माय्या को कभी विवेकपूर्ण युक्तियों से, तो कभी स्नेहपूर्ण बातों से सान्त्वना दिलाने लगी, माय्या कुछ शान्त हो गयी। जैनब तभी गयी, जब उसे प्रगाढ़ निद्रा में निमग्न माय्या की एक समान सांसें सुनाई देने लगीं।

प्रभात धुपहला हुआ। जैनब प्रहाते में चिन्तामग्न घूमती-फिरती माय्या के साथ ऐसे बातें कर रही थी, जैसे कुछ हुआ ही न हो—जिन्दादिली और काम-काजी ढंग से।

खेत में अपने बारे में सोचने की फुरसत बिलकुल नहीं मिली—माय्या बिना थकान महसूस किये डग भरती एक खेत से दूसरे में, एक नाली से दूसरी पर जाती रही।

वह काफी देर गये घर लौटी, उसे वहां कोई नहीं मिला—शायद जैनब बेटे के साथ संस्कृति-भवन चली गयी थी। माय्या के अपने कमरे में कदम रखते ही उसे फूलों की अत्यन्त मादक सुगन्ध आयी, उसने बत्ती जलायी और देखा कि मेज पर लालों का, तड़ित-झंझा के बाद स्तेपी पर तने

आ जायेगा, फौरन हमारे बेटे को छोड जायेगी। इसका और कोई अंजाम नहीं होगा। लेकिन अगर गराश दूसरी बीवी के साथ घर बसा ले, तो भी मैं माय्या को नहीं भूलूंगी। उसे हमेशा अपना समझती रहूंगी।"

रुस्तम ने अत्यन्त दुख में मुह बनाते हुए कहा कि वह केवल कपास के खेत से जल्दी खर-पतवार को साफ कर डालने की चिन्ता मे ही डूबा रहता है। इस समय केवल एक कम्बाइन काम कर रही है, तीन खडी हैं- खराब हो गयी हैं। आम बात है। लोगो को गेहू की कटाई के लिए भेजा, तो कपास बरबाद होने लगती है, उन्हें वापस कपास चुनने भेजा, तो तरबूज़-खरबूजे मुरझाने लगते हैं। अध्यक्ष को हजारो चिन्ताए होती है, जब कि उसकी बीवी उसे शायर ग़रीब* का किस्सा सुनाने बैठ गयी है .

"मेरा दिल ग़म के मारे टूटा जा रहा है, गला रुधा जा रहा है," सबीना ने दर्दभरी आवाज मे कहा। "आखिर मैं तुम्हारे साथ अपना दुख न बाटू, तो और किसके साथ बाटूगी?"

"क्यो नही, क्यो नही, इसके अलावा बच्चो के सारे दुख भी मेरे ही मत्थे मढोगी।" रुस्तम ने गुस्से मे चाय मेजपोश पर छलका दी। "मैंने सोचा था, वे बडे होकर बाप के लिए सहारा बनेंगे। मुझे बस यही नसीब हुआ है.. इसका कभी अन्त नही होना।"

"*पर, कोशो, तुम ऐसे खयाल मन मे लाकर अपने को तडपाओ मत,*" पत्नी ने सलाह दी। "सब ठीक हो जायेगा।"

पत्नी की शान्तचित्तता से रुस्तम अपना धीरज बिलकुल खो बैठा।

"कभी रोती हो, कभी सीख देती हो। साफ-साफ कहो, तुम चाहती क्या हो?"

"कार निकालो और मुझे 'लाल झण्डा' छोड आओ, बहू को देखकर लौट आऊँगी।"

पत्नी ने चाद की तरफ इशारा किया, जो अपना क्षीण प्रकाश वृक्षो के शिखर पर बिखेर रहा था।

"आजकल चाद जल्दी सिर पर आ जाता है," सबीना ने बेफिक्री से कहा। "रात होने मे अभी बहुत देर है.. सब से अच्छा मौका है। माय्या घर पर होगी, दिन मे उससे घर पर मिलना मुश्किल होगा..."

---

*शायर ग़रीब—दो प्रेमियों के बारे में प्रचलित दत-कथा 'ग़रीब और सनम' का नायक।

इन्द्रधनुष जैसा, रंगबिरंगा विशाल गुलदस्ता रखा है। उसने फूलों को देख के पास लाकर अपनी आँखें मूद लीं।

यानी कोई माय्या को याद करता है, उसे प्यार करता है!..

४

सकीना के दो बच्चे हुए थे, लेकिन अगर उसके दस बच्चे होते, तो वह और भी अधिक सुखी होती। बच्चे को अपनी कोख में समाना, उसे जन्म देना और अपना दूध पिलाना, — भला इससे बढ़कर सुख कोई हो सकता है?

सकीना कहती थी कि हर मा पर जनता को गर्व होता है, वह ६ का आभूषण होती है। बच्चे की आवाज़ से — चाहे वह अपना हो या पर उसका हृदय वात्सल्य से ओत-प्रोत हो उठता था... बुढ़ा जाने पर सब पोते खिलाने के सपने देखती रहती थी। आज़रबैजानी लोकोक्ति में भी कहा गया है "बच्चे तो मीठे होते ही हैं, पर बच्चों के बच्चे उनसे ज्यादा मीठे होते हैं।" गराश के विवाह करते ही वह उस घड़ी का इंत करने लगी, जब वह पोते को पालने में झुलाने का सुख प्राप्त करे वह अक्सर कल्पना करती कि तब वह पति से कहेगी "ऐ, कौशी, मिठाई खिलाओ, आज नहीं तो कल तुम दादा कहलाने लगोगे।"

रुस्तम खानदान का घर छोड़कर जाते समय माय्या सकीना आशाएँ भी अपने साथ ले गयी।

अगर बहू नालायक होती, तो उसे घर से जाने देते समय सकीना दिल नहीं दुखता। उसे माय्या से बहुत लगाव हो गया था, और उसे जित ज्यादा बहू की याद आती, दिल में उतने ही जोर से हूक उठती।

अन्त में सकीना ने पति से दृढ़तापूर्वक कह ही दिया कि वह बहू से मिलना चाहती है।

रुस्तम का इरादा शाम की चाय आराम से पीने का था: घरवाली ने यह बात बहुत बेवक्त छेड़ी है।

"मैं वैसे ही नहीं जानता कि इस किस्से का अन्त कैसा होगा, और इधर तुम मेरे कान खाये जा रही हो!" उसने गुस्से में जवाब दिया।

"मैं तो, कौशी, अभी कहे दे रही हूं कि इस सबका नतीजा कैसा निकलेगा। बदचलन औरत कभी वफादार नहीं होती। कोई दूसरा पसंद

ठण्डक से तुम्हारा गुस्सा कुछ कम हो गया होगा। मैं जानना चाहता हूं : तुम्हें इसाफ मे विश्वास है या नही ? मेरी जिन्दगी चरागाहो में बीती है, मैं वही मरना चाहता हू।"

रुस्तम ने सिर झुका लिया, उसे दिन में जिला समिति के सचिव के साथ टेलीफोन पर हुई बात याद आ गयी। असलान ने पूछा था कि खेती का काम कैसा चल रहा है और चेतावनी दी थी कि कुछ दिनो मे भयकर सूखा पडनेवाला है, – उन्हे मिनट-मिनट की कीमत समझनी चाहिए, सिचाई ढग से करनी चाहिए और पानी की बूद-बूद की बचत करनी चाहिए। अन्त मे उसने उसे पशुपालन फार्म की समस्याओ का समाधान करने और साथ ही चरवाहे केरेम को वापस वहा लगाने की सलाह भी दी थी। रुस्तम ने सफाई देने की कोशिश की थी. इनचार्ज को इसलिए हटाया गया, क्योकि वे गम्भीरता से पशुपालन फार्म की समस्याओ का समाधान करने मे जुट गये हैं और उसके सचालन को सुदृढ बना रहे हैं . खड़खड़ाहट के बीच उसे असलान की अविश्वासपूर्ण हसी सुनाई दी थी. सचिव को अभी इन परिवर्तनो की आवश्यकता का विश्वास नही हुआ, अभी कुछ और बातें स्पष्ट करनी हैं, उनका गहराई में जाकर अध्ययन करना है। "यहा गहराई मे अध्ययन करने की जरूरत क्या है?" रुस्तम को आश्चर्य हुआ। "सब कुछ स्पष्ट है!" और उसने सोच लिया कि फिर अनाम पत्रों की बौछार होने लगी है जब तक वह मौन रहा, केरेम मुट्ठी मे दाढी मसलता रुस्तम के सिर के ऊपर से चादनी मे नहायी स्तेपी मे कही देखता रहा।

"अरे, कीशी, जिद मत करो," सकीना फुसफुसायी, "क्यो दुश्मनी मोल लेते हो ? सिर्फ नेक कामों से ही नाम होता है।"

रुस्तम जैसे नीन्द से जाग उठा, उसने तीखी आवाज मे पूछा :

"अच्छा, बताओ, तुम ईमानदारी से काम करोगे या फिर पहले की तरह अपनी चाल चलाने लगोगे ?"

"तुम्हारी बात मेरे दिल मे तीर-सी चुभ गयी है, कीशी," केरेम ने ठण्डी सास ली। "मैं जवाब देता, पर तुम्हारी उम्र का ख्याल आ जाता है। लेकिन एक न एक दिन तुम्हारी आखें खुल ही जायेंगी। तुम खुद देख लोगे कि तुमने कितना बुरा काम किया है।"

रुस्तम कृपापूर्वक हसकर बोला .

"उन्हें वहां होना चाहिए? सिंचाई के काम पर," रहीम ने समझदारी से जवाब दिया, जमाई ली और खिड़की बंद कर ली।

५

माय्या लालो का गुलदस्ता अपने होंठों पर दबाये बरामदे में खड़ी थी। अचानक सीढ़ियां चरमरायीं, पेरशान बरामदे में भागी आयी और बवण्डर की तरह माय्या पर टूट पड़ी।

"कितनी तड़प गयी हूं तुम्हारी याद में! लगता है तुम तो मुझे और मां को बिलकुल ही भूल गयी हो।" वह जवाब का इंतज़ार किये बिना बोलती रही। "अब्बा और मां कारा केरेमोगलू को ढूंढ़ने खेत में गये हैं, पर मैं बग़ीचे में तुम्हारा इंतज़ार करती रही। मैंने ठान ली थी कि चाहे सुबह तक बैठना पड़े, पर मिलूंगी ज़रूर। कैसी हो? क्या सचमुच अभी तक यहां ऊबी नहीं?"

माय्या मुस्करा भर दी। उसे पेरशान के साथ अच्छा लग रहा था, इस मुलाक़ात से काफ़ी ख़ुशी हुई, पर उसकी परी सदृश बरौनियोंवाली आंखों में उदासी की छाया झलक रही थी।

रुस्तम व सकीना जब खेत से लौटकर आये तो उन्होंने देखा कि माय्या व पेरशान बरामदे की सीढ़ियों पर एक शाल ओढ़े बैठी हैं और फुसफुसाकर बातें कर रही हैं।

"बेटी!" सकीना आह भरकर बहू की तरफ़ लपकी, माय्या के गाल पर आंसू की गरम बूंद गिरते ही [illegible] उठी।

रुस्तम [illegible] के साथ [illegible] दुआ सलाम की और तुरन्त कारा [illegible] पड़ा [illegible] तो, इनके बताने से पहले जैसे [illegible] पता [illegible] इसके अलावा भाषण देने की [illegible] रात में गेहूं की कटाई करते थे। [illegible] इसमें [illegible] प्रचारात्मक भाषणों से [illegible] अपने लोगों से कूड़ा-कचरा [illegible] ने रुस्तम को क्या जवाब [illegible] लगवा लेना चाहिए [illegible] नहीं जानता हो कि उसे

"अगर मेरी आंखों पर पट्टी बंधी होती, तो मैं कैसे देखता कि तुम
कैसे पशुपालन फार्म का प्रचार कर रहे हो।"

"तुम, चाचा, आदमी ईमानदार हो, पर न जाने किसने तुम्हारे कान
भर दिये हैं। तुम बेकार मेरा मजाक उड़ा रहे हो, मुझ पर ठप्पा लगा
रहे हो! मेरे बच्चा के मामुला न तुम भी अछूते नहीं रहोगे।"

"ठीक है, ठीक है, तुम हुसैन के पास जाओ," रुस्तम ने उसे टोक
दिया, "उससे कहना, वह तुम्हें काम पर लगा ले। लेकिन," उसने मुँह
मुद्रा बनाई, "अगर लापरवाही में फंसे, तो फिर खुद ही को दोष
तुम्हारे खानदान की यह कमजोरी है—पराये मामलों में टांग अड़ा
झूठी शिकायतें लिखने की।"

चरवाहे ने मिनट भर अध्यक्ष की तरफ एकटक देखा, पर कहा
नहीं, माथे पर टोपी खींची और धीरे-धीरे बाहर चला गया।

फाटक के पास उसे भागकर पहुँची पेरशान ने रोक लिया और
और कुछ लाले के फूल बढ़ाये।

"ये गारायोश के लिए हैं, चाचा!"

बेरेम के होंठों पर मुस्कान खेल गयी।

"तुम बहुत अच्छी लड़की हो, शुक्रिया!"

आधा घंटे बाद 'पोब्येदा' कार जैनब कुलियेवा के घर के बाहर
गाव में सन्नाटा छाया हुआ था, चादनी घास पर छिटक रही थी,
था जैसे वे नीली बर्फ से ढके डबरे हो।

"हम बहुत अच्छे वक्त पहुचे हैं," रुस्तम गाडी से निकलता
फुफकारा। "कारा घोड़े बेचकर सो रहा है, उसे शहनाई भी नही
सकती।" उसने हथेलिया मुह से लगाकर आवाज दी: "प्यारी ब
तुम्हारे मेहमान आये हैं!"

आवाज बगीचों मे गूंज उठी, पर किसी ने जवाब नही दिया।
के पास खड़ी पत्नी और पेरशान की तरफ मुड़कर रुस्तम ने हाथ
दिये। उसी समय खिड़की खुली और नीन्द से भरी आखें मलते हुए
ने झाककर देखा।

"आपको किससे मिलना है? मा से? अभी वह खेत मे हैं, क
।"

"कारा भाई अपना नाम अखबार मे छपाने की खातिर मरे जा
" रुस्तम ने मज़ाक किया। "मुन्ने, पर माय्या कहा है?"

उसे उसकी किसी को प्यार करने, किसी का प्यार पाने की उत्कट इच्छा से ईर्ष्या हो रही थी और उसने ठण्डी सास लेकर आगे कहा. "लेकिन पहली ही उमग को अपने पर हावी मत होने देना। लडका कितना ही अच्छा क्यों न हो, पहले उसे अच्छी तरह देख-भालकर आज़मा लेना, सचमुच प्यार करता है या नही? हम लडकिया भोली-भाली और बहुत जल्दी *विश्वास कर लेनेवाली होती हैं, इसीलिए तो आसू बहाती रहती हैं।"*

उसकी बातो मे अपनी क़िस्मत से शिकायत झलक रही थी और सवेदनशील पेरशान का हृदय सहानुभूति से भर उठा। उसने सोचा कि उसे किसी भी तरह माय्या को सान्त्वना दिलानी चाहिए और वह बडे उत्साह से झूठ बोलने लगी

"माय्या, सच, मेरी कसम, तुम्हारे जाने के बाद गराश सूख कर काटा हो गया है। वह तुम्हे बेहद प्यार करता है। कुछ दिन हुए मुझे वह बगीचे मे ले गया और उसने अपना दिल खोलकर मेरे सामने रख दिया, रोने लगा: 'बुरे लोगो का घर ढह जाये, मैंने बेकार अफ़वाहो पर विश्वास करके पत्नी को नाराज कर दिया ...'"

पेरशान को उस क्षण पूर्ण विश्वास था कि वह बिलकुल सच बोल रही है और उसकी बातो पर ही माय्या व भाई का सुखी जीवन निर्भर करता है। और युवती माय्या का हाथ अपने दिल पर रखकर बोलती रही ...

"कल घर चलते हैं! गराश ने कहा है 'अगर खेत से घर लौटने पर माय्या मुझे सोने के कमरे में नज़र आ जाये तो मैं चमत्कार पर विश्वास कर लूगा ...' चलोगी? 'दुनिया मे मेरे लिए मेरी माय्या से बढकर प्यारा कोई नही है!' उसने यही कहा था। चलोगी?"

माय्या भाप गयी कि पेरशान की बातो मे रत्ती भर भी सच्चाई नही है, लेकिन उसे युवती के दिल को ठेस पहुचाने की इच्छा नही हुई, उसने नरमी से कहा।

"चलो, सोने चलते हैं। सोच-समझ लेगे, अभी रात पडी है। कल दोनो को काम पर तो जाना है ..."

दोनो ने परो का गद्दा फर्श पर ही बिछा लिया और सो गयीं। भोर मे जब ज़मीन और पेडों से ठण्डक निकलती होती है, बहुत मीठी नीन्द आती है, लेकिन पेरशान चौंककर उठ बैठी, जैसे किसी ने उसे धक्का दे दिया हो। उसे किसी विपत्ति का पूर्वाभास हुआ। उसने घुटनो के बल बैठकर बगीचे मे झाका: वहा सलमान और रहीम खूबानी के घने वृक्ष के नीचे

माय्या की काली आखों में इतना क्रोध उमड रहा था कि सलमान [illegible]ली के फाटक की तरफ भागा, लेकिन टोकरी और पोटली भी उठा ले जाना नही भूला।

जैसे ही पीली पडी और गुस्से से कापती माय्या घर के अदर आयी, [illegible]रेशान खुशी से चिल्लाती उसके गले में हाथ डाल लिपट गयी।

"तुमने उस उल्लू को खूब अच्छा सबक सिखाया, क़ुरबान जाऊ तुम पर।"

६

रुस्तम को बताया गया कि कार्यालय में असलान, शराफोगलू और गोशातखा उसकी प्रतीक्षा मे हैं।

यह अदाज लगाने की कोशिश करते हुए कि सब एक साथ कैसे आये हैं, रुस्तम जल्दी से उनसे मिलने रवाना हो गया। अपने मोर्चे के साथी के साथ मिलने की उसे खुशी थी, पार्टी की जिला समिति के सचिव के आगमन से वह परेशान नही था: अनाज की फसले उठाने का काम एक प्रकार से ठीक ही ढग से चल रहा था . लेकिन गोशातखा 'नवजीवन' मे किस इरादे से आया है? वह शायद फिर किसी घाव को कुरेदने की कोशिश करेगा।

अगर सचिव काफी ऊपर चढे सूरज की तरफ इशारा करके कहेगा. "देर तक सोते हो, कामरेड अध्यक्ष," रुस्तम जवाब मे कह देगा कि वह रात की कटाई से तीन बजे लौटा था। जहा तक रात की कटाई का सवाल है, तो उसने उसे इसलिए बिलकुल नही शुरु किया है, क्योकि कारा केरेमोगलू सफलतापूर्वक उसका उपयोग कर रहा है, इसलिए भी नही, क्योकि शेरज़ाद ने इस पर ज़ोर दिया था, बल्कि इसलिए, क्योकि रुस्तम के पास पर्याप्त बुद्धि और अनुभव है।

लेकिन असलान रुस्तम को देखकर उसकी तरफ बढ़ा और उसने बिलकुल और ही बात पूछी.

"अरे, चचा, आंखो के नीचे कितने नीले निशान पड़ गये हैं! आखिर तुम सोते कब हो?"

"कटाई ज़ोरो पर होने पर सोने की फुरसत ही नहीं मिलती।" अध्यक्ष हस पड़ा।

"ऐसे मौक़ों पर ही तो नियम से काम करना चाहिए..." असलान

"तो मैं शाम को झाकता जाऊंगा," वृद्ध सिर नवाकर लाठी टेकता हुआ बाहर निकल गया, उसके पीछे-पीछे अन्य सामूहिक किसान भी चल दिये।

रुस्तम का मूड खराब हो गया. उसने सलमान से नजर मिलायी। लेकिन कुछ किया नही जा सकता था, उच्चाधिकारियो के साथ ढग से ही पेश आना चाहिए। उसने कृत्रिम मुस्कान के साथ सचिव से पूछा.

"शुरू कहा से किया जाये: अनाज से या कपास से?"

वृद्ध महत के साथ हुई बातचीत से अमलान भी अशान्त हो गया था। वह आखें दबाकर कही दूर देखता हुआ अपने पर काबू करके बोला कि शराफोगलू और गोशातख्त अपने-अपने काम करेगे, जब कि वह स्वय घर-घर जाकर सामूहिक किसानो का रहन-सहन देखेगा।

रुस्तम ने सचिव पर सरपरस्ती के अन्दाज मे दृष्टि डाली। ऐसा आदमी एक साल से ज्यादा नही टिक सकता। मुग़ान की जलवायु कठोर है, जबकि इस नौजवान का कोई ठोस सहारा नही है, इसका अवश्य ही चुनावो मे पत्ता काट दिया जायेगा।

"हा, तो, कामरेडो, हम यहा कार्यालय मे ठीक सात बजे मिलेगे," अमलान ने कहा।

रुस्तम को लगा कि इन बातो के पीछे कोई चाल है, शायद इनमे पहले से साठ-गाठ हो चुकी है और ये उसे किसी अचम्भे मे डाल देने के लिए एकत्र होने जा रहे हैं।

अपने विरोधियो की पहलकदमी को नाकाम करने के इरादे से उसने शराफोगलू से जोर से कहा:

"जरा कुरा के किनारे चलकर अपनी कम्बाइन पर एक नजर डाल लो. एक घटा काम करती है, पांच घटे खड़ी रहती है."

"हा, मैं सुबह नजफ को वहां मरम्मत करने रवाना कर चुका हू," शाराफोगलू ने शान्ति से उत्तर दिया। कुछ मिनट बाद उसवान को निर्माणाधीन सस्कृति-भवन दिखाते समय रुस्तम जीवत हो उठा, भावविभोर होकर भावी भवन की सुन्दरता का बखान करता रहा और खूब डींग हाकता रहा।

"काम, सचमुच बहुत अच्छा है, पर शरत् मे तुम्हें बैंक को पाच लाख रूबल लौटाना पड़ेगा," सचिव ने सरसरी तौर पर टिप्पणी की। "और श्रम-दिनो का भुगतान कैसे किया जायेगा? अविभाजित निधि का क्या होगा?"

"मेहरबानी करके चिन्ता मत कीजिये!" रुस्तम बह उठा। "ऋण अदा

"क्यों, तुम्हारे रोगी का क्या हाल है, यारमामेद?" असलान ने पूछा।
"तन और मन दोनों दुखी हैं।"
"तुम्हारा इलाज कर देंगे, यारमामेद, जरूर कर देंगे।"
"आपका साया हम बेसहारों के सिर पर हमेशा बना रहे!" और यारमामेद ने करीब-करीब जमीन तक सिर झुका दिया।
एकाएक असलान ने ठहाका लगाया और हाथ हिलाकर लम्बे-लम्बे डग भरता कार्यालय की ओर चल दिया, जहां उसकी मोटर खड़ी थी।
रुस्तम उस द्वयर्थक बात में कुछ नहीं समझ पाया, उसने भौंहें सिकोड़कर लेखाकार को फाइल लौटा दी और उसे खा जानेवाली नजरों से देखा दूर हो जा मेरी नजरों से जब वह असलान के पास पहुंचा, जिला समिति के सचिव ने उसे खीजभरी झिड़की दी
"यह क्या आदत है—चलते-चलते कागजात पर दस्तखत करने की? उनमें कोई ऐसा कागज भी रखा जा सकता है कि तुम्हें फिर बरसों पछताना पड़ जाये। चालाक को चालाकी से ही मात दी जा सकती है।"
रुस्तम ने सचिव को तसल्ली दिलायी· उसके कमचारी जानते हैं कि उनका वास्ता किससे पड़ रहा है,—उसके सामने कोई कागज पेश करने से पहले सौ बार उसकी जाच करते हैं।
असलान ने उससे बहस नहीं की।
अध्यक्ष का उत्साह अत्यधिक बढ गया और उसने गर्वपूर्वक घोषणा की कि महान अक्तूबर क्रान्ति की उनतालीसवीं वर्षगांठ के अवसर पर सामूहिक फार्म सभी मदों के सरकारी कोटे पूरे कर लेगा, संस्कृति-भवन का निर्माण सम्पन्न कर लेगा और नल व बिजली की व्यवस्था कर लेगा।
असलान फिर चुप हो गया, पर जब वे मोटर के पास पहुंचे, वह पूछ बैठा:
"रुस्तम-कोशी, तुम क्या करोगे, अगर तुम्हें मालूम पड़ जाये कि अनाम पत्र किसने लिखे हैं?
"उसका गला घोट दूंगा!" रुस्तम अचानक इतने जोर से दहाड़ा कि उसका गला बैठ गया।
यह इतना भयावह लगा कि असलान चौंककर एक ओर हट गया और उसके मुंह से केवल इतना निकला
"अच्छा! अच्छा!"

कर दिये जायेंगे और [illegible] में कम-से-कम दस लाख [illegible]
देंगे। पैसा कहां से आयेगा? इस साल सामूहिक फार्म इसका दस गुना [illegible]
कि अगस्त के बाद बाजार [illegible] की हालत खराब हो जायेगी। यह
है कि बड़ी-बड़ी [illegible] की [illegible] नहीं है, पर [illegible] में दौलत [illegible]
खराब भी हो रहा है ... "

अध्यक्ष ने कुर्सी का हत्थी थाम ली और मन-ही-मन सोचा: "मुझे [illegible]
मान लेना चाहिए, जमीन तैयार करनी चाहिए ... "

निर्माण-स्थल पर काम तेज़ी से चल रहा था, दीवारें काफ़ी ऊंची
चुकी थीं, ईंटों, तराशे पत्थरों, बजरी के ढेर लगे हुए थे, सीमेंट के
पड़े हुए थे। रुस्तम हाथ हिला-हिलाकर दिखा रहा था कि पुस्तकालय क
होगा, हाल कितना बड़ा होगा। ऐसा सब बाकू के थियेटरों में भी न
मिलेगा

अमलान तेवरियों में हंस पड़ा।

"बस यह संस्कृति-भवन महीने में उनतीस दिन खाली न पड़ा रहे!"

रुस्तम ने बुरा मानकर प्रतिवाद किया कि सामूहिक फार्म में शौकि
कलाकार मण्डली की स्थापना हो चुकी है, उन्होंने हाल ही में एक शानद
कंसर्ट आयोजित किया था, कामरेड कलन्तर उसमें आये थे और उन्हों
उसकी प्रशंसा की थी।

मोड़ पर यारमामेद का लम्बोतरा थोबड़ा दिखाई दिया और तत्क्ष
गायब हो गया।

रुस्तम के नथुने फूल गये, वह चिल्लाया

"ऐं, दुबक क्यों गया मुर्गी का पीछा करती लोमड़ी की तरह?"

यारमामेद अमलान और अध्यक्ष को झुक-झुककर सलाम करता औ
अपने न मुड़नेवाले पैरों से धूल समेटता उनके पास आया।

"हमारा लेखाकार है। लड़कियों से भी ज़्यादा शर्मीला है," रुस्त
ने परिचय कराया। "बिलकुल गऊ, शान्त और शिष्ट है ... "

"कहीं उस बादशाह का नाती तो नहीं है, जिसकी बेटी समुद्र
नर मछलियों के डर से नहीं नहाती थी?" अमलान ने व्यंग्यपूर्वक पूछा औ
उसके चेहरे पर वितृष्णा की ऐंठन फैल गयी।

"नहीं, वह सचमुच शर्मीला है ... " रुस्तम ने लेखाकार की तारीफ़
करते हुए यारमामेद से फाइल लेकर बिना दस्तावेज़ देखे उन पर हस्ताक्षर

मा किशोरों ने तेज धारवाले कुदालों से उसके कई टुकडे कर दिये थे, र घिनौने जानवर का हर टुकडा छटपटा रहा था, फड़क रहा था।

असलान ने स्त्रियों से दुआ-सलाम की, उन्हें मज़ाक में डरपोक कहा और जाकर नाली में हाथ-मुह धोने की सलाह दी।

एक तरफ ताने हुए तिरपाल के नीचे एक दूसरे को धकेलते, नन्ही-नन्ही क़मीज़ें पहने दो बालक घुटनों के बल चल रहे थे।

असलान को गुस्सा आ गया

"क्या शिशुशाला नही है?"

सलमान ने फौरन बताया कि शिशुशाला यहा से दस किलोमीटर दूर स्थित केंद्रीय खेत-कैम्प में है। बीमारी के कारण पीले पडे और धूप के प्रभाव से अभी सावले न हो पाये चेहरेवाली स्त्री उनके पास आयी, केवल सुगान के लिए अत्यन्त आश्चर्यजनक रूप से गोरी चमडी के कारण रुस्तम केरेम की पत्नी को पहचान पाया।

"यही है शैतान का खानदान!" उसने सोचा। "आखिर मैं कब तक हर कदम पर इन से टकराता रहूगा?"

"अच्छा, अच्छा," असलान ने उलाहनाभरे अदाज मे सिर हिलाया और अध्यक्ष को अपने पास आने का सकेत करके पूछा· क्या रुस्तम यह नही महसूस करता कि शिशुशाला भव्य सस्कृति-भवन से कही ज्यादा जरूरी है? यह अच्छी, बहुत अच्छी बात है कि वहा का मच बाकू के थियेटरो के मचो से बहुत बडा है, फिर भी

"अरे, भाई!" केरेम की पत्नी ने पीले पडे गाल पर हथेली रखकर कहा। "मुझे काम करते हुए आज दूसरा ही दिन हुआ है, मैंने जुड़वा बच्चों को यहा छोड दिया था. . सब गवाह हैं, अगर मैंने एक मिनट की भी देर की होती, तो साप ने हूरी को डस लिया होता। मैंने इसकी पुकार कैसे सुनी, अभी तक समझ नही पा रही हू! मैं इधर लपकी, पर हूरी साप की तरफ रेंग रही थी, और साप बच्चे की ओर। मैं इतने जोर से चीखी कि स्तेपी काप उठी। शुक्रिया इन किशोरों का, जिन्होंने फौरन भागकर आ इसके टुकडे-टुकडे कर दिये "

"तुम अपनी सास की उपटोली मे क्यो नही हो?" रुस्तम को आश्चर्य हुआ। "तुम वहा बच्चो को शिशुशाला मे भरती करवा सकती थी।"

"अरे, बाबा, मुझे कैसे मालूम हो सकता है कि मैं दायी तरफ चलू

ग्रीष्म के मध्य मे गरम दिन चल रहे थे। स्तेपी झुलस कर पीली चुकी थी, ऊंट की खाल जैसी लग रही थी, केवल सिंचित ज़मीन टुकड़ो पर घनी हरियाली थी, और अनुन्मूलनीय ऊंटकटारा और नाग धृष्टतापूर्वक सूरज की तरफ बढ रहे थे। धूल की नमदे जैसी मोटी मे अधढकी रास्ते के किनारो की झाड़िया धूसर नजर आ रही थी। देखने मे साफ और समतल लगता था धूल गड्ढो मे भर गयी थी, लेकि असलान का उसके साथ जिले के दौरे का आदी चालक सहज ज्ञान से का पता लगाकर आये क्षण गाड़ी के ब्रेक लगाता जा रहा था। खिड़की मे से ललछौंहा भूरी धूल के दमघोंटू गुबार उड़कर अदर आ थे। असलान को खासी आ गयी और उसने शीशे चढ़ाने को कह दिया दम घुटने से पसीने मे नहा जाना कही बेहतर होगा। पिछली सीट बैठे रुस्तम, शेरजाद व सलमान को सास लेने मे कठिनाई हो रही थी, आस्तीनो से अपने चेहरे पोछ रहे थे, — रुमालो को निचोड़ा जा सकता था।

सलमान की देख-रेख मे बनाये जा रहे ट्रासफोर्मर सब-स्टेशन का निरीक्षण करके असलान कपास के खेतो के लिए रवाना हो गया रुस्तम उसे अपने मत मे बढिया व सब से खराब खेत दिखाने का वादा किया। जब गाड़ी गूंगे हुसैन की विरासत छोटे व दुर्बल कपास के पौधो के न के पास से गुज़र रही थी, असलान ने अचानक मोटर रोककर दरवाजा खोल दिया, और नीचे कूद गया। उसके पैर घुटनों तक वहां जमी धूल तह में धस गये।

"क्या सचमुच गोशानाजा ने चुगली खायी है?" रुस्तम ने सोचा, बेधड़क [illegible] के पीछे-पीछे चलने लगा।

लेकिन असलान का [illegible] मे दिलचस्पी नहीं थी। वह यहाँ पूरी [illegible] बार-बार उसे गड्ढे का पार करके [illegible] अंदर पहुँच गया, [illegible] स्त्रियां [illegible] थीं। वे दो किशोरो को घेरे हुए थीं, जो बड़े [illegible] पर कुदाले मार रहे थे और बार-बार ये चिल्ला रही थीं

एक बार और, सिर पर मारो!

मारो, मारो, इस [illegible] को!'

यहीं से [illegible] खड़ी हुई [illegible] पर असलान [illegible]

को सुबह दुहा जाये, तो दूध का स्वाद आप कभी न भूलें ... चरवाहा केरेम ..." उसने बात शुरू की और फिर एकदम चुप हो गया।

असलान ने उसकी बात अनसुनी करके कम्बाइन के स्टियरिंग व्रिज पर खड़े नजफ की तरफ अपनी टोपी हिलायी।

"यह लड़का लड़का नहीं, आग है!"

"हां, बहुत शाबाशी का काम किया है इसने, आखिर फसल को बचा ही लिया। एक दिन की देर और हो जाती, तो गेहूं पूरा झड़ जाता।

उसने स्नेहपूर्ण दृष्टि खेत पर डाली। कम्बाइन तब तक दूसरे छोर पर पहुंच गयी थी और उसके चक्कर में अनाज ले रहे ट्रक खिलौनों जैसे छोटे लग रहे थे।

कम्बाइन के पीछे-पीछे चल रहे स्कूली बच्चे गेहूं की बालियां उठा रहे थे। शेरजाद ने गाराग्योज को रोका और उसका परिचय असलान से करवाया

"यह हूरी और परी की बड़ी बहन है। कितनी मेहनती है–पूरा एप्रन बालियों से भरा है।"

असलान ने बालिका के उलझे हुए घुंघराले बालों पर हाथ फेरा।

"अच्छा, यही गाराग्योज-खानम है! मेलक और गोशानखा इसे अक्सर याद करते हैं।"

धूप निरन्तर तेज होती जा रही थी। गीली कमीजें कंधों से चिपक गयी थीं। रुस्तम ने आंखें आकाश की ओर उठाकर शिकायत की

"बिलकुल दहकती भट्ठी है!"

"चाचा शुभ ग्रह से नाराज है!" असलान हंस पड़ा।

"खुश हो ही किस बात से सकता हूं? हमें मुगान में इतनी गर्मी और रोशनी की जरूरत नहीं है। आदमी परमाणु का भंजन करना, समुद्र की गहराइयों से तेल निकालना और ध्वनि की गति से आकाश में उड़ना सीख गया है। काश अब सूरज की गर्मी का कुछ हिस्सा अपने पड़ोसियों को देना सीख जायें, कम-से-कम केल्बजार जिले को ही।"

"ऐसा ही होगा," शेरजाद ने सिर हिलाया। "और बहुत जल्दी होगा।"

"तुम्हें इसका पूरा विश्वास है?" रुस्तम ने व्यंग्यपूर्वक पूछा।

"पूरा। आप सबर रखिये, यह कर दिखायेंगे। हमारे वैज्ञानिक इस समस्या का समाधान खोज रहे हैं।"

"हां, मैंने भी पढ़ा था," असलान ने पुष्टि की।

पड़ता था, कभी उसकी भौंहें सिकुड़ जाती थीं, तो कभी पाइप की नली का छोर चबाने लगता था।

"इसमें कोई शक नहीं," असलान ने कहा, "कि 'नवजीवन' इस वर्ष प्रगति करेगा, पर यह लम्बी छलांग नहीं होगी। उसकी समृद्ध क्षमताओं का विगत के वर्षों की तरह उपयोग नहीं किया गया, प्रबन्ध समिति और टोली-नायकों का सारा ध्यान कपास व अनाज की फसलों पर केंद्रित रहा, जब कि पशुपालन व साग-सब्जियों की खेती की उपेक्षा की गयी।"

शराफोगलू जब बता रहा था कि मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन इस वर्ष शरत् में खेतों में कितनी कपास चुनने की कम्बाइनें भेजेगा, सामूहिक किसान एक दूसरे को टहोके मारते हुए कानाफूसी कर रहे थे, फिर वृद्ध ग्रहन खड़ा हुआ और उसने अपनी लाठी जमीन में गाड़कर कहा

"हमारे सामूहिक फार्म में आलोचना और आत्मालोचना नहीं की जाती है। .."

यह शब्द सुनते ही रुस्तम चौंक उठा और उसने पाइप में इतने जोर से फूंक मारी कि राख का फव्वारा छूट गया।

"और इसके अलावा?" असलान ने पूछा।

लेकिन वृद्ध तब तक जमीन पर आलथी-पालथी मारकर बैठ चुका था, मुट्ठी में दाढ़ी ही मसल रहा था और आगे कुछ कहने को तैयार नहीं था।

भीड़ में उसके अनुमोदन की भनभनाहट होने लगी।

उसी समय कार्यालय के बाहर एक कार आकर रुकी, उसमें से कलक्टर बाहर निकला और निर्लिप्त व गम्भीर मुखमुद्रा में, जो शायद जिला कार्यकारिणी समिति के अध्यक्ष को शोभा देती है, एकत्र लोगों के पास पहुंचा।

सलमान ने अपनी कुरसी उसके लिए सरका दी।

असलान की प्रश्नात्मक दृष्टि देखकर कलक्टर ने स्पष्ट किया

"बाकू से टेलीफ़ोन आया था। हम ऊन का कोटा पूरा करने में पिछड़ रहे हैं। मुझे पशुपालन फार्मों में जाना पड़ा।" और उसने अपनी भूजी हुई आंखें मलीं।

बाकू से उसे कोई फोन नहीं आया था, लेकिन गूंगे हुसैन के पशुपालन फार्म में वह सचमुच गया था, वहां उसने छककर पी, सीक-कबाब खाये और फिर मेहमाननवाज नज़नाज़ के यहां चला गया, जहां शहतूत के तले ठण्डक में लेटकर सोता रहा। .

८

[illegible] के पास पहुँचे तब गर्मी कुछ कम हो गयी। [illegible]
म [illegible] हो गये। [illegible] व [illegible] पके [illegible]
बैठे [illegible] से बातचीत कर रहे थे। जब समनान और [illegible]
पास पहुँचे, सब ने उठकर सलाम किया।

"हम सब यहीं [illegible] से बातचीत करेंगे," समनान ने [illegible]
[illegible] की ओर [illegible] गयीं अनाज की फसलों ने हालाँकि उन्हें [illegible]
किया था, पर बातचीत का रुख न जाने किस तरह पलट जाये, यहीं [illegible]
एकाएक [illegible] ही लगने लगे। बेहतर होगा यहाँ कोई गवाह न रहे।

"यहाँ सबके [illegible] जमा होंगे और परेशान करेंगे।"

"हम उनसे नम्रतापूर्वक चले जाने को कह देंगे," समनान ने कहा।

लोग कुर्सियाँ, बेंच ले आये, सामूहिक किसानों में से कुछ तो घास पर ही पालथी-मारकर बैठ गये।

बातचीत शान्तिपूर्वक हो रही थी समनान ने अपने विचार बताये अनाज की फसलों की तारीफ की,—फसल बहुत बढ़िया हुई है, जो सिर्फ ही होती है, सामूहिक फार्म की सम्पदा और खुशहाली उसी से है। कपास की स्थिति काफी खराब है, लेकिन अभी भूल सुधारने, पौधों को अतिरिक्त पोषण देने का समय है, शेरजाद के खेत में पौधे तगड़े और बड़े हैं, उनके सिरों पर काफी शाखाएँ हैं, बोंडियाँ भारी और तनी हुई हैं। समनान की राय में शेरजाद की टोली की अनाज व कपास की फसल सबसे अच्छी होगी।

और तरबूजों, खरबूजों और सागवाड़ियों की हालत खराब है, इस बात में सन्देह है कि ऐसे मौसम में सब्जियों की हालत सुधर सकेगी, अब कितनी भी की जाये, कोई लाभ नहीं होगा। देर हो गयी है।

समिति के सचिव की बात सुनता हुआ रुस्तम कभी मुस्करा

"श-श! .." और सलमान की ओर मुड़ा। "और आपके खयाल में
है किसने लिखा है?"

"मैं कोई पक्की बात नहीं कह सकता," सलमान हकलाता और आँखें
जिसे डरता हुआ बुदबुदाया और उसने अपनी कांपती उंगलियों से चाकों
हो को ठीक किया।

"अच्छा, अच्छा!" असलान उठ खड़ा हुआ और कठोर स्वर में बोलता
रहा: "अनाम पत्र लिखनेवाला खुद जनता के सामने इसे स्वीकार करे।"
सब स्तब्ध रह गये. पत्तों में मच्छर के भिनभिनाने की आवाज भी
सुनाई देने लगी।

"मैं, मैं, मेरे मेहरबान!" और यारमामेद अपनी पतली, नमदार
गरदन निकालकर पंजों के बल भीड़ से बाहर निकल आया।

रुस्तम को लगा जैसे उसके पैर पत्थर के हो गये हैं, जमीन में गहरे
धंसे जा रहे हैं, जब कि तेल्ली चाची काली चील की तरह उस पर टूटकर
उसका कंधा दबोचकर चिल्लायी

"मैंने कहा था या नहीं—इस नीच से बचकर रहना?!"

"अरे, शर्माओ मत, आओ, आगे आओ", असलान ने वितृष्णापूर्वक
कहा, "अपना दोष स्वीकार करो। तुमने हमसे जिला समिति में क्या कहा
था?"

यारमामेद ने बड़ी मुश्किल से थूक सटका और थर-थर कांपते, हकलाते
हुए अपनी राय में अपनी चमत्कारी सफाई दोहराने लगा

"मेरे मेहरबान, हर आदमी में कुछ कमियां होती है कुछ शराब
के शौकीन होते हैं, कुछ ताश के और कुछ के होठों से सिगरेट अलग होती
ही नहीं... और मुझमें अनाम प्रार्थना-पत्र गढ़े बगैर नहीं रहा जाता।
मेरा स्वभाव ही ऐसा है! . "

"अरे, कुत्ते!" रुस्तम गरजा और कुरसी उलटकर, लपककर उसने
दोनों हाथों से यारमामेद का गला दबोच लिया। यारमामेद शेर के मुंह में
फंसे खरगोश की तरह किकिया उठा और उसका दम निकलते-निकलते बचा।
आस-पास खड़े लोगों ने बड़ी मुश्किल से चुगलखोर को रुस्तम के हाथों
से छुड़ाया,—यारमामेद के दांत बजने लगे, वह शिथिल हो गया और
भूसा भरे बोरे जैसा हो गया।

नजफ ने, उसकी पत्नी ने उसे कितनी ही क्यों न रोका, भागकर यार-

"श-श! .." और सलमान की ओर मुड़ा। "और आपके खयाल में उन्हें किसने लिखा है?"

"मैं कोई पक्की बात नहीं कह सकता," सलमान हकलाता और आंख उठाते डरता हुआ बुदबुदाया और उसने अपनी कांपती उंगलियों से बाकी मूछों को ठीक किया।

"अच्छा, अच्छा!" असलान उठ खड़ा हुआ और कठोर स्वर में बोलता रहा: "अनाम पत्र लिखनेवाला खुद जनता के सामने इसे स्वीकार करे।"

सब स्तब्ध रह गये: पत्तों में मच्छर के भिनभिनाने की आवाज़ भी गूंजती सुनाई देने लगी।

"मैं, मैं, मेरे मेहरबान!" और यारमामेद अपनी पतली, नसदार गरदन निकालकर पंजों के बल भीड़ से बाहर निकल आया।

रुस्तम को लगा जैसे उसके पैर पत्थर के हो गये हैं, जमीन में गहरे धंसे जा रहे हैं, जब कि तेल्ली चाची काली चील की तरह उस पर टूटकर उसका कंधा दबोचकर चिल्लायी

"मैंने कहा था या नहीं—इस नीच से बचकर रहना?!"

"अरे, शर्माओ मत, आओ, आगे आओ", असलान ने वितृष्णापूर्वक कहा, "अपना दोष स्वीकार करो। तुमने हमसे जिला समिति में क्या कहा था?"

यारमामेद ने बड़ी मुश्किल से थूक सटका और थर-थर कांपते, हकलाते हुए अपनी राय में अपनी चमत्कारी सफाई दोहराने लगा

"मेरे मेहरबान, हर आदमी में कुछ कमियां होती हैं कुछ शराब के शौकीन होते हैं, कुछ ताश के और कुछ के होंठों से सिगरेट अलग होती ही नहीं... और मुझसे अनाम प्रार्थना-पत्र गढ़े बगैर नहीं रहा जाता। मेरा स्वभाव ही ऐसा है! .."

"अरे, कुत्ते!" रुस्तम गरजा और कुरसी उलटकर, लपककर उसने दोनों हाथों से यारमामेद का गला दबोच लिया। यारमामेद शेर के मुंह में फंसे खरगोश की तरह किंकिया उठा और उसका दम निकलते-निकलते बचा।

आस-पास खड़े लोगों ने बड़ी मुश्किल से चुगलखोर को रुस्तम के हाथों से छुड़ाया,—यारमामेद के दांत बजने लगे, वह शिथिल हो गया और भूसा भरे बोरे जैसा हो गया।

नजफ ने, उसकी पत्नी ने उसे कितनी ही क्यों न रोका, भागकर यार-

असलान के चेहरे पर चिन्ता की रेखा झलकी, उसने गोशानखा व शराफ़ोग्लू से नजरें मिलायीं। कैसा बेशऊर आदमी है यह क्लार! बातचीत फसल के बारे में हो रही है, अविभाजित निधि के बारे में भी विचार-विमर्श करना जरूरी है। और वृद्ध का यह कहना कि 'नवजीवन' में आत्मालोचना का नाम-निशान भी नहीं है, कितनी चिन्ताजनक और अप्रिय बात है   उसने दो शब्दों में यह बात कह दी, पर स्पष्ट है कि वह बहुत दिनों से कहना चाहता था, हिचकिचा रहा था, हिम्मत जुटा रहा था, अपने दोस्तों से सलाह कर रहा था

सामूहिक किसान उचक उठे, शोर मचाने लगे, जबकि रुस्तम का चेहरा ऐसा लाल हो उठा, मानो उस पर किसी ने चेरी का रस मल दिया हो।

"तुम्हारे खयाल से हम पर अनाम पत्रों की बौछार कौन कर सकता है?" सचिव ने रुस्तम को सम्बोधित किया।

वह बिना सोचे-विचारे कह उठा

"तेल्ली चाची और उसका बेटा!" उसने पोगलर के पास खड़े शेरज़ाद पर नजर डाली और एकाएक चुप हो गया, पर गुस्से में आगे "और उनके अलावा कुछ और दिल के काले आदमी.. "

में से तेल्ली चाची की कर्णभेदी चीख गूंज उठी.

अच्छा हो मुझे जल्दी से जल्दी कब्र में दफना दो! क्या यहां मेरा क[illegible]

.. उसे रोक दिया:

"श-श! .." और सलमान की ओर मुड़ा। "और आपके खयाल में उन्हें किसने लिखा है?"

"मैं कोई पक्की बात नहीं कह सकता," सलमान हकलाता और आंखें उठाते डरता हुआ बुदबुदाया और उसने अपनी कांपती उंगलियों से काली मूंछों को ठीक किया।

"अच्छा, अच्छा!" असलान उठ खड़ा हुआ और कठोर स्वर में बोलता रहा: "अनाम पत्र लिखनेवाला खुद जनता के सामने इसे स्वीकार करे।"

सब स्तब्ध रह गये, पत्तों में मच्छर के भिनभिनाने की आवाज भी गूंजती सुनाई देने लगी।

"मैं, मैं, मेरे मेहरबान!" और यारमामेद अपनी पतली, नमदार गर्दन निकालकर पंजों के बल भीड़ में बाहर निकल आया।

रुस्तम को लगा जैसे उसके पैर पत्थर के हो गये हैं, जमीन में गहरे धंसे जा रहे हैं, जब कि तेल्ली चाची काली चील की तरह उस पर टूटकर उसका कंधा दबोचकर चिल्लायी

"मैंने कहा था या नहीं—इस नीच से बचकर रहना?!"

"अरे, शर्माओ मत, आओ, आगे आओ", असलान ने वितृष्णापूर्वक कहा, "अपना दोष स्वीकार करो। तुमने हममें जिला समिति में क्या कहा था?"

यारमामेद ने बड़ी मुश्किल से थूक सटका और थर-थर कांपते, हकलाते हुए अपनी राय में अपनी चमत्कारी सफाई दोहराने लगा

"मेरे मेहरबान, हर आदमी में कुछ कमियां होती हैं कुछ शराब के शौकीन होते हैं, कुछ ताश के और कुछ के होंठों से सिगरेट अलग होती ही नहीं... और मुझसे अनाम प्रार्थना-पत्र गढ़े बगैर नहीं रहा जाता। मेरा स्वभाव ही ऐसा है! .."

"अरे, कुत्ते!" रुस्तम गरजा और कुरसी उलटकर, लपककर उसने दोनों हाथों से यारमामेद का गला दबोच लिया। यारमामेद शेर के मुंह में फंसे खरगोश की तरह किकिया उठा और उसका दम निकलते-निकलते बचा।

आस-पास खड़े लोगों ने बड़ी मुश्किल से चुगलखोर को रुस्तम के हाथों से छुड़ाया,—यारमामेद के दांत बजने लगे, वह शिथिल हो गया और भूसा भरे बोरे जैसा हो गया।

नजफ ने, उसकी पत्नी ने उसे कितनी ही क्यों न रोका, भागकर यार-

हम इसके हाथों को सज़ा दे देंगे, इसको फटकार देंगे, शर्मिंदा करेंगे, पर इसे सामूहिक फ़ार्म से निकालना ज़रा जल्दबाज़ी होगी। यह हद हो जायेगी, कामरेडो, हद हो जायेगी! हमें लोगों को शिक्षित करना चाहिए, पर आप लोग फ़ौरन इस पर मुकदमा चलाने की बात करते हैं... नहीं, नहीं, कामरेडो, कर्मचारियों के साथ हमें मेहनत करनी चाहिए, सोच-समझकर धीरज से काम लेना चाहिए।"

"तुम्हारा, लेलेश, क्या यह ख़याल है कि इसे लेखाकार बनाये रखना चाहिए?" विस्मित रुस्तम ने पूछा।

"लेखाकार क्यों?" कलतर ने अपनी श्रेष्ठता की अनुभूति से कंधे उचकाये। "इसे कोई मामूली काम सौंप देना चाहिए, इस पर नज़र रखनी चाहिए और सख़्त निगरानी ..."

रुस्तम के लिए असलान का व्यवहार पहेली बना रहा... जिला समिति का सचिव एक बार भी ऊंची आवाज़ में नहीं बोला, नरमाई से बोलता रहा... बड़ा अच्छा आदमी मिला है इसे लिहाज़ करने का! अगर यारमामेद को नदी में न डुबाया जाये, तो कम-से-कम पैरों तले तो रौंदना चाहिए ही। उसने ऐसे नीच को अपना करीबी बनाया, उस पर कृपा की, हर तरह से खुश रखा। उसे अपने सफ़ेद बालों पर राख लगा लेनी चाहिए, शर्म के मारे स्तेपी में भाग जाना चाहिए! लेकिन रुस्तम को और भी अधिक आश्चर्य तब हुआ, जब असलान ने कलतर के यारमामेद को कठोर काम दिये जाने पर सामूहिक फ़ार्म में रखने के सुझाव को मान लिया।

"पर तुम खुद काम करना चाहते हो?" असलान ने पूछा।

कितनी आश्चर्य की बात है! वह इस नीच चुगलख़ोर की इच्छाओं का भी ख़याल रखता है! रुस्तम का ख़ून खौल रहा था। क्यों नहीं, अगर अनाम पत्र खुद असलान के बारे में होते, तो यह दूसरे ही ढंग से बात करता। अभी तो यह अलग खड़ा देखता रहना चाहता है... वाह रे, नरमदिल सचिव, जल्दी ठण्डा हो जानेवाले, — अगले चुनावों में इसका पत्ता ज़रूर ही काट दिया जायेगा।

"अगर आदरणीय चाचा इजाज़त दें," यारमामेद सकुचाता हुआ बुदबुदाया, "तो मैं पशुपालन फ़ार्म पर काम करने चला जाऊं।"

रुस्तम ने थूक दिया।

"मैं तेरा कोई चाचा-वाचा नहीं रहा। तुझे मरते दम तक माफ़ नहीं करूंगा कि मैंने तुझ पर इतना विश्वास किया, इतनी मेहरबानी की।"

"हमें किसी भी आदमी को बिलकुल गिरा हुआ नहीं समझ लेना चाहिए, यारमामेद को भी आजमायेंगे, उसके साथ सख्ती बरतेंगे, हमेशा उस पर नजर रखेंगे।"

मोटर के पास खड़े-खड़े असलान ने पूछा कि कलतर किधर जा रहा है। मालूम पड़ा कि कलतर-लेलेश का इरादा रात को एक पशुपालन फार्म में दूसरे में जाकर सामूहिक किसानों को निश्चित समय से पहले ऊन सरकार को देने के लिए तैयार करना है।

"हम रात को केन्द्रीय खेत-कैम्प में सोयेंगे," असलान ने कहा।

जैसे ही मोटर रवाना हुई, कलतर ने आत्मसन्तोष से मुस्कराकर चौड़ी पेटी से कसी तोंद पर हाथ फेरा और घृणापूर्वक रुस्तम व सलमान से बोला

"मैंने देखा, तुम लोग तो बिलकुल ही घबरा गये थे   मर्द कहलाते हो! अगर मैं न बचाता, तो बुरी तरह बेइज्जती होती। इसकी कीमत समझना!"

"हा, कामरेड असलान ने हद कर दी!" सलमान कह उठा। "हमें दिन-भर दौड़ाते रहे: जहां भी गये, हर जगह उन्हें सिर्फ कमियां ही नजर आयीं।"

"शर्म आनी चाहिए!" रुस्तम गरजा और कलतर से विदा लिये बिना अपने घर रवाना हो गया।

उस समय कच्ची सड़क पर धूल उड़ाती जा रही जिला समिति की मोटर में जोरदार बहस चल रही थी शराफोमत्रू और गोशानख्दा असलान को असम्य दयालुता के लिए उलाहने दे रहे थे, वे भविष्यवाणी कर रहे थे कि उसे यारमामेद के साथ इतनी नरमाई से पेश आने के कारण आगे पछताना पड़ेगा।

"ठहरिये, कामरेडो, ठहरिये," उसने मित्रों को शान्त किया। "मेरे खयाल से यारमामेद ने चुराये गये चीजों के बारे में सच लिखा था। लेकिन उन्हें चुराया किसने था? न तो उसने और रुस्तम की तो बात ही छोड़िये! इसीलिए मैं सोचता हूं कि हमें चौकन्ना रहना चाहिए, उस पर, गुगेईमैन पर और खास तौर से सलमान पर नजर रखनी चाहिए।"

कलतर-लेलेश शाम के खाने पर सलमान के यहां गया और रात को वहीं रुका। उसे वास्तव में रात को रास्तों में हचकोले खाने और स्तेपी की धूल फांकने की आखिर क्या जरूरत थी ..

६

गवीना की भविष्यवाणी सच नहीं निकली. नजनाज ने साथ नहीं छोड़ा। यह सच है कि उसने कलतर को लुभाने की कोशिश दुहराया नहीं, लेकिन वह दो पुरुषों को कैसे काबू में रख पा रही थी,- यह बात तेज नजरवाली अक्लमन्द तेल्ली चाची की भी समझ में नहीं आती। निस्सन्देह महत्वाकांक्षी नजनाज ने सोच लिया कि जिला कार्यकारिणी समिति के अध्यक्ष की पत्नी बनना साधारण ट्रैक्टर-चालक से शादी करने से कहीं ज्यादा फायदेमन्द होगा, और एक बार उसने कलतर को इशारा भी किया था कि अब उन्हें अपने सम्बन्धों को कानूनी जामा पहना देना चाहिए।

"खानम, जल्दबाजी मत करो, दो-तीन महीने में तुम्हारे लिए दूल्हा ढूँढ दूंगा, जिसके मैं पैर की धूल के भी बराबर नहीं हूं। मैं खुद तुम्हारी शादी करवाऊंगा।"

नजनाज ने कलतर को पाने की आशा न रहने पर अपनी सारी शक्ति गराश पर लगा दी, वह उसकी सारी इच्छाएँ संकेत मात्र से समझ जाती थी, उसके पैरों में सिर रखती रहती थी। खेत-कैम्प जाते समय वह अपने साथ अत्यन्त स्वादिष्ट व्यंजन ले जाती थी, उसकी खातिरदारी करती थी और उसकी ईर्ष्या का शमन करती थी कलतर बुड्ढा है, तोंदल है और उसके बाप की उम्र का है।

वह कल्पना किया करती थी कि गराश से शादी करके वह कैसे उसके पिता की नीली कार में बैठेगी, कैसे वे दोनों बाकू जाकर 'इन्टूरिस्ट' होटल में बाथरूमवाले कमरे में ठहरेंगे। वे दिन में हर दुकान में जायेंगे, छायादार चौड़ी सड़कों पर घूमेंगे, शाम को उनके सम्मान में दिये प्रीति-भोजों और थियेटरों में जाया करेंगे। हर जगह गुणी वर-वधू के पीछे-पीछे नीली 'पोबेदा' कार चलेगी, जाहिर है ड्राइवर रख लिया जायेगा, और नहीं तो क्या इधर कार ओपेरा थियेटर के बाहर रुकेगी। कामना पूर्ण पहले गराश प्रिय पत्नी को गाड़ी से उतरते समय सहारा देगा, जबकि नजनाज नायला की मखमली पोशाक, नाइलोन की झीनी जुर्राबें पहने कानों में हीरे जड़े कर्णफूल पहने, सुन्दर पति के हाथ में हाथ डाले हॉल पार करेगी, सब उसकी तरफ देख रहे होंगे.. नजनाज को सब प्रोफेसर की पत्नी समझेंगे। महिलाएं डाह के मारे पागल हो जायेंगी। वह

दुआ-सलाम तक नहीं करेगी। सच पूछिये, यदि चाहेगी – सिर झुकायेगी, चाहेगी – मुंह फेर लेगी...

हे मालूम होने पर कि माय्या जैनब के यहां रहने चली गयी है, ज को अपनी आशाएं पूर्ण होने का पूरा विश्वास हो गया। यहां तक व पड़ोसिनों ने उसे बताया कि मदीना ने वह को नहीं त्यागा है और मिलने गयी है, नज़नाज़ केवल मुस्करा दी "दिल छोटा मत करो, माम, मैं पीछे नहीं रहनेवाली उस मुंही शहरी लड़की के अपनी बेदरजनी करती रहो, पर शराब मेरी आगोश में नहीं निकल ।।"

घर में खूब खुशियां मनायी गयी, जब सलमान ने बताया कि रुस्तम गुआ भिजवाने की इजाज़त दे दी है। उसने गुप्त स्थान से पैसा नकर बहन को तोहफ़े खरीदने शहर भेज दिया। नज़नाज़ की आंखें में की आंखों जैसी चमक उठी. अब वह मदीना के गले में दुहेरी जंजीर देगी, उसका एक छोर उसके भाई के हाथ में होगा और दूसरा खुद हाथ में। माम ने ज़रा भी चूं की और वे कुत्ते के पट्टे से बुढ़िया रा घोंट देंगे। देख लेना! ..

उसने सलमान के दिये हुए पैसों से एक अंगूठी, एक हार, कर्णफूल दे और कुछ अपनी जेब में भी डाल लिये।

"अध्यक्ष की बेटी ऐसे तोहफ़े देखकर पागल हो जायेगी। अंगूठी कब भेजें?"

सलमान ने अपनी उंगलियों से कीमती चीज़ों को टटोलते हुए कहा "जल्दबाज़ी मत करो! रुस्तम बुड्ढा घोड़ा है और अड़ियल भी। न क्त काठी से गिरा दे। उस पर ग़म ज़रा हावी हो जाने दो, वह मैं कि हमारे लिए उससे रिश्ता कायम करना कोई बहुत इज्जत की नहीं है, फिर खुद ही दिन तय करेगा. "

जब यारमामेद का भण्डाफोड़ किया गया था, तो सलमान बुरी तरह ा गया था। उसने बहन को सारा सामान बांधकर चलने की तैयारी ने को कह दिया था। नज़नाज़ की समझ में कुछ नहीं आ रहा था कि जल्दबाज़ी का कारण है क्या। जब कि उसका भाई यारमामेद की पीढ़ियों को कोसता हुआ लाचार गुस्से में घर में फड़फड़ाता चहलकदमी रहा था।

सामूहिक फ़ार्म के जाने-माने अध्यक्ष, कम्युनिस्ट रुस्तम की आड़ में और फ़िलहाल कलतर का सहारा लेकर वे ख़तरे से साफ़ बच जायेंगे

"मैं इसी वक्त रुस्तम के घर मिलने जाती हूं," उसने कहा।

सलमान ने माथा पकड़ लिया और फुफकारा

"चुप रहो! रुस्तम के कानों में अफ़वाहें पड़ चुकी हैं, वह मुझे धमकी दे चुका है: 'अपनी बहन को काबू में रखो'!"

"तुम्हें मेरी तरफ़दारी करनी चाहिए थी, कहना चाहिए था ये बिल्कुल ओछी, गंदी अफ़वाहें हैं। सिर्फ़ हमारे गांव जैसी जंगली जगह में ही ऐसी नीच झूठी अफ़वाहें उड़ायी जा सकती हैं। कलतर-लेलेश से जाकर शिकायत करो, वह मेरी बेइज़्ज़ती नहीं होने देगा।"

"चु ऽऽ प रहो ऽऽ!" सलमान चिल्लाया। "या तो उनसे तलाक़ की नौबत ला दो, या यहां से अपने अस्पताल चली जाओ!"

भीषण हताशा के कारण वह तख़्त पर गिरकर लेट गया।

नज़नाज़ समझ गयी कि उसे जल्दी करनी चाहिए। वह अगले पूरे दिन कहीं न कहीं गराश से मिलने की आशा में सामूहिक फ़ार्म में भटकती रही। अन्त में निराश होकर उसने एक मुर्गी पकाई, रोटी बनाई, हरी सलाद तैयार की और उसे सफ़ाई से अपने लाल कामवाले प्रथम उपचार बैग में रख लिया, फिर कुछ सोचकर कोनक की एक नयी बोतल भी उसमें ठूंस ली।

जब सजी-धजी, पाउडर थोपने से गाल नीले-से किये, इत्र की भीनी ख़ुशबू फैलाती नज़नाज़ चौराहे पर पहुंची तो अंधेरा हो आया था। उसने सामने से आते ट्रक को रोका।

"तुम्हारे बलायें मेरे सिर! मुझे ज़रा गराश के पास छोड़ दो सुना है, किसी ट्रैक्टर-चालक का हाथ मशीन में आ गया ..."

बैग पर बना बड़ा-सा लाल क्रास देखकर चालक को विश्वास हो गया और उसने नर्स को सीधे खेत पर पहुंचा दिया।

गराश कम्बाइन पर काम कर रहा था, – उसने आज कोटे का दोगुना काम करने की क़सम खायी थी। उसने चिढ़कर मेंड़ पर खड़ी नज़नाज़ को देखा, आत्म-मौन्दर्य मिसरोंडी, पर फिर भी स्टियरिंग व्हील अपने सहायक को देकर नीचे कूद गया। स्तेपी का विशाल जहाज़ आगे चला गया।

"क्या कुछ हो गया है? क्यों आयी हो?" उसने रुखाई से पूछा।

नजनाज का उत्साह मन्द पड़ गया; उसने मन्द मुस्कान के साथ
प गयी।

"अभी खाया हुआ कहा!" गराश ने कहा।
"बेशक, मेरा यहां रात गुजारने का इरादा नहीं है," नजनाज ने
कुढ़कर मुंह फुला लिया। "पांचेक मिनट तो बैठ सकते हो न?"
गराश ने दूर आ पहुंची और अंधेरे में लगभग नज़र नहीं आ पा रही
बस्तियों की तरफ चिन्तातुर दृष्टि डाली। महायक भरोसेमंद लड़का है,
मेहनती है, उसे स्वतन्त्र रूप से काम करने की आदत डालनी चाहिए। और
पर ठण्डी सांस लेता मेड़ की तरफ बढ़ा, जब कि नजनाज वहां नाली के
ऊपर झुके बेद-मजनूं पेड़ के तले काम में जुटी हुई थी, अखबार पर खाना रख
रही थी, फिर उसने बोतल भी रख दी।
"घबराओ मत, कोई नहीं देखेगा, अंधेरा है!" उसने मजाक में
आवाज दी और कान्त का लबालब भरा प्याला गराश की तरफ बढ़ाया।
भुनी हुई मुर्गी की खुशबू सूंघ कर गराश ने महसूस किया कि
बहुत तेज भूख लगी है। नशीला पेय पीने से उसने साफ इनकार कर दि
उसे सारी रात काम करना है, सिर चकरा जायेगा   नजनाज ने ब
नहीं की, मनुहार नहीं की, हाथ से मुर्गी के टुकड़े कर-करके सबसे बढ़िया
टुकड़े उसे देती हुई शिकायत करती रही
"गली में निकलते शर्म आती है। तुम यह काम खतम करो, मैं विनती
रती हूं, मैं चैन की जिन्दगी के लिए तड़प रही हूं।"
"कौन-सा काम?"
नजनाज ने जवाब देने के बजाय उसे चूम लिया। गराश को अपने
बदन में सिहरन महसूस हुई, फिर भी उसने उसे धकेल दिया।
"मैं तुम्हारे बिना नहीं जी सकती। तुमने मुझे बदनाम करा दिया,
इज्जत मिट्टी में मिल गयी। अब मैं कहां जाऊं — ऐसी हालत में? जल्दी
लाक ले लो, हम शादी की रजिस्ट्री करवा लेंगे, घर बसा लेंगे,"
ज गराश का आलिंगन करती हुई फुसफुसायी।
राश में पिता से विरासत मिला अनम्य स्वभाव जाग उठा। नजनाज
म बांहों से निकलकर युवक चिल्लाया
दफा हो जाओ यहां से!"
र वह उससे दूर हो गया।
ी से पागल हुई नजनाज ने उसका पीछा करके उसकी आस्तीन

ड़ ली और बार-बार यही दोहराने लगी, मानो उस पर भूत सवार ो गया हो।
"अपनी जान ले लूगी और तुम्हे भी मार डालूगी, याद रखना "
"पिण्ड छोड़ो मेरा!"
"अच्छा, यह बात है!" नज़नाज़ ने उसके थप्पड जडने के लिए हाथ उठाया, पर गराश ने पीछे हटकर उसके हाथ इतने ज़ोर से दबाये कि वह घुटनों के बल गिर पड़ी।
"हाय, मार डाला, बचाओ!" नज़नाज़ धूल मे लोटती और भाबू नों से अपने गाल खरोचती चीख उठी, लेकिन गराश सिर पर पैर रखे कम्बाइन की तरफ़ भाग लिया था।
हृदयविदारक चीखें सुनकर कच्चे रास्ते से खेत से घर लौटती लडकिया भागी हुई आ पहुची
सारी रात गाव मे ताजा अफ़वाहें उडती रही

१०

रुस्तम अपनी मनपसद खाने की चीज़ शक्कर-से मीठे रसदार तरबूज का रसास्वादन कर रहा था, दिसम्बर मे भी, जब मुगानवासी उसका स्वाद भूल चुके होते थे, रुस्तम की मेज पर कभी-कभी खास तरीके से रक्षित रखा हुआ, सीधा खेत-से तोड़कर लाया हुआ-सा ताजा तरबूज दिखाई दे जाता था।
विशाल तरबूज आधा रह गया था, रुस्तम ने बुद्धिमत्तापूर्वक खाना द कर सुस्ताने का फैसला किया।
"बेटी!" उसने बरामदे की रेलिंग पर झुककर आवाज़ दी। "अपने मित्रो को बुलाकर तरबूज चखने को कहो . "
परेशान गिज़ेतार व नजफ के साथ आगन मे हम्माम का बाकी बचा हिस्सा बना रहे थे। पिछले कुछ दिनो मे गृहस्वामी के साथ इतनी अप्रिय घटनाएं घटी थी; उसे इतनी परेशानियां उठानी पडी थी कि वह गाव मे पहला हम्माम बनाने के अपने वादे के बारे मे भूल गया था और अब जब बेटी मित्रो को मदद करने के लिए बुला लिया था, तो उसकी समझ मे नही रहा था कि वह खुश हो या बड़बड़ाये
"अभी आयी, अब्बा, ठहरो!"

"हाँ, बीबी, बिनबुलाये मेहमान का स्वागत करोगे ?"
पेरशान ने अपना सिर पकड़ लिया
"मैं इस घमण्डी बौने को देख भी नहीं सकती। चलो, बगीचे
चलते हैं।"
युवा चलने बने।
रुस्तम को कलतर को देखकर लगा जैसे उस पर खौलता पानी ड
दिया गया हो। सकीना भी उदास हो गयी वह कलतर-बेलेश से कभी
ी आशा नहीं करती थी। वह किस लालच में यहां आया है ?
फिर भी गृहस्थ चुप रहे। मेहमान से यह नहीं कहा जा सकता
चले जाओ! " न चाहते हुए भी दिल थामकर उसका शिष्टतापूर्व
स्वागत करना होता है. .
सजीले, आडम्बरपूर्ण कलतर के पीछे-पीछे बरामदे में दो मर्द और
ोरतें आयीं। उनमें से एक, मोटी व ऊंचे कद की, अतलस के झालरदा
नपोश से ढका थाल उठाये हुए थी।
गृहस्वामी और गृहस्वामिनी ने एक दूसरे से नजरें मिलायीं अगु
ये हैं ..
थाल को विधिवत् मेज के बीच में रख दिया गया, मेहमान उस
री ओर बैठ गये और थोड़ी देर चुप रहे। अन्त में ऊंचे कद की मोट
रित बोली·
"अरे, चचा! बेटी अखरोट के पेड़ की तरह होती है हर राह चलत
सकी तरफ लालची नजरों से देखता है, जबकि अखरोट मालिक क
ोते है। आपको अपनी बेटी प्यारी है—आपका खजाना है, पर हमार
ुर्खो का कहना है कि बेटी बाप के घर में मेहमान होती है। देर-सवे
सका पति उसे अपने घर ले जाता है। मां-बाप का फर्ज सभी को मालू
· बस गलती न करें, लड़की की शादी अच्छे और लायक आदमी स
रें..."
"हां, अच्छे आदमी से ही करें!" अगुआ औरत को लम्बी नाक
टे होंठोंवाले मर्द ने टोक दिया। "सबसे अहम बात है कि आदमी दिल
ा कैसा है... मसलन मैं मिसाल के तौर पर, अपनी मुअज्जनी ने अपनी
ारी को लुभा सकता था? लेकिन वह मुझे समझ गयी, उसे मेरे स्वभाव
प्यार हो गया और कभी नहीं पछताती "
अगुआ औरत ने फ़ौरन हां में हां मिलायी·

उसी समय पेरशान ने आकर मेहमानों को सलाम किया, इजाजत मिलने का इंतजार किये बिना थाल पर से थालपोश उठाकर खोनचा* पर सरसरी नजर डाली, पर उसने मिठाइयों को नहीं छुआ, बल्कि अंगूठी व मोतियों के हार में दिलचस्पी दिखाई।

"अहा, कितने सुन्दर हैं! और महंगे भी होंगे, क्यों? मुझे कबूल है!"

अगुए खुश होकर बोल उठे, कलतर ने राहत की सांस ली और रिवाज के अनुसार किंकर्तव्यविमूढ़ बेटीवालों से जल्दी से मीठी चाय पिलाने की फरमाइश की.

"ठहरिये, ठहरिये!" पेरशान अचानक नखरीले अंदाज में चिल्लायी। "लेकिन सबसे जरूरी आदमी तो यहां मौजूद ही नहीं है!" और वह पूरे जोर से चिल्लायी "सलमान, सलमान, यहां आओ!"

रुस्तम को अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हुआ। कहीं खुशी के मारे पागल तो नहीं हो गयी है? लेकिन उसकी बेटी अविश्वासपूर्ण ढंग से मुस्कराते युवक का प्यार से कुछ कहती बरामदे में खींच कर ला रही थी।

"उफ, कितने खूबसूरत हो तुम, मेरे दूल्हे!" और उसने चाकू से खोखले किये हुए तरबूज के छिलके को उठाकर पूरे जोर से सलमान के सिर पर रख दिया। "तुम्हारे लिए मेरा शादी का तोहफा है! शाह का जैसा ताज! अब याद रखोगे कि लड़की की मर्जी के बिना अगुआ भिजवाने का क्या नतीजा होता है!"

सलमान के चेहरे और गरदन पर से तरबूज के रस की धारें बह निकलीं, उसकी बूंदें उसकी सफेद-सार कमीज के कॉलर के अन्दर भी चली गयीं, वह ऐसे थरथर कांपने लगा, जैसे उसके अन्दर बिजली दौड़ रही हो? और यह इतना हास्यास्पद था कि लिबेनार व पेरशान खिलखिलाकर हंसीं और उन्हें देखकर अगुए और मेजबान भी हंसने लगे, यहां तक कि कलतर गम्भीर मुखमुद्रा में भी हल्का-सा ठहाका लगाये बिन सका।

---

* [illegible] — थाल में रखी और पोशाकें से ढ

मनाती रही थी। लेकिन ठण्डे, प्रेम व स्नेह से वंचित, आर-पार हवा आने-जानेवाले घर में भी तो माय्या नहीं रह सकती थी।

"बहन, तुम फिर अपने आप से बातें कर रही हो! किसलिए!" हाथ में भूगोल की पाठ्य-पुस्तक लिए कमरे में भागकर पहुंचा रहीम कह उठा।

खिड़कियां खुली हुई थीं, गोशाला में गाय दुह रही जैनब ने सारी बात सुन ली और बेटे पर चिल्लायी:

"माय्या के पीछे मत पड़ो, उसे परेशान मत करो! बेहतर होगा कुछ सेब ही तोड़ लो!"

कहने की देर थी कि आदेश का पालन कर दिया गया एक मिनट बाद ही माय्या के सामने सेबों से भरी प्लेट रख दी गयी। वे विचित्र रंगों में रंगी चीनी मिट्टी की प्यालियों जैसे लग रहे थे। रहीम शाबाशी मिलने का इन्तज़ार कर रहा था। माय्या ने साहस करके, खट्टे रस के कारण मुंह न बनाने की कोशिश करते हुए सेब चखा और बोली

"कितना रसदार है!"

बालक का चेहरा खिल उठा, वह ख़ुशी के मारे उछल भी पड़ा।

"मैंने ख़ुद पैवंद लगाया था, जब मैं चौथी कक्षा में पढ़ता था। सचमुच बहुत बढ़िया है न?"

"हां, ख़ूब रसदार है। तुम क्या बनना चाहते हो?"

"सच्ची बात कहूं?"

"और क्या? सच्ची बात ही कहनी चाहिए।"

"तुम हंसोगी तो नहीं न?"

"अरे, तुम भी क्या!" रहीम माय्या को अच्छा लगता था। वह होशियार, फुरतीला था और मां को प्यार करता था। "काश, मेरे भी ऐसा ही बेटा हो!" वह आंखों में रात काटती हुई सोचा करती थी।

"मैं भी तुम्हारी तरह जल-इंजीनियर बनूंगा," लड़के ने फुसफुसाकर कहा। "मां अक्सर ज़मीन में नमक बढ़ने की शिकायत करती रहती थी नमक के कारण कभी पौधे मुरझा जाते थे, तो कभी बाग़ में सेब के पेड़। और तुम लवणकच्छों से नहीं डरती हो! तुमने उन पर विजय पा ली! और मैं सिर्फ़ सामूहिक फ़ार्म की ज़मीन को ही नहीं, सारी मुग़ान को नमक से साफ़ कर दूंगा! क्या तुम्हें विश्वास नहीं है?"

"हमें अभी यह पढ़ाया नहीं गया है " रहीम शर्मा गया।

माय्या ने तुरन्त उसकी मदद कर दी.

"तमीश की तराई मे फैली मारी मुग़ान का क्षेत्रफल सात लाख हेक्टेयर है, उसमें से छ. लाख हेक्टेयर हमारे क्षेत्र मे है और एक लाख हेक्टेयर – दक्षिणी आज़रबैजान मे।"

कारा केरेमोग्लू की आँखें उत्साह से खिल उठीं वह ये आँकड़े बचपन से जानता था, पर अपनी जानकारी के बारे में किसी को नहीं बताता था।

"उफ़ कितना असीम क्षेत्र है! नंगी आँख से पूरा नज़र भी नहीं आये, घोड़े पर पार करने की कोशिश की जाये, तो बेचारे कदमबाज़ के सुम घिस जायें! पर तुम लोगों को पता है, मुग़ान की ज़मीन पके बालों-सी सफ़ेद क्यों है? वह नमक से कैसे ढक गयी, इस बारे में एक दंत-कथा है और वह दंत-कथा भी लोगों ने रची है. "

रहीम ख़ुशी के मारे उछल पड़ा।

"कारा चाचा, सुनाओ, सुनाओ! मा, माय्या बहन, आप भी सुनिये!"

कारा केरेमोग्लू ने सफ़ेद-झक मेज़पोश से उलझी जैनब को ज़बरदस्ती बिठा दिया और माय्या को इशारे से बैठने को कहकर ठण्डी साँस ली:

"आज मेरा दिल ख़ुश है. ठीक है, यही सही, तुम लोगों को एक हज़ार साल, शायद एक लाख बरस पहले रची गयी दंत-कथा सुनाता हूँ।" उसने आँखें आधी मूँद, स्वप्निल ढंग से मुस्कराते हुए सुनाना शुरू किया. "बहुत पुराने ज़माने में यहाँ अग्वान क़बीला रहता था, वे बहादुर नेक और ईमानदार लोग थे। क़बीले के सरदार की बेटी सयानी हुई उसका नाम मुग़ाम था सारी दुनिया में कोई अक्लमंदी और ख़ूबसूरती में उसका मुक़ाबला नहीं कर सकता था। अग्वान क़बीले में कुल मिलाकर थीं तो एक लाख लड़कियाँ, पर उनमें से एक भी मुग़ाम के जोड़ की नहीं थी। क़बीले में एक लाख लड़के थे, बहादुर योद्धा, एक से एक बढ़कर सुन्दर और साहसी.. लड़कियाँ एक लाख नौजवानों में से किसी को भी आँख उठाकर देखते डरती थीं, नौजवानों की शौर्यपूर्ण व गर्वीली सुन्दरता पागल बना सकती थी। लेकिन अग्वान क़बीले के सारे नौजवान किसी की तरफ़ नहीं देखते थे – वे सब केवल मुग़ाम से प्यार करते थे। एक लाख नौजवा

ज़मीन पाले की तरह ढक गयी। शोकाकुल मुग़ाम के आंसुओं की धारें स्तेपी में बह निकलीं, कड़वा नमक ज़मीन सोख गयी, धारें नदियों में गिरकर प्यारे मुलास की खोज में समुद्र की ओर बहने लगीं। लेकिन मुलास लौटकर नहीं आया। दूर-दूर के देशों से आनेवाले कारवां यहां से गुज़रे पर ऊटवान रेगिस्तान में बिखरे हुए स्त्री के सफ़ेद बाल देखकर डर गये और उन्होंने अपने ऊंटों को वापस मोड़ लिया। गरम देशों से उत्तर की ओर लौट रहे पक्षियों के झुण्ड भी यहां आये, पर प्यास के मारे फटी किसी सुन्दरी के होंठों-सी ज़मीन को देखकर दुःखी मन वापस उड़ गये। अन्त में यहां एक बूढ़ा शायर आया। वह अभागिन के जलकर राख हुए प्यार और प्यास के कारण स्तेपी में बिखरे दिल को देखकर नहीं डरा, न ही वापस लौटा, बल्कि उसने उस बेचारी पर रहम खाकर उसके सम्मान में एक प्रेरणादायक गीत रच डाला।

एक लाख लड़कियों और एक लाख लड़कों ने यह गीत गाया, जब वे बूढ़े हो गये और इस दुनिया को छोड़कर चले गये, तो दूसरी एक लाख लड़कियों और एक लाख लड़कों ने इस अधूरे रह गये दतकथात्मक गीत को आगे गाना शुरू कर दिया। यही सदा होता रहेगा, – यह अमर गीत कभी ख़त्म और समाप्त नहीं होगा। और उस गीत का नाम है – मुग़ान।"

कारा केरेमोगलू ने सिर झुका लिया और काफ़ी समय तक मौन रहा। ख़ानिम जैनब, माय्या और लड़के को भी गरम शाम की शान्ति भंग करने का साहस नहीं हुआ। स्तेपी में, गांव से बहुत दूर नीली छायाएं फिसलती नीचे आ रही थीं, गहरा रही थीं।

"धन्यवाद, चाचा," माय्या ने धीरे से कहा। "अब मुझे यहां की ज़मीन से और भी गहरा प्यार हो गया! आप जानते हैं, चाचा, हमारे रहीम ने अपने जीवन का उच्च लक्ष्य निश्चित कर लिया है। मुग़ान का हमेशा के लिए लवण-कच्छों से उद्धार कराने का।"

"कितना ऊंचा लक्ष्य है!" वृद्ध ने प्रशंसा की। "जनता के लिए इतने ज़रूरी काम के लिए तुम्हें आशीर्वाद देता हूं। कभी पीछे मत हटना, घबराना नहीं और हमेशा बहादुरी से काम करना।" वह उठ खड़ा हुआ। "अच्छा, मैं घर चलता हूं, और, बेटियों, तुम आराम करो!" और उसने पुलकित हो उठे, ख़ुशी के मारे फूले न समा रहे लड़के के रेशमी बालों पर प्यार से हाथ फेर दिया।

२

छार की टाने पार करते ही माय्या की हैरानी के मारे चीख निकलते निकलते रह गयी। कुम्मैत घोड़े का थापकर सलमान कमीज के बटन खुले, बूट दूर पटक और पैर व हाथ पूरे फैलाये मुलायमदार सूखी घास के ढेर पर लेटा था।

माय्या ने पलटकर भाग जाना चाहा, पर ऐसा कर नहीं पायी।

"अहा, खानम, सलाम, सलाम!" सलमान ने इस तरह प्यार से कहा, मानो उन दोनों में पहले कुछ भी नहीं हुआ हो, जैसे माय्या ने उसे दुतकार नहीं भगाया हो, उसका अपमान नहीं किया हो। "आइये, बैठिये, सुस्ता लीजिये। मैं पशुपालन फार्म में आ रहा हूं। मुझे अचानक महसूस हुआ जैसे गरमी के मारे मेरा दिमाग ही पिघल गया है, इसीलिए मैं यहां बैठने और साथ ही कुछ मुंह में डाल लेने की सोची। यहां तो पहाड़ चरागाहों जैसा जन्नत-सा लगता है। बैठिये और जो खुदा ने दिया है ...ाइये।" उसने सफेद पोटली खोलकर देगची में रखा भुना गोश्त, रोटी हरी सलाद निकाले।

माय्या ने अपना ध्यान रखने के लिए उसे धन्यवाद दिया और खाने इनकार कर दिया।

"सुना आपने, मेरी कैसी बेइज्जती की गयी?" सलमान काठी के थैले ...तिल निकालता हुआ बोलता रहा। 'इजाजत है? सिर्फ एक प्याली बढ़ाने के लिए।"

'नहीं!" माय्या ने सख्ती से कहा।

क्या करूं, बिना इजाजत के पिऊँगा,' सलमान ने दुखी स्वर में कहा ...नेक की लबालब भरी प्याली मुंह में उलट ली। "गम के मारे ...।" उसने स्पष्ट किया। "बहुत गम है मुझे। कसम खाकर ..., नाजनाज़ बच्चे की तरह भोली-भाली है, उसने तुम्हारे खिलाफ ...त काम नहीं किया, उसे बेकार बदनाम किया गया। और यह ...छबीली परेशान खुद आखें नचानचाकर इशारे किया करती थी, ...। उफ!" उसने फिर बोतल अपनी तरफ सरकायी और नशीला ... उठा।

...लती हूं!" माय्या ने शुष्क स्वर में कहा और जाने के लिए ... सलमान मायूसी से चिल्लाया।

"माफ कर दो, खानम, माफ कर दो! हजार बार माफी मांगता हूं! किसी ने ठीक ही कहा है 'गधा भी शहद का स्वाद जानता है!' मैंने पहले भी तुमसे वादा किया था, और अभी कहता हूं तुम्हें सुखी रखने की खातिर मैं मरने को तैयार हूं! माय्या, मुझे गम खाये जा रहा है! ."

"चुप रहो! बंद करो यह सब!" माय्या ने वितृष्णा से कहा और मन-ही-मन अपने को सामान्य चाल से चलने को मनाते हुए, न कि भागने को जैसी कि उसे इच्छा हो रही थी, वह किनारे-किनारे डग भरने लगी, पर सलमान ने गुस्से से पागल भालू की तरह उसका पीछा किया और उसे कंधों से पकड़कर जमीन पर गिरा दिया। माय्या अपनी सारी ताकत जुटाकर उसकी पकड़ से छूटने की कोशिश करती जमीन से चिपक गयी, जब कि सलमान ने उसके मुंह पर शराब की बदबू छोड़ते हुए अपने घुटने से उसके जुड़े हुए पैरों को दबा दिया।

"मैं मैं चिल्ला पड़ूंगी!"

"चिल्ला, चिल्ला!" सलमान ने बड़ी उदारता से कहा। "कोई नहीं सुनेगा, सब खेत-कैम्प में खाना खा रहे हैं मेरी हो जाओ! मैं तुमसे शादी कर लूंगा, ख़ुदा की कसम, शादी कर लूंगा, फिर हम बाकू चले जायेंगे, गजा या कजाख! जहां का हुक्म दो—वहीं चले जायेंगे!"

माय्या ने अपना दायां हाथ छुड़ाकर उसके सपाट, थलथल गाल पर पूरे जोर से थप्पड़ जड़ दिया, उसकी आंखें पल भर के लिए मिलीं, और माय्या ने उसकी आंखों में वह पाशविक व हिंसक भाव देख लिया, जो वह एक बार तब देख चुकी थी, जब सलमान ने मरणासन्न लोमड़ी को घोड़े के पैरों तले रौंद दिया था।

उस समय स्तेपी में बोझिल, दमघोंटू निस्तब्धता छायी हुई थी, न कोई आवाज, न कोई सरसराहट, केवल नीचे नदी की धारा एकरस कलकल करती बह रही थी। माय्या समझ गयी कि कोई उसे नहीं बचायेगा। सलमान के घुटने के नीचे से जबरदस्ती अपना पैर निकालकर उसने उसके पेट में इतने जोर से लात मारी कि वह लुढ़ककर दूर जा पड़ा।

माय्या उलझकर बाल बिखेरे, फटे स्कर्ट में खड़ी चट्टान की तरफ भागी। "मेरा मर जाना बेहतर होगा!" उसके मस्तिष्क में विचार कौंधा, पर सलमान ने भागकर उसकी कमर को अपने ताकतवर फौलादी हाथों में जकड़ लिया, पर माय्या ने यहां भी उसकी पकड़ से छूटकर उसे धक्का

"हुआ यही कि चाची को आखिरकार मनुष्य की सर्वशक्तिमान बुद्धि पर विश्वास हो ही गया।" नजफ ने चिल्लाकर कहा।

चाची ने ज़ोर से उसके हाथ पर मार दिया।

"झूठी बुराई मत करो! मैं हमेशा बुद्धिमान लोगों को इज्जत की नज़र से देखती आयी हूं।"

तभी पेरशान भागी आयी और आंख मारती हुई सहेलियों से बोली

"पर तुम बुद्धिमान किसको कहती हो, चाची?"

"तुम जैसी को। मुझे दो साल पहले पता था कि तुम तरबूज़ का छिलका सरमान की खोपड़ी पर रख दोगी!" तेल्ली चाची ने तपाक से कहा। "पूछो, क्यों? क्योंकि मुझे तुम्हारी बुद्धि पर भरोसा था! "

पेरशान की समझ में नहीं आया कि वह सबके साथ हंसे या मुंह फुला ले। इस बीच तेल्ली चाची हवा में सरसराते सरकण्डों-से अपने स्कर्ट उठाकर खेत के दूरस्थ दूसरे छोर की तरफ रवाना हो चुकी थी, जहां गराश मशीन चला रहा था। नज़नाज़ के साथ सम्बन्ध समाप्त होने के बाद, जिसे बदनामी उठाकर गांव छोड़ना पड़ा था, गराश नामिलनसार हो गया था अगर कोई उससे बात करता, तो वह चुप रहता, पर तेल्ली चाची से पिण्ड छुड़ाना मुश्किल था। वह अपने विशाल वक्ष पर हाथ बांधे रखे, गराश पर बराबर नज़र रखे हुए, शान्तिपूर्वक मशीन के पीछे-पीछे चलती रही।

अन्त में युवक से रहा न जा सका, वह इंजन बन्द कर नीचे कूद आया, पर चाची कोड़े के चाबुक लगाते हुए जर्राह जैसी मस्ती से बोली

"मेरी सलाह ध्यान से सुनो, उसे मानना, न मानना तुम्हारा अपना काम है।"

"लेकिन जो कहना है थोड़े में कहो!" गराश ने कहा और इतने ज़ोर से दांत भींचे कि धूप में काले पड़े गालों की नसें फड़क उठीं।

तेल्ली चाची ने झोले में कपास का गाला डालकर हाथ पीछे और ... स्वर में अपना लम्बा भाषण शुरू कर दिया

"एक बार एक दुनियादारी के मामले में अनाड़ी लड़के को समुद्र में ... और वज़न के हिसाब से दुर्लभ मोती मिल गया। उसने ... पर डालकर उलटा-पलटा, फिर चारों तरफ नज़र दौड़ायी, ... रंग-बिरंगी कौड़ियां पड़ी हैं, चमचमा रही हैं, आंखें चौंधिया ... । तो बेरंग, बिलकुल पनीर की गोली जैसा था। बस

नहीं हिचकिचायेगा। फिर भले ही जेल आना पड़े यह इतनी भयानक बात नहीं होगी। बस उसे बदले का आनन्द लेना है।

एक बार अध्यक्ष सलमान को कपास के एक दूरस्थ खेत में ले गया। वह खेत गहरे पानी की नालियों के बीच फैला हुआ था, बोंडियों में कपास के रोयेंदार गाले हिम-कणों की तरह चमक रहे थे। सारे सप्ताह इतनी भीषण गरमी पड़ी थी कि अनखुली ढोंडिया भी चटक गयी थीं।

"अरे, यहां तो कपास का पूरा महासागर फैला है!" रुस्तम प्रसन्न हो उठा। "कम-से-कम दस हेक्टेयर में तो मशीन से चुनी जा सकती है। जब कि तुम लोग, ठस्स दिमाग के, कह रहे थे कि कपास अभी पकी नहीं है!"

"बोंडियां तो अभी खुली नहीं है," सलमान ने कंधा हिलाया। चापलूसी करने की मंशा न रहने से अब वह अध्यक्ष के साथ बड़ी मुश्किल से धृष्टतापूर्वक बोलने की इच्छा पर काबू करके बात करता था।

"खुली नहीं है, पर चटक गयी हैं। क्या देख नहीं रहे हो? इतनी तो अक्ल होनी चाहिए, मौसम कैसा है।"

"दिमाग में अक्ल ही तो कम है," सलमान ने जबरदस्ती मजाक किया।

"खेत को एक छोर से दूसरे छोर तक देख लो। जहां गड्ढे हों, ऊबड़-खाबड़ जगह हो, उसे समतल करने को कह दो," रुस्तम ने कहा। "और मैं कपास धुननेवाली मशीनें भिजवाने के लिए मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन टेलीफोन कर दूंगा। तुम्हें क्या सांप सूंघ गया है? सुनते हो?"

"कर लूंगा "

आसानी से उछलकर काठी पर बैठे रुस्तम को पीछे से घूरते हुए सलमान ने थूक दिया।

"जल्दी ही साठ का होनेवाला है, पर घोड़े पर नौजवान की तरह सवार होता है! शैतान बुढ़ाता नहीं है, सौ बरस तक जिन्दा रहेगा, अगर किसी ने इसकी खोपड़ी में कुदाल नहीं मार दिया " उसने सोचा और वह झल्लाता, पैर घिसटता खेत में चलने लगा।

नाली पर बने तंग पुल से थोड़ी दूरी पर उसे दो सामूहिक फार्मवाली औरतों और चारों तरफ आंखें चकर-मकर करते पकौड़े सी नाकवाले मर्द ने रोक दिया। औरतों ने पहले सलमान पर नजर डाली, फिर पकौड़े-सी नाकवाले पर और होंठ भींच लिये।

"क्या है?" सलमान ने खिन्न स्वर में पूछा।

[illegible] की [illegible] उसका कलेजा और भी बुरा हुआ [illegible] ने उसे बयान न करके सब कुछ मन में दबा लिया हो, मगर उसकी [illegible] [illegible] पहुंची है [illegible] [illegible] [illegible] हो।

"[illegible] कैसी [illegible] बयान कर रही है!" रुस्तम ने उसकी [illegible] बाबा और [illegible] विचारों से [illegible] [illegible] अन्य किसी भी [illegible] में ध्यान लगा। [illegible] पौधों की जिंदगी [illegible] के [illegible] [illegible] पूजने लगा।

निर्णय का उस पर [illegible] पड़ा।

'बेकार होगा, बाबा, आकर अपना काम करो! हम किसी तरह निबटा लेंगे दया नहीं देंगे'

पर रुस्तम की पीठ झुक गयी उसने किसी तरह कमर सीधी की और कमीज के पल्ले से चेहरा पोंछा।

शरद् ऋतु आ गयी थी, पर मुगान की गरमी कम होने का नाम ही नहीं ले रही थी, केवल शाम को सूर्यास्त के बाद स्तेपी में कुछ ठण्डक हो जाती थी। लेकिन झुटपुटा जल्दी ही हो जाता था और एकाएक गहरातर समतल प्रदेश पर मोटा आवरण गिरा देता था। पत्तियां बाकरेजी और चमकदार गुलाबी हाकर कुचित होने लगी थी और घास पर गिर रही थी। घास भी मुरझाकर सूखने लगी थी। कपास के खेतो में हरियाली थी, लेकिन वहा भी पौधे छोटे होकर सिकुड़ने लगे थे, उनकी शाखाओं की बाढ़ रुक गयी थी। खुदा न करे, कही रात का जोरदार ओस पड गयी, या उससे भी बदतर, बारिश हो गयी, तो कपास की क्वालिटी खराब हो जायेगी, योजना पूरी नही की जा सकेगी।

गरमी और निरन्तर तनाव के कारण रुस्तम कुछ ही सप्ताह मे काफी बूढ़ा गया। उसकी मूछो और ठोड़ी पर एक भी काला बाल न बचा आखो के नीचे खाल लटक गयी, दम फूलने लगा, उसे सास लेने के लिए अकसर मेड पर बैठना पडने लगा। वह अब सामूहिक किसानो के साथ पहले की तरह बात नही करता था, उन्हे हुक्म नही देता था, बल्कि उनकी मिन्नत करता था, उन्हे मनाता था।

नेल्ली चाची दुखी हो उठी

"लगता है, बुढ़ापा हर आदमी को उसकी असलियत बता देता है."

उसने यह बात मन मे नही रखी, सीधे रुस्तम के मुह पर कह दी, पर उसने उत्तर मे कुछ नही कहा, मुह फेर लिया।

कैंपाम के खेत से निकलकर रुस्तम ने मुड़कर स्तेपी पर नज़र दौड़ायी। पहाड़ों से ठण्डी हुई उत्तरी हवा का झोंका आया, कपास के पौधे लहलहा उठे, सूखी घास के गुच्छे उड़ने लगे, और सामूहिक किसानों ने चैन की सांस ली: अहा, कितना अच्छा है! लेकिन जहां कपास साफ़ करने की मशीन खड़ी थी, खेत-कैम्प के पीछेवाले खुले मैदान में धूल का गुबार उठा और वहां काम कर रहे लोग धुंधले आवरण से ढक गये। उनके नज़दीक पहुंचने पर रुस्तम को हृदयविदारक खांसी सुनाई दी, सामूहिक किसानों के चेहरे व कपड़े धूल और कूड़े-कर्कट से भर। ओर हो गये थे।

रुस्तम ने हाथ उठाया, मशीन रुक गयी।

"तुम लोगों का दम क्यों घोट रहे हो?" उसने मशीन-आपरेटर से कठोर स्वर में पूछा।

"धूल कोई मेरी मशीन से थोड़े ही उड़ रही है!" उसने जवाब दिया। "हमेशा ऐसा ही होता!"

"नहीं, हमेशा नहीं होता। मशीन को हवा के रुख की तरफ़ मोड़ो," रुस्तम ने सामूहिक किसानों को विस्मय में डाल देनेवाली नरमी में कहा और सबसे पहले कंधा लगाया।

दूसरे लोग उसकी मदद को आ पहुंचे और मशीन को मोड़ दिया। अब हवा धूल के गुबार, कूड़ा-कर्कट स्तेपी की तरफ़ उड़ाकर ले जाने लगी, और लोगों ने चैन की सांस ली।

"ऐसे काम करना चाहिए!" रुस्तम ने धूल झाड़ी और खेत-कैम्प के पास पहुंच गया।

६

शेरज़ाद को देर से कपास चुनने का कष्टदायक नज़ारा कई बार देखना पड़ा था। कपास के पौधे सिर झुकाये लगातार होती बारिश में खड़े रहते, ठिठुरी हुई औरतें कीचड़ में चलती हुई फूली हुई बोड़ियों से गालें चुनतीं। ऐसे में क़िस्म का खयाल कैसे रहे! चिपकी हुई सिरसिरी रूई में बदली कपास को क्रय-केन्द्रों पर ले जाया जाता है, ताकि योजना किसी तरह तो पूरी हो सके, जबकि वास्तव में फसल बरबाद हो जाती है और बहुत से लोगों की कमरतोड़ और प्राय कष्टदायी मेहनत बेकार चली जाती है।

रुस्तम को काफ़ी समय तक कपास चुननेवाली मशीन पसंद नहीं आयी,

यह उसका मजाक उड़ाता रहा। शेरजाद यह मानने को तैयार था कि उनके लिए वृद्ध के पास अपनी ठोस दलीलें थी मशीन रेशे को तोड़कर खराब कर देती थी, उसकी क्वालिटी बिगाड़ देती थी। लेकिन ऐसा अब इसी लिए होता था, क्योंकि मशीन की मरम्मत जल्दबाजी में, अन्तिम क्षणों में की जाती थी और उसकी ठीक से जाच किये बिना खेत मे भेज दी जाती थी। अब जब मशीनो मे काफी सुधार किया जा चुका था और वे शराफ और नजफ जैसे कुशल लोगो के हाथो मे आ गयी थी, तो स्थिति काफी बदल गयी थी क्रय-केन्द्रो से शिकायते अब उतनी नही आ रही थी–कपास की क्वालिटी मे गिरावट उतनी नजर नही आ रही थी।

यह मालूम पडने पर कि रुस्तम ने नालियो के बीच के तिकोने खेत मे बहुत बढिया किस्म की कपास मशीनो से चुनने का आदेश दे दिया है, शेरजाद को बडी खुशी हुई और वह जल्दी मे खेत के लिए रवाना हो गया। उसे रास्ते मे परिचित अध्यापक मिल गया और वे बातचीत करते न जाने कब दस किलोमीटर का फासला तय कर गये, पर गहरी और ढालवा नाली पर बने पुल के निकट पहुचने पर वे दग रह गये।

पकोड़े-सी नाकवाला बहार अपनी पत्नी व पडोसन के साथ मिलकर बडे जोरो से पुल तोड रहे थे, उसके फर्श के तख्ते उखाड रहे थे और शहतीर निकालकर किनारे पर फेंक रहे थे।

"यह क्या कर रहे हो? यह क्या कर रहे हो?!" शेरजाद अपनी आखो पर विश्वास न कर पाकर चिल्लाया।

पकोड़े-सी नाकवाला जडवत् रह गया, जैसे मौत का फरिश्ता उसके सामने आ खडा हुआ हो, उसने हड़बडाहट मे स्त्रियो की तरफ तिरछी नजरो से देखा और थूक सटका पर कुछ नही बोला।

"क्या तुम बहरे हो गये हो?" शेरजाद और जोर से चिल्लाया।

बहार की पत्नी निस्स्वार्थ भाव से उसकी रक्षा को लपकी

"ऊपर से हुक्म मिला है, भाई! हमें इससे क्या! हम कोई अपनी मर्जी मे थोडे ही.. हमसे कहा गया–इसकी मरम्मत करो, तो हम मरम्मत करने लगे।"

"पर किसने हुक्म दिया?" पार्टी सगठनकर्ता ने उनसे उगलवाने की कोशिश की।

औरत घबरा गयी, बगले झाकने लगी, जब कि बहार ने मुह बनाते

वृद्ध अध्यापक अपनी स्वाभाविक नरमी से, मानो कक्षा में किसी मंदबुद्धि छात्र से बात कर रहा हो, बोला

"अक्ल से काम लेना चाहिए था! तुम खुद ही देख रहे हो कि पत्तियाँ झड़ चुकी हैं, यानी खेत फसल उठाये जाने के लिए तैयार है। लेकिन मशीन यहाँ से गुजरेगी कैसे, अगर तुम पुल तोड़ दोगे?"

"ऐ मौलाना, तुम ज्ञान का सागर हो और दुनियादारी की बातें मुझसे बेहतर जानते हो," पकाड़े सी नाकवाले ने उसे बदतमीज़ी से टोक दिया। "अगर सबसे भरपूर फसलवाले खेतों में मशीनें चलेंगी, तो हमारी बीवियों के श्रम-दिन कैसे बनेंगे? ज़रा समझाओ तो सही!"

"तुम्हारी बेवकूफी पर तो उबली मुर्गी भी ठहाके लगा-लगा कर बेहोश हो जाये!" अध्यापक ने व्यंग्य किया। "अरे, कपास तो सामूहिक फार्म की है, यानी–तुम्हारी! जितनी जल्दी चुनेंगे, उतनी जल्दी पैसा कमा लेंगे। सामूहिक फार्म में काम करनेवालों की कमी है, अगर तुम्हारी बीवी मालम नहीं करती, बाजारों में नहीं घूमती-फिरती, तो ढेरों पैसा बटोर लेती।"

"बिना बाजार के जिन्दगी भी कोई जिन्दगी है?" बहार ने धृष्टतापूर्वक खीसें निपोड़ीं। "हम लोग बाजार में महनतकशों को खाने-पीने की चीजें मुहैया करते हैं।"

"दफा हो जाओ यहाँ से!" शेरजाद अपने को काबू में न रख पाकर चिल्लाया और बचे खुचे पुल पर नजर डालकर बोला "केन्द्रीय कैम्प में जाकर कह दो कि फौरन दो बढ़इयों को यहाँ भेज दें। फौरन!"

लेकिन जब बहार सिर कंधों में धमाये जल्दी-जल्दी जाने लगा, शेरजाद ने उसका पीछा करके सख्ती से पूछा

पर और आया। जब उसे विश्वास हो गया कि बहादुर ने [illegible]
की है [illegible] पार कर लिया।

शेरज़ाद गाड़ी से मैदान पर जब बिना कार्यक्रम रवाना हो गया, तो उसने अध्यक्ष को टूटे हुए पुल के बारे में बताया, रुस्तम ने चौकीदार को पकोड़े-सी नाकवाले बहादुर को फौरन उसके पास लाने का आदेश दिया।

बहादुर, उनींदा सूजी आंखें लिये रुस्तम के कक्ष में मौत की सजा सुनाये गये अपराधी की तरह आया। उसके बदन से काफी दूरी से शराब की गन्ध आ रही थी।

"बस इसी की कसर रह गयी थी।" अध्यक्ष गरजा। "सारी गर्मी काम से जी चुराता रहा, बलगाता रहा और तुझे अब मेहनत करने की खुशी है!"

"रुस्तम-चाचा," पकोड़े-सी नाकवाले ने कहा, "तुम खुद पहले मशीनों के बारे में क्या कहते थे? औरतें खेत के एक-दो चक्कर लगाकर कपास चुन लें, इससे क्या नुकसान हो जायेगा? फायदा ही होगा! और मरनमद मशीन बची-खुची कपास चुन लेगी।"

रुस्तम का क्रोध से दम घुटने लगा, पर उसने अपने पर नियंत्रण कर अप्रत्याशित शान्त स्वर में उत्तर दिया

"तुम्हें लोगों की बिलकुल पहचान नहीं है, मेरे प्यारे। मैं मर्द हूं! जैसा हूं, वैसा ही कब्र तक बना रहूंगा। मैं बीच बाजार खड़े होकर भी अपने विचारों को त्यागने का इरादा नहीं रखता हां, कपास चुननेवाली मशीन में अभी काफी कमियां हैं, और मैं इस बारे में बाकू में मीटिंग में खुले आम बोल चुका हूं मैंने डिजाइनरों और इंजीनियरों को भी खूब आड़े हाथ लिया। लेकिन इस समय भी यह मशीन उपयोगी और जरूरी है, क्योंकि वह औरतों को कमरतोड़ मेहनत से छुटकारा दिलाती है!"

"नहीं, मालूम होता है बूढ़ा अभी काम से नहीं गया है, ऐसा ईमानदार आदमी कभी काम से नहीं जा सकता!" शेरज़ाद ने सोचा। उसके दिल में सुखद आशा की अनुभूति हुई।

"बता, अंधे, जाहिल, किसने हुक्म दिया पुल तोड़ने का?"

बहादुर ने लापरवाही से कंधे उचकाये।

"सपाट सलमान, उपाध्यक्ष ने कहा था।"

"भागकर जाओ, सलमान को यहां घसीट लाओ, चाहे जिन्दा हो या मरा।" रुस्तम ने चौकीदार से चिल्लाकर कहा।

सलमान अपने यहा मेहमान बनकर आये कलतर के साथ आया। वे बूटो से ओर से धप-धप करते कक्ष मे दाखिल हुए, वे निश्चिन्त खड़े थे, पर रुस्तम की खौफनाक नजर से वे फौरन दब गये।

सलमान ने डर के मारे ऐसी बेतुकी और मूर्खतापूर्ण सफाई दी कि रुस्तम ने उसके एक भी शब्द पर विश्वास नहीं किया और उदास होकर बोला

"बेईमान! "

कलतर-लेनेश भी जल्दी ही नरम पड गया, बगलें झाकने लगा, पर साहस जुटाकर अपने हमजोली की तरफदारी करने लगा

"मामला साफ है! शेरजाद नेतृत्वकारी कार्यकर्ताओं और आम सामूहिक किसानो को अपना उल्लू सीधा करने के इरादे से एक दूसरे के खिलाफ भड़का रहा है। चलिये, माना कि कामरेड सलमान ने गलती की, समय का ठीक अंदाज नहीं लगाया। उसे उम्मीद थी कि बहार शाम तक गले हुए शहतीर को बदल देगा। इसमे ऐसी क्या खतरनाक बात हो गयी? हर कोई जानता है कि फुरसौला उपाध्यक्ष सामूहिक फार्म का भला ही चाहता था। सिर्फ शेरजाद सरीखे बेशर्म लफ्फाज ही इस मौके का अपने हित मे फायदा उठाने की कोशिश कर सकते हैं।"

"बहार की पत्नी का आने दीजिये," शेरजाद ने सुझाव दिया।

"हम जाच-कर्त्ता नहीं हैं," कलतर ने गर्व से कहा और अपने चमचमाते बूटो के मोज़े ठीक किये। "खेल खतम हो चुका है, अब दाव पर कुछ नहीं लगा है, और सच कहू, तो आपका पत्ता पिट चुका है, कामरेड शेरजाद।"

और उसने अपनी हाजिरजवाबी पर खुश होकर जोरदार ठहाका लगाया।

जानी-पहचानी हसी, जाने-पहचाने मजाक, हमेशा के पिटे-पिटाये विषय .. कलतर के व्यवहार मे जैसे कोई परिवर्तन नहीं आया, पर रुस्तम की पैनी नजर से परिवर्तन छिपा न रहा सका। कलतर के व्यवहार मे उसे आत्मविश्वास की कुछ कमी दिखाई दी· ऐसे क्षणो मे कायर मामूली-सी सरसराहट से चौंक उठते हैं. .

"तो सुनो, बहार," रुस्तम ने कलतर से तत्त्वान्वेषी दृष्टि हटाये बिना बहार से शान्तिपूर्वक कहा, "कल छः बजे अपनी बीवी के साथ पशुपालन फार्म पर पहुच जाना। नहीं पहुचे, तो बीस श्रम-दिनो का जुरमाना होगा।

अगर तुम्हें बाजार या चायखाने में देखा गया, तो तुम्हारा निजी प्लाट कम कर दिया जायेगा।"

"अगर, चाचा, बेकार ही ..." सलमान बोल उठा, पर रुस्तम की कठोर दृष्टि देखकर तत्क्षण चुप हो गया।

"लानत है मुझ पर तुम्हारे साथ गदगी में घसीटे जाने के लिए!" कलतर-लिलेश ने खड़े होते हुए कहा और इन सब बातों के प्रति अपनी पूर्ण उपेक्षा का भाव दिखाने के लिए उसने अंगड़ाई ली।

लेकिन वह कक्ष से बड़ी मुश्किल से अपनी भाग निकलने की इच्छा पर काबू करके, पर जल्दी-जल्दी निकला। उसे रुस्तम के मौन ने इतना डरा दिया था। उसके पीछे-पीछे उदास सलमान भी धीरे-धीरे निकल गया।

अभी तक किसी को मालूम नहीं था कि जिला समिति के ब्यूरो में कर्मचारियों के चुनाव में पार्टी सिद्धान्तों का उल्लघन करने के लिए कलतर को सख्त झिड़की दी गयी थी।

"उफ!" रुस्तम ने ठण्डी सास ली और कनखियो से शेरजाद की तरफ देखा। "लगता है, लड़के, हमारे सामूहिक फार्म में सारे काम फिर नये सिरे से शुरू करने होंगे ..."

७

कुछ दिन बाद, एक बार जब रुस्तम खेत से लौटा, उसे शराफोगलू, कलतर, शेरजाद और सलमान कार्यालय में बैठे मिले।

वृद्ध ने तुरन्त देख लिया कि सलमान का चेहरा नमकीन टमाटर जैसे सिकुड़ गया, जबकि कलतर उदास था, मानो उसे अपने ही जनाजे में बुलाया गया हो।

दुआ-सलाम हुई।

"बात यह है, रुस्तम," शराफोगलू ने इतनी सावधानीपूर्वक बात छेड़ी, मानो किसी बीमार आदमी का जिक्र हो रहा हो, "हमने जिला समिति में अमरान के साथ सलाह की और इस फैसले पर पहुंचे कि तुम्हारे सामूहिक फार्म के हिसाब-किताब की जाच करना ठीक रहेगा। तुम्हारा इस बारे में क्या ख्याल है?"

"ठीक है," रुस्तम बोला। "बहुत अच्छी बात है। पर अध्यक्ष कौन है ... लेखा-परीक्षा समिति का?"

सलमान एकदम पलटकर कलतर भैया की तरफ देखे बिना पैर घिसटता र चल दिया।

८

सस्कृति-भवन के निर्माण-स्थल पर कुल्हाडो की खट-खट, आरों की रॅं-सरॅं की आवाजें गूँज रही थी भवन की छत डाली जा चुकी थी, बढ़ई तख्तो पर रंदा फेर रहे थे, खिडकियो के चौखटे लगा रहे थे, पलस्तरकार दीवारो पर पलस्तर कर रहे थे, उन्हें हमवार कर रहे थे, इमारत के अदर रँगसाज़ रग कर रहे थे।

रुस्तम जिसके पास भी जाता, वह उसे तसल्ली दिलाता त्योहार तक काम पूरा कर लेंगे।

"अरे, जरा रफ्तार बढाओ, दोस्तो," रुस्तम कारीगरो को जल्दी करने को कहता। "त्योहार सिर पर आ गया है। इमारत को दुलहन की तरह सजाना है, ताकि सब देखते रह जायें।"

कितनी इच्छा हो रही थी उसे निर्माण-कार्य जल्दी से जल्दी पूरा करने की! वह मुख्य द्वार पर लाल फीता काटकर एक ओर हट जायेगा और अपने गाववालो को सम्बोधित कर कहेगा

"यह लीजिये चाबी, अब खुद ही सभालिये इसे! मुझ मे अब ताकत नहीं रही! मेरे आराम करने का वक्त आ गया है।"

वास्तव में रुस्तम महसूस करने लगा था कि उसका बोझ बहुत भारी है और उसे जमीन मे दबाये जा रहा है। वह वर्ष के अन्त मे सामूहिक किसानों से उसे अध्यक्ष के पद से मुक्त करने की प्रार्थना करना चाहता था, पर लेखा-परीक्षा समाप्त होने से पहले नही "सारा काम जमा दू, सब ठीक-ठाक कर दू, फिर सारे काम नये अध्यक्ष को संभला दूगा "

लेकिन आखिर किसे? यह विचार रुस्तम को कचोट रहा था। अब उसे सलमान पर विश्वास नहीं रहा था। "मैंने खुद उसे नियुक्त किया था, खुद ही हटा भी दूगा," रुस्तम सोचता। "अगर हर आदमी अपना अपना कूडा-करकट साफ करता रहे, तो हम दुनिया के लोग चैन से जीने लगें . ."

वह संस्कृति-भवन से कार्यालय में गया। वहां उसे शेरज़ाद, गोशानया और बूढ़ा चरवाहा बाबा मिले। रुस्तम ने शेरज़ाद के साथ सयमपूर्वक दुआ-

मेरी दायीं तरफ़ लेटा चरवाहा – हमारे यहा, खुदा माफ करे, एक कुछ सिर-फिरा लड़का है – इतने मज़े से ख़र्राटे लेता है कि उसके ख़र्राटों की झाड़ू से क्षेमेटा जा सकता है। और बायीं तरफ से एक मच्छर मेरे पीछे पड़ गया। गाल से उड़ाऊ, माथे पर जा बैठे, माथे से उड़ाऊ, तो नाक पर। और मच्छर शहनाई से भी ज़ोर से भन-भन कर रहा था ''

"चादर तान लेते," रुस्तम ने सलाह दी।

"जाड़े की बात कर रहे हो?" बूढ़े का आश्चर्य हुआ। "स्तेपी की रात ही तो चरवाहे की दौलत होनी है हा, तो मैं क्या कह रहा था?"

"मतलब की बात कहो, बाबा!" अध्यक्ष ने उसे जल्दी करने को कहा।

"अरे, मैं क्या भटक गया हू? काम की बात ही तो कह रहा हू। तो मच्छर पीछा नहीं छोड़ रहा था, मैं उठकर थोड़ी देर टहला, भेड़ो देख आया और तब मुझे याद आया कि गोला पत्थर के पास सुराही लस्सी रखी है। और लस्सी – चरवाहे की जिन्दगी होती है, आप लोगों मालूम होना चाहिए! लस्सी पी ली, फिर न गर्मी लगती है, न मौत फटकती है। पहाड़ी चरागाहों से जाड़े के पड़ाव पर लौट कर हाथ-धोये लस्सी पी और सारी बीमारिया दूर हो गयी, फिर चाहे अभी ती कर लो! अगर मैं किसी लेखक को लस्सी के बारे में जो जानता बताऊ तो बहुत ही लाभदायक किताब बन जाये।"

"अच्छा, फिर क्या हुआ? लस्सी पीने के बाद ''

"लस्सी पीकर भेड़ की खाल के पास लौट आया, पर मच्छर वही द था, सीधा गाल पर बैठकर खून पीने लगा। अब क्या करू? झाड़ी थाम गया और पीठ के बल लेट गया और अचानक मुझे फुसफुसाहट ई दी. झाड़ियो में पशुपालन फार्म का नया इनचार्ज और क्या नाम है न. ."

"यारमामेद?" रुस्तम ने धीरे से नाम सुझाया।

"तुम्हारे मा-बाप को जन्नत नसीब हो, हा, वही। मैं छिपकर उन बात नहीं सुनना चाहता था, मुझे क्या मतलब उनसे? पर उनकी बातें तीरों की तरह कान में घुसने लगीं। 'सुन, यारमामेद,' गूगे हुसैन ने , 'अब सलमान पर बिलकुल भरोसा नहीं किया जा सकता वह हम ो पशुपालन फ़ार्म लुटवाकर, हमें ही क़ब्र में धक्का दे देगा!' यारमामेद जवाब दिया: 'हा, हा, यह मेढ़क का बच्चा ठूसे जा रहा है, ठूसे जा है। पर इसका पेट ही नहीं भरता है! मैं मवेशियो के मरने की

रिपोर्टे दर्ज करते-करते ऊब चुका हू.. पर अब रेवड कहा है? सान्वन मे है?' 'नही अभी सारीकमीश मे कूरा तट पर।' हुसैन ने कहा। 'सुनो, यारमामेद चोरी की साठ भेडे बेचने से हमे दो-तीन हजार रूबल मिलेंगे, जबकि बाकी सलमान अपनी मूछो पर ताव देकर हडप जायेगा . ऐसे बदमाश की शिकायत करने का वक्त आ गया है।' यारमामेद सोचने लगा, फिर बोला 'बेशक, लिखना तो चाहिए, पर तब हम तीन हजार रूबल से भी हाथ धो बैठेंगे। हमे इन्तजार करना चाहिए, उससे काफी अच्छा हिस्सा हथिया लेना चाहिए, सिर्फ उसके बाद ही, जहा जरूरी हो, वहा शिकायत करनी चाहिए ''

रुस्तम की कुरसी चरमरा उठी, शेरजाद के लिए चैन से बैठ पाना मुश्किल हो गया कभी वह उचककर उठ जाता, कभी बैठ जाता, और गोशातखा की आखें शर्म से झुक गयी, होठ टेढे हो गये।

"यह है असलियत," वृद्ध ने एकरस स्वर मे कहा। "मुझे सुबह तक नीन्द नही आयी, जब मैने इस आदमी को देखा," उसने गोशातखा की तरफ उगली उठायी, "तो तुम्हारे पास आने की सोची "

"यानी साठ भेड़ें इस समय सारीकमीश मे हैं?"

"मुझे क्या पता?" बाबा ने शान से पीली धूसर दाढ़ी पर हाथ फेरा।

केवल पन्द्रह हजार रूबल ही दिये गये, शहतीर, तख्ते और ईंटें ढोयी तो सामूहिक फ़ार्म के ट्रकों मे गयी, पर न जाने कौन-कौन से ट्रक-चालकों को ग्यारह हजार रूबल का भुगतान किया गया। और इस के लिए कुछ और भी जाली बिल और रसीदें हैं। सामूहिक फार्म के लगभग एक लाख से ज्यादा रूबल का गबन किया गया है, पर जाच अभी पूरी नहीं हुई है।

"और सलमान क्या कहता है?" रुस्तम ने कुर्सी के हत्थे दबाते हुए भयानक फुसफुसाहट मे कहा।

"सारा दोष तुम्हारे सिर मढ़ता है' कहता है, तुमने उसे मजबूर किया, तुमने पैसा खाया, उसे मामूली-सा हिस्सा दिया, ज्यादा बड़ी रकम नहीं, सिगरेट के लिए भी काफी नहीं होगी ..."

"मैंने?!" रुस्तम ने भर्रायी आवाज मे कहा और उसका सिर सीने पर झुक गया।

"तुम फ़िक्र मत करो, दोस्त," शराफोगलू ने कहा। उसे रुस्तम पर दया आयी, लेकिन वह जानता था कि उसे सहानुभूति की भावना को अपने पर हावी नहीं होने देना चाहिए। "ये लिखित प्रमाणपत्र हैं ... तेल्ली चाची, वेरेस, गिज़ेनार, शेरज़ाद और दूसरे कई लोग तुम्हारी ईमानदारी की ज़मानत देते हैं।"

लेकिन रुस्तम को इससे भी शान्ति नहीं मिली। वह आखें उठाकर देखने डरता सोच रहा था कि उसने तेल्ली, उसके बेटे, शेरज़ाद और उन सबके खिलाफ, जिन्हें वह अपना शत्रु समझता था, कितना अक्षम्य अपराध किया है। और उसकी पत्नी? क्या सकीना ने उसे सही रास्ते पर लाने, चेताने की कोशिश नहीं की थी? क्या सकीना ने उससे बार-बार नहीं कहा था कि वह आस्तीन मे सांप पाल रहा है? ... जो कुछ हुआ उसके बारे में सोचता हुआ रुस्तम अपने को समर्थ भी अनुभव कर रहा था और असहाय भी, रौंदा हुआ भी और पुनर्जीवित भी।

"हां, मैं दोषी हू और मुझे सजा मिलनी चाहिए," उसने कहा और एकाएक गुस्से मे सिर झटका, पर फिर शिथिल हो गया।

सब आत्मग्लानि के कारण चुप थे।

शोशातखो अपनी सामान्य मुखमुद्रा में रहा: उसके चेहरे पर न विजयो-ल्लास था, न ही द्वेषपूर्ण प्रसन्नता का भाव।

"नहीं, रुस्तम, मुझे भी चोरी का शक नहीं हुआ था, मैं झूठ नहीं

काम के बाद वह फ़ौरन घर लौट आता और घंटों बरामदे में खड़ा अंधेरी रात में शून्य में ताकता रहता।

घर में वैसे ही गहरा अंधेरा छाया हुआ था। सकीना और रुस्तम चिन्ता में डूबे थे, मौन रहते थे, और पेरशान भी कुछ उदास रहती थी।

एक बार सकीना ने रुस्तम से हठपूर्वक कहा कि वह बहू को लिवा लाये, वरना गराश बिलकुल ही सूख जायेगा।

वृद्ध नाराज़ होकर बोला।

"तुम कितनी बार वहां हो आयी हो? इतनी बेइज्जती तुम्हारे लिए क्या कम है? अब मुझे भी शर्मिंदा करवाना चाहती हो?"

"हमारा लड़का बेमौत मर जायेगा।" सकीना ने गहरी ठण्डी सांस ली।

"लड़का!" रुस्तम व्यंग्यपूर्वक मुस्कराया। "तुम्हारा लड़का ख़ुद ही जाये। आदमी का अपमान करना आसान होता है, पर पत्नी से सुलह करना, उसे वापस घर लाना इससे भी कहीं ज़्यादा मुश्किल होता है, इसके लिए हिम्मत की ज़रूरत है।"

"हां, वह तुम पर नहीं गया है," मां ने शिकायत की, "उसकी उम्र में तो तुम आग जैसे थे।"

"मैं कुछ नहीं कर सकता," रुस्तम ने सिर झुकाकर कहा। "किसी का बेटा बाप पर जाता है, तो किसी का मां पर।"

"ग़लत बात है," पेरशान बेदर्दी से बीच में बोल उठी। "गराश बिलकुल तुम पर गया है, हू-ब-हू तुम्हारा जैसा है। वैसा ही ज़िद्दी है, मन-मौजी है, वैसे ही पत्नी की परवाह नहीं करता है।"

पिता ने उसकी चोटी पकड़ने के लिए हाथ बढ़ाया, पर पेरशान अपने कमरे में भाग गयी और दरवाज़ा बंद कर लिया।

फिर भी रुस्तम ने गराश को अपने पास बुलाया।

"बेटा," उसने दुबले और उदास युवक की ओर न देखने की कोशिश करते हुए कहा, "ज़रा कार लेकर जल्दी से कारा-केरमेगल के पास जाओ और ट्रक की धुरियां उधार मांग लाओ। कहना गोदाम से मिलते ही रुस्तम उन्हें लौटा देगा।"

गराश ने चुपचाप कहना माना, बरामदे से उतरकर खूंटी से ग्रेड की चाबी उतारी, लेकिन तभी सकीना भागी हुई आयी और उससे कपड़े बदलने को बोली।

गुज़र गयी हो और उसने जीवन में किसी परिवर्तन की आशा छोड़ दी हो।

सेब के पुराने वृक्ष की लगभग सारी पत्तियां झड़ चुकी थीं, और सुनहरी घासनी में भी बड़े-बड़े लाल सेब नज़र आ रहे थे। माय्या और गराश उसी के पास पर न समझ पाते रह गये कि बात कहां से शुरू की जाये, एक दूसरे के साथ कैसे पेश आयें। आंसुओं में काटी रातों में माय्या ने कितनी बार इस क्षण की कल्पना की थी, उसे आशा थी कि गराश शुद्धहृदय से शक्तिशाली पुरुष की तरह आयेगा, जिस रूप में वह उसे जानती थी, लेकिन अब वह उसके निकट, बगल में था, पर माय्या को उस पर विश्वास नहीं रहा था, उसे लगता था कि यह विश्वासघाती व्यक्ति फिर उसका मज़ाक उड़ाने आया है। और गराश न जाने क्यों चुप था, मानो उसे आशा हो कि सुलह का पहला कदम माय्या उठायेगी।

"अच्छा, बोलो, तुम क्या चाहते हो?" उसने रुखाई से कहा।

गराश ने सेब की डाल अपनी तरफ खींच ली।

"मैं क्या कह सकता हूं? मैं दोषी हूं, सारा दोष मेरा है "

उसे आशा थी कि इस स्वीकारोक्ति के बाद पत्नी उसका माफ़ कर देगी और वे खुशी-खुशी घर लौट जायेंगे, पर माय्या को लगा वह इस समय भी कोई चाल चला रहा है, ढोंग रच रहा है।

"दोषी तुम नहीं, मैं हूं," उसने कटु स्वर में कहा। "हां, हां, चुप रहो! मैं भोली-भाली थी और नहीं जानती थी कि प्यार के स खिलवाड़ किया जा सकता है, कि मर्द के सीने में दो दिल होते हैं ए जोशीले कसमों-वादों के लिए, दूसरा–दगाबाजी के लिए।"

उसकी आंखें लाल हो रही थीं, आवाज़ में सख्ती झलक रही थी लेकिन गराश ने अभी आशा नहीं छोड़ी थी।

"मैंने तुम्हारे दिल को ठेस पहुंचाई, लेकिन मेरी ज़िन्दगी में भी ज़हर घुल गया, मुझे बिलकुल चैन नहीं मिल रहा है, मुझे माफ़ क दो .."

माय्या पर अपने अपमान, निराशा में काटे दिनों की यादें एक बार फिर हावी हो उठीं. उसे सुलह करना कल्पनातीत और अपमानजनक लग रहा था।

"चले जाओ!, धोखा सिर्फ़ एक बार दिया जा सकता है। मैं तुम्हें देखना नहीं चाहती!"

गराश चौंक उठा, डाल उसके हाथ से छूट गयी और घास पर सेब

गराती हिलने लगी। उसमे पिता से विरासत मे मिला गर्व जाग उठा और वह माय्या से अलग खड़ा हो गया।

"मेरा प्यार मुझे यहा खीच लाया था। अगर तुम उसकी कीमत सेब से भी कम आंकती हो, तो उसे घास मे पड़ा रहने दो! मैं किसी के सामने अपनी बेइज्जती नही कराऊगा, हालाकि मैं अपना दिल तुम्हे दे चुका हू। मैं यहा भीख मागने नही, सुलह करने आया हू . अच्छा, अलविदा!"

गराश बगीचे से बाहर भाग गया, और माय्या ने फाटक के पास उसे रहीम से यह कहते सुना:

"बेटा, मैं ट्रक की धुरिया लेने जा रहा हू मेरी मा और बहन से कह देना कि हार्न की आवाज सुनते ही बाहर आ जायें ."

दिन-भर गरमी पड़ने पर भी घास अभी ठण्डी नही हो पायी थी, माय्या को आसू बहाते हुए जमीन पर गिर पड़ने पर उसकी गरमी महसूस हुई।

११

जब लड़कों ने तेल्ली चाची से कहा कि अध्यक्ष ने उसे कार्यालय मे बुलाया है, तो बुढ़ा घबरा गयी वह हमेशा बड़ी बहादुरी से रुस्तम के साथ झगड़ा करती थी, उस पर गला बैठ जाने तक चिल्लाती थी, इसके बावजूद वह उसके सामने कापती थी। उसके कक्ष मे दाखिल होने पर उसे अपनी आखो पर विश्वास नही हुआ, रुस्तम शान्त और बुझा-बुझा-सा था, जैसे सिगी मे राख मे दबा अलाव...

"कैरेम कहा है?" उसने बिना किसी भूमिका के पूछा। "दोपहर के खाने के समय तक आ जायेगा? उसे यहा भेज देना।"

"कोई बुरी बात तो नही हुई, चाचा?" चाची का स्वर काप उठा।

"हम उसे उसकी पुरानी जगह पर रखना और सारा पशुपालन फ़ार्म उसे सम्भलाना चाहते है।"

"देख लिया, चाचा, क्या हुआ।" चाची स्कर्ट सरसराती कुरसी पर बैठ गयी। "तुमने खुद अपना दाया हाथ काट लिया और अब क्या बाया भी काट डालना चाहते हो?"

"बहन, मैं वैसे ही मारा गया।" रुस्तम ने हथेलियो मे चेहरा भीच लिया। "आज तो मत रोको।"

चाची का हृदय दयालु और स्नेहार्द्र था, उसने उसी क्षण रुस्तम को उस सब बुरे के लिए क्षमा कर दिया, जो उसने उसके बेटे के साथ कि[illegible] था।

"ऐ, सुनो, छोड़ो इस तरह की बातें।" वह अपनी स्वाभाविक प्र[illegible] ल्पता से चिल्लायी। "मेरे बच्चों और पोतेपोतियों की कसम, सारे ग[illegible] को इकट्ठा करके झण्डा उठाकर हम जिला समिति चल पड़ेंगे, पर, बुढ़[illegible] तुम्हें बचाकर रहेंगे। तुम्हारा बाल भी बाका नहीं होने देंगे।"

तो यह नतीजा निकला सारी बातों का! मूर्ख लोग अब बुढ़ऊ कहने लगे हैं। जरा सोचिये तो सही तेल्ली चाची उसे संरक्षण देगी... रुस्तम ने मुंह फेर लिया।

"शुक्रिया, बहन... इसकी जरूरत नहीं है। केरेम को भेज देना..."

उसने अपनी लाल हुई आखें छिपाने के लिए कागजात में नजर गड़ा ली।

आधा घंटे बाद कार्यालय से निकलकर अध्यक्ष ने सईस को भूरी घोड़ी पर काठी कसने को कहा। रुस्तम बड़ी फुर्ती से उछलकर घोड़ी पर सवार होकर उसे सरपट कूरा की ओर दौड़ा ले चला। उसका इरादा जाड़े की फसलें देखने और यह पता लगाने का था कि लवण-कच्छवाले टुकड़े का प्रक्षालन कैसा किया गया है। लेकिन मुख्य कारण यह नहीं था। काठी पर सवार होने से उसका चित्त प्रसन्न हो उठता था, और जब तेज घोड़ा सुनसान स्तेपी में उसे लेकर सरपट दौड़ता था, ठण्डी हवा उसकी कटु स्मृतियों की तह को एक प्रकार से उड़ा देती थी। "कोई बात नहीं," रुस्तम बुदबुदा रहा था, "अभी रास्ता खुला है, सच्चा रास्ता... शराब और परेशान भी इस रास्ते से नहीं भटकेंगे। उनके लिए पिता से ज्यादा आसान होगा।" उसे जाड़े की फसलों के जमुरंदी खेत, भरपूर फसल की आशा जगाते नजर आने लगे। वृद्ध सन्तुष्ट हो गया। हां, बोवाई भी ढंग से की गयी है और सिंचाई भी... शेरजाद का खेत है। शेरजाद बहुत अच्छा लड़का है, समझदार भी है और नेक भी। कितना अन्याय किया रुस्तम ने उसके साथ, उसकी बिलकुल भी कीमत नहीं समझी।

घोड़ी किनारे की तरफ मुड़ गयी। सूर्यास्त की ज्वालाएं प्रतिबिम्बित करती कूरा में वाकरेंडी तरगें उठ रही थीं, नदी के किनारे ठण्डक और ताजगी ज्यादा थी, और वृद्ध को साम आराम से आ रही थी, उसका [illegible] गति [illegible] था।

उसके पास उसके निकट सम्बन्धियों को नहीं आने दिया जा रहा था, लेकिन उसने विनती करके अपनी पत्नी और नराश से मिलने की अनुमति ले ली और बेटे से उसे सामूहिक फार्म के अध्यक्ष के पद से मुक्त करने का प्रार्थनापत्र बोलकर लिखवा लिया।

"अब मेरी तरफ से हस्ताक्षर भी कर दो," रुस्तम ने उससे कहा और सिर पर कम्बल ओढ़कर अपने आप से बोला 'लो, बुढ़ऊ, अब तुम्हारी नयी जिन्दगी शुरू हो गयी ."

सामूहिक फार्म में अफवाहें फैल रही थी कि पत्नी व पुत्र के अलावा माय्या भी बीमार से मिलने गयी थी। उसने खुद उसे अपने पास बुलवाया.. लेकिन किसी ने भी माय्या को वहां नहीं देखा था, इसलिए इस समाचार की सत्यता की पुष्टि करवाना असम्भव था। रुस्तम का प्रार्थनापत्र बेटा उसी दिन पार्टी की जिला समिति में दे आया।

"यह किस्सा लम्बा है, कष्टदायक है और काफी सीमा तक स्वाभाविक भी है," कहते हैं जिला समिति के सचिव ने नराश से यह कहा था। "थोड़ा इंतजार करेंगे जब बुजुर्ग ठीक हो जाये, तभी इस पर विचार करेंगे।"

और सामूहिक फार्म में फिर अफवाहों का बाजार गरम हो गया। कुछ लोग यकीन दिलाने लगे कि जिला समिति जांच के निष्कर्षों की प्रतीक्षा कर रही है रुस्तम भी तो इस मामले में फंसा हुआ है, उसने सलमान, गूंगे हुसैन और यारमामेद के साथ मिलकर सामूहिक फार्म का पैसा हड़पने की कोशिश की है। अभी तो देखना चाहिए कि जेल में बंद किये गये हुसैन और लेखाकार क्या कहते है। कुछ दावे के साथ कहते थे कि इस मामले में ज्यादा से ज्यादा उन लोगों को झिड़की दी जायेगी और रुस्तम-कोशी अपने पद पर बना रहेगा उसका दिल शीशे-सा साफ है। दोष उसका केवल इतना ही है कि उसने ठगों पर विश्वास किया। कुछ लोग कहते थे कि गलतियां की गयी हैं, बेशक बहुत गम्भीर गलतियां की गयी है, पर वृद्ध ने जो महान सेवाएं की है, उन्हें भी नहीं भूलना चाहिए। उसे उसकी आयु के कारण पद से मुक्त कर देना चाहिए रुस्तम पेंशन पाने योग्य हो चुका है।

लेकिन यह कोई नहीं जानता था कि अगमान दो दिन हुए, जिला समिति के ब्यूरो की बैठक के बाद शाम देर गये वृद्ध से अस्पताल में मिलने गया था और उन्होंने काफी देर तक खुले दिल से बात की थी।

असलान ने रुस्तम का दिल बहलाने और बातचीत का रुख दुनियादारी बातों की ओर मोड़ने की कितनी ही कोशिश क्यों न की, पर वृद्ध बार-बार 'नवजीवन' के भविष्य की बात छेड़ देता।

"मुझे अब इस बात की चिन्ता नहीं है कि मेरे सिर का बोझ उतर जाये, बल्कि इस बात की है कि सामूहिक फार्म किसी भरोसेमंद और अक्लमंद आदमी को सौंपना चाहिए। और मैं सिफ़ारिश करता हूं—तुमने कभी सोचा भी न होगा—ज़ैनब कुलियेवा के नाम की।"

साधारणतया शान्त रहनेवाला असलान भी आश्चर्यचकित रह गया।

"ज़ैनब?!"

"बेशक।"

रुस्तम दिन-रात अपने उत्तराधिकारी के बारे में सोचता रहता था, वह मन में अब बिना किसी दुर्भाव के शेरज़ाद, नजफ़ और यहां तक कि ज़बानदराज़ तेल्ली चाची के बारे में भी सोचता रहा, पर उसने चुना कुलियेवा को और वह अपने निर्णय से सन्तुष्ट था।

"दूसरे सामूहिक फ़ार्म से?" असलान ने सावधानीपूर्वक उसे याद दिलाया।

"अरे, तुम भी क्या, वह है तो हमारे गांव की। श्रम-वीर है।" वृद्ध ने सख़्ती से कहा। "अपने सामूहिक फ़ार्म में लौट आयेगी। और यह भी याद रखो, वह, वह मेरी शिष्या है," रुस्तम ने अन्त में कहा और अपने आत्मसम्मान को बनाये रखने की चेष्टा की।

"अच्छा, अच्छा," असलान ने मज़ाक़ में कहा और कोई स्पष्ट उत्तर नहीं दिया।

इस प्रकार की अफ़वाहें और कानाफूसी से सकीना का चित्त और अधिक अशान्त हो उठा था।

गराश ने उसे कितना ही क्यों न समझाया कि उसे क्लब में आयोजित सभा में जाना चाहिए, पर मां ने दृढ़तापूर्वक कह दिया कि वह घर पर ही रहेगी।

"मुझे वहां जाने की क्या ज़रूरत है, लाड़ले, अगर मेरा मन ही नहीं करता?"

"मां, मेहरबानी करके मना मत करो। शिष्टाचार के नाते जाना चाहिए। लोग क्या सोचेंगे? समाजवादी प्रतियोगिता में हम पीछे रह गये, प्रथम स्थान हमने 'लाल झण्डा' के लिए छोड़ दिया, तिस पर तुम,

शराफ़ की पत्नी, नहीं जाओगी? तुम्हें जाना चाहिए, वहाँ जरूर मौजूद रहना चाहिए। तुम ख़ुद जानती हो, भवन अभी तैयार नहीं है, अब तक दीवारों पर रंग नहीं हुआ है, बिजली नहीं है और फुव्वारा भी अभी पूरा नहीं बना है... और सामूहिक किसानों ने सभा का आयोजन वहीं करने का निश्चय इसीलिए किया है, ताकि अब्बा को ख़ुशी हो।"

सकीना इस बारे में सुन चुकी थी। नेस्ती चाची और प्रबन्ध समिति के दूसरे सदस्य किसी न किसी तरह संस्कृति-भवन को जल्दी से जल्दी दुरुस्त करने में जुटे हुए थे—क्योंकि वह रुस्तम की सबसे प्रिय देन थी,—उनका यह मानकर चलना भी तर्कसंगत था कि नये भवन में सभा के आयोजन के समाचार से बीमार का उत्साह थोड़ा बढ़ जायेगा, उसे प्रसन्नता होगी।

"शुक्रिया, लाडले, मेरे लिए लोगों का आदर पाना ही काफ़ी है।"

"ख़ाली धन्यवाद से काम नहीं चलता, उठो और तैयार हो जाओ"

"मैं वहीं नहीं जाऊँगी।"

"अब्बा ने कहा है," शराफ़ ने अन्तिम दलील दी। "आज उन्होंने फिर याद दिलाया था बढ़िया कपड़े पहनकर जाओ और सारे परिवार के साथ सबसे आगे की कतार में बैठना।"

सकीना बरबस मुस्करायी हाँ, ऐसी बात केवल उसका पति ही कह सकता है। प्रतियोगिता में कारा केरेमोगलू की विजय को उसने धैर्यपूर्वक सहा था और तुरन्त अगले मुक़ाबले में बदला लेने के सपने सँजोते हुए अपनी तैयारी शुरू कर दी।

लेकिन फिर भी घर छोड़कर जाने का इसका कोई इरादा नहीं था। उसके लिए लोगों की कुतूहली, बुरा चाहनेवाली और सहानुभूतिपूर्ण नज़रें सह पाना अत्यन्त कठिन था।

किसी ने फाटक खटखटाया, और सकीना का दिल धड़क उठा। यह फिर क्या हो गया? शराफ़ोगलू और गोशातख़ा अपनी पत्नी के साथ अंदर आये।

"हम आप लोगों को ले जाने के लिए आये हैं," मेलेक ख़ानम ने कहा।

पति के मित्रों और शत्रुओं की चिन्ताशीलता सकीना के हृदय को छू गयी: उसने आदतन गोशातख़ा की तरफ़ शक की नज़र से कनखियों से देखा...

मेनेक सकीना को एक तरफ ले जाकर बोली कि रुस्तम तेजी से स्वस्थ हो रहा है, उसका शरीर असाधारण रूप से स्वस्थ है। यह सच है कि उसका दिल कभी-कभी परेशान करता है, पर इतनी दुर्घटनाओं के बाद इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है। अगर वह डाक्टरों की सलाह का पालन करते रहते, तो दो-एक हफ्ते में उसे घर जाने की छुट्टी मिल जाती।

"क्या वह कहना नहीं मानते हैं?" सकीना मुस्करायी, हालांकि वह जानती थी कि उसके पति ने सारे जीवन में किया ही यह है कि किसी का कहना नहीं माना।

"अरे, कहा मानते हैं!" मेनेक ने जोर से कहा, ताकि सब सुन लें। "उन्हें अस्पताल के बाग में एक घंटा टहलने की इजाजत मिली थी, पर उन्होंने क्या किया . जरा सोचिये तो सही, चहारदीवारी से बाहर निकल-कर राजमार्ग पर एक ट्रक रोक लिया और जैसे गाउन और स्लीपर पहने थे, उसी हालत में घर रवाना हो गये.. "

सकीना ने हाथ पर हाथ मारा।

"अच्छा हुआ कि नर्स ने यह सब तीसरी मंजिल की खिड़की से देख लिया और मेरे पास भागी आयी उन्हें वापस लाकर शर्मिंदा किया गया। बेशक दिल पर असर हुआ ही। सूई लगानी पड़ी.. "

"कैसे हिम्मत हुई उनकी डाक्टरों का कहना न मानने की?" सकीना ने हंसते हुए और रोते हुए भी आश्चर्य व्यक्त किया।

"अरे, उन्होंने तो, चाची, बिना शर्माये हमसे कहा कि वह अपने को जेल में बंद महसूस करते हैं। 'मुझे तो बस एक बार अपने घोड़े पर काठी कसकर उसे कूरा तट पर सरपट दौड़ाने का मौका मिल जाये, फ़ौरन ठीक हो जाऊंगा,' ये उन्हीं के शब्द हैं।"

"मैं जानती हूं रुस्तम-बीजी को!" सकीना दुःख मिश्रित गर्व के साथ मुस्करायी।

"और उसकी बात भी ठीक है," शराफ़ोगलू ने अपने मित्र का पक्ष लिया। "हवेली की हवा फौरन सारे रोग ठीक कर देगी। आखिर वह मुगान में पैदा और बड़ा हुआ है। आप लोगों को समझना चाहिए. यह आखिर मुगान है! .."

दूसरी मंजिल पर खिडकियों में शीशे न लगाये जाने के कारण मुँह बाये-सी लग रही उजली इमारत के बाहर सजे-धजे लोगों की भीड लग गयी। उनमें लाठिया टेके खडे सफेद-झक और सफाई से तराशी दाढीवाले वृद्ध भी थे, सूट पहने हुए जवान मर्द भी थे, चहचहाती लड़किया और बच्चों के साथ आयी स्त्रिया भी

सकीना भीड-भाड से बचने के इरादे से किनारे ही खडी थी, उसे झुककर किये गये सलामों का गरिमा के साथ जवाब दे रही थी और सहेलियों के साथ धीरे-धीरे बाते कर रही थी।

"समय हो गया! समय!" भीड में से किसी विनोदी व्यक्ति ने पूरे जोर से चिल्लाकर कहा और तुरन्त बैठकर अपने पडोसियों की ओट में छिप गया।

"हम 'लाल झण्डा' से आनेवाले मेहमानों का इतजार कर रहे हैं।"

"सभा का उद्घाटन कौन करेगा?"

सबने एक दूसरे की तरफ देखा।

शराफोवना ने सकीना के होंठ कांपते और आखें नम होती देख ली और शान्त स्वर में, मानो रोजमर्रा के कामों की बात हो रही हो, कहा

"बेशक, उपाध्यक्ष ही करेगा।"

भीड में शोर होने लगा कुछ दिन पहले सपाट मलमान भाग गया था। उसके घर के दरवाजों पर झाड़ उगने लगे हुए थे और जगली हुई मुर्गिया कभी उडकर छत पर जा बैठती थी, तो कभी दूसरों के अहातों में मारी-मारी फिरती रहती थी।

अचानक शान्ति छा गयी दरवाजे के पास हाथों में कैंची लिये घबराहट के कारण लाल हुई जैनब कुनियेवा नजर आयी। सभी लोगों को याद आया कि हाल ही में प्रबन्ध समिति ने जोरदार बहस के बाद उसकी उपाध्यक्ष के पद पर नियुक्ति की पुष्टि कर दी थी।

यह सच है कि प्रारम्भ में किसी ने जिबेनार का नाम प्रस्तावित किया था वह बुद्धिमान, मेहनती लडकी है, हम काम सभाओं में उसकी मदद किया करेंगे। लेकिन जिबेनार ने साफ इनकार कर दिया।

तब शमनाम ने औरों की अनुमति लेकर रुस्तम की जैनब कुनियेवा को सामूहिक फार्म का अध्यक्ष ... की याद दिलायी।

"चलिये, हम अभी उसे उपाध्यक्ष नियुक्त किये देते हैं। फिलहाल उपाध्यक्ष। जरा आदी हो जायें, सब देख-समझ ले, काम सभाल ले, फिर आगे देखा जायेगा।"

जिला समिति के सचिव के प्रस्ताव का सभी ने समर्थन किया और जब मतदान हुआ, तो उसके विरोध मे कोई मत नहीं दिया गया।

इसीलिए संस्कृति-भवन का उद्घाटन करने का सम्मान जैनब कुलियेवा को प्राप्त हुआ।

सकीना उसके नामजद किये जाने पर दिल में खुश हुई, उसे कोई सन्देह नही था कि वह अवश्य ही नये काम को सभाल लेगी।

अब वह मैत्री भाव से अन्तिम निर्देश दे रही जैनब की तरफ देख रही थी। वहा स्कूली बच्चे बड़े लैम्प हाथो मे उठाये आ गये।

"बच्चो, दो लैम्प मच पर रख दो।"

हा, हम तो जैनब खानम, लैम्प वहा रख चुके हैं।"

"मुझे मालूम है। अगर मैं कह रही हू कि दो लैम्प और रखने चाहिए, तो इसका मतलब है, उन्हें रखना जरूरी है," जैनब ने अत्यन्त शान्त स्वर मे कहा। "जितनी रोशनी होगी उतना ही अच्छा लगेगा।"

मोटरो का शोर सुनाई दिया, भीड ने बड़ी मुश्किल से उनके लिए रास्ता छोड़ा, भवन के सामने दो कारें और एक बद गाड़ी आकर रुकी 'लाल झण्डा' से मेहमान आ पहुचे थे।

सकीना की नजरे मेहमानों की भीड में माय्या को ढूढने लगी। वह 'पोब्येदा' कार से सब से आखिर मे उतरती दिखाई दी। वह अपने फूले बदन को ढकनेवाली चौड़ी पोशाक पहने हुए थी, बदसूरत हो गयी थी और उसका चेहरा पीला और पिचका लग रहा था।

सकीना पुत्रवधू की तरफ लपकी, पर परेशान कोहनियों से रास्ता बनाती हुई उससे पहले माय्या के पास पहुच गयी और उसका आलिगन कर उसे चूम लिया।

लैम्प जल रहे थे, और भीड हाल मे दाखिल हो गयी। बेटी और बहू के नजरो से ओझल हो जाने पर सकीना दीवार से सट गयी।

वह देर से आये सारे सामूहिक किसानो के अदर जाने तक वैसे ही खडी रही, निस्सन्देह उसे देर हो गयी और वह शेरजाद की कापती और घबरायी आवाज मे प्रतियोगिता के परिणामो की घोषणा करते, 'लाल झण्डा'

दूसरी मंजिल पर खिड़कियों मे शीशे न लगाये जाने के कारण मुंह बाये-सी लग रही उजली इमारत के बाहर सजे-धजे लोगों की भीड़ लग गयी। उनमे माठिया टके खड़े सफेद-झक और सफाई से तराशी दाढ़ीवाले वृद्ध भी थे, सूट पहने हुए जवान मर्द भी थे, चहचहाती लड़कियां और बच्चों के साथ आयी स्त्रियां भी

सकीना भीड़-भाड़ से बचने के इरादे से किनारे ही खड़ी थी, उसे झुककर किये गये सलामों का गरिमा के साथ जवाब दे रही थी और सहेलियों के साथ धीरे-धीरे बातें कर रही थी।

"समय हो गया! समय! " भीड़ में से किसी विनोदी व्यक्ति ने पूरे जोर से चिल्लाकर कहा और तुरन्त बैठकर अपने पड़ोसियों की ओट में छिप गया।

"हम 'लाल झण्डा' से आनेवाले मेहमानों का इतजार कर रहे है।"

"सभा का उद्घाटन कौन करेगा?"

सबने एक दूसरे की तरफ देखा।

शराफोगलू ने सकीना के होंठ कांपते और आखें नम होती देख ली और शान्त स्वर में, मानो रोजमर्रा के कामों की बात हो रही हो, कहा

"बेशक, उपाध्यक्ष ही करेगा।"

भीड़ मे शोर होने लगा कुछ दिन पहले सराट सलमान भाग गया था। उसके घर के दरवाजों पर आड़े तख्ते ठुके हुए थे और जगली हुई मुर्गियां कभी उड़कर छत पर जा बैठती थी, तो कभी दूसरों के अहातों मे मारी-मारी फिरती रहती थी।

अचानक शान्ति छा गयी दरवाजे के पास ें मे " घबराहट के कारण लाल हुई जैनब कुतिभिवा नजर कि हाल ही मे प्रबन्ध समिति ने उ के पद पर नियुक्ति की पुष्टि कर दी

यह सच है कि आरम्भ मे किसी था: वह बुद्धिमान, मेहनती लड़की किया करेगें। लेकिन गिजेतार ने

तब अमन्तान ने बोलने की को सामूहिक फार्म का अध्यक्ष

गेहूं मे कैसे रोटी पकेगी   यह बुरा दिन,
मैंने नही कभी भी देखा था, चक्कीवाले।

और उसकी सुन्दरता पर मोहित हुआ चक्कीवाला दुलहन को अ
में अधिक समय तक अपने पास रोके रखने की कोशिश में उसे बड़े प
से मनाता है:

छाया हुआ है मेरे दिल में अंधेरा, खानम,
पानी नही है, नाली का तल है दिखता, खानम,
रोटी बिना भी आखिर जी लेंगे जैसे तैसे
दुख मेरा, आप का है बस एक जैसा, खानम।

"पार्टी सगठनकर्त्ता को ऐसे स्वाग रचना कुछ शोभा नही देता
सकीना को किसी की फुसफुसाहट सुनाई दी और उसने सोचा "मे
को उसकी टर्र-टर्र से पहचाना जा सकता है, जबकि यारमामेद के दो
को उनके लोगों से नफरत करने से।"

उधर मच पर बाके नौजवान तूफानी गति के नृत्य में हवा में उड़
रहे थे, उनके बीच में नजफ घूम रहा था, कूद रहा था, लगता था उ
मोटापे से उसकी फुर्ती और दक्षता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा था लेकिन त
वस्त्र बदलकर आते ही शेरजाद वृत्त में कूद पड़ा और उसमें इतना पु
सुलभ आकर्षण था कि बहुत-सी युवतियां परेशान में मन-ही-मन डाह क
लगीं "अरे, कितनी नासमझ है, बेकार वक्त बरबाद कर रही है!"

हॉल में कुरसियां दीवारों से सटाई जाने लगी, थके-हारे वादक
ने 'ल्यलबेकी' और 'यल्ली'* की धुन छेड़ दी, केवल मेजबान ही ना
मेहमान भी नाचने लगे: वे कारा केरैमोगलू को वृत्त में खींच लाये, गो
तमा भी नहीं बच सका, उसे भी धकेलकर नाचने के लिए बाध्य कर दिय

गराश को मास्मा कहीं नजर नहीं आयी। "क्या वह अवमुच क
के बाद वापस चली गयी?" वह सोचकर दुखी हो उठा, उसे दुनिया
कोई दिलचस्पी नहीं रही। वह हॉल में अकेला एक सिगरेट पीकर धी
धीरे अपने भूरे और निरानन्द घर रवाना हो गया।

मेहमान वास्तव में जा रहे थे, कारा केरैमोगलू ने स्वागत व स्नेह
लिए धन्यवाद दिया और अपने यहां शरद्योत्सव पर आने का निमत्रण

---

*'ल्यलबेकी' और 'यल्ली'—आजरबैजानी लोक-नृत्य।

"आयेंगे, आयेंगे," तेल्ली चाची ने वादा किया। "लेकिन यह उम्मीद छोड दो कि तुम्हारे लोग हमे नाच मे मात दे सकते हैं।"

"जब हमने पैदावार मे मात दे दी, तो नाच मे भी मात देने की पूरी कोशिश करेंगे," कारा केरेमोगलू ने सोचा, पर सहृदय मुस्कान के साथ बोला

"अरी, बहन, सूत न कपास, फिर जुलाहो मे लट्ठमलट्ठा से क्या फायदा? आओ हमारे यहा, तुम्हारा सदा स्वागत है. "

मुख्यद्वार पर मिट्टी के तेल का लैम्प टिमटिमा रहा था, शरत्कालीन रात की काली चादर पूर्ववत् गाव के ऊपर तनी हुई थी, पर जिन्दादिल सगीत के सुर स्तेपी मे घरो व बगीचो के ऊपर गूज रहे थे। त्योहार अभी समाप्त नही हुआ था।

गराश अहाते मे घुसा। वहा सन्नाटा और अधेरा था, यहा तक कि अलसेशियन भी नही भौंका, पर बरामदे मे लैम्प जल रहा था – शायद मा लौट आयी थी।

लेकिन खाने का कमरा खाली था, बहन के कमरे का दरवाजा बद था, गराश अपने कमरे मे गया और देहलीज पर जडवत् खडा रह गया

खिडकी के पास माश्या बैठी थी, लैम्प के प्रकाश मे उसके बाल सुनहले लग रहे थे, उसका पूर्णतया युवा मुख हल्के अधेरे मे सजीव हो उठा था। अपनी आखो पर विश्वास न कर पा रहे गराश ने उसके निकट आकर अपने दोनों हाथो मे उसका कसीला हाथ लेकर अपने होठो से लगा लिया।

"मेरी प्यारी माश्या!"

"चुप रहो   देखो, बिजली चमक रही है, जरूर तूफान आयेगा   '
माश्या ने कहा नही, केवल सोचा, पर गराश सब समझ गया और उसने नि शब्द माश्या को अपनी ओर खींच लिया।

सागर के ऊपर बिजली की मारें रात के अधेरे को चीरती, अधेरे से कभी खडी चट्टानो को, कभी तट की रेती को, तो कभी सब प्रकार को आलोकित करती चकाचौंधिया कर रही थी। तट के झुरमुटो का सरसराता पवन का झोंका गाव के बागो तक आ पहुचा, वृक्षो के शीर्ष से सनसन लगे, और उन पर मोटी मोटी बूदे टप-टप गिरने लगी

दूर पडाव मे भेडो से घिरे बूढे बाबा और कम मुसलाधार वर्षा रात की प्रतीक्षा कर रहे थे   मे लगभग बिल्कुल असर नहीं था या पर
- -- नाम   कर रहे थे, और करवटे सुर्खे व

उनके मुखौ, जिनने कि श्रम को अपना जीवन अर्पित करनेवाले लोग.

स्तेपी के रास्तों से दूर-दराज के सामूहिक फार्मों से जीप में हवा के झोंके खाता जा रहा ग्रमलान भी वर्षा की प्रतीक्षा कर रहा था, आगामी वर्ष की फसल के बारे में सोच रहा था, और उसे पूर्ण विश्वास था कि मुझान लोगों को ऐसा उपहार देकर निहाल कर देगा, जिसे उन्होंने सपने में भी नहीं देखा।

स्नम भी सो नहीं रहा था, अस्पताल के पतले गद्दे पर करवटें बदल रहा था। वह उठकर खिड़की के पास आया। बिजली की चमक को देखता, बादलों की गरज को ध्यानपूर्वक सुनता हुआ अपने जीवन के बारे में सोचने लगा।

और परिणामस्वरूप बिजली कड़क उठी।

"आयेंगे, आयेंगे," तेल्ली चाची ने वादा किया। "लेकिन यह उम्मीद छोड़ दो कि तुम्हारे लोग हमें नाच में मात दे सकते हैं।"

"जब हमने पैदावार में मात दे दी, तो नाच में भी मात देने की पूरी कोशिश करेंगे," बाबा केरेमोगलू ने सोचा, पर सहृदय मुस्कान के साथ बोला

"अरी, बहन, सूद न ब्याज, फिर जुलाहों में लट्ठमलट्ठा से क्या फायदा? आओ हमारे यहां, तुम्हारा सदा स्वागत है ..."

मुख्यद्वार पर मिट्टी के तेल का लैम्प टिमटिमा रहा था, शरत्कालीन रात की काली चादर पूर्ववत् गांव के ऊपर तनी हुई थी, पर ज़िन्दादिल संगीत के सुर स्तेपी में घरों व बगीचों के ऊपर गूंज रहे थे। त्योहार अभी समाप्त नहीं हुआ था।

गराश अहाते में घुसा। वहां सन्नाटा और अंधेरा था, यहां तक कि मलमेशियन भी नहीं भौंका, पर बरामदे में लैम्प जल रहा था – शायद मां लौट आयी थी।

लेकिन खाने का कमरा खाली था, बहन के कमरे का दरवाजा बंद था, गराश अपने कमरे में गया और देहलीज पर जड़वत् खड़ा रह गया

खिड़की के पास मान्या बैठी थी, लैम्प के प्रकाश में उसके बाल सुनहले लग रहे थे, उसका पूर्णतया युवा मुख हल्के अंधेरे में सजीव हो उठा था। अपनी आंखों पर विश्वास न कर पा रहे गराश ने उसके निकट आकर अपने दोनों हाथों में उसका बर्फीला हाथ लेकर अपने होंठों से लगा लिया।

"मेरी प्यारी मान्या!"

"चुप रहो ... देखो, बिजली चमक रही है, ज़रूर तूफ़ान आयेगा ..."
मान्या ने कहा नहीं, केवल सोचा, पर गराश सब समझ गया और उसने निःशब्द मान्या को अपनी ओर खींच लिया।

सागर के ऊपर बिजली की लपके रात के अंधेरे को ...
कभी खड़ी चट्टानों को, कभी तट की रेती को ...
आलोकित करती अठखेलियां कर ...
... का झोंका गांव के बागों ...
... और छत पर मोटी-मोटी
... के देशों में घिरे
... अंधेरे।
...

रादुगा प्रकाशन

हिन्दी मे छपनेवाली पुस्तक

पुण्य पक्षी, उज़्बेक लेखको की कहानियां

इस कहानी-संग्रह मे पुरानी पीढ़ी के लेखको के साथ-साथ युवा पीढ़ी के उन लेखकों की कहानियां भी शामिल की गई हैं, जिन्होंने अभी-अभी उज़्बेक साहित्य मे पदार्पण किया है। विभिन्न विषयो एव विभिन्न शैलियो मे लिखी ये कहानियां उज़्बेक-गद्य के उस असाधारण उत्कर्ष को प्रतिबिम्बित करती है, जिसमे यह विधा अपने अस्तित्व के अपेक्षाकृत अल्पकाल (अर्द्धशताब्दी से कुछ अधिक) मे होकर गुज़री।

प्रस्तुत संग्रह मे अमीद गुल्याम, रहमत फ़ैज़ी, अस्कद मुख्तार, मरिमुद्दिमन, गफ़ूर गुल्याम, आदिल याक़ूबोव, प्रिम्कूल कादीरोव आदि दूसरे सोवियत [illegible] शामिल की गई है।